देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
October 2023
Vol.-18, Issue-4(1)

Impact Factor
7.523

# Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

## साहित्य में गांधी
## एवं
## गांधी का साहित्य
## विशेषांक

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. अमिता प्रकाश

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग
एडवोकेट

*Publisher :*
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

# बोहल शोध मञ्जूषा

# Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

**Vol. 18** **ISSUE-4(1)** **(अक्टूबर 2023)** **ISSN : 2395-7115**

*प्रेरणा :*

**चौ. एम. सिहाग**

*विशेषांक सम्पादक :*

**डॉ. अमिता प्रकाश**

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सोमेश्वर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड।

*सम्पादक :*

**डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट**

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

**प्रकाशक :**

**गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)**

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

# Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

**सम्पादकीय सम्पर्क :**
**डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट**
**202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,**
**भिवानी-127021 (हरियाणा)**
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

*Published by :*
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

*Disclaimer :*
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

*Printed by :* Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

# बोहल शोध मंजूषा परिवार*

## मानद संरक्षक

**प्रो. राधेमोहन राय**
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

**डॉ. राजेन्द्र गोदारा**
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

**डॉ. विनोद तनेजा**
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

## सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
**डॉ. रेखा सोनी**
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
**डॉ. सुशीला आर्या**
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
**समुन्द्र सिंह**
भिवानी, हरियाणा।

## विधि विशेषज्ञ

**डॉ. रामफल दलाल**, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

**अजीत सिहाग**, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

**चरणवीर सिंह**, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

## विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

**माई मनीषा महंत**
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

**डॉ. विश्वबंधु शर्मा**
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

**डॉ. संजय एल. मादार**
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

**डॉ. गीता दहिया**, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

**डॉ. विनोद कुमार**
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

**डॉ. मो. रियाज़ खान**
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

**डॉ. वनिता कुमारी**
च. दादरी (हरियाणा)

**श्री सहदेव समर्पित**
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

**डॉ. अंजली उपाध्याय**
उत्तर प्रदेश

**डॉ. लता एस. पाटिल**
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

**प्रो. अमनप्रीत कौर**
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

**डॉ. वर्षा रानी**
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

**प्रो. कमलेश चौधरी**
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

**डॉ. किरण गिल**
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

**डॉ. सविता घुड़केवार**
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

**डॉ. परमजीत कौर**
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

**डॉ. राजकुमारी शर्मा**
नेपाल

**डॉ. श्रीविद्या एन.टी.**
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

**डॉ. बी. संतोषी कुमारी**
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

**श्री राकेश ग्रेवाल**
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

**डॉ. पंडित बन्ने**
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

**डॉ. पायल लिल्हारे**
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

**श्री राकेश शंकर भारती**
यूक्रेन।

**डॉ. उमा सैनी**
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

**डॉ. मनमीत कौर**
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

**डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी**
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

**डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां**
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

**डॉ. शबाना हबीब**
त्रिवन्तपुरम, केरल

**डॉ. शिवकरण निमल**
राजस्थान

**डॉ. राधाकृष्णन गणेशन**
वाराणसी

**डॉ. मानसिंह दहिया**
हरियाणा

**डॉ. नीलम आर्या**
उत्तर प्रदेश

**डॉ. रवि सुण्डयाल**
जम्मू कश्मीर

**प्रो. नरेन्द्र सोनी**
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

**प्रो. रोहतास**
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

**प्रो. सत्यबीर कालोहिया**
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

**डॉ. इस्पाक अली**
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

**प्रो. रेखा रानी**
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

**डॉ. के.के. मल्हौत्रा**
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

**डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा**
शासकीय महाविद्यालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

**डॉ. परमानन्द त्रिपाठी**
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

**डॉ. करमजीत कौर**
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

अक्टूबर 2023


| क्र. | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1. | सम्पादकीय | डॉ. अमिता प्रकाश | 08–10 |
| 2. | आधुनिक हिन्दी कविता पर गाँधी के वैचारिक दर्शन का प्रभाव | डॉ. अनिता जोशी | 11–16 |
| 3. | गांधी के राम बनाम साहित्य के राम | बबीता दौरियाल | 17–20 |
| 4. | महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन के प्रति ब्रिटिश सेवी वर्ग की मनोवृत्तिसर हरकोर्ट बटलर के विशेष सन्दर्भ में एक मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन | डॉ. बीना जोशी | 21–25 |
| 5. | प्रेमचंद के साहित्य में गाँधीवादी विचारधारा | डॉ० आशा हर्बोला | 26–29 |
| 6. | गांधी और हिन्दी सिनेमा | डॉ. विद्या शंकर विभूति | 30–34 |
| 7. | हिन्दी साहित्य में गांधी दर्शन की अप्रतिम अभिव्यक्ति | डॉ. हेमचन्द्र दुबे | 35–37 |
| 8. | महात्मा गांधी जी के चलाये गये आन्दोलनों में महिलाओं की सहभागिता (कुमाऊ के परिपेक्ष्य में विशेष) | डॉ. कंचन वर्मा | 38–41 |
| 9. | हिन्दी भाषा एवं साहित्य में गांधीवादी विचारधारा | डॉ. जगदीश चन्द्र जोशी | 42–44 |
| 10. | हिन्दी कविता में महात्मा गांधी की विचारधारा का प्रभाव | डॉ. विक्रम सिंह | 45–49 |
| 11. | प्रेमचंद के साहित्य में गांधीवादी विचारधारा | डॉ. ममता | 50–53 |
| 12. | हिन्दी नाट्य साहित्य में गांधी दर्शन की अभिव्यक्ति | डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल | 54–61 |
| 13. | हिन्दी साहित्य में गाँधीवादी विचारधारा | पूजा | 62–64 |
| 14. | हिन्दी साहित्य में गाँधी-दर्शन की अभिव्यक्ति | डॉ. अचला पाण्डेय | 65–70 |
| 15. | हिन्दी साहित्य गाँधीवादी विचारधारा में | डॉ. शशि बाला रावत | 71–73 |
| 16. | गाँधीवाद की प्रासंगिकता | प्रेमा | 74–76 |
| 17. | गांधीवाद और हिंदी साहित्य | डॉ० संजीब सिंह नेगी | 77–82 |
| 18. | आधुनिक हिन्दी-साहित्य पर गाँधीवाद का प्रभाव | डॉ. कृष्णा | 83–87 |
| 19. | गाँधी और हिन्दी साहित्य | प्रो० चंद्रा खत्री | 88–96 |
| 20. | गांधी चिंतन व प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य | डॉ. मीनाक्षी राणा | 97–100 |
| 21. | गांधी दर्शन : एक समग्र मूल्यांकन | प्रो. रेनू प्रकाश | 101–105 |
| 22. | हिंदी नाट्य साहित्य में गांधीवादी दर्शन का प्रभाव, प्रसाद एवं प्रसादोत्तर सामाजिक नाटकों के विशेष संदर्भ में | डॉ. जयश्री भंडारी | 106–112 |
| 23. | आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना एवं संस्कृत वांग्मय में महात्मा गांधी | डॉ० शालिनी पाठक | 113–118 |
| 24. | गाँधी और राष्ट्र भाषा हिंदी | डॉ. तजिंदर भाटिया | 119–122 |
| 25. | नागार्जुन के काव्य में गांधी दर्शन | डा० नेहा भाकुनी | 123–129 |
| 26. | गांधीवाद की प्रासंगिकता | राघवेन्द्र सिंह | 130–133 |
| 27. | हिंदी साहित्य में गांधी दर्शन | डॉ. भावना | 134–137 |
| 28. | गांधी जी का शैक्षिक दर्शन | मनोज भाकुनी, डॉ. शिव भोलेनाथ श्रीवास्तव | 138–142 |
| 29. | गाँधी का राष्ट्रवाद | दुर्गेश नंदिनी | 143–146 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 30. | हिंदी साहित्य में गाँधीवादी विचारधारा | डॉ. सुनीता राठौर | 147–151 |
| 31. | हिन्दी नाटक में गाँधी चिंतन | डॉ रहिम रवीन्द्रन | 152–155 |
| 32. | हिंदी दलित कविता में गाँधी व अम्बेडकर की वैचारिक दृष्टि | डॉ० गोपाल राम | 156–163 |
| 33. | मैथिलीशरण गुप्त रचित 'पंचवटी' में व्यक्त गाँधी विचारधारा | प्रो. रिद्धि पी. तलाविया | 164–167 |
| 34. | हिन्दी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा | डॉ. बबीता गुप्ता | 168–170 |
| 35. | साहित्य में चित्रित गाँधी जी के विभिन्न सिद्धान्त | डॉ. सुधा देवी दीक्षित | 171–176 |
| 36. | गाँधीवाद से प्रभावित आधुनिक हिंदी साहित्य | कु. सपना | 177–180 |
| 37. | किसानों का मसीहा गाँधी–चंपारण किसान आंदोलन के संदर्भ में | अन्नपूर्णा भोसले | 181–183 |
| 38. | गांधी का चिंतन : प्राचीनता से समन्वय और आधुनिकता का प्रकटीकरण | डॉ. शैलेन्द्र तिवारी | 184–190 |
| 39. | गाँधीवाद की वर्तमान समय में प्रासंगिकता | श्री भूपेन्द्र सिंह | 191–193 |
| 40. | गांधी बनाम प्रेमचंद | डॉ. सीमा कुमारी | 194–199 |
| 41. | गांधी के राम बनाम साहित्य के राम | विजय पाटिल | 200–201 |
| 42. | प्रेमचंद के उपन्यास 'निर्मला' में गांधीवाद | डॉ. आलपाटि भानु प्रसाद | 202–204 |
| 43. | आधुनिक हिन्दी साहित्य में महात्मा गांधी की जीवनी एक अद्भुत विश्लेषण | कर्रा पृथ्वी | 205–208 |
| 44. | हिन्दी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा | डॉ. सरोज बाला श्याम | 209–213 |
| 45. | गांधी जी का चरित्र के बिना ज्ञान | डॉ. सुशील चन्द्र बहुगुणा | 214–218 |
| 46. | हिंदी साहित्य में गांधी विचारधारा का प्रभाव | डॉ सीताराम आठिया | 219–222 |
| 47. | वर्तमान समय में गांधीवाद की प्रासंगिकता | श्रीमती कांता वर्मा | 223–226 |
| 48. | 'टेढ़े–मेढ़े रास्ते' उपन्यास में गाँधीवादी विचारधारा | डॉ. जिनु जॉन | 227–230 |
| 49. | 'बा' उपन्यास में गांधी विचार | श्रुतिमफत भाई पटेल | 231–233 |
| 50. | गाँधीवाद की प्रासंगिकता | अनीता दानू | 234–237 |
| 51. | महात्मा गांधी का परिचय व गांधीवादी की प्रासंगिकता | डॉ. पूजा चौहान | 238–242 |
| 52. | गाँधीवाद एवं हिन्दी साहित्य | डॉ. सुशील बिलुँग | 243–247 |
| 53. | गांधी से प्रभावित आधुनिक हिंदी साहित्य | काकर मुत्यालराव | 248–250 |
| 54. | गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता : एक समाजशास्त्रीनय विश्लेलषण | शैलजा, प्रो0 (डॉ.) रेनू प्रकाश | 251–255 |
| 55. | हिन्दी साहित्य और गाँधी दर्शन | डॉ. संतोष कुमार लिल्हारे | 256–260 |
| 56. | रमेशचन्द्र शाह का रचनाकर्म : एक सूक्ष्म अवलोकन | डॉ० कुसुम लता | 261–264 |
| 57. | हिंदी उपन्यासों में चित्रित गाँधी आंदोलन | निशा साहू | 265–269 |
| 58. | GANDHI'S VISION OF NATIONAL LANGUAGE | Dr. Anshu Puri | 270-274 |
| 59. | Gandhi : The Harbinger of Cleanliness | Dr. Subhash | 275-278 |
| 60. | Human Right and Mahatma Gandhi | Dr. Pankaj Pandey | 279-284 |
| 61. | महात्मा गांधी के विचारों का शांति एवं सुरक्षा पर प्रभाव | डॉ. रामतिवारी | 285–290 |

## सम्पादक की कलम से.....

मोहनदास करमचंद गाँधी, एक ऐसा नाम जो मानस पटल पर आते ही आंखो के सामने कई चित्र एक साथ उकेर देता है। उन चित्रों में मुख्य होते हैं– एक दब्बू, अंतर्मुखी औसत बुद्धिलब्धि का छात्र, एक बैरिस्टर जो अफ्रीका की धरती पर अंग्रेजों के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ता है, एक युवा जो कभी युवा दिखा ही नहीं, भारत के कोने–कोने में जाकर भारत को जानता, समझता और गुनता, लंगोटी जैसी धोती पहने बैठा एक क्षीणकाय मनुष्य, चरखा कातते हुए, और एक तनी लकड़ी सा अंग्रेजों के सामने बैठाया कटघरे में खड़ा व्यक्ति जिसकी वजह से शासकों की पेशानी पर बल है, पर वह शांत और दृढ़ता की मूर्ति बना हुआ है।

आज की पीढ़ी, जिसने गाँधी को किताबों और चित्रों के माध्यम से देखा– पढ़ा और जानने– समझने की कोशिश की है, वह गाँधी के इन्हीं कुछ चित्रों को मानस पटल पर अंकित किए हुए है। लेकिन क्या इतने ही भर थे गाँधी? और यदि इतने भर थे तो क्यों विश्वभर नतमस्तक है आज भी उनकी प्रतिमाओं के आगे? (भले ही विश्व के नतमस्तक होने पर एक प्रश्नचिह्न भी है) किंतु इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि, गाँधी के विचारों–सिद्धांतों को भले ही व्यवहारिक रूप से न अपनाया हो विश्व ने, किंतु सैद्धांतिक रूप से तथा अंतर्मन से संपूर्ण विश्व उनके सिद्धांतों, उनके विचारों को जानना और मानना चाहता है। तो ऐसा क्या था इस क्षीणकाय व्यक्तित्व में जिसने किसी व्यक्ति, परिवार, समुदाय, समाज या देश के किसी एक क्षेत्र विशेष को ही प्रभावित नहीं किया अपितु सम्पूर्ण विश्व को न केवल अपने समय में प्रभावित किया बल्कि अपने जाने के सात दशक बाद भी वह कहीं न कहीं लोगों के दिल दिमाग में अपनी जगह बनाए बैठा है? यह जानने की जिज्ञासा ही संभवतः बार बार ले जाती है मनीषा को गाँधी के पास। यह जानने के लिए, किंतु समझना पड़ेगा मोहनदास से महात्मा बनने के उपक्रम को। वस्तुतः मोहनदास से महात्मा बनने की अंतः प्रक्रिया बहुत लंबी, कठिन और प्रेरक है। यह प्रक्रिया इतनी जटिल है कि उसे बापू के अतिरिक्त और कोई जान ही नहीं सकता है। जब कोई साधारण व्यक्ति, जो सरल जीवन जीता आ रहा हो, वह विलक्षण बनने की राह में आगे बढ़ता है तो स्वाभाविक रूप से उसे कई विषम और दुष्कर परिस्थितियों का सामना करना ही पड़ता है। ये परिस्थितियां बाह्य और आंतरिक दोनों ही होती हैं। सामाजिक दशाएं जरूरतें और विवशताएं यों भी मनुष्य को कभी भी सामान्य से ज्यादा ऊपर उठने का अवसर नहीं देती। कई बार तो इनके दबाव में साधारण से भी नीचे गिर जाता है मनुष्य, किंतु ऊँचाई का संकल्प लिए व्यक्ति के लिए तो ये विपरीत उद्दाम परिस्थितियां ही सोपान का कार्य करती हैं। इन कसौटियों से जूझकर तपकर, मंझकर ही असली व्यक्तित्व निखरता है। इसलिए संभवतः विद्वानों ने कहा है कि संघर्ष जितना बड़ा होता है, सफलता उतनी ही शानदार होती है।

महात्मा गाँधी जिस कालखंड में सार्वजनिक जीवन में उतरते हैं, भारतीय राजनीति में वह गुलामी का समय है। गुलामी की मानसिकता के अनुरूप ही भारतीय राजनीति उस समय ब्रिटिश सरकार के आगे घिघियाती मिमियाती और कभी चिंगारी सी सुलगती है। एक स्पष्ट नीति न होने के कारण वह कभी ब्रिटिश सरकार के आगे हाथ फैलाती है, कभी कुछ मांगें रखती है, कभी उनका साथ देती है और कभी मुखर विरोध भी दर्ज करने की असहाय कोशिश सी करती दिखती है। नरम पंथ और गरम पंथ के मध्य झूलती भारतीय राजनीति के टकराव के उन सालों में सत्याग्रह, असहयोग या आंदोलन जैसे शब्द मात्र किताबी शब्द की बने रहते हैं। इन किताबी

शब्दों को जमीन पर उतारने के अर्थ में यदि देखा जाये तो गाँधी जी ने अचानक ही बिल्कुल मौलिक प्रयोग नहीं किया। पहला भारतीय आंदोलन–'असहयोग आंदोलन' जिसकी महत्ता असाधारण कही जा सकती है, क्योंकि, न केवल तत्कालीन भारतीय राजनीति में बल्कि वैश्विक पटल पर भी किसी अन्य परतंत्र देश में भी, ऐसा अद्‌भुत आंदोलन नहीं दिखाई देता। यह एक ऐसा आंदोलन था, जिसमें अहिंसक नैतिकता कूट कूटकर भरी हुई थी, सच्चाई के प्रति अविचल खड़ा यह आंदोलन शत्रु को भी अपने दमन के प्रति न केवल सोचने को मजबूर कर देता है, वरन उसमें अपने दमन के प्रति ग्लानि की भावना को भी जागृत करने का माद्दा रखता था। वस्तुतः यही गांधीजी के सभी राजनीतिक प्रयोगों व आंदोलनों का अलहदापन था कि वे सारी ताकत भीतर के परिवर्तन पर झोंक देते थे। मर्म पर सीधी चोट कर आंतरिक परिवर्तन करने पर उनकी दृष्टि जमी रहती थीं। इस दृष्टिकोण से यदि गाँधी को भारतीय राजनीति का कुशल मनोवैज्ञानिक कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। दरअसल बाह्य परिवर्तन उनके लिए केवल एक परिणाम मात्र था। भारतीय संस्कृति के गौरवशाली सर्वश्रेष्ठ तत्वों को न केवल आत्मसात करना बल्कि अपने जीवन को एवं अपने शरीर को उन सभी श्रेष्ठ तत्वों की प्रयोगशाला बना लेना गाँधी की महानता का रहस्य है।

गाँधी में जो कुछ है, वह आंतरिक हैं, भावगत है, चेतनाधर्मी है और आध्यात्मिक स्तर लिए हुए है और इसका सबसे बड़ा प्रमाण है उनकी आत्मकथा का शीर्षक "सत्य के प्रयोग"। गांधीजी के व्यक्तित्व की परतों को खोलना इसलिए भी आसान नहीं है क्योंकि उनका व्यक्तित्व दो विपरीतों के बीच की टकराहट, कई तनावों की खींचतान तथा अनेक पराजयों पर मानसिक विजय के फलस्वरूप निर्मित हुआ बहुस्तरीय व्यक्तित्व है। इस बहुस्तरीय व्यक्तित्व ने समाज को तब भी और आज भी कई स्तरों पर प्रभावित किया था, किया है और करता रहेगा। गाँधी की प्रासंगिकता इसी बात में निहित है कि उनके चले जाने के बाद आज भी हम उनकी प्रासंगिकता की बात कर रहे हैं। सही अर्थों में देखा जाए तो गाँधी पर बात करने की जरूरत आज के समय में पहले की अपेक्षा कहीं अधिक है। आज जब हम एक सभ्यतामूलक संकट में फंसे हुए से हैं, तब उसी सामूहिक विवेक की मशाल जलाने की जरूरत आ पड़ी हैजो अपने समय में गाँधी जी ने जलाई थी। गाँधी के प्रभाव को जीवन के कई क्षेत्रों में निश्चित रूप से चिन्हित किया जा सकता है, भले ही वह सिर्फ मूर्तियों, तस्वीरों या नोटों में इस्तिहार मात्र रह गए हों कुछ लोगों के लिए, पर फिर भी, उनके अंतर्मन में भी गाँधी शेष रह जाते हैं कहीं न कहीं। साढ़े सात दशक की अनुपस्थित उपस्थिति यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है कि उनका स्थान क्या है और लंबे समय से उन्हें खारिज करने का प्रयास किस परिणाम पर पहुंचा है? उनके घोर विरोधी भी उन्हें जीवित रखने और सिर्फ प्रतिमाओं तक सीमित कर देने के अपने प्रयास में असफल रहने के लिए अभिशप्त हैं क्योंकि गाँधी के बिना उनका अस्तित्व भी खतरे में है।

अपनी चिंतन और विचार पद्धति के कारण महात्मा गाँधी विचारक, भाष्यकार और लेखक के रूप में न केवल विश्व भर में विख्यात रहे, वरन विश्वभर के साहित्य तथा साहित्यकारों को प्रभावित भी किया। आगे बढ़ने से पूर्व मैं यहाँ पर सुविख्यात नाटककार जॉर्ज बर्नाड शॉ के सूत्रवाक्य को उद्धृत करना चाहूंगी। गाँधी के प्रभाव के बारे में पूछने पर उन्होंने आश्चर्य से प्रति प्रश्न किया था– "गांधी के प्रभाव? आप हिमालय के कुछ प्रभावों के बारे में पूछ सकते हैं।" यह एक वाक्य बता रहा है कि गाँधी का प्रभाव सिर्फ जॉर्ज बर्नाड शॉ पर ही नहीं, विश्व की समस्त साहित्यकारों पर कितना और किस रूप में था? आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने अपनी प्रसिद्ध

पुस्तक 'उत्तरी भारत की संत परंपरा' में महात्मा गाँधी को संत की श्रेणी में रखकर लगभग दस पृष्ठों में गाँधी के जीवनवृत्त, कार्यप्रवृत्ति और उनके मतों का गंभीरतापूर्वक विश्लेषण कर प्रतिपादित किया है कि महात्मा गाँधी जी की आस्तिकता, विश्व कल्याण की भावना, मानव समाज कीएकता में पूर्ण विश्वास, विचार, स्वतंत्र स्वानुभूति के प्रति आस्था, विडंबनाओं से असंतोष, सार्वभौम विचार, विश्व प्रेम तथा सबसे बढ़कर अपने शुद्ध आचरण द्वारा सिद्धकिया आदर्श व व्यवहार का सामंजस्य संतों के ही अनुरूप था। गजानन माधव मुक्तिबोध ने 'भारत के इतिहास और संस्कृति' पुस्तक में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को देश की उन महत्तम विभूतियों में से एक माना है जिन्होंने देश और विश्व के बड़े–बड़े मनुष्यों के विचारों को अपने में रंग दिया और भारतीय जनता को नए आध्यात्मिक संस्कार प्रदान किए तथा राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विशुद्ध नैतिक अस्त्र–अहिंसा और सत्याग्रह का सफलतापूर्वक प्रयोग किया। साथ ही उन्होंने अपने सुख या दुःख को न देखकर दूसरों के दुःख को देखा–"वैष्णव जनतो तेने कहिए, जे पीर पराई, जाने रे" बकौल मुक्तिबोध, इस पराई पीर के पीछे उन्होंने अपना सब कुछ त्याग दिया था, इसलिए वह महात्मा थे। ऐसे महात्मा जो जनता को एक चुंबक की भांति अपने आकर्षण में बांध लेते हैं, उन्हें मंत्रमुग्ध कर देते हैं। असल में गाँधीव्यक्ति को समाज से, प्राचीन को भविष्य से जोड़ रहे थे। वह ऐसी कला और ऐसा साहित्य चाहते थे जो करोड़ों जनता से बोल सके, उनमें नैतिक साहस भर सके। वस्तुतः वह ब्रिटिश साम्राज्य पर नैतिकतापूर्ण जनशक्ति के आघात के प्रबल पक्षधर थे।

हिंदी साहित्य में गाँधी कहीं व्यक्ति के रूप में उपस्थित हैं तो कहीं विचार के रूप में और कहीं–कहीं दोनों रूपों में ही उनको लक्षित किया जा सकता है। रामनरेश त्रिपाठी के काव्य पथिक, प्रेमचंद के उपन्यास रंगभूमि और गिरिराज किशोर के उपन्यास 'पहला गिरमिटिया' जैसी कृतियों में जहाँ गाँधी व्यक्ति और विचार दोनों रूपों में दिखाई पड़ते हैं वहीं, 'मैला आंचल' उपन्यास मे, उनके विचारों को समय की कसौटी पर कसकर उनके हश्र को भी रेखांकित किया गया है।

गाँधी के प्रति आकर्षित या उनसे प्रभावित होने वाले लेखकों, विचारकों, रचनाकारों और कवियों की एक लंबी सूची है, जिसमें मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, जानकी वल्लभ शास्त्री, सोहन लाल द्विवेदी, भवानी प्रसाद मिश्र, सुमित्रानंदन पंत, हरिवंश राय बच्चन, भगवती चरण वर्मा, रामेश्वर शुक्ल, अंचल, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', जैनेंद्र कुमार, प्रसाद, प्रेमचंद जैसे कई बड़े नाम शामिल हैं। इस तरह गाँधी चिंतकों, साहित्यकारों, रचनाकारों के यहाँ बहुविध लक्षित किए गए हैं। बावजूद इसके हिंदी आलोचना जगत में गाँधी प्रायः उपेक्षित ही रहे, जबकि गाँधी निश्चित रूप से साहित्य को कुछ नए मूल्यों पर विचार करने का अवसर देते हैं। विभिन्न दृष्टियों के बीच कुछ नए रास्तों की तलाश में सहायता करते हैं। साहित्य समाज राजनीति की विभिन्न प्रवृतियों को उलट पलटकर देखने परखने के लिए मानक उपलब्ध कराते हैं। गांधीवाद पर खूब बातें बहसें हुई है और हो रही है आगे भी होंगी, लेकिन हिंदी आलोचना जगत में गांधीवादी आलोचना की कोई श्रेणी निर्धारित करने में अब तक चौतरफा चुप्पी रही है जो खटकती है। इसी ओर मैं विद्वतजनों का ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगी।

**– डॉ. अमिता प्रकाश**

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सोमेश्वर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 11-16

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# आधुनिक हिन्दी कविता पर गाँधी के वैचारिक दर्शन का प्रभाव

**डॉ. अनिता जोशी**

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी, एम0 बी0 राज0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल) 263139

**शोध सार :–**

आधुनिक युग के क्षितिज पटल पर महात्मा गाँधी का अवतरण विशिष्ट महत्व रखता है। उनके विशिष्ट व्यक्तित्व, विचार धारा, दर्शन, चिंतन–मनन ने संपूर्ण युग–मनीषा को आंदोलित किया। साहित्य का क्षेत्र भी इससे अछूता न रहा। हिन्दी साहित्य की गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं पर गाँधी के वैचारिक दर्शन का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा। गाँधी दर्शन के प्रमुख तत्व यथा सत्य, अहिंसा, प्रेम, सर्वोदय, साधन, एवं साध्य की पवित्रता, सत्ता का विकेन्द्रीकरण, मानवतावाद, लोक कल्याण, शांति, हृदय परिवर्तन, विश्व बंधुत्व आदि हिंदी साहित्य की समस्त विधाओं में भिन्न–भिन्न स्वरूपों एवं विभिन्न कालों में दिखाई देते हैं। आधुनिक हिन्दी कविता में भी मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, नरेन्द्र शर्मा, राम नरेश त्रिपाठी, भवानी प्रसाद मिश्र, सुमित्रानंदन पन्त आदि कवियों के काव्य पर गाँधी के वैचारिक दर्शन की प्रत्यक्ष या परोक्ष छवि देखने को मिल जाती है।

**कूट शब्द :–** वैचारिक दर्शन, अहिंसा सर्वोदय, विश्व बंधुत्व, मानवतावाद।

आधुनिक युग के क्षितिज पटल पर महात्मा गाँधी का अवतरण विशिष्ट महत्व रखता है। उनके विशिष्ट व्यक्तित्व, विचार धारा, दर्शन, चिंतन–मनन ने संपूर्ण युग–मनीषा को आंदोलित किया। गाँधी एवं उनके प्रभाव ने अन्यान्य क्षेत्रों के साथ–साथ साहित्य के क्षेत्र को भी झंकृत किया। हिन्दी साहित्य भी इससे अछूता कैसे रहता? उसकी समस्त विधाओं में गाँधी के वैचारिक दर्शन का आलेखन हुआ। हिन्दी साहित्य की गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में गाँधी के वैचारिक दर्शन का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा।

वस्तुतः गाँधी दर्शन की व्यापकता गाँधी व्यक्तित्व की व्यापकता से सीधे जुड़ी है। गाँधी जी की निजी अनुभूतियाँ तथा तदनुरूप बनी सम्मतियाँ ही इस विचारधारा में समाहित हैं। गाँधी–दर्शन के प्रमुख तत्व यथा–सत्य, अहिंसा, प्रेम, सर्वोदय, साधन, एवं साध्य की पवित्रता, सत्ता विकेन्द्रीकरण, मानवतावाद, लोक कल्याण, शांति, हृदय–परिवर्तन, विश्व बंधुत्व आदि हिंदी साहित्य की समस्त विधाओं में भिन्न–भिन्न स्वरूपों एवं विभिन्न कालों में दिखाई देते है। आधुनिक हिन्दी कविता पर भी गाँधी के वैचारिक दर्शन का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

गाँधी दर्शन सत्य और अहिंसा पर आधारित है, जहाँ मानव–मात्र के प्रति स्नेह सर्वोपरि है। गाँधी जी ने

सत्य को भगवद् रूप माना था। भवानी प्रसाद मिश्र जी ने उसी सत्य पर निष्ठा रखते हुए लिखा :–

बोले तो हमेशा सच
सच से हटे नहीं,
झूठ के डराये से
हरगिज डरे नहीं
मनुष्य वही सच्चा है।'[1]

गाँधीवाद के प्रेम भाव को सामान्यजन के लिए अति आवश्यक मानते हुए वे भ्रमित व्यक्ति के हृदय को उसी के माध्यम से परिवर्तित करना चाहते है :–

यदि सचमुच ही वह फिसल गया
या पकड़ी उसने गलत राह
तो सख्त बात से नहीं, स्नेह से
काम जरा लेकर देखो।'[2]

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' भी सत्य के मूल्य को प्रतिष्ठित करते हुए 'उर्मिला' में लिखते है :–

सदा एक ही वस्तु पूज्य है
वह है सत्य असत्य नहीं।'[3]

गाँधी के अहिंसात्मक मूल्यों की प्रतिष्ठा करते हुए रामनरेश त्रिपाठी जी ने 'पथिक' में लिखा :–

रक्तपात करना पशुता है, कायरता है मन की,
अरि को वश करना चरित्र से शोभा है सज्जन की।'[4]

नरेन्द्र शर्मा ने राष्ट्रपिता गाँधी के देहावसान से प्रेरित हो 'रक्त चंदन' का प्रणयन किया। गाँधी जी के सत्य, अहिंसा, प्रेम के सिद्धांतों को स्वीकारते हुए उन्होंने लिखा :–

स्वर्ग और पृथ्वी के बीचों–बीच
ज्योति रेख असि धारा–पथ की खींच
त्याग उभय लोकों के वैभव योग्य
बना गए जीवन को जीने योग्य।'[5]

जयशंकरप्रसाद द्वारा रचित 'कामायनी' में भी गाँधी की अहिंसक विचारधारा का प्रभाव दिखाई देता है :–

अपनी रक्षा करने में जो
चल जाय तुम्हारा कहीं अस्त्र,
वह तो कुछ समझ सकी हूँ मैं –
हिंसक से रक्षा को शस्त्र
उपकारी होने में समर्थ
वे क्यों ना जियें, उपयोगी बन–
इसका मैं समझ सकी न अर्थ!'[6]

वर्तमान परिदृश्य में गाँधी जी की प्रासंगिकता पर 'दिनकर' ने लिखा था कि ''विस्मय की बात यह है कि

गाँधी जी की जो साधना सबसे कठिन थी, उसी की सार्थकता आज के प्रसंग में स्वीकार की जा रही है। इसमें विस्मय की कोई बात नहीं है। गाँधी जी का सबसे बड़ा अवदान सत्याग्रह था, हिंसा का मुकाबला अहिंसा से करना था। यदि यह गुण निरर्थक हो जाए, तो गाँधीवाद की अपनी सारी सार्थकता संदिग्ध हो जायेगी।'[7]

गाँधी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को पूर्णतया आत्मसात करने वाले कवि भवानी प्रसाद मिश्र ने स्वीकारा था कि हिंसा के बदले हिंसा करने में कोई क्रांति नहीं है। ''क्रांति तो है शत्रु को समझाकर गले लगाने में। इस क्रांति का साधन है– मानवीय सहानुभूति, करूणा,हृदयपरिवर्तन, आत्मशुद्धि, प्रेम का जीव–मात्र में विस्तार। इस कार्य के लिए अपने–पराए के बाहरी भेदों को भूलकर भीतरी एकत्व की ओर बढ़ना होगा। भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुंबकम की भावना का यही आधार है।'[8]

'प्रलय' शीर्षक कविता में लोक मांगल्य की भावना से प्रेरित हो मनुष्य के दायित्व का निर्धारण करते हुए भवानी प्रसाद मिश्र जी ने लिखा :–

इस दुःखी संसार में जितना
बने हम सुख लुटा दें,
बन सके तो निष्कपट मृदु हास के,
दो कन जुटा दें,
दर्द की ज्वाला जगायें,
नेह भीगे गीत गायें।'[9]

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी के काव्यालोक में गाँधीवाद प्रकाशित हुआ। 'खादी के फूल' कविता में गाँधी चेतना के प्रसार–प्रचार की बात कवि ने की :–

''बापू की चेतना बने पिक का नव कूजन
बापू की चेतना बसंत बिखरे नूतन।'[10]

उनके 'युगांत' काव्य संग्रह में गाँधी–दर्शन की अभिव्यक्ति पाते हैं तो 'युगवाणी' में गाँधी जी के 'आत्मवाद' के दर्शन होते हैं। 'बापू' कविता की कुछ पंक्तियाँ इसका उदाहरण हैं :–

'नहीं जानता युग विवर्त में होगा कितना जन क्षय
पर मनुष्य को सत्य अहिंसा इष्ट रहेंगे निश्चय
नव संस्कृति के दूत! देवताओं का करने कार्य
मानव आत्मा को उबारने आये तुम अनिवार्य।'[11]

'बापू के अतिरिक्त 'चींटी', 'पतझर', 'मानव पशु' आदि रचनाओं में भी गाँधीवादी विचार धारा की अभिव्यंजना हुई है। 'युगवाणी' में संकलित 'किसान', 'साम्राज्यवाद', 'धनपति' आदि कविताओं में अभिव्यक्त सामाजिक क्रांति में कवि गाँधीवादी दर्शन से ही प्रभावित नज़र आते हैं।

गाँधी जी के प्रेम–भाव को सामान्य जन के लिए अति आवश्यक मानते हुए भवानी प्रसाद मिश्र जी भ्रमित व्यक्ति के हृदय को उसी के माध्यम से परिवर्तित करना चाहते हैं। वे मानव का कर्त्तव्य 'गिरे हुओं को उठाना' मानते हैं :–

जो गिरे हुए को उठा सके

इससे प्यारा कुछ जतन नहीं
दे प्यार उठा पाए न जिसे
इतना गहरा कुछ पतन नहीं।'[12]

गाँधी जी ने माना था कि दीन–हीन दुःखी लोगो की सेवा में ही जन–प्रतिनिधियों एवं नेताओं की सार्थकता है। निश्छलता से जग जन की सेवा ही प्रभु का वंदन है। 'हरिनारायण व्यास' मित्र के साहचर्य में एक पथ पर चलते हुए, संसार के दुःख दर्द को धोते हुए अपनी मित्रता को अभिन्न ज्योति–किरणों से संजो देने के आकांक्षी हैं :–

हम इसी पथ पर चलें
संसार का दुःख दर्द धो दें
इस हमारी मित्रता के दीप को
एक अभिनव ज्योति किरनों से संजो दे।'[13]

प्रयाग नारायण त्रिपाठी जी भी दार्शनिक मुद्रा से अभिभूत हो 'लक्ष्य' शीर्षक कविता में व्यष्टि से समष्टि की ओर जाने की बात करते हैं :–

सौदा सौदा है तभी अगर सेवा है
सेवा सेवा है तभी, अगर अर्पण है।
अर्पण अर्पण है तभी, अगर पीड़ा है
पीड़ा पीड़ा है तभी, अगर सौहं है
सौहं जब त्वं हो जाय तभी सौहं है,
सौहं का त्वं में लय ही लक्ष्य परम है।'[14]

गाँधी जी का विचार दर्शन ही मानवता का सही व स्तुत्य मार्ग है। भवानी प्रसाद मिश्र जी ने भी अपने एक साक्षात्कार में कहा था कि 'गाँधी विचार–दर्शन में मेरी अटूट आस्था है, जिसे पश्चिम की कोई विचारधारा खण्डित नहीं कर सकी।'[15]

गाँधी विचारधारा से प्रभावित उनकी प्रमुख रचना 'गाँधी पंचशती' है। इसके अतिरिक्त 'कालजयी ' (प्रबन्ध काव्य), 'बुनी हुई रस्सी', 'चकित है दुःख', 'परिवर्तन जिए' और 'व्यक्तिगत' आदि काव्य–संग्रहों पर भी गाँधी–दर्शन की छाप दिखाई पड़ती है। समकालीन कविता के नये कवियों में गाँधी विचारधारा को संपूर्ण आस्था से काव्य–आचरण में ढालने वाला ऐसा कवि दुर्लभ है।

मुक्तिबोध भी मानवता को उसके प्रकृत रूप में देखते हैं। अखिल मानवता के प्रति जो उद्‌गार उन्होंने व्यक्त किए हैं, उनमें समान वैशिष्ट्य और आत्मविश्वास के स्वर भी सुनाई पड़ते हैं। जहाँ वे एक ओर प्रत्येक मनु के पुत्र पर अगाध विश्वास करना चाहते हैं :–

उसमें भागता है एक तारा
जो कि अपने ही प्रगति पथ का सहारा
जो कि अपना ही स्वयं बन चला चित्र
भीतिहीन विराट–पुत्र

इसलिए प्रत्येक मनु के पुत्र पर विश्वास करना चाहता हूँ।'[16]

नरेश मेहता भी काव्य को 'मानवीय मन की ऊर्ध्वचेता, आकांक्षा मानते हैं।' उन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में कभी भी गाँधीवादी विचारधारा को नहीं स्वीकारा, फिर भी मानवता के प्रति उन की गहन आस्था परोक्षतः गाँधीवादी दर्शन की झलक ही इंगित करती है। विज्ञान के विध्वंसक रूप में युद्धों के फलस्वरूप मानवता की जो क्षति हुई है, उसके चित्र उनके काव्य में मिलते हैं :–

समय देवता! बम के गोलों से भी धरती बांझ हुई है
एटम और उद्जन बम हैं नभगामी महलों के कर में
चाह रहे जो सृष्टि धरा को केवल हिरोशिमा कर देना।'[17]

अंततः वे उस शांति की तलाश चाहते हैं जो न तो वैज्ञानिक यंत्रों से प्राप्त हो सकती है और ना ही यंत्रों को शासित करने वाली मानव विरोधी राजनीति से ही :–

विश्व शांति का आह्वान इन राजनीति के भवनों में तो सदा असंभव
वह जन–रव से दूर हंस रही दूब बिछाये धरती माता
विश्वम्भरा रूपमयी वह
सरित सोम के कलश भरे बैठी पुत्रों की आस लगाये।'[18]

युद्धों से थका–हारा मानव अंततः प्रकृति की गोद में ही शरण चाहता है :–

युद्धों के दर्रो से मानव लुटा हुआ–सा आज एक मैदान चाहता।
और चाहता देश–देश की अपनी कटी हुई नदियों का जोड़
खेत में पानी देना।'[19]

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि आज के इस भौतिकतावादी युग में जीवन–मूल्यों और आदर्शों का निरंतर ह्रास हो रहा है। ऐसे में गाँधी जी के विचार–दर्शन एवं आदर्शों की और भी अधिक आवश्यकता हो गई है क्योंकि गाँधी कोई व्यक्ति या विचारधारा नहीं अपितु जीवन का समग्र दृष्टिकोण है। जिस पर चलकर कोई भी मनुष्य अपने जीवन को सफल बना सकने में समर्थ हो सकता है। गाँधी जी युगदृष्टा एवं युगसृष्टा महापुरूष थे। उनके विचार, उनके मूल्य, उनके आदर्श आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने तब थे।

**संदर्भ संकेत :–**


1. दूसरा सप्तक : सं0 अज्ञेय, पृ. संख्या–34
2. वही, पृ. संख्या–35
3. उर्मिला : बालकृष्ण शर्मा नवीन, पृ.संख्या 556
4. आधुनिक हिन्दी कविता : परंपरा और परिवेश, डॉ. आदित्य प्रचण्डिया, तारामण्डल, अलीगढ़, पृ. संख्या –49
5. वही, पृ. संख्या– 129
6. कामायनी (ईर्ष्या सर्ग) – जयशंकर प्रसाद, पृं. संख्या – 60
7. समकालीन सृजन (विशेषांक) : सं–लक्ष्मण केडिया (भवानी प्रसाद मिश्र के आयाम) पृ. संख्या– 76
8. भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य संसार –डॉ. कृष्ण दत्त पालीवाल पृ. संख्या –143

9. दूसरा सप्तक : सं. अज्ञेय, पृ. संख्या– 33
10. आधुनिक हिन्दी कविता : परंपरा और परिवेश – डॉ0 आदित्य प्रचण्डिया, पृ. संख्या– 83
11. वही, पृ. संख्या– 84
12. दूसरा सप्तक – सं0 अज्ञेय, पृ. संख्या– 25
13. वही, पृ. संख्या– 13
14. तीसरा सप्तक – सं0 अज्ञेय, पृ. संख्या– 25
15. भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य संसार – डॉ0 कृष्ण दत्त पालीवाल, पृ. संख्या– 150
16. तार सप्तक : सं. अज्ञेय, पृ. संख्या – 27
17. दूसरा सप्तक : सं. अज्ञेय, पृ. संख्या – 126
18. वही, पृ. संख्या–127
19. वही, पृ. संख्या– 132

मो0 नं0 9411596889
Email – anujoshia54@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 17-20

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गाँधी के राम बनाम साहित्य के राम

**बबीता दौरियाल**

शोधार्थी, हु0 सिं0 बो0 रा0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर, पिन–263637, (उत्तराखण्ड)

**शोध सारांश :–**

गाँधी एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक विचारधारा है जिसका प्रभाव केवल भारत पर ही नहीं बल्कि विश्वपटल पर भी पड़ा है। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों ही अद्वितीय है। गाँधी जी सत्य, अहिंसा के पुजारी थे। 'सर्वधर्म समभाव' उनके लिए केवल उक्ति नहीं बल्कि उनके विचारों में भी झलकती है। राम नाम के प्रति गहरी आस्था के साथ सभी धर्मो के प्रति सम्मान एवं सभी लोगों के प्रति प्रेम ही उनकी सच्ची भक्ति है। यह सोच और विचार आज भी प्रासंगिक है। धर्म का अर्थ, राम का अर्थ एवं भक्ति का जो तरीका गाँधीजी द्वारा सुझाया गया वह विचारणीय है।

**संकेत शब्द** – रामनाम, राष्ट्रपिता, रामभक्ति, मर्यादा पुरूषोत्तम, सर्वव्यापी, सर्वधर्म समभाव, अजन्मा एवं अद्वितीय।

**प्रस्तावना :–**

राष्ट्रपिता, गाँधी, बापू जी ये ऐसे नाम हैं जिनके उच्चारण मात्र से प्रत्येक भारतीय के मन–मस्तिष्क में स्वयं ही एक महात्मा का चित्र उभर कर सामने आ जाता है। गाँधी जी भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के सर्वोच्च महारथी, महान दार्शनिक, विचारक, सन्त और एक सच्चे भक्त भी थे। सम्पूर्ण विश्व गाँधी की विनम्रता, सच्चे स्वभाव व ईमानदारी के आगे नतमस्तक है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया और कार्य के प्रति सम्मान की भावना से ओत–प्रोत ऐसे व्यक्तित्व का ही नाम गाँधी है, जिनके विचारों का हर वर्ग, हर विषय, हर क्षेत्र में विशेष महत्व है। फिर चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, राजनीति का क्षेत्र हो या फिर धार्मिक आस्था का हो। महात्मा गाँधी वास्तव में एक युग निर्माता थे। इस महान पुरूष ने देश में एक नयी चेतना, नया स्वर, जीवन जीने हेतु लोगों को एक नया दर्शन दिया। सत्य एवं अहिंसा के पुजारी, स्वदेश प्रेमी गाँधीजी भारत के राष्ट्रपिता कहलाते है। गाँधीजी आध्यात्मवाद से ओत–प्रोत थे। उनकी विचारधाराओं पर आध्यात्म एवं धर्म का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। महात्मा गाँधीजी ने जीवन में ईश्वर, सत्य, अहिंसा, प्रेम, नैतिकता आदि को सर्वाधिक महत्व दिया है। गाँधीजी का जीवन विभिन्न धर्मों से प्रभावित था।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य गाँधी जी के व्यक्तित्व एवं उनका राम एवं विभिन्न धर्मों के प्रति दृष्टिकोण की विवेचना करना है।

**साहित्य के राम :–**

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में राम एक आदर्श एवं गौरवमयी प्रतिभा के रूप में व्याप्त है। 'वाल्मीकि

रामायण' को राम भक्ति परम्परा का आधार माना गया है और भक्ति की परम्परा को आगे बढ़ाने हेतु इन्हीं को आधार मानकर अनेक साहित्य ग्रंथों की रचना की गई। दक्षिण भारत में आलवार सन्तों द्वारा राम भक्ति का प्रारम्भ माना गया और उत्तर भारत में रामानुज शिष्य परम्परा के आचार्य रामानन्द को रामभक्ति के प्रचार प्रसार का श्रेय जाता है। वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत की अणुगीता में राम को पौराणिक महापुरूष ही माना गया है। वाल्मीकि रामायण में राम को केवल दशरथ–पुत्र, सीतापति व एक वीरपुरूष के रूप में प्रस्तुत किया गया था। उसके बाद संस्कृत में राम साहित्य की अनेक रचनाऐं लिखी गयी। जानकीहरणम्, रामचरित, रामायाण मंजरी आदि। कालिदास ने भी रघुवंश की रचना की परन्तु तब तक भी राम अवतारी राम के रूप में प्रतिष्ठित नहीं हुए थे। बाद में रामानन्द शिष्य परम्परा के विभिन्न आचार्यों द्वारा रामभक्ति परक काव्यों की रचनाएँ की और इस परम्परा को आगे बढ़ाया।

संस्कृत, हिन्दी के साथ अनेक भारतीय भाषाओं में राम भक्ति परक साहित्य रचे गये। जैसे–जैसे रामभक्ति की महिमा बढ़ती गई वैसे–वैसे राम के मायने भी बदलते गये। तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य रामचरितमानस ने राम की ऐसी छवि प्रस्तुत की जिसका प्रभाव आज तक लोगों के मन– मस्तिष्क पर विद्यमान है। उन्होनें राम को एक साधारण पुरूष नहीं बल्कि मर्यादा पुरूषोत्तम व विष्णु के अवतार के रूप में प्रस्तुत किया। इसके बाद मर्यादा पुरूषोत्तम राम परब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठित हो गये। तुलसीदास जी ने दुनिया के समक्ष रामचरितमानस को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि वह लोगों के लिए सहज ग्राह्य हो गया। जिससे राम का चरित्र लोगों के मन–मतिष्क में रच–बस गया। रामचरितमानस के बाद अनेक राम काव्य रचे गये जैसे – केशवदास की रामचन्द्रिका, अग्रदास की ध्यानमंजरी, प्राणचन्द चौहान का रामायण महानाटक आदि, किन्तु रामचरितमानस के उत्कर्ष तक नहीं पहुंच पायी। वाल्मीकि रामायण के राम को तुलसीदास ने नये रूप में रच कर ऐसा चरित्र प्रस्तुत किया कि जिसने जनमानस के हृदय को प्रफुल्लित कर दिया। इस प्रकार तुलसी ने राम को शील, सौन्दर्य, शक्ति सम्पन्न, मर्यादा पुरूषोत्तम एवं विष्णु के अवतार के रूप में प्रस्तुत किया। अनन्तदास के शिष्य परम्परा के अग्रदास ने तुलसी के रामचरितमानस की रामकथा में रस का निरूपण कर उस परम्परा को आगे बढ़ाने का कार्य किया। राम की महिमा का बखान उन्होने इस प्रकार किया–

"पहरे राम तुम्हारे सोवत मैं मति मंद अंध नहि जोवत।
अपमारग मारग महिं जान्यो इन्द्रपोषि पुरूषारथ मान्यो ।
औरन के अनन्त प्रकार, अगरदास के राम अधार।"[1]

भक्ति काव्य धारा के निर्गुणपंथ के कवि कबीर दास जी ने निर्गुण निराकार ब्रह्म के रूप को 'राम' कहा है। उनका राम सगुण राम के राम से भिन्न हैं। कबीर ने राम को लीला एवं अवतारवाद से सर्वथा मुक्त माना है। उन्होने ब्रह्म के विभिन्न नाम राम, रहीम, हरि, गोविन्द, जगदीश आदि बताया। कबीर कहते है कि जिस राम और कृष्ण की चर्चा आप सुनते हैं वह देवता नहीं अपितु सामान्य मानव हैं। वे कहते हैं :–

दसरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।
राम नाम को मरम है आना।।[2]

कबीर ने भी राम को निर्गुण, निराकार, अद्वैत, अजन्मा बताया :–

जाके मुँह माथा नहीं नाही रूप कुरूप।

पुहुप बासतै पातरा ऐसा तत्त अनूप।।[3]

कबीर ने राम के विषय में कहा है–

चार राम है जगत मे, तीन राम व्यवहार।
चौथा राम सो सार है, ताका करो विचार।।[4]

ऐसा ही एक और उदाहरण–

एक राम दसरथ घर डोलै, एक राम घट–घट बोलै।
एक राम का सकल पसारा, एक राम हैं सब से न्यारा।।[5]

कवि रैदास जी ने भी राम के विषय में कहा है –

रैदास हमारौ राम जी दसरथ करि सुत नाहिं।
राम हमऊ मांहि रहयो, विसब कुटुंब माहिं।।[6]

**गाँधी के राम :-**

हिन्दू परिवार में जन्म होने के कारण पूजा–पाठ व बार–बार मन्दिर जाना आम था परन्तु, फिर भी गाँधी जी के मन में श्रद्धा उत्पन्न नहीं हुई। परन्तु जो श्रद्धा मन्दिर जाने से उत्पन्न न हो सकी वो धाय रम्भा (पुरानी नौकरानी) से उत्पन्न हुई। गाँधी जी बचपन में भूत–प्रेत से डरते थे तो रम्भा ने बताया कि राम नाम का जाप ही इसकी दवा है। उसी समय रामनाम का यह बीज बोया गया और वो कभी नष्ट नहीं हुआ। माता–पिता वैष्णव धर्म के अनुयायी थे परन्तु, उनके पिताजी के जैन, पारसी व मुस्लिम दोस्त अक्सर उनसे मिलते रहते थे और अपने– अपने धर्मों की चर्चा करते रहते थे। उनके पिताजी सभी की बातें बड़े सम्मान व रस पूर्वक सुनते थे। इस वातावरण का प्रभाव गांधी जी पर भी पड़ने लगा। जिससे उनका दृष्टिकोण भी सभी धर्मों के प्रति समान हो गया।

राम के विषय में गांधी जी का कहना है कि ''मेरा राम दशरथ पुत्र राम या अयोध्या के राजा राम नहीं है बल्कि मेरे राम तो सनातन, अजन्मा, अद्वितीय राम है और मैं उसी (निराकार) की पूजा करता हूँ तथा आपको भी यही करना चाहिए।''[7]

गाँधी जी का मानना था कि रामनाम और रामधुन सिर्फ हिन्दुओं के लिए नहीं है बल्कि मुसलमान, पारसी, ईसाई सभी रामनाम ले सकते है। ये जरूरी नहीं कि वे राम के ही रूप में नाम ले, वे अल्लाह, खुदा किसी भी तरह नाम जप सकते हैं, क्योंकि सर्वशक्तिमान एवं सर्वव्यापी ईश्वर तो एक ही है और जो नाम हमें पसन्द हो उसी नाम से उसे याद कर सकते है। वे कहते हैं कि राम से रामनाम बड़ा है। हिन्दू धर्म महासागर है जिसमें अनेक रत्न है और ईश्वर के अनेक नाम। सैकड़ों लोग हैं जो राम और कृष्ण को ऐतिहासिक पुरूष मानते हैं। उनके लिए दशरथ पुत्र राम ही ईश्वर है और उनकी पूजा से उन्हें मुक्ति मिलती है।

गाँधी जी ने रामनाम को सभी बीमारियों की रामबाण दवा बताया है। वे कहते हैं कि हृदय में राम के नाम से सारी मानसिक, नैतिक एवं भौतिक दुःखों का नाश हो जाता है। जो राम इन सभी बीमारियों की रामबाण औषधि है, वह राम ना कभी पैदा हुआ न किसी ने उसे बनाया। इसलिए वे कहते है कि सभी धर्मों को बर्दाश्त कीजिए और उनकी इज्जत कीजिए। मैं स्वयं मूर्ति पूजा को नहीं मानता परन्तु मैं मूर्ति पूजकों की इज्जत करता हूँ। हिन्दू, मुस्लिम और अन्य सभी धर्मों का निचोड़ एक ही है। उनका मानना है कि ''अगर मैं अच्छा हिन्दू हूँ तो मैं एक

अच्छा ईसाई,एक अच्छा मुसलमान भी हूँ। अपने को या अपने धर्म को दूसरों से ऊँचा मानने का दावा करना धर्म भावना के खिलाफ है। नम्रता अहिंसा की जरूरी शर्त है। उन्होने कहा है कि हिन्दू धर्म ग्रंथों में ईश्वर के हजारों नाम बताये गये हैं तो रहीम उनमें से एक क्यों नहीं हो सकता? ईश्वर की तारीफ करने और मोहम्मद को पैगम्बर मानने में मुझे कोई हिचकिचाहट नहीं है। इसलिए यदि आप उस सर्व शक्तिमान और सर्वव्यापी भगवान के गुलामी को मंजूर करते है तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप उसे किस नाम से पुकारते है।''[8]

**निष्कर्ष :-**

निष्कर्ष यह निकलता है कि गाँधी के राम में और साहित्य के राम में इतना ही अन्तर है कि जहाँ साहित्य के राम मर्यादा पुरूषोत्तम, अवतारी एवं विभिन्न लीलाऐं करने वाले राम हैं वहीं गाँधी जी के राम अजन्मे, अद्वितीय राम है। वे स्वयं ईश्वर ही है। साहित्य के राम सगुण है गाँधी के राम निर्गुण निराकार हैं। कबीर के राम व गाँधी जी के राम में समानता देखी जा सकती है। गाँधी जी ने राम से बड़ा रामनाम को स्वीकार किया है। इसी प्रकार गाँधी के राम कबीर व रैदास आदि के राम से मिलते है क्योंकि इन्होने भी राम की महिमा का वर्णन इसी प्रकार किया है। इनके अनुसार भी राम अजन्मे और निराकार ब्रह्म है। वे किसी के पुत्र और कहीं के राजा नहीं है। गाँधी जी के राम सिर्फ हिन्दुओं के राम नहीं बल्कि मुस्लिमों के अल्लाह, ईसाईयों, जैन, पादरियों सभी का ईश्वर एक राम ही है। बस उन्हें याद करने व पुकारने के नाम अलग–अलग है। बाकी सभी धर्मों का सार एक ही है।

**सन्दर्भ सूची :-**


1. www.kabirsiddhant.blogspot.com
2. www.hindikunj.com
3. वही
4. www.hindikunj.com
5. www.hindikunj.com
6. www.hindikunj.com
7. रामनाम, गाँधीजी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद।
8. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, मोहनदास करमचन्द गाँधी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद।
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।



मो0न0 – 9456317971, 9119746924

Email- dauriyalbabita@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 21-25

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन के प्रति ब्रिटिश सेवी वर्ग की मनोवृत्तिसर हरकोर्ट बटलर के विशेष सन्दर्भ में एक मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

**डॉ. बीना जोशी**

असि0 प्रो0–राजनीति विज्ञान रा0 महिला महाविद्यालय, हल्द्वानी, (नैनीताल)

**सारांश :–**

सन् 1900 से लेकर 1930 तक का भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास वास्तव में धर्म राजनीति का इतिहास रहा है। अध्ययन से यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेज नौकरशाही किसी न किसी रूप में मुसलमानों में हिन्दुओं के विरूद्ध घृणा, द्वेष, सन्देह और भय को जन्म देना चाहती है। पान इस्लामावाद का हव्वा इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए खड़ा किया गया। असहयोग आन्दोलन की समाप्ति के बाद भारतीय राजनीतिक मंच पर सांप्रदायिकता के नाटक के मुख्य लेखक बटलर जैसे अंग्रेज नौकरशाह ही थे। उन्होंने शुद्धि और संगठन तथा तनजीम व तबलीग जैसे सांप्रदायिक आन्दोलनों को कभी भी कठोरता से नहीं कुचला, क्योंकि यह साम्प्रदायिक प्रक्रिया उनके हित में थी। ब्रिटिश नौकरशाही की मनोवृत्ति की अन्तिम उपज मोहम्मद अली जिन्ना थे। अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि सेवी वर्म जिन्ना को पसन्द न करते हुए भी उन्हें अपने समीप रखता था क्योंकि महात्मा गाँधी व जवाहरलाल नेहरू के विरूद्ध जिन्ना से उत्तम और कौन हो सकता था। ब्रिटिश नौकरशाही को यह कभी भी सहन नहीं हुआ कि हिन्दू व मुसलमान कोई भी वर्ग किसी भी स्तर पर संगठित हो।

**प्राक्कथन :–**

प्रस्तुत शोध पत्र इस मान्यता पर आधारित है कि, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की क्रमबद्ध कहानी वास्तव में ब्रिटिश नौकरशाही की विशिष्ठ मनोवृत्ति का नतीजा थी। भारतीय राजनीति का इतिहास 'राजनीति के खेल' का इतिहास है। जो 1857 के विद्रोह से आरंभ होता है। विलियम हन्टर की पुस्तक 'द इंडियन मुसलमान्स' मुसलमानों के प्रति नौकरशाही मनोवृत्ति को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करती है। एम0ए0ओ0 कॉलेज अलीगढ़ आन्दोलन, बंगाल विभाजन से असहयोग आन्दोलन तक की गतिविधयां ब्रिटिश नौकरशाही की मानसिकता की उपज थी, जिनमें साम्प्रदायिकता मुख्य थी। साम्प्रदायिकता का दैत्य भारत विभाजन के उपरान्त भी नहीं मरा है। बटलर की संयुक्त प्रान्त के मुसलमानों से अत्यधिक सहानुभूति थी जिसके पीछे कारण था राजभक्ति, लेकिन असहयोग आन्दोहन के समय उनकी राजनीति में कमी आयी। परिणामस्वरूप नौकरशाही को अपने अस्तित्व का खतरा पैदा हो गया। बटलर को तालुकदारों से स्वयं जाकर भेंट करनी पड़ी और उनकी राजभक्ति में आयी कमी

के प्रति उन्हें सचेत किया।

**परिकल्पना :–**

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश अधिकारियों ने मुस्लिम उलेमाओं को यह आश्वासन दिया था कि उनके धार्मिक स्थलों को नुकसान नहीं पहुंचाया जायेगा। 1919 में बटलर प्रमुख उलेमा मौलाना अब्दुलबारी से स्वयं मिले लेकिन सर हारकोर्ट बटलर प्रमुख उलेमा को अपने पक्ष में करने में असमर्थ रहा। बटलर ने बारी को राजनीति में नौसिखिये की संज्ञा दी। लेकिन संयुक्त प्रान्त में एक उलेमा समर्थक स्कूल ही ऐसा था जो ब्रिटिश नौकरशाही को अपना समर्थना प्रदान करता रहा। बटलर का नाम अवध से जुड़ा था जहाँ के तालुकदार से उसके सहानुभूति पूर्वक संबंध थे। बटलर ने गाँधी के विचारों को समर्थन नहीं दिया कि हिन्दु व मुसलमान दो बंधु हैं। बटलर ने महात्मा में प्राकृतिक व आत्मिक शक्तियों के होने से भी इन्कार कर दिया। वह सदैव मुसलमानों को शासक जाति व हिन्दुओं को शासित जाति के रूप में वर्णित करता था। कुछ तो भारत में सांप्रदायिक खाई स्वाभाविक थी, और कुछ नौकरशाही ने इसे चौड़ी करने का काम किया। सरकार मुसलमानों को दृष्टि में रखकर नीति निर्धारित करती थी। बटलर ने असहयोग आन्दोलन को दबाने का पूरा प्रयत्न किया। आन्दोलन की समाप्ति के पश्चात् बटलर ने बन्दी नेताओं की रिहाई को लेकर सावधानी बरतने का सुझाव दिया।

महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन को असफल बनाने के लिए तथा संयुक्त प्रान्त के तालुकदारों को अपने प्रभाव में लेने के लिए अंग्रेज अधिकारियों ने अपनी कूटनीति का सहारा लेना आरंम्भ करा दिया था। संयुक्त प्रांत में सर्वप्रथम बटलर सक्रिय हुआ। उसका संयुक्त प्रान्त के तालुकदारों से गहरा संबंध था। वह रोलेट बिल के पक्ष में तालुकदारों को मोड़ना चाहता था। उसने लिखा ''तालुकदारों से वार्ताओं का उत्तरदायित्व मैंने स्वयं अपने ऊपर लिया है –– अवध की 'सम्पन्नता', तालुकदारों, भूमिपतियों और किसानों को मधुर संबंधों पर निर्भर है।''[1] लेकिन वास्तविकता यह थी कि बटलर केवल तालुकदारों व भू–स्वामियों के मित्र थे किसानों का भूमि पर कोई अधिकार नहीं था। महात्मा गाँधी ने 1919 में प्रतापगढ़ में किसनों की सभा के संबोधन में भूस्वामियों को छोटे–बड़े भाई की संज्ञा दी तो बटलर की प्रतिक्रिया थी ''मैं इस संबंध को उचित नहीं मान सकता''[2] बटलर व उसके सहयोगियों ने गांधीजी के विचारों को खतरा समझना शुरू कर दिया था।

बटलर महात्मा गाँधी को विलक्षण व्यक्तित्व वाला नेता मानते थे लेकिन, अपनी पुस्तक 'इंडिया परसिसटेन्ट' में लिखा, ''1921 में वह महात्मा थे और हिन्दू जनता उनके प्रति इस कदर आकर्षित थी कि उन्हें ब्रिटिश सरकार कभी कैद नहीं कर सकती थी क्योंकि, वह प्राकृतिक शक्ति से परिपूर्ण थे, लेकिन वायसराय रीडिंग के काल में बन्दी होने पर प्राकृतिक शक्ति समाप्त हो गई।"[3] उन्होनें आगे लिखा, ''हिन्दुओं पर जो प्राचीन विचारधाराओं का प्रभाव है उस पर पश्चिमी प्रभाव को जिताना मुश्किल है।''..... मिस्टर गाँधी एक राजनीतिज्ञ के रूप में महात्मा से कम भयानक हैं।"[4]

अंग्रेजी शिक्षा दो संप्रदायों को निकट लाने में सहायक सिद्ध हुई, लेकिन नौकरशाही दृष्टिकोण दर्शाता है कि गोलमेज सम्मेलन में हारकोर्ट बटलर का प्रतिवाद था– ''जब भी ब्रिटिश सरकार भारत छोड़कर चली जायेगी तो मुसलमान उस स्थिति में यह आशा रख सकते हैं कि अपने सहधर्मियों की सहायता से अपनाशासन पुनः स्थापित कर सकें।''[5] ब्रिटिश नौकरशाही महात्मा गाँधी की मनः स्थिति तथा राजनीतिक आचरण का अध्ययन कर राजनीतिक निर्णय लिया करती थी। अंत में उनके निर्णय राजनीतिक मुद्दों की उत्पत्ति का कारण बनते।

असहयोग आन्दोलन के समय महात्मा गाँधी चुनौती थे जो एक अद्‌भुत पद्धति द्वारा ब्रिटिश सरकार का विरोध करने लगे थे। जुलाई 1921 में खिलाफत कमेटी के मंच से असहयोग आन्दोलन का कार्यक्रम घोषित हो चुका था।[6] हिन्दू मुस्लिम एकता चरमसीमा पर थी। महात्मा गाँधी के आहवान पर मुस्लिम विश्वविद्यालय के छात्रों ने विश्वविद्यालय का बहिष्कार किया और जो छात्र असहयोग आन्दोलन में कूदे थे उनके लिए जामिया मिलिया की स्थापना की गई थी। 1918 में मौलाना अबुलबारी (उलेमा) राजनीति में उतर चुके थे।

भारत में अंग्रेजी नौकरशाही की प्रकृति ही भारतीय समस्याओं का मूल कारण थी। जलियांवाला बाग की त्रासदी से स्पष्ट हो गया था कि ब्रिटिश नौकरशाही भारतीयों को दासों से भी निम्न स्तर का मानती थी। जनरल डायर का असली रूप सामने आया। मान्टेग्यू ने 17 जुलाई 1919 को अपने एक पत्र में वायसराय को लिखा –''मुझे गुस्सा उनके पाशविक एवं अनुचित मूर्खता पर आया।''[7]

विडम्बना यह थी कि अंग्रेज अधिकारी अपनी गलती स्वीकार नहीं करना चाहते थे। बटलर ने वास्तविकता को छुपाने के लिए मेरठ में कहा, राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए आन्दोलन ने कोई मार्ग नहीं दिया है। बल्कि इसके विपरीत यह स्वतंत्रता आन्दोलन का पीछे की ओर ले जा चुका है। यह आन्दोलन बुराई के साथ–साथ एक पागलपन भी है। 'इसमें उतना ही पागलपन है जितनी बुराई'[8] बटलर जैसे अधिकारियों ने इस आन्दोलन में छिपी भारतीयों की भावना को नहीं समझा। ''इस आन्दोलन को जनता ने अधोगामी बना दिया है। रेबीज विषाणु की तरह इसे बाहर निकाल देना चाहिये।''[9] बटलर ने आगे कहा, ''समय की मांग है कि लोग सरकार व शासन के संरक्षण के लिए उठ खड़े हों।''[10] मुसलमानों के संदर्भ में बटलर ने कहा, ''यह हमेशा मेरे ध्यान में रहता है कि आप में से अधिकांश व्यक्तियों ने राजभक्ति पूर्ण सेवाएं की हैं।''[11] बटलर की संयुक्त प्रांत के मुसलमानों से विशेष सहानुभूतिपूर्ण संबंध थे। उसने अनेक तालुकदारों से स्वयं भी भेंट की। पुराने संबंधों को पूर्ण स्थापित करने की बात की क्योंकि, आंदोलन के समय तालुकदारों ने ब्रिटिश राजहित में ज्यादा रूचि नहीं दिखाई। राजा जहाँगीरा वादा को इस संबंध में बताते हुए बटलर लिखता है ''असहयोग आंदोलनकारियों ने जनता को उत्तेजित किया।''[12]

इस आंदोलन के कार्यक्रम को लेकर ब्रिटिश अधिकारी अत्यधिक भयभीत व परेशान थे। अधिकारी विलियम विन्सेन्ट आंदोलन की असफलता की बात करने लगा। संयुक्त प्रांत के सचिव का विचार था ''यूरोपियनों का जीवन भारत में खतरे में है।''[13] महात्मा गाँधी ने जब संयुक्त प्रान्त में आन्दोलन तीव्र किया तो ब्रिटिश अधिकारी ने राहत महसूस की, ''मिस्टर गाँधी विद्यार्थियों को आन्दोलन में रोकने में सफल नहीं हो सके .....वह इलाहाबाद में हैं।''[14] ब्रिटिश अधिकारी असहयोग आन्दोलन को दबाने में काफी खुश थे। मिस्टर मैकी ने अपने पत्र में वायसराय को लिखा, ''मैं पूर्णतया महसूस करता हूँ कि गाँधी व उसके साथियों को उनके हाथों पर छोड़ना भयंकर गलती थी। गाँधी सिद्धांतों तथा आत्मिक शक्तियों के व्यक्ति हैं, जो छल द्वारा कार्य नहीं कर सकते थे। वह अपनी आत्मिक शक्ति से कार्य कर तार्किक स्थिति की स्वीकृति है। संभव है कि असहयोग आन्दोलन इसी से संचालित हुआ है।''[15]

परिणामस्वरूप वायसराय रीडिंग ने अपनी कूटनीति का प्रयोग कर एक ओर तो हिन्दू मुस्लमानों के मध्य समझौते का प्रयत्न किया तथा दूसरी ओर मुसलमानों को कांग्रेस से हट जाने के लिए फुसलाया। वायसराय बटलर की नीतियों को स्वागत करता तथा हर कदम उठाने से पूर्व उससे परामर्श लेता था। आन्दोलन की

समाप्ति के पश्चात् अधिकारी अत्यंत प्रसन्नचित दिखाई दिये क्योंकि गाँधी टोपी व खद्दर के वस्त्रों के प्रयासों में कमी लाकर अधिकारी अपनी नीति में सफल रहे।

**उद्देश्य :–**

इतिहासकारों ने असहयोग आन्दोलन में ब्रिटिश सेवी वर्ग की भूमिका को पर्याप्त स्थान नहीं दिया है। इस अन्याय का प्रतिकार करना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की घटनाओं का अब तक विभिन्न संदर्भों में विश्लेषण किया जा चुका है, जिसमें राष्ट्रवादी, साम्प्रदायिक व साम्राज्यवादी दृष्टिकोण प्रमुख है। परन्तु राष्ट्रीय अधिलेखागार नई दिल्ली में इंडिया ऑफिस लंदन के अभिलेख जारी हुए हैं। अधिकारियों के व्यक्तिगत पत्रों, डायरी, अर्धशासकीय पत्रों से स्पष्ट होता है कि भारतीय राजनीति को निर्धारित करने में बटलर जैसे अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। असहयोग आन्दोलन से संबंधित अधिकारियों तथ्य को सामने लाने का एक प्रयास है।

**महत्व व निष्कर्ष :–**

आखिर समन्दर से आकर अंग्रजों ने भारत पर मनचाहे ढंग से बड़ी चतुराई से कैसे शासन किया? बटलर नीति के अध्ययन से स्पष्ट है कि लगातार सभी नौकरशाहों ने सर्वप्रथम शासन–प्रशासन संभालने से पूर्व भारतीयों के प्रत्येक संप्रदाय, समूह, वर्ग, गुट की मनः स्थिति का अध्ययन किया। इसके बाद ठोस व अचूक निर्णय लिये। सेवी के आचरण में अन्तर्विरोध देखने को मिला। बटलर जैसे अधिकारी कुँठाओं व पूर्वाग्रहों से ग्रस्त थे, जिस कारण मुसलमानों में न केवल अलगाववाद की प्रवृति पनपी वरन् हिन्दुओं में भी उग्र राष्ट्रवाद की भावना जाग्रत हुई, जो विभाजन के रूप में सामने आया। ब्रिटिश अधिकारियों की अंतिम उपज मो0 अली जिला थे। सेवीवर्ग जिन्ना को पसंद न करते हुए भी उनके समीप रखते थे। बटलर मुस्लिम अभिजात वर्ग की मनोवृत्ति को जितनी अच्छी तरह से जानता था उतना कोई ब्रिटिश अधिकारी नहीं जानता था। उसने हिन्दू, मुसलमानों, तालुकदारों को अपने नियंत्रण में रखकर भारतीय राजनीति की गति को धीमी करने में बड़ी सफलता प्राप्त की क्योंकि बटलर मानता था कि इस वर्ग का साधारण जनता पर गहरा प्रभाव था और जनता का उग्रराजनीति में प्रवेश ब्रिटिश साम्राज्य के लिए खतरा था। बटलर ने इन मुस्लिम जमींदारों के माध्यम से उलेमाओं को भी नियंत्रित रखा।

बटलर, हेली, रीडिंग, विन्सेन्ट ने असहयोग आन्दोलन को बदनाम करके अली बंधुओं को राष्ट्रीयता के सन्देह के घेरे में लाकर, मदन मोहन मालवीय जैसे सरल हिन्दुओं को अलीबंधु विरोधी करने में सफलता प्राप्त की। बटलरवादी नीति के कारण भारत की राजनीति में धर्म का प्रवेश हुआ जिसे जिन्ना ने भुनाया। अंग्रेज नौकरशाही किसी न किसी रूप में हिन्दुओं के विरूद्ध मुसलमानों में घृणा, द्वेष सन्देह व भय उत्पन्न करती थी। असहयोग आन्दोलन की समाप्ति के पश्चात् भारतीय राजनीति के मंच पर साम्प्रदायिक नाटक के प्रमुख लेखक बटलर जैसे नौकरशाह थे। सांप्रदायिक आन्दोलन को कभी भी कठोरता से नहीं कुचला गया। भारतीयों में स्वशासन की असमर्थता, साम्प्रदायिक वैमनस्य में बृद्धि इनकी विशेषता रही है। इनकी महत्वाकांक्षा व वैयक्तिक रूचियों ने ब्रिटिश व गृह–सरकार की नीतियों को पूर्णतया प्रभावित किया है जो भारतीय शासन के संदर्भ में होती थी।

**सन्दर्भ व पुस्तक सूची :–**

बटलर पेपर्स, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली एन0ए0आई।

1. बटलर का अवध के तालुकदार को पत्र 1920 एन0ए0आई
2. बटलर का अवध के तालुकदार को पत्र, फाइल नं0 116ए एन0ए0आई
3. 'इंडिया इन्सिसटेन्ट' हारकोर्ट बटलर पेज– 90
4. आई0बी0आई0डी0
5. माइक्रो फिल्म आन 'सर हारकोर्ट बटलर', इंडिया परसिसटेन्ट इंडिया ऑफिस रिकोर्डस (आई0ओ0आर0) भा0रा0अ0
6. बटलर आई0बी0आइ0डी0
7. एस0डी0 बाली ''एडविन मान्टेग्यू व एम्पायर पृष्ठ–217
8. बटलर के भाषणों का संग्रह (1915–27) 10 मार्च 1922, पृष्ठ 190–81 एन0ए0आई0, नई दिल्ली।
9. आइ0बी0आइ0डी0।
10. आइ0बी0आइ0डी0।
11. आइ0बी0आइ0डी0, पेज– 193–94
12. बटलर का राजा ऑफ जहाँगीरवाद को पत्र सितम्बर 1921, 63 जे0ओ0/एन0ए0जे0।
13. संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उ0प्र0) सरकार के सचिव की रिपोर्ट, जून 1921, 63, आई0ओ0आर0, इंडिया।
14. होम पालिकिल डिपार्टमैंन्ट 1921, अर्धशासकीय पत्र सं0 1718, भा0स0।
15. मिस्टर मेफी का वायसराय को पत्र 1921, नं0 29, एन0ए0आई0 ।
16. प्रकाशित ग्रंथ ताराचन्द्र History of the Freedom movement खण्ड 11, नई दिल्ली 1972
17. समाचार पत्र – अंग्रेजी पत्र–पत्रिकाएँ (तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली)
18. स्ट्रेंची, इडिया, लन्दन (1994)
19. मैकडानल, आर0 अलीगढ़ इंस्ट्रयूट गजट।
20. विलियम हन्टर 'द इंडियन मुसलमानस'।

मो0–7983440419

Email- beenajoshi17@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 26-29

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# प्रेमचंद के साहित्य में गाँधीवादी विचारधारा

**डॉ० आशा हर्बोला**

असि० प्रो० हिन्दी, एम० बी० जी0 पी०जी० महाविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड।

"महात्मा गाँधी के बहुपक्षीय व्यक्तित्व में चिन्तन परिवेश का व्यापक प्रसार मिलता है। एक राजनैतिक नेता होने के साथ–साथ समाज सुधारक, अर्थशास्त्री, शिक्षाविद, धर्मोपदेशक एवं आध्यात्मिक–दार्शनिक विचारक के रूप में भी गाँधी जी का महत्व है। सामाजिक संरचना और प्रशासकीय संगठन पर मौलिक दृष्टिकोण के विचार करने के साथ–साथ महात्मा गाँधी ने व्यावहारिक जीवन का आदर्श स्वरूप भी उपस्थित किया।"[1]

महात्मा गाँधी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। साहित्य से गहरा जुड़ाव होने के कारण उनका समकालीन साहित्यकारों से भी घनिष्ठ सम्बन्ध है। उन्होंने राष्ट्रनिर्माण के लिए देश की आजादी के लिए जो संघर्ष किया वह अविस्मरणीय है। महात्मा गाँधी के द्वारा भारत में ही नहीं अपितु अपने देश से बाहर अफ्रीका में भी भारतीयों को उनके आत्मसम्मान को जगाते हुए, उनके लिए आजादी का मार्ग प्रशस्त किया गया। अफ्रीका में उन्होंने रंगभेद के विरोध में संघर्ष करते हुए अपने देश से बाहर रह रहे भारतीयों का हृदय जीत लिया।

महात्मा गाँधी स्त्री और पुरुष को एक दूसरे का पूरक मानते हैं तथा स्त्रियों की शिक्षा के सम्बन्ध में उनका कहना है– "मैं स्त्रियों की समुचित शिक्षा का हिमायती हूँ, लेकिन मैं यह मानता हूँ कि स्त्री दुनिया की प्रगति में अपना योग पुरुष की नकल करके या उसकी प्रतिस्पर्धा करके नहीं दे सकती। वह चाहे तो प्रतिस्पर्धा कर सकती है। लेकिन पुरुष की नकल करके वह उस ऊँचाई तक नहीं उठ सकती, जिस ऊँचाई तक उठना उसके लिए संभव है। उसे पुरुष का पूरक बनना चाहिए।"[2]

हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु युग से द्विवेदी युग तक जो नवजागरण की चेतना प्रवाहित हो रही है वही चेतना अन्त में राष्ट्रचेतना के रूप में परिणित हो जाती है। इसका पूरा श्रेय गाँधी जी को जाता है। ग्राम स्वराज या राष्ट्र की अवधारणा उनका सपना है। भारत गाँवों का देश है, यहाँ पर ग्रामीण समाज में व्याप्त छुआछूत, ऊँच–नीच की भावना तथा जातिगत भेदभाव को वे जड़ से मिटा देना चाहते हैं। वे सम्पूर्ण मानवता की भलाई के लिए ग्राम स्वराज का सपना देखते हैं। महात्मा गाँधी के जीवन चरित्र से मानवमात्र को सत्य, अहिंसा, त्याग, परोपकार जैसे नैतिक आदर्शों एवं कर्त्तव्यों की प्रेरणा मिलती है। सैद्धान्तिक रूप में गाँधीवाद 'आत्मशक्ति की' द्योतक विचारधारा है। आध्यात्मिकता और वैचारिक स्वातंत्र्य उसके मूल तत्व हैं। संक्षेप में गाँधीवाद के जो मूल तत्व कहे जा सकते हैं, उनमें से प्रथम वर्ण व्यवस्था है। महात्मा गाँधी वर्णव्यवस्था के अन्तर्गत सभी वर्णों में पारिश्रमिक की दृष्टि से समानता चाहते थे।"[3] गाँधी जी का एक आदर्श सर्वोदय है, जिसका तात्पर्य है समान स्तर पर जन सामान्य की उन्नति। इस प्रकार गाँधी जी के जीवन के तीन आदर्श हैं– सत्याग्रह, सर्वोदय और

आदर्श रामराज्य। वे तुलसीदास के रामचरित मानस से इतना प्रभावित हैं कि एक आदर्श राज्य के लिए रामराज्य की कल्पना को साकार रूप में परिणित कर देना चाहते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि गाँधीवादी विचारधारा एक समन्वयवादी विचारधारा है, जो सम्पूर्ण मानव जाति के हित को अपने में समाहित करे हुए सत्य, त्याग और तपस्या की भावना से ओतप्रोत है।

प्रेमचंद, गाँधी जी द्वारा देशभर में चलाए जा रहे 'सत्याग्रह' आन्दोलन से बहुत प्रभावित होते हैं। 'सत्याग्रह' के बारे में उनका विचार है–

''महान व्रत समाप्त हो गया। ईश्वरीय सत्ता ने मानवीय कलेवर की रक्षा की। आत्मबल ने शारीरिक इन्द्रियों को जीत लिया। लोक तृष्णा को देवी महत्त्वाकांक्षा ने वशीभूत कर लिया। महात्मा गाँधी अपने व्रत में सफल हुए। ईश्वर ने उनकी जो परीक्षा ली थी, उसमें वे उत्तीर्ण हो गये।''[4]

प्रेमचंद का युग राष्ट्रीय नवजागरण और सुधारवादी कहा जा सकता है, अतः उनके अधिकांश उपन्यासों में सुधारवाद, आदर्शवाद, यथार्थवाद व नैतिकता के दर्शन होते हैं। प्रेमचंद के समय में समाज में सामाजिक चेतना चारों ओर से जागृत होकर प्रवाहित हो रही थी। निम्न और मध्य सभी शोषित वर्ग के लोग उनके स्वर में स्वर मिला रहे थे। प्रेमचंद के प्रारंभिक उपन्यासों– सेवासदन, प्रेमाश्रम एवं गोदान में यही नवजागरण एवं सुधारवादी दृष्टिकोण देखने को मिलता है। 'सेवासदन' में मध्य वर्ग के बीच पनपता प्रदर्शन या दिखावे का भाव तथा सच्चे सामाजिक मूल्यों का पतन देखा जा सकता है। 'प्रेमाश्रम' में प्रेमचंद ने सामन्तवाद को चित्रित किया है, जो पतन की ओर अग्रसर है। यह सामन्ती जीवन इतना विषाक्त और स्वार्थमय हो चुका है कि इसका जब तक त्याग नहीं होगा तब तक अच्छे जीवन की कल्पना नहीं हो सकी है। 'रंगभूमि' में प्रेमचंद ने पूँजीवाद का भारतीय ग्रामों पर पड़ते दुष्प्रभाव और एक अभावग्रस्त किसान पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है, उसका चित्रण किया है। अभाव और गरीबी से जूझता कृषक प्रारंभ में पूँजीवाद की ओर आकर्षित होता है परन्तु अन्त में उसकी चेतना का जागरण हो जाता है।

'कर्मभूमि' में प्रेमचंद जनआन्दोलन के स्वर में स्वर मिलाते दिखाई देते हैं। गाँधी जी के स्वदेशी आन्दोलन की रूपरेखा इस उपन्यास में देखने को मिलती है तो, 'गोदान' उपन्यास में भारतीय जीवन की सम्पूर्ण झांकी का चित्रण है। भारतीय कृषक जीवन का कोई ऐसा पहलू नहीं है, जिसका चित्रण प्रेमचंद ने अपने इस उपन्यास में न किया हो। 'रंगभूमि' में प्रेमचंद एक आदर्श मानव की कल्पना सूरदास के रूप में करते हैं। स्वयं लेखक के शब्दों में ''हाँ वह साधु न था, महात्मा न था, चिन्ताओं और बाधाओं से घिरा हुआ, जिसमें अवगुण थे और गुण भी। गुण कम थे, अवगुण बहुत। क्रोध, लोभ मोह, अहंकार ये सभी दुर्गुण उसके चरित्र में भरे पड़े थे– गुण केवल एक था। किन्तु ये सभी दुर्गण उस पर, गुण के सम्पर्क में नमक की खान में जाकर नमक हो जाने वाली वस्तुओं की भाँति देवगुणों का रूप धारण कर लेते थे– क्रोध सक्रोध हो जाता था, लोभ सदनुराग, मोह सदुत्साह के रूप में प्रकट होता था और वह गुण क्या था? न्याय, प्रेम, सत्य, भक्ति, परोपकार दर्द या उसका जो नाम चाहे रख लीजिए। अन्याय देखकर उससे न रहा जाता था। अनीति उसके लिए असह्य थी।''[5]

प्रेमचंद के उपन्यासों– प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, रंगभूमि, गबन में गाँधीवाद की व्यावहारिक झलक देखने को मिलती है। उन्होंने गाँधी के जीवन दर्शन को मानव के उत्थान के लिए एक माध्यम के रूप में ग्रहण किया है। प्रेमचंद गाँधीवादी विचारधारा के सच्चे प्रसारक के रूप में देखे जा सकते हैं। अपने अन्तिम उपन्यास 'गोदान' के

नायक होरी के रूप में प्रेमचंद में गाँधीवादी विचारधारा अपने चरम बिन्दु पर देखने को मिलती है। 'होरी' इस उपन्यास का अमरपात्र है और गाँधीवादी विचारदर्शन से ओतप्रोत है। प्रेमचंद गाँधीवादी विचारधारा को व्यावहारिक और समाजोपयोगी सिद्धान्त के रूप में ग्रहण करते हैं। गाँधीवाद के व्यावहारिक रूप का पूर्ण समर्थन करते हुए प्रेमचंद कहते है–''मैं महात्मा गाँधी को सबसे बड़ा मानता हूँ। उनका भी उद्देश्य यही है कि मजदूर और काश्तकार सुखी हों, वह उन लोगों को आगे बढ़ाने के लिए आन्दोलन चला रहे हैं, मैं लिखकर उनको उत्साह दे रहा हूँ।''[6] प्रेमचंद के उपन्यास सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक धरातल पर लिखे गए हैं। कहीं पर सामाजिक समस्याएं हैं तो कहीं पर राजनीतिक समस्याएं, तथा कहीं मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया गया है– 'सेवा सदन' में गजाधर का योगबल, 'प्रेमाश्रम' में प्रभाशंकर के पुत्रों की भैरव–साधना और 'रंगभूमि' में सोफिया–सम्मोहन उसी अलौकिकप्रियता के निदर्शन हैं। 'रंगभूमि' में देशी नरेशों की परवशता और भीरूता चित्रित है तो 'कायाकल्प' में उनकी कामुकता और विलासिता। इसमें देशी नरेशों के अत्याचार से किसानों में चेतना की जो लहर दौड़ी उससे उत्पन्न आन्दोलनों का सजीव चित्रांकन है और हिन्दू–मुस्लिम समस्या के लिए गाँधीवादी समाधान प्रस्तुत किया गया है।''[7]

प्रेमचंद के साहित्य में किसान का दर्द बहुत गहराई से व्यक्त किया गया है। प्रेचमंद के साहित्य में गाँधीवाद की चरम सीमा 'गोदान' में देखने को मिलती है, जहाँ पर वह ये दिखा देना चाहते हैं कि गरीब मजदूर या किसान को सुखी देखना उनका मूल उद्देश्य है। वे भातरवर्ष के हर काश्तकार के अभिन्न मित्र हैं। 'होरी' के रूप में उन्होंने एक अमर पात्र का सृजन किया है। प्रेमचंद 'गोदान' की रचना से बहुत पहले से कृषक जीवन या भारतीय ग्रामीण परिवेश की इस समस्या जूझ रहे थे कि किस प्रकार किसान दीन से दीनतर होता जा रहा है। 'सवा सेर गेहूँ' (1924 ई०) के रचनाकाल से ही उनकी यह सोच विभिन्न कहानियों के रूप में जन्म ग्रहण कर रही है। ऐसा लगता है कि होरी की यह कथा 'मुक्तिधन' (1924 ई०) 'अलग्योझा' (1929 ई०) 'सदगति' (1930 ई०) 'पूस की रात' आदि कहानियों में अंकुरित और पुष्पित होती चल रही है, प्रेमचंद की सोच का पग–पग पर परिचय देते हुए तथा इसका चरम और विराट रूप 'गोदान' के विस्तृत फलक पर प्रतिच्छायित होता है।[8] गोदान में होरी जिन परिस्थितियों से जूझते हुए मजदूरी तक पहुँचता है, वर्तमान में भी किसान से मजदूर बनने की यह प्रथा रूकने का नाम नहीं ले रही है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रेमचंद अपने उपन्यासों में कहीं पर स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का चित्रण करते हैं तो कहीं पर भारतीय किसान की पीड़ा को व्यक्त करते हैं, कहीं पर जातपात पर चोट करते हैं, तो कहीं पर महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों का विरोध करते हैं। उनके साहित्य की ये सभी विशेषताएं उन्हें अन्य साहित्यकारों से अलग करती हैं। 'वरदान' नामक उपन्यास के पात्र के माध्यम से प्रेमचंद ये संदेश देना चाहते हैं कि राष्ट्र सेवा सर्वोपरि धर्म है, जिसके लिए वह अपनी सरकारी नौकरी का परित्याग कर देता है।

अन्त में कहा जा सकता है कि प्रेमचंद ने गाँधीवादी विचारधारा को मानव उत्थान के माध्यम के रूप में ही ग्रहण किया। उनकी विचारधारा में गाँधीवादी विचारधारा का व्यापक प्रभाव पड़ने का मुख्य कारण यह है कि दोनों का ही उद्देश्य मजदूरों और किसानों को सुखी देखना है। इस प्रकार दोनों साम्प्रदायिक एकता के प्रबल समर्थक हैं और दोनों का एक ही धर्म है– राष्ट्र सेवा। प्रेमचंद, गाँधीयुग के शीर्षस्थ कथाकारों में हैं। उनके प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि ये चार उल्लेखनीय उपन्यास हैं जिनके नायक प्रेमशंकर, सूरदास, चक्रधर

और अमरकान्त में गाँधीवाद की प्रतीकात्मक झलक देखने को मिलती है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ :-**


1. प्रेमचंद, डॉ० प्रताप नारायणन टंडन, सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली पृष्ठ–110
2. महात्मा गाँधी, मेरे सपनों का भारत राजपाल एन्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्मरण–2010 पृष्ठ–196
3. प्रेमचंद, डॉ० प्रतापनारायण टंडन, पृष्ठ–110
4. प्रेचमंद के विचार (भाग–1) प्रेमचंद– डॉ० रामविलास गुप्त, पृष्ठ 157, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 110002
5. प्रेमचंद, डॉ० प्रतापनारायण टंडन, पृष्ठ–99
6. प्रेमचंद, डॉ० प्रतापनारायण टंडन, पृष्ठ–114
7. गोदानरू परिशीलन, मूल्यन, शीलन एवं तुलन, सं० आचार्य निशांतकेतु, संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–46, 47
8. गोदान का महत्त्व– डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 102, 103



Mobile No. 8449235509

E-Mail: asha.harbola@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 30-34

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गांधी और हिन्दी सिनेमा

**डॉ. विद्या शंकर विभूति**

प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शासकीय महाविद्यालय, मोहन बड़ोदिया, जिला–शाजापुर (मध्यप्रदेश) 465001

''मैं आपके प्रश्नावली का जवाब देने में असमर्थ हूं क्योंकि मैंने कभी सिनेमा नहीं देखी है लेकिन, एक बाहरी व्यक्ति का भी जितना बुरा इसने (सिनेमा) किया है और कर रहा है, पहचान में आता है। यदि इसने कुछ भी भला किया है तो वह अभी तक साबित नहीं हुआ है।''

– सिनेमेटोग्राफ समिति को महात्मा का उत्तर, नवंबर 12, 1927

शायद यह सबसे बड़ा विरोधाभास है कि जन संस्कृति का 'बुरा' और 'पापी तकनीक' ने गांधी को सत्याग्रह की शताब्दी पर सबसे बड़ा उपहार देकर उनके सत्याग्रह की सार्थकता को सिनेमा के जरिए जनमानस में पुनर्स्थापित कर दिया। "लगे रहो मुन्नाभाई" में दर्शाए 'गांधीगिरी' की अवधारणा ने विश्व में पुनः गांधी विचार के प्रति उत्सुकता और जानने की ललक पैदा कर दी। वस्तुतः गांधी माध्यम के रूप में सिनेमा के खिलाफ थे। फिल्म इंडिया के अक्टूबर,1939 के अंक में ख्यात फिल्मकार ख्वाजा अहमद अब्बास ने इस बाबत एक खुला खत भी गांधी को लिखा था। उन्होंने पूछा था, ''आपने अपने नवीनतम कथन में सिनेमा को जुआ, सट्टा और घुड़सवारी जैसी बुरी आदतों के साथ जोड़ा है, जिसे आप जाति गंवाने के कारण अंगीकार नहीं करना चाहेंगें, यदि यह विचार किसी अन्य व्यक्ति से आया होता तो घबराने की जरूरत नहीं थी। मेरे पिताजी सिनेमा नहीं देखते हैं और इसे पश्चिम से आयातित बुराई मानते हैं।'' पत्र के अंत में उन्होंने अपील की कि, ''मुझे अपना यह छोटा खिलौना (सिनेमा) दे दीजिए, यह उतना अनुपयोगी नहीं है, जितना दिखता है, आपकी थोड़ी इनायत और सहिष्णु हंसी के साथ आशीष चाहिए।''[1] यदि आज गांधी जिन्दा होते तो निश्चित ही सिनेमा के प्रति अपना दृष्टिकोण बदल लेते क्योंकि अब यह सामाजिक बदलाव और जन संस्कृति का संवाहक बन चुका हैं।

सिनेमा की नापसंदी पर उन्होंने अपने पत्र हरिजन में कई बार लिखा। मई 3, 1942 के हरिजन के अंक के अपने साक्षात्कार में उन्होंने लिखा, ''यदि मैं सिनेमा (की बुराई) के लिए धरना दूं तो मैं अपनी जाति और अपने महात्माशिप से हाथ धो बैठूंगा... मैं कह सकता हूं कि सिनेमा अक्सर बुरा होता है। रेडियो के बारे में मैं नहीं जानता।''[2]

यह भी ताज्जुब करने लायक बात ही तो है कि जिस व्यक्ति ने साधारण चीजों को असाधारण पहचान दी और रोजमर्रा की चीजों को प्रभावित किया, वह सिनेमा जैसे माध्यम का प्रयोग अपने संदेश को पहुंचाने में न करे। शायद आधुनिक जीवनशैली और मशीनीकरण के खिलाफ होने के कारण उन्होंने ऐसा किया। मशहूर कलाकार चार्ली चौपलिन से उनकी मुलाकात द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के दौरान 1931 में लंदन में हुई थी। गांधी

ने मशीनीकरण से व्यथित होकर चार्ली से यह कहा था कि 'एक मशीन 15 मजदूरों के हाथ का काम छीन रही है।' यही बात चार्ली की फिल्म माडर्न टाईम्स में मूल विषय बनी कि इंसान मशीनों का गुलाम हो गया है और अपने ही हाथ गवां बैठा है जबकि चार्ली की धारणा थी कि मशीन मनुष्यों को दासता से मुक्त करेगा। चार्ली चौपलिन ने मुलाकात उपरांत गांधी को विराट व्यक्तित्व का धनी और अंतर्राष्ट्रीय छविवाला बताया, साथ ही उन्हें महान नाटकीय व्यक्तित्व भी कहा। यह जानकर आश्चर्य होता है कि जिन पर कई सिनेमा बने और जिन्होंने कई सिनेमा को प्रभावित किया, उन्होंने पूरे जीवन में विजय भट्ट की रामराज्य (1943) के कुछ भाग को ही देखा। यहां तक कि उन्हें डी.जी. फाल्के की राजा हरिशचंद्र (1913) भी देखने की इच्छा नहीं हुई जिसका मूल्य उनके सबसे करीब था।

फिल्म समालोचक जयप्रकाश चौकसे ने भारतीय सिनेमा के 100 साल पूरे होने पर महात्मा गांधी और सिनेमा पर लिखी पुस्तक में हिन्दी सिनेमा के परिदृश्य पर गांधी के प्रभाव का आकलन किया है। सिनेमा के जन्म और विकास के साथ–साथ गांधी के देशव्यापी अनुष्ठान और जनजागृति के उपक्रम का उन्होंने बेबाक विश्लेषण किया है और बतलाया है कि कैसे सिनेमा के तथ्य, कथ्य, विचार और वेशभूषा गांधी से प्रभावित होते रहे है। देवकी बोस की "चण्डीदास और विद्यापति" को वे गांधी की असहयोग आंदोलन की उपज बताते है और व्ही. शान्ताराम को भी कहीं ना कहीं गांधी दृष्टि का समर्थक मानते है।

चार्ली चौपलिन की बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि गांधी महान नाटकीय व्यक्तित्व के धनी थे और यही कारण है कि पूरे विश्व में उन पर सिनेमा बना या सिनेमा उनसे प्रभावित हुआ। चीन आधारित पत्रकार ए.के. चौटियार ने गांधी के संदेश से प्रभावित पहली फिल्म बनाने की योजना तैयार की थी जो अब उपलब्ध नहीं है। उनकी मृत्यु के पांच साल बाद 1953 में अमेरीकियों ने उन पर फीचर फिल्म बनाई थी–"महात्मा गांधी : ट्वेंटी सेंचुरी प्रोफेट"। भारत में उन पर फिल्म बनाने की बात हुई लेकिन, दिसम्बर 1963 में राज्यसभा में दिए गए अपने वक्तव्य में पंडित नेहरू ने स्वीकारा कि 'भारत उन पर फिल्म बनाने में असमर्थ है, सरकारी विभाग इस कार्य के लिए उपयुक्त नहीं है और सही व्यक्ति भी इसके लिए उपलब्ध नहीं है।' इसी वर्ष स्टेनली वॉलपोट की पुस्तक "नाइन ऑवर टू रामा" पर इसी नाम से फिल्म बनी जो गांधी की हत्या के 9 घंटे पूर्व के घटनाक्रम का नाटकीय विश्लेषण प्रस्तुत करती है। भारत द्वारा उनकी मृत्यु के 25 साल बाद और उनकी जन्मशती पर "महात्मा : लाईफ ऑफ गांधी" (1869–1948), गांधी स्मारक निधि और फिल्म डिविजन, भारत सरकार के सहयोग से बनी लेकिन यह फिल्म न होकर मात्र संकलन भर थी।

वास्तव में गांधी पर दो ही फिल्में बनी जिसने उनके जीवन के साथ कुछ हद तक न्याय किया। रिचर्ड एटनबरो की अंतर्राष्ट्रीय "गांधी" जो विश्व पटल पर छा गई और श्याम बेनेगल की रजत कपूर अभिनीत "द मेकिंग ऑफ महात्मा" (1996), जिसे हिन्दी में "गांधी से महात्मा तक" नाम दिया गया और जिसमें गांधी की अफ्रीका में बैरिस्टर बनने से महात्मा बनने तक की कहानी है।

यह भी तथ्यपरक है कि गांधी पर कोई फिल्म तो नहीं बनी लेकिन, बहुत सारे बायोपिक में उन्हें जगह मिली। कलाकार अन्नू कपूर (सरदार 1993), सैम दस्तूर (जिन्ना, 1998), मोहन गोखले (डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर, 2000), नसीरूद्दीन शाह (हे राम, 2000), सुरेन्द्र राजन (दी लीजेंड ऑफ भगत सिंह 2002, वीर सावरकर 2001, नेताजी सुभाषचंद्र बोस – दी फॉरगोटन हीरो 2005) ने उनका किरदार निभाया। अनिल कपूर

की 'गांधी मॉय फादर' (2007) में दर्शन जरीवाला और "लगे रहो मुन्नाभाई" (2006) में दिलीप प्रभावलकर ने अद्भुत भूमिका अदा की। जानू बरूआ की "मैंने गांधी को नहीं मारा" (2005), अमित राय की "रोड टू संगम" (2010) और अमित मसूरकर की "न्यूटन" (2005) में भी गांधी को किसी न किसी रूप में याद किया गया है। दूरदर्शन ने उन पर सन् 2001 में "मेरी कहानी" नाम से टी.वी. सीरीज भी बनाई थी।

बड़े आश्चर्य की बात यह भी है कि जिस देश में दुनिया की सबसे ज्यादा फिल्में बनती है, वहां पर गांधी जैसे व्यक्तित्व पर इतनी कम फिल्में? वस्तुतः गांधी के ''संपूर्ण जीवन पर अभी तक एक भी फिल्म नहीं बनी। एक ऐसी फिल्म जो उनके जन्म से अंत तक की कहानी दिखा सके।''[2] महात्मा गांधी को रजत पटल पर उतारने में सर्वाधिक सफल फिल्म रही 1982 में प्रदर्शित "गांधी"। ब्रिटिश फिल्मकार रिचर्ड एटनबरो ने आखिरकार गांधी के व्यक्तित्व की महानता को समझा और उन्हें रूपहले पर्दे पर पहले उतारकर उनके कार्यों और योगदान से विश्व को परिचित कराया। उनके मृत्यु के 34 साल बाद प्रदर्शित इस फिल्म की कल्पना 1960 के दशक में की गई थी, एटनबरो ने कई बार भारत की यात्रा की, नेहरू ने फिल्म को हरी झंडी दी और बाद में इंदिरा गांधी से मिलकर परियोजना शुरू हुई। 26 नवंबर, 1980 को इसकी शूटिंग प्रारंभ हुई और 10 मई, 1981 को उनकी अंतिम यात्रा के फिल्मांकन को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज करने के पश्चात् खत्म हुई। इस फिल्म को विश्वभर में सराहना मिली और इसने व्यावसायिक सफलता के कीर्तिमान स्थापित किए। इसे 08 ऑस्कर पुरस्कार से नवाजा गया और बेन किंग्सले इस भूमिका से अमर हो गए लेकिन, "लगे रहो मुन्नाभाई" ने विचार प्रसार और प्रसिद्धि में सबको मात दे दी। इसमें गांधी विचार को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सृजनात्मकता के साथ अनूठे ढंग से और हटकर पेश किया गया है। यह गांधी विचार का दर्शक साम्य विश्लेषण साबित हुआ। 'मेंकिंग ऑफ महात्मा' के निर्देशक श्याम बेनेगल ने स्वीकारा ''हमने गांधी को सब समय ऊंचे पायदान पर स्थापित रखा जहां पहुंचना कठिन था लेकिन लगे रहो मुन्नाभाई ने उसे बदल दिया।'' 'मैंने गांधी को नहीं मारा' में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुके अभिनेता अनुपम खेर ने माना, ''हमने गांधी पर फिल्म के जरिए पाठ पढ़ाने की कोशिश की लेकिन आज के नौजवान ऐसा नहीं चाहते हैं। युवाओं को उनकी जागरूकहीनता से उबारकर हमें इस तरह की फिल्म के माध्यम से उनके पास जाना चाहिए।''[3]

"लगे रहो मुन्नाभाई" अमरीकी, ओहायो निवासी अभिजात जोशी की दिमागी उपज थी, जिसके पार्श्व में समय की वर्तमान सामाजिक व्यवस्था है। निर्देशक राजकुमार हिरानी ने गांधीगिरी शब्द कर्म में गांधी विचार को दर्शाने हेतु इजाद किया था। उन्होंने इस बात का अनिवार्यतः ध्यान रखा कि मजाकिया माहौल में भी गांधी की गरिमा को बट्टा न लगे। गांधी की सृजनात्मकता को हथियार बनाते हुए उन्होंने सामाजिक बुराईयों और विद्रूपताओं पर हमला बोला, जिसका सहज और सही हल निकल सके। सिनेमा में उनके विचारों को व्यावहारिक बतलाया गया ना कि विचारणीय।

मुन्नाभाई की गांधीगिरी, गांधी विचार के मर्म को छूता है। गांधीगिरी यूं तो दादागिरी का उल्टा शब्द है। दादागिरी में जहां पाशविक शारीरिक शक्तियों का प्रदर्शन होता है, वहीं गांधीगिरी शारीरिक अंतर को प्रोत्साहित करता है, इसे उत्सव के रूप में मनाता भी है और नैतिक बल पर जोर देता है। एक भाषाविद् के लिए निश्चित रूप से यह ग्राह्य नहीं होगा। लेकिन इस मीडियाचालित उपभोगी प्रजातंत्र में विचारों की भी पैकिंग जरूरी है। यह निश्चित रूप से गांधी विचारों की पैकेजिंग है जिससे समकालीन सामाजिक समस्याओं का हल निकलता

है। यहां प्रायोगिक आदर्शवाद आदर्श प्रयोजन में बदल जाता है और गांधी एक संस्थान नहीं बल्कि जरिया या औजार के रूप में उभरते हैं। यहां इसे उच्च विचारों के लिए नहीं बल्कि स्वयं पथप्रदर्शक के रूप में व्यक्त किया गया है।[4]

गांधीगिरी इस विषमतावाले विश्व में आवश्यक बदलाव के लिए बल प्रयोग को भी जायज ठहराता है। गांधी विरोधियों के सामने दबाव में भी झुके नहीं, डटे रहे। यह फिल्म समकालीन समस्याओं के हल के लिए एक नई तरह की राजनीति की संरचना करती है। यह भाषा और कार्यप्रणाली के आधार पर बदलाव के लिए रत सामाजिक आंदोलनों को भी नया मुहावरा प्रदान करती है। यह इस बात को स्वीकारती है कि जो शोषित है, उनका भी अस्तित्व है। इससे उबरने के लिए घृणा, क्रोध और ऊंची आवाज की जरूरत नहीं है बल्कि दया, मानवता और एकता के जरिए इसे हासिल किया जा सकता हैं। यह मुश्किल रास्ता है, इसके लिए आंतरिक साहस और विश्वास की जरूरत होती है, इसके लिए सृजनात्मकता, कल्पनाशीलता और स्वयं के आलोचनात्मक मूल्यांकन का होना भी जरूरी है। सामाजिक जीवन में भी समतुल्यता होनी चाहिए और व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को निभाए। अत्याधिक भौतिकवादिता भ्रष्टाचार ही पैदा नहीं करती, वरन् मानवीय संबंधों का बाजारीकरण भी कर देती है। हमें लोभ और लाभ दोनों से बचना चाहिए ताकि दूसरों को दुःख और कष्ट का सामना न करना पड़े। 'हमारी आवश्यकता के लिए सबकुछ है लेकिन लोभ के लिए कुछ भी नहीं।'

इस फिल्म में मुन्ना का सामर्थ्य उसके सत्याग्रह के तरीके में है। गली के गुंडे उससे डरते है और एक भ्रष्ट सरकारी मुलाजिम शर्म से पेंशन की फाईल अटकाता नहीं है, चाहे बाप का पैसा चुरानेवाला टैक्सी चालक हो या अपने होनेवाले पति को छोड़कर वेटर को अपनानेवाली कन्या या वह व्यक्ति जो अपने पड़ोसी के पान पीक साफ करता है या मांगलिक लड़की – ये सारे रोज की समस्याओं की सूची हैं जिसे जनता के सामने साहस और विश्वास के साथ व्यक्त करना है। आज भी दया पुरानी नहीं पड़ी है, आज भी ईमानदारी, अच्छाई और मानवीयता पूज्यनीय गुण है।

गांधी विचार का अनुसरण आंतरिक ताकत और आत्मिक बल की मांग करता है। अहिंसक बनने के लिए मुन्नाभाई बनना पड़ता है। जो शक्तिशाली है, वही कमजोर भी हो सकता है, सर्किट मुन्ना के लिए अपनी दूसरी हथेली सामने कर देता है और लकी सिंह को सुधारने के लिए बंदूक का सहारा लेना पड़ता है। फिल्म में गांधी विचार की भांति साध्य–साधन की पवित्रता को प्रतिष्ठापित किया गया है। वस्तुतः विचाररहित आधुनिक उपभोक्तावाद को बड़े ही सलीके से इस फिल्म में प्रदर्शित किया गया है। लगे रहो मुन्नाभाई समयानुकूल उत्पाद है, यह भी उतना ही सही है कि कोई भी विचार लंबे दिनों तक नहीं टिक सकता यदि उसमें वर्तमान समस्याओं से जूझने की क्षमता न हो।[5] गांधी विचार कोई उत्पादन नहीं है बल्कि समय के साथ समस्याओं को सुलझानेवाला उपक्रम है।

आलोचकों ने इस फिल्म को एक अच्छा मनोरंजन माना लेकिन आतंकवाद जैसे मुद्दों के संदर्भ में इस पर उंगली भी उठाई। वास्तविकता यह है कि आतंकवाद भी अपनी जीवनी शक्ति और धरातल अत्याचार और गैरबराबरी में खोजता है और इसे नैतिक बना देता है। इस संदर्भ में नैतिक सत्य का प्रादुर्भाव ही घाव को मरहम लगा सकता है और बंदूक की आवाज को शांत कर सकता है। अतः साहस के साथ संवाद की जरूरत ऐसे

मुद्दों पर महसूस की जाती है।

टेलीविजन पर भी गांधी पर प्रस्तुतियां हुई है। दूरदर्शन पर 'भारत एक खोज' से लेकर 2011 में आए सीरियल 'गांधी – जर्नी ऑफ महात्मा' में गांधीजी के जीवन के विभिन्ना पड़ावों को दिखाया गया है। टेलिविजन शो 'बीचवाले बापू देख रहा है' के जरिये गांधी के सिद्धांतों को पुनः नये सिरे से परिभाषित करने की कोशिश की गई। 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' धारावाहिक गांधी जयंती पर गांधी स्पेशल एपिसोड बनाता रहा है और इसी क्रम में 2019 में उसने अपना एक पूरा एपिसोड गांधी को समर्पित किया था।[6]

समकालीन मानवीय समाज गांधी विचार को व्याख्यायित एवं पुनर्विश्लेषित कर समतुल्यता की स्थिति पा सकता है। उनके विचारों को तकनीकी विश्लेषण के साथ सृजनात्मक–प्रायोगिक उपागमों से जोड़ने की जरूरत हैं। लगे रहो मुन्नाभाई में सीमाओं के बावजूद ईमानदारी और विश्वसनीयता के साथ गांधी विचार को प्रदर्शित किया गया है। वस्तुतः गांधी हमारी जेहन में सत्याग्रही के रूप में बचपन से ही विराजित हो जाते है लेकिन अवसर तलाशना सबको नहीं आता। जीवन की आपाधापी, उपभोगवाद की संस्कृति, सर्वत्र प्रतियोगिता की स्थिति हमारे बचपन की नैतिकता को कुचल देता है। लगे रहो मुन्नाभाई शायद बचपन के उस एहसास को युवाओं में पनपाने में मदद करेगा और शायद कर भी रहा है।[7]

**संदर्भ :–**


1. द टाईम्स ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, अक्टूबर 02, 2006, पेज–10
2. प्रदीप सरदाना, आजकल, नई दिल्ली, अक्टूबर 2016, पेज–31
3. द टाईम्स ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, अक्टूबर 02, 2006, पेज–10
4. संतोष देसाई, द टाईम्स ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, अक्टूबर 02, 2006, पेज–06
5. इम्तियाज अहमद, संडे पायनियर, नई दिल्ली, सितम्बर 17, 2006, पेज–01
6. दैनिक भास्कर, शाजापुर, 02 अक्टूबर 2020
7. मिहिर शाह, द हिन्दू, दिल्ली, सितम्बर 28, 2006, पेज–10



मोबाईल – 94254–92576, 75661–06176

Email: b-bibhuti@rediffmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 35-37

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिन्दी साहित्य में गांधी दर्शन की अप्रतिम अभिव्यक्ति

**डॉ. हेमचन्द्र दुबे**

परिसर संकायाध्यक्ष कला संकाय एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग,

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, पंडित बद्री दत्त पाण्डे परिसर बागेश्वर, उत्तराखण्ड, पिनकोड– 263642

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के विचार उनके अवतरण के बाद साहित्यिक अभिव्यक्ति में यत्र तत्र प्रासंगिक और वरेण्य रहे हैं, इसका मूल कारण है गांधी जी की सात्विक वैचारिकता। सत्य, अहिंसा और प्रेम रूपी शस्त्र से उन्होंने सामाजिक बुराइयों पर कटाक्ष किया। प्रख्यात विचारक की श्रेणी में महात्मा गांधी को साहित्य जगत में बहुत सम्मान प्राप्त है। जहाँ साहित्य में सत्य प्रेम और अहिंसा की चर्चा होती है वहाँ गांधी जी अनिर्वचनीय रूप से विद्यमान रहते ही हैं। हिंदी के विद्वान प्राध्यापक डॉ0 जगत सिंह बिष्ट, गांधी युग में युगीन परिस्थितियों पर चर्चा करते हुए लिखते हैं– "वस्तुतः उनके उत्कृष्ट विचारों की प्रासंगिकता के कारण उनके नाम पर 'वाद' और 'युग' शब्दों का प्रचलन हो चुका है। साहित्य के क्षेत्र में भी इनके नाम पर 'गाँधीवाद' शब्द का प्रयोग हो रहा है, यद्यपि गांधी हमारे सामने पार्थिव रूप में नहीं है किन्तु उनका उत्कृष्ट जीवन दर्शन अनेकता से परिपूर्ण भारतवर्ष के लिए एकता का पर्याय बन गया है। भारतीय इतिहास के पृष्ठों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माहत्मा गांधी की राष्ट्रीयता समाज कार्यों में सक्रियता, 20वीं सदी से लेकर उनके जीवन पर्यन्त देखी जा सकती है। युगनिर्माता पुरूष होने के कारण उनके जीवन दर्शन को हिन्दी के साहित्यकारों ने भी वाणी दी थी। दक्षिण अफ्रीका में, उन्होंने गरीब मजदूरों के उद्धार के लिए सत्य और अहिंसा का मार्ग अपनाया था, उससे भारत की जनता के हृदय में अपूर्व आशा का संचार हुआ।"[1] इन पंक्तियो से स्पष्ट होता है कि महात्मा की उपाधि से विभूषित गांधी जी ने सत्य और अहिंसा को जीवन के लिए प्रदेय माना और आम आदमी के लिए जीवन सुधार संबंधी विचार दिये, उनका स्वयं का जीवन कैसा था वह उनकी वैचारिक पुस्तक ''माय एक्सपीरियंस विद द ट्रुथ '' के माध्यम से जाना जा सकता है।

महात्मा गांधी के सामाजिक उत्थान, साम्यता आदि विचारों को आत्मसात करते हुए छायावाद के प्रखर स्तम्भ सुमित्रानंदन पंत ने गांधी जी की वैचारिकता को अपनी अभिव्यक्ति का विषय बनाया। 'पंत जी ने साम्यवाद को उसी रूप में ग्रहण किया है, जिस रूप में वह पाया जाता है।परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि पंत जी के काव्य में मार्क्सवाद के प्रचारात्मक प्रवृत्ति की गंध है। साम्यवादियों से उनका मतभेद प्रारंभिक अवस्था से है, यह मतभेद मतवादी और कलाकार का मतभेद है। पंत जी ने अपना मतभेद स्पष्ट शब्दों में प्रकट किया है। उन्होंने साम्यवादी विचारधारा को केवल लोककल्याण की भावना से ही स्वीकार किया है। साम्यवाद में भी त्रुटियाँ और अपूर्णता पाने पर उन्होंने अन्य मनीषियों की विचारधारा को ग्रहण किया है। इसीलिए मार्क्स के प्रति आकर्षित होते हुए भी गांधी,

अरविन्द, रवीन्द्र और उनकी मानवता की प्रतिष्ठा गांधी–मार्क्स, रवीन्द्र दर्शन की आधारशिला पर होती है।"[2]

"गांधीवाद जगत में आया ले मानवता का नवमान
सत्य अहिंसा से मनुजोचित नव संस्कृति करने निर्माण,
गांधीवाद हमें जीवन भर देता अन्तर्गत विश्वास
मानव की निःसीम भक्ति का मिलता उससे चिर आभास।"[3]

पंत जी के काव्य संसार के एक प्रमुख मनीषी हैं महात्मा गांधी, उनका जीवन मानवता और समाज के लिए समर्पित था– "हे मांसहीन तुम अस्थिशेष" जैसे संबोधनों का अर्थ यही है कि गांधी जी ने अपने जीवन दर्शन को समाज के लिए पथ प्रदर्शक बनाया। स्वयं भोग विलासिता से दूर सात्विक शाकाहारी जीवनशैली को अपनाने पर बल दिया। अहिंसा जैसे सुकोमल विचार को तत्कालीन कवियों और लेखकों ने अपने काव्य और गद्य में रूपायित किया। प्रेमचंद एक सुविख्यात साहित्यकार हैं। ग्रामीण और शहरी परिवेश का समन्वय कर उन्होंने हिन्दी कथा साहित्य को आम जन के लिए सुलभ बनाया। प्रेमचंद की मूल विशेषता आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है। उनके पात्र यथार्थ की भावभूमि पर आदर्श की स्थापना करते दिखाई देते हैं।

प्रेमचंद के आदर्श व सत्य को महात्मा गांधी के जीवन दर्शन से जोड़कर देखा जा सकता है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में गांधी–दर्शन की अनूठी छाप है। उनकी रचनाओं के पात्र समाज के बीच के पात्र हैं। हरेक पाठक को लगता है कि जैसे लेखक ने उन्हीं के मन की बात को सुरूचिपूर्ण ढंग से कह दिया हो। उनकी रचनाओं के घटनाक्रम सामान्य जनजीवन से तालमेल करते प्रतीत होते हैं। प्रेमचन्द द्वारा लिखित कहानी 'नमक का दारोगा' में वंशीधर सत्य के प्रतीक हैं। तमाम नसीहतों प्रलोभनों को त्यागकर वे सत्य के नियमों का पूर्णतः पालन करते हैं। मानवता को जीवन के लिए सर्वश्रेष्ठ घोषित करने वाली प्रेमचन्द की कहानी 'मंत्र' आम पाठकों को सोचने के लिए विवश कर देती है कि डॉ चढ्ढा के प्रति नफरत होते हुए भी बूढ़ा भगत उसके पुत्र की जान बचाने के लिए तत्पर हो जाता है, इन सब घटनाओं संयोगों में गांधी दर्शन समाविष्ट है।

मन्मथनाथ गुप्त 'गोदान' उपन्यास के बारे में चर्चा करते हुए कहते हैं– "गोदान में प्रेमचन्द ने एक तरफ गांधीवादी और उसके बाद आने वाली वर्ग–संग्राम की तीव्रता की वृद्धि पर आधारित कर्म पद्धति तथा दूसरी तरफ विषमतामूलक वर्तमान समाज पद्धति और आगामी समाज पद्धति जिसमें मनुष्य के द्वारा मनुष्य का शोषण असम्भव हो जाएगा– इन दोनों तरफ की कर्म पद्धति तथा समाज पद्धति के प्रति अपना कर्तव्य बहुत अच्छी तरह से निभाया है।"[4] इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि प्रेमचन्द ने गांधी जी के विचारों को अपनी रचनाओं में पिरोने का स्तुत्य प्रयास किया है। राष्ट्रीय चेतना, मौलिकता, सत्यान्वेषण और मानवीय संवेदनों को मानवता जगत की भावभूमि पर उर्वर करने का सार्थक प्रयास किया है।

डॉ. जगत सिंह बिष्ट जी ने गांधी दर्शन से अनुप्राणित द्विवेदीयुगीन काव्यधारा के पक्ष में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है– "महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम में सत्य, अहिंसा और असहयोग आदि शस्त्रों के प्रयोग की प्रेरणा दी थी, क्योंकि महात्मा गांधी हिंसा के सर्वथा विरोधी तथा सत्यान्वेषी थे, इसलिए उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि उनका राजनीति में आगमन सत्यान्वेषी प्रवृत्ति का परिणाम था।"[5]

महात्मा गांधी को सत्य अहिंसा और प्रेम के सिद्धांत की कर्मभूमि पर उतारने का कार्य तत्कालीन गांधीवादी विचारधारा वाले रचनाकारों ने किया। असहयोग आंदोलन के मूल में भी विनम्रतापूर्वक आग्रह निहित था। उनका

विनीत भाव जनता के हृदय में ऐसा बैठा कि उन्हें भारतवर्ष में ही नहीं वरन विदेशों में भी पूजा जाने लगा–"सत्य के सार्वभौमिक प्रभाव को देखना हो, तो क्षुद्र प्राणी को भी वह प्रेम करने वाला होना चाहिए।"[6] भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधी जी की भूमिका के संदर्भ में पठनीय पंक्तियाँ हैं– "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी का तीसरा शस्त्र असहयोग था, भारतीय राजनीति एवं स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी का प्रवेश असहयोग आंदोलन से ही होता है। जलियावाँला बाग के अमानुषिक एवं नृशंस हत्याकांड के खिलाफ गांधी के असहयोग आंदोलन को पर्याप्त प्रतिष्ठा मिली। महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर स्वतंत्रा संग्राम के सेनानियों के लिए ''आत्मबलिदान सहज कार्य हो गया और वे इसे खेल–खेल में ही करने लगे।''[7]

इस प्रकार कहा जा सकता है साहित्य जगत में महात्मा गांधी के जीवन दर्शन का अमिट प्रभाव सर्वत्र दिखाई देता है। द्विवेदी युगीन, छायावादी तथा छायावादोत्तर हिन्दी साहित्य जगत में गांधी जी के विचारों की सृष्टि अध्ययन–अध्यायन के क्षेत्र में सर्वत्र व्याप्त है। गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता समय की मांग है। वर्तमान में आजादी का अमृत महोत्सव हमारे राष्ट्रीय गौरव और चेतना का मूल प्रदेय है। इस प्रकार गांधी दर्शन की प्रासंगिकता हर युग में बलवती रहेगी क्योंकि मानवता, सच्चाई, सदाशयता, प्रेम, सदभाव, समर्पण अहिंसा और राष्ट्रप्रेम वाला साहित्य सदा जीवंत रहता है।

**संदर्भ :–**


1. बिष्ट, जगत सिंह, मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में गांधी दर्शन, पृ0 01–02.
2. पोखरिया, प्रो0 देवसिंह एवं भगतसिंह, हिन्दी साहित्य को कूर्मांचल की देन, पृ0 91.
3. युगवाणी, समाजवाद, गांधीवाद, पृ0 47.
4. श्री राकेश, उपन्यासकार प्रेमचंद और गोदान, पृ0 77.
5. बिष्ट जगत सिंह, मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में गांधी दर्शन, पृ0 55.
6. आत्मकथा, पृ0 615.
7. कांग्रेस का सरल इतिहास पृ0 26.



मो0– 9690390729

E-Mail - hemchandradube52@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 38-41

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# महात्मा गांधी जी के चलाये गये आन्दोलनों में महिलाओं की सहभागिता (कुमाऊ के परिपेक्ष्य में विशेष)

**डॉ. कंचन वर्मा**

असिस्टैंट प्रोफेसर इतिहास, हु0 सि0 बो0 रा0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर, अल्मोडा, उत्तराखण्ड।

**सार संक्षेप :–** आजादी के आन्दोलन में उत्तरांखण्ड की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आजादी की जो चिंगारी यहां के कालू मेहरा द्वारा शुरू की गयी थी, वह 1947 तक विशाल ज्वाला का रूप ले चुकी थी। समय समय पर भारत के अनेक क्षेत्रों में आन्दोलन तथा विद्रोहों ने जनसामान्य को स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए जागरूक किया। अधिकांश आन्दोलन अहिंसावादी थे, जो महात्मा गांधी के द्वारा चलाये गये थे। इन आन्दोलनों ने देश के समस्त भाग तथा जनता विशेषतौर पर महलाओं को प्रभावित किया। गांधी जी का मानना था कि भारत की आधी जनसंख्या महिलाओं की है, इनके बिना कोई भी आन्दोलन सफल नहीं हो सकता है। अतः उन्होंने अपने चलाये गये प्रत्येक आन्दोलन में महिलाओं से भाग लेने की अपील की। महिलाओं ने भी उनके द्वारा चलाये गये प्रत्येक आन्दोलन में बढ–चढ कर हिस्सा लिया।

सन् 1929 में उत्तरांखण्ड में गांधी जी के आगमन ने यहां की जनता को जागरूक किया। गांधी का उत्तरांखण्ड आगमन विश्व के इतिहास की अद्भुत घटना, अविस्मरणीय और अमर है। इस यात्रा में उनके साथ कस्तूरबा गांधी, मीरा बहन तथा पं0 जवाहर लाल नेहरू भी शामिल थे। यह यात्रा राजनीतिक एकता हेतु बहुत महत्वपूर्ण थी। इस यात्रा के पश्चात यहां के लोगों ने विशेषतौर पर यहांकी महिलाओं ने स्वतन्त्रता आन्दोलनों के समय पर अनेक जुलूस निकाले तथा सभायें की जिसके परिणामस्वरूप अनेक महिलाओं की गिरफ्तारियां हुईं। गिरफ्तार महिलाओं को तरह तरह की यातनायें दी गयी। प्रस्तुत शोध पत्र में महात्मा गांधी के आन्दोलनों में महिलाओं की सहभागिता पर विशेष अध्ययन किया जायेगा।

**बीज शब्द** – स्वतन्त्रता, गिरफ्तारियां, जनजागृति, विद्रोह, राष्ट्रीय आन्दोलन, कुमाऊ क्षेत्र, जुलूस।

**विषय प्रवेश** – भारत की आजादी की लड़ाई का वर्णन अधूरा रह जायेगा अगर इसमें पुरूष समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ने वाली नारी समाज का जिक्र न किया जाये। कभी घर की चारदीवारी के अंदर रहकर, तो कभी हाथ में तलवार लेकर, वीरांगनाओं ने अंग्रेजी हुकुमत से लोहा लिया। लंबे समय तक चलने वाले स्वतन्त्रता आन्दोलनों ने कई वीरांगनाओं को जन्म दिया। इन वीरांगनाओं ने स्वतन्त्रता आन्दोलन की दिशा और दशा दोनों को बदल दिया। राष्ट्रीय भावना का परिचय देते हुए देश को स्वतन्त्र कराने में हर तरीके से अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजकुमारी अमृत कौर तथा सरोजिनी नायडू जैसी बहुत सी महिलाओं ने सार्वजनिक जीवन में देश का नेतृत्व किया और यह सिद्ध कर दिया कि वे पुरूषों से देश का नेतृत्व करने की क्षमता में किसी

भी बात से कम नहीं।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का वास्तविक आरम्भ 1857 की क्रान्ति से माना जाता है। भारत की स्वतन्त्रता की ओर यह महान क्रान्ति का प्रथम कदम था। यह विद्रोह मुख्यतः सैनिक विद्रोह था जिसे किसानों, दस्तकारों, तथा मजदूरों का समर्थन मिला और यह आम जनता के विद्रोह में बदल गया। सन् 1857 से 1947 तक भारत में कई आन्दोलन हुए। जिसमें कई महिलाओं ने बढ़–चढ़ कर प्रतिभाग किया। स्वतन्त्रता आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी महात्मा गांधी के आन्दोलन के फलस्वरूप हुई। महात्मा गांधी जी का मानना था कि देश की आधी जनता महिलाओं की है। इनके बिना कोई भी कार्य नहीं हो सकता है। अतः उन्होंने अपने द्वारा चलाये गये आन्दोलनों ने महिलाओं से भाग लेने की अपील की और महिलाओं ने भी उनकी अपील स्वीकार कर उनके द्वारा चलाये गये आन्दोलनों में बढ़–चढ़कर प्रतिभाग किया। आगरा से प्रकाशित'सैनिक' के 1 दिसम्बर, 1933 के अंक में कुंवर रानी गुणवन्ती महाराज सिंह का लेख 'हमारी जागृति' में उन्होनें लिखा– ''गांधी जी ने राजनैतिक आन्दोलन, विशेषकर स्वदेशी आन्दोलन की सफलता का श्रेय भारतीय महिलाओं को दिया है। महात्मा गांधी जी का राजनैतिक आन्दोलन इतना सफल नहीं होता यदि महिलाओं ने उसमें बढ–चढ कर प्रतिभाग न लिया होता। स्वदेशी आन्दोलन की सफलता इसलिए संभव हो सकी कि भारतीय महिलायें देश की सहायता के लिए कोमल विदेशी वस्त्रों को छोडने को तैयार हो गई।"[1] गांधी जी ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में आने की प्रेरणा देने की शुरुआत अपने घर से की। हम सभी जानते हैं कि गांधी जी की पत्नी श्रीमती कस्तूरबा गांधी ने भी उनके साथ आन्दोलनों में प्रतिभागिताकी। देश के अनेक स्वतन्त्रता सेनानी उन्हें माँ समान मानते थे। उनसे प्रेरित होकर अनेक महिलाओं ने स्वतन्त्रता आन्दोलनों में प्रतिभाग करना प्रारम्भ कर दिया।

यदि उत्तरांखण्ड की भौगोलिक परिस्थिति पर नजर डाली जाय, तो यह एक पर्वतीय राज्य था। यहां की महिलाओं का स्वतन्त्रता आन्दोलन में प्रतिभाग कर पाना संभव नहीं था, क्योंकि यहां पारम्परिक रूढिवादिता चरम सीमा पर थी। ग्रामीण क्षेत्रों में शहरों की अपेक्षा जनजागृति काफी कम थी। महिलाओं में अशिक्षा भी एक रोड़ा थी। यहां की सामाजिक स्थिति भी काफी खराब थी। समाज में अशिक्षा, बालविवाह, बेमेल विवाह आदि कुरीतियां विद्यमान थी। विधवाओं को हेय दृष्टि से देखा जाता था। उन्हें सामाजिक कार्यो में प्रतिभाग करने की अनुमति नहीं थी। पर्वतीय क्षेत्र की महिलाओं पर कृषि के साथ साथ गृहस्थी की सम्पूर्ण जिम्मेदारी का बोझ हुआ करता था। यही नहीं, ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का जीवन एक कष्टमय जीवन था। उसका अधिकांश समय जंगल से लकड़ी, चारा एवं परिवार हेतु पेयजल आदि की समुचित व्यवस्था करने में व्यतीत हो जाता है। इन परिस्थितियों में महिलाओं हेतु आयवर्धक कुटीर उद्योगों की स्थापना करना तभी सार्थक हो सकता है जब ग्रामीण क्षेत्रों में पशुओं के चारे की व्यवस्था, ईंधन व्यवस्था, तथा पेयजल की समुचित व्यवस्था हो सके। इन विषम परिस्थितियों के रहते भी कुमाऊ क्षेत्र की महिलाओं ने स्वतन्त्रता आन्दोलनों मे प्रतिभाग किया।

सन् 1920 में महात्मा गांधी जी की आंधी के प्रभाव में महिलायें भी हिलोंरे लेने लगी। पर्दा प्रथा के चलते महिलाये असहयोग आन्दोलन में खुल कर भाग लेने का साहस न कर सकीं। फिर भी वे अपने को नन्दादेवी से नारायण तेवाडी की देवाल की सभाओं में जाने से रोक न सकी। होली आदि सार्वजनिक त्यौहारों, हर निजी और सार्वजनिक उत्सवों के अवसर पर अन्य गीतों के स्थान पर राष्ट्रीय गीतों को गाना उनकी दिनचर्या बन गया।

सर्वप्रथम कुमाऊँ क्षेत्र की अल्मोड़ा जिले की महिलाओं ने प्रशासनिक कार्यों के विरूद्ध रात में जागरण करना प्रारम्भ किया। इन्हीं जागरण से महिलाओं में राष्ट्रीय चेतना की भावनायें विकसित होने लगी। धीरे–धीरे महिलाओं ने सार्वजनिक सभाओं में जाना प्रारम्भ कर दिया। जहां वे एकत्रित होकर सामाजिक तथा राजनैतिक प्रश्नों पर विचार विमर्श किया करती थीं। सबसे पहले विधवाओं ने यह कार्य प्रारम्भ किया। विधवाओं को समाज में तिरस्कृत दृष्टि से देखा जाता था। अतः उन्होंने संगठित होकर अधिक से अधिक संख्या में आन्दोलनों में प्रतिभाग लेना प्रारम्भ कर दिया।

गांधी जीने स्वदेशी अभियान तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार में महिलाओं को सबसे आगे रखा। उनकी दृष्टि में इस आन्दोलन को सफल बनाने के लिए जिस त्याग तथा बलिदान की जरूरत थी, वह महिलाओं की प्रकृति में जन्मजात थी। महिलायें घर–घर जाकर स्वदेशी की भावना का प्रचार प्रसार किया करती थी। चरखें तथा तकली को राष्ट्र के उत्थान का साधन बताती थी। कुमाऊ क्षेत्र की महिलाओं ने सामाजिक उत्सवों में स्वदेशी वस्तुओं, चरखा तथा खादी का प्रचार प्रसार का कार्य किया। 24 जनवरी, 1922 में जयन्ती पाण्डे का महिलाओं के नाम संदेश ''शक्ति'' में छपा ''बहनों, सरकार ने आज चुनौती दी है। अतः आप सब कलह और लड़ाई छोडकर आगे आओ। चरखा कातो, स्वदेशी पहन कर उसका प्रचार प्रसार करो। अपने पुत्रों, भाईयों तथा पतियों को उस क्षेत्र में भेजो, जहां गर्व से हमारी भारत माता का सिर ऊंचा उठे, यदि आवश्यकता पड़े तो दृढ होकर जेलों को पवित्र करो।"[2] इस लेख से प्रभावित होकर यहां की बहुत सी महिलाओं ने महात्मा गांधी जी के स्वदेशी आन्दोलन में प्रतिभाग किया। इस समय पुरूषों द्वारा महिलाओं को घर पर रोका जाना असंभव हो गया। उन्हें किसी आन्दोलनकारियों की गिरफ्तारी की सूचना मिलते ही वह ब्रिटिश शासन के खिलाफ भिड़ने को तैयार हो जाती थी। सन् 1920 से 1925 के बीच सरोजनी नायडू तथा ऐनी बेसेन्ट के काग्रेस अध्यक्ष बनने से यहां की महिलाओं को प्रेरणा मिली। वे स्वतन्त्रता आन्दोलनों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेने लगीं।

सन् 1929 में गांधी जी के कुमाऊँ आगमन पर जब उनके साथ कस्तूरबा गांधी, सरला बहन, तथा पं0 जवाहर लाल नेहरू के ताकुला नैनीताल पहुंचने की खबर यहाँ की महिलाओं को लगी तो कुमाऊँ के कोने–कोने से महिलायें उनसे मिलने के लिए पहुंची। गांधी जी के भव्य स्वागत के लिए यहां की महिलाओं ने विशाल जुलूस निकाला। इस जुलूस में महिलाओं की संख्या पुरूषों की संख्या से दुगनी थी। अगले दिन महिलाओं की सभा में गांधी जी ने चरखा और स्वदेशी अपनाने के सम्बन्ध में अपने विचार रखे। सन् 1930 में कुमाऊँ क्षेत्र की महिलाओं में जागृति इस सीमा तक आ गयी थी कि महिलायें प्रत्यक्ष रूप से आन्दोलन में कूदने को तत्पर थीं। 12 मार्च 1930 में तोड़े गये नमक कानून में कुमाऊँ के लोगों ने भी हिस्सा लिया। सम्पूर्ण देश के साथ साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन पर्वतीय क्षेत्रों में फैलना शुरू हो गया। इस समय नैनीताल की महिला समाज में अभूतपूर्व जागृति फैलने से यहां की महिलाओं ने इस आन्दोलन में खुलकर प्रतिभाग किया। अल्मोड़ा में भी 100 से अधिक महिलाओं का संगठन बना। नगर पालिका भवन में झंडा फहराने की घटना में राष्ट्रप्रेमी विक्टर मोहन जोशी, तथा शान्तिलाल त्रिवेदी पर हुए हमले में घायल होने की सूचना मिलते ही महिलाओं में आक्रोश उत्पन्न हुआ और महिलाओं ने अपनी घरेलू जिम्मेदारी छोड़कर नगरपालिका भवन पर झंडा फहरा दिया।[3] इस प्रकरण के समय जिस निर्भीकता का परिचय महिलाओं ने दिया उससे पूरे कुमाऊँ की महिलाओं में जोश उत्पन्न हो गया। इन सभी महिलाओं ने जुलूस निकालने, प्रभातफेरी निकालने, धरना प्रदर्शन आदि आयोजित करने के काम के

साथ साथ खादी के प्रचार प्रसार, चरखा चलाने का प्रशिक्षण और खादी बेचने का काम भी किये। जैसे–जैसे आन्दोलन ने जोर पकड़ा और उसमें महिलाओं की भागीदारी बढ़ी महिलाओं के मुद्दे भी चर्चा में आये।

भारत छोड़ों आन्दोलन (1942) में महिलाओं ने विशाल जुलूस निकाले। वे घरों में चूल्हा–चौका छोड़कर सड़कों में उतरने को आतुर हो गयी। कुमाऊँ में कई जगह महिलाओं ने आन्दोलनकारियों को उत्साहित करने के लिए सभाओं का आयोजन किया। भागीरथी देवी को तो सरकार विरोधी नारे लगाने के आरोप में 6 माह की सजा सुनाई गयी। फूलमालाओं द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया। जहां एक ओर महिलायें आन्दोलनों में स्वयं भागीदारी कर रही थी, वहीं उनके पुरूषों के जेल चले जाने से पूरे परिवार की जिम्मेदारी खेती, पशुपालन आदि समस्त कार्य उनको ही करने ही पडते थे। कई बार झूठी खबरों जो उनके मनोबल को तोड़ने के लिए फैलाई जाती थीं उनका भी उन्हें सामना करना पड़ता था।

इस प्रकार देखा जाए तो भारत के सम्पूर्ण स्वतन्त्रता आन्दोलन में महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। 1857 की महान क्रान्ति में झांसी तथा लखनऊ जैसे क्षेत्रों का नेतृत्व रानी लक्ष्मीबाई तथा बेगम हजरत महल ने किया, यह भारतीय महिलाओं के लिए राष्ट्रीय नेतृत्व का आरम्भ था। इसके बाद जैसे जैसे राष्ट्रीय आन्दोलन बढ़ता गया वैसे वैसे एनी बेसेन्ट, सरोजनी नायडू आदि महिलाये कुमाऊँ क्षेत्र की महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बनी। गांधी जी ने महिलाओं के आत्मत्यागी तथा बलिदानी स्वभाव को एक नई दिशा प्रदान की। वह कहा भी करते थे – ''पुरूषों की नजरों में महिलायें कमजोर नहीं है वरन दोनों लिंगों में ज्यादा श्रेष्ठ इसलिए हैं कि आज भी वे त्याग, खामोश, पीड़ा, विश्वास और ज्ञान की साक्षात् प्रतिमा है।''[4]

**निष्कर्ष :–**

इस प्रकार हम देखते हैं कि महिलाओं ने महात्मा गांधी जी के द्वारा चलाये गये आन्दोलनों में प्रतिभाग किया। इन आन्दोलनों में प्रतिभागिता से उनके घरेलू जीवन या पारिवारिक जीवन में कोई अन्तर नहीं आया। पर्दा प्रथा को पीछे छोड़कर तथा आन्दोलनों में प्रतिभागिता कर कई यातनायें उनके द्वारा सही गयी। उनका कार्यक्षेत्र घर तक सीमित था फिर भी उनकी त्यागमय माँ की छवि ज्यों की त्यों बनी रही। इस प्रकार कहा जा सकता है कि महिलाओं की राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही। यह भूमिका इतनी महत्वपूर्ण थी कि स्वयं गांधी जी स्वीकार करते हैं कि "उनके सहयोग के बिना स्वतंत्रता प्राप्ति में और सौ साल लग सकते थे।"[5] किन्तु वहीं दूसरी और यह भी सच है कि इन महिलाओं की आन्दोलनों मे सशक्त भूमिका और प्रभावशाली योगदान के बाद भी पुरूषों की महिलाओं के प्रति परम्परागत सोच में कोई परिवर्तन नहीं आ सका।

**सन्दर्भ :–**


1. रावत, अजय सिंह, उत्तराखण्ड का समग्र राजनैतिक इतिहास, अंकित पब्लिकेसन हल्द्वानी
2. जोशी, घनश्याम, उत्तराखण्ड का राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली
3. बलोदी, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद बलोदी, उत्तराखण्ड का समग्र ज्ञानकोश, विनसर पब्लिकेशन, देहरादून।
4. महाजन, विद्याधर, आधुनिक भारत का इतिहास, 1707 से आज तक, एस चन्द्र एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली।
5. पाण्डे, एस0 के0, आधुनिक भारत।
6. मित्तल, डॉ0 ए0 के0, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास 1857 से 1947, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा।
7. चन्द्रा विपिन, माडर्न इंडिया, नई दिल्ली 1971
8. विकिपीडिया एवं तत्सम्बन्धित लेख।


मो0– 9458171617, E-Mail- kanchanpankaj50@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 42-44

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिन्दी भाषा एवं साहित्य में गांधीवादी विचारधारा

**डॉ. जगदीश चन्द्र जोशी**

असि0 प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, एम० बी० रा० स्ना० महाविद्यालय हल्द्वानी, (नैनीताल) 263139

महात्मा गांधी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जो उनसे प्रभावित न रहा हो। गांधी युगदृष्टा एवं युगसृष्टा थे। सत्य और अहिंसा के पुजारी गांधी जी ने अपरिग्रह, सादगी तथा आत्मनिर्भरता को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। गांधी जी का मानना है कि– ''मैंने कभी सुसंगति की अंधपूजा नहीं की है। मैं तो सत्य का पुजारी हूँ। अतः किसी प्रश्न के सम्बंध में किसी निश्चित समय पर मैं जो अनुभव करता हूँ मुझे वही कहना चाहिए और इस बात की परवाह नहीं करनी चाहिए कि इस बारे में, मैं पहले क्या कह चुका हूँ। जैसे–जैसे मेरी दृष्टि स्पष्ट होती जाती है, दैनिक अभ्यास से मेरे विचार भी अधिकाधिक स्पष्ट होते जाने–चाहिए।''[1]

गांधी जी के चिन्तन के मूल में सत्य, अहिंसा, शान्ति, सद्भावना, भाईचारा, सर्वोदय एवं अन्त्योदय रहा है। बापू हमेशा सत्य के अन्वेषी रहे हैं – ''सत्य की उपलब्धि के लिए ही वे विविध कार्यों में अपनी शक्ति प्रयोग (नियोग) करते हैं। उनका आग्रह है कि प्रत्येक व्यक्ति को सत्याग्रही होना चाहिए।''[2]

गांधी जी की विचारधारा ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है। समाजवादी चिंतक व नेता डॉ0 राम मनोहर लोहिया भी गांधी जी से बहुत प्रभावित थे – ''लोहिया ने बार–बार कहा है कि वह केवल एक ही आदमी से प्रभावित रहे हैं और वह गांधी जी हैं।''[3]

बापू के अंहिसा के सिद्धान्त को सम्पूर्ण विश्व ने सराहा है। वे मन, वचन तथा कर्म से अहिंसा के पक्षधर थे। वे कहते हैं – ''जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में संयम रखना अपेक्षित है। उनकी अहिंसा की अवधारणा मन, वचन, कर्म से सम्बन्धित है।''[4]

गांधी जी कानून के मर्मज्ञ ही नहीं अपितु इतिहास, राजनीति, धर्म, दर्शन एवं साहित्य, कला से सम्बन्धित सामग्रियों के गहन अध्येता थे। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह का इतिहास जैसी पुस्तकें, भाषा, संस्कृति, राजनीति, शिक्षा व समाज से सम्बन्धित उनके लेख एक उत्कृष्ट कोटि के लेखक होने का प्रमाण हैं। दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी ने आठ वर्ष तक सत्याग्रह आन्दोलन चलाया – ''सन् 1904 में डरबन से महात्मा गांधी ने 'इण्डियन ओपनियन' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इस पत्र के माध्यम से वह बराबर भारतीय समाज पर लगे प्रतिबन्धों के विरूद्ध आवाज उठाते थे। 'इण्डियन ओपनियन' पत्र के लेखों का हेनरी पोलक पर बहुत प्रभाव पड़ा। वह महात्मा गांधी के भक्त हो गये। हेनरी ने उन्हें एक पुस्तक 'अन टू दिस लास्ट' दी। 'सर्वोदय' के नाम से महात्मा गांधी ने उस पुस्तक का अनुवाद किया।''[5]

भारत में 'हरिजन', 'यंग इण्डिया', 'हरिजन सेवक' जैसे पत्रों का प्रकाशन गांधी जी को पत्रकारिता के क्षेत्र

में यादगार बनाता है। इन पत्र–पत्रिकाओं द्वारा वे शिक्षा, साहित्य, राजनीति आदि विषयों पर अपने विचार प्रकट करते रहे हैं। तमिल, मराठी, गुजराती, हिन्दी, बांगला आदि भाषाओं के साहित्कारों से इनकी निकटता रही है। हिन्दी साहित्य में गांधी जी की विचारधारा का गहरा प्रभाव है। हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों में गणेश शंकर विद्यार्थी, मैथिलीशरण गुप्त, बनारसी दास चतुर्वेदी, प्रेमचंद, नागार्जुन, सुमित्रानन्दन पंत, निराला, महादेवी वर्मा, सोहनलाल द्विवेदी, हरिवंशराय बच्चन, भवानी प्रसाद मिश्र, डॉ० नगेन्द्र आदि गांधी जी के विचार एवं सोच से कहीं न कहीं प्रभावित हुए थे।

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने गांधी जी की विचारधारा से प्रभावित होने की बात कहीं है। प्रेमचंद के उपन्यासों में गांधी जी का प्रभाव देखा जा सकता है – ''प्रेमचंद पर गांधीवाद का प्रभाव स्पष्ट है। उनके अनेक प्रारम्भिक उपन्यासों पर गांधीवादी आदर्श, हृदय–परिवर्तन एवं सुधारवाद का प्रभाव है। उपन्यास का अंत हृदय–परिवर्तन और किसी आश्रम स्थापना में होता है। उपन्यासों का अंत ही नहीं, पात्र, चरित्र–चित्रण आदि पर गांधीवादी सिद्धान्तों का दबाव है। इस विषय में दो बातों को ध्यान में रखकर प्रेमचंद के आदर्शवादपर विचार करना चाहिए। एक तो गांधीवादी विचारधारा का 'पाप से घृणा करो किन्तु पापी से प्रेम' और 'अहिंसा' भारतीय आदर्शवाद की धारा, विशेषतः मध्यकालीन संतों के अनुकूल है।''[6]

गांधी जी के नैतिक मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धान्तों को हिन्दी कथा साहित्य में ही नहीं अपितु विभिन्न कवियों की काव्यधारा में भी देखा जा सकता है। मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत–भारती' में गांधी जी के प्रभाव को बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया है।

महादेवी वर्मा भी कविता के माध्यम से बापू के प्रति अत्यधिक सम्मान, श्रृद्धा व आदर का भाव प्रकट करती हैं। सुप्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी ने भी महात्मा गांधी के सम्मान में कविता लिखी है। कवि भवानी प्रसाद ने 'गांधी पंचशती' नामक रचना गांधी जी से प्रभावित होकर लिखी थी।

काव्य की भाषा को जन–जीवन के निकट लाकर प्रशंसनीय कार्य करने वाले कवि हरिवंश राय 'बच्चन' ने गांधी शताब्दी कविता में राष्ट्र के ऐसे अनेक कर्णधारों की खबर ली है जो साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से अनभिज्ञ होते हुए भी बे–झिझक इस सम्बन्ध में अपनी बात रखते हैं। बच्चन ने यह कविता व्यंग्य शैली में लिखी है –

''कोई / अनन्य, निज–नाम–धन्य
(कल्पना करें)
खादी–गांधी–वादी नेता / संसद में मुझको सम्बोधित कर बोले,
'गांधी शताब्दी' आती है, / बच्चन जी, आप बड़े कवि हैं 'मधुशाला' के
कुछ बापू पर भी लिखिए।
कुछ समझ नहीं पाया / क्या उनको उत्तर दूँ।''[7]

गांधी जी से कवि नागार्जुन भी बहुत प्रभावित थे। नागार्जुन ने अनेक तात्कालिक कविताओं को कालजयी बना दिया। ये कविताएं आज भी तात्कालिक लगती हैं।

गांधीवादी विचारों से आधुनिक हिन्दी साहित्य बहुत प्रभावित है। डॉ० नगेन्द्र ने कहा है – ''भारतीय आदर्शवाद के–जिसका कि प्रतीक सम्प्रति गांधीवाद है – तीन पक्ष हैं। एक सौन्दर्यमय अनुभूत्यात्मक पक्ष, दूसरा

राष्ट्रीय संस्कृति पक्ष और तीसरा दार्शनिक भौतिक पक्ष। पहले की अभिव्यक्ति छायावाद में हुई और दूसरे की राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविताओं में, तीसरे पक्ष की अभिव्यक्ति विरल है। यह हिन्दी साहित्य के केवल एक ही कवि सियारामशरण गुप्त में मिलती है।''[8]

हिन्दी भाषा के प्रति गांधी जी का लगाव अविस्मरणीय है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के जयन्ती समारोह में गांधी जी काशी गये। उन्होंने वहां पर अंग्रेजी भाषा को अधिक महत्व दिये जाने पर एवं हिन्दी के प्रति उपेक्षा के भाव को देखकर क्षोभ व्यक्त किया। 21 जनवरी 1942 को काशी विश्वविद्यालय के रजत जयन्ती समारोह में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर उन्होंने हिन्दी में भाषण दिया। मालवीय जी के सरल, स्वच्छ, सादगीपूर्ण जीवन तथा देश सेवा के प्रति आदर भाव दिखाते हुए उन्होंने कहा – ''जब एक पर एक वक्ता मंच पर व्याख्यान देने के लिए आते तब मेरे हृदय में आता था कि कोई तो होता जो हिन्दी में या उर्दू या हिन्दुस्तानी में, संस्कृत में, मराठी में या किसी भी भारतीय भाषा में बोलता किन्तु मेरे या आपके भाग्य में वैसा नहीं लिखा था। क्यों? क्योंकि हम गुलाम हैं और जिन्होंने हमें गुलाम बना रखा है उनकी भाषा से चिपटे हुए हैं। अपनी त्रुटियों के लिए अंग्रेजों को दोष देने का फैशन–सा हो गया है। हम स्वयं वर्ष पर वर्ष अंग्रेजों जैसी अंग्रेजी सीखने में बिता देते हैं और जब कोई अंग्रेज धारा प्रवाह शुद्ध अंग्रेजी बोलने पर हमारी पीठ ठोक देता है तो हमारी छाती फूल उठती है। जरा सरल गणित लगाकर देखिए तो अंग्रेजी को इस प्रकार सीखने में, जैसे वह हमारी मातृभाषा हो, हमारे युवकों का कितना मूल्यवान समय नष्ट हो जाता है।''[9]

गांधी जी का हिन्दी भाषा के प्रति लगाव और हिन्दी साहित्यकारों पर गांधी जी का प्रभाव निरन्तर बना रहा। यह गांधी जी की दूरदर्शिता ही थी कि वे भारत के अधिकांश प्रान्तों में बोली और समझी जाने वाली एकमात्र भाषा हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा बनाये जाने के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि दक्षिण के जिन प्रान्तों में हिन्दी नहीं बोली जाती, धीरे–धीरे वहां भी इसे बोला और समझा जा सकता है। हिन्दी भाषा राष्ट्र की एकता, सांस्कृतिक विविधता और आम जन की समस्याओं को निकटता से महसूस करने का सशक्त माध्यम है। इसीलिए गुजराती भाषी होते हुए भी हिन्दी भाषा के प्रयोग, विकास एवं समृद्धि के लिए गांधीजी निरंतर प्रयत्नशील और चिंतित रहते थे। गांधी हिन्दी लिखते थे और बोलते भी थे। हिन्दी भाषा के लिए बापू का योगदान प्रासंगिक है और सदैव प्रासंगिक रहेगा।

**संदर्भ सूची :–**


1. हरिजन–महात्मा गांधी 28–09–1934, पृष्ठ–260
2. महात्मा गांधी का समाजदर्शन–महादेव प्रसाद, पृष्ठ–30
3. समाजवादी दर्शन और डॉ0 लोहिया–लक्ष्मीकान्त वर्मा, पृष्ठ–25
4. गांधी धर्म और समाज–शम्भू रत्न त्रिपाठी, पृष्ठ–37
5. दक्षिण अफ्रीका में रंग क्रान्ति–पृथ्वीनाथ पाण्डेय पृष्ठ–12, 13
6. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास–विश्वनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ–96
7. आधुनिक कविता–डॉ0 बिन्दु अग्रवाल, पृष्ठ–96
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ0 श्री निवास शर्मा, पृष्ठ–425
9. उत्तर प्रदेश में गांधी जी–श्रीरामनाथ सुमन, पृष्ठ–181, 182


मोबा0–7500334778, joshihindi01@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 45-49

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिन्दी कविता में महात्मा गांधी की विचारधारा का प्रभाव

**डॉ. विक्रम सिंह**

असि0 प्रोफेसर हिन्दी विभाग, एम0 बी0 रा0 स्ना0 महाविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल) 263139

भूमंडलीकरण के इस दौर में जब बाजार सम्पूर्ण विश्व पर हावी हो रहा है, तब ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सम्पूर्ण विश्व सिमटता जा रहा है। भौतिकवाद की ओर आशक्ति बढ़ने के कारण हमारे नैतिक मूल्य हाशिये पर चलते चले जा रहे हैं, तो ऐसी स्थिति में गांधी जी का दर्शन और विचारधारा अनायास ही हमें अपनी ओर आकृष्ट करती है। गांधी जी के सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक विचारों के पल्लवित एवं पुष्पित होने में उनके जिन समकालीन विचारकों के प्रभाव को देखा जा सकता है उसमें टालस्टाय और रस्किन का नाम अग्रणी रूप से लिया जाता रहा है। टालस्टाय द्वारा प्रतिपादित यह विचार कि 'प्रत्येक मनुष्य को अपने दैविक भोजन के लिए शारीरिक श्रम करना चाहिए' इस विचार ने गांधी को अत्यन्त प्रभावित किया था। उन्हीं के अहिंसात्मक आंदोलन से प्रभावित होकर उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में 'टालस्टाय आश्रम' की स्थापना की। साथ ही जॉन रस्किन की सन् 1862 में प्रकाशित पुस्तक 'अंटू दि लॉस्ट' का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। 'अंटू दि लॉस्ट' का अर्थ है कतार में खड़ा वह अंतिम मनुष्य जो साधनहीं न और निरीह है, उसका उदय, अर्थात अंत्योदय। महात्मा गांधी विशुद्ध राजनीतिक विचारक नहीं थे, उनके चिंतन के केन्द्र में मानव का सर्वांगीण विकास था। इतना ही नहीं महात्मा गांधी भक्तिकाल के प्रमुख स्तम्भ संत कबीरदास से भी उतने ही प्रभावित थे जितना विदेशी लेखकों से। इस संबंध में पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल अपने निबंध 'कबीर और गांधी' में लिखते है– ''अपनी सन् 1935 ई0 की हरिजन–यात्रा में महात्मा गांधी पहुँचे, तब कबीर मठ में उनसे यह सुनकर कि मेरी माता कबीर पंथी थीं, उपस्थित जनसमुदाय को विस्मय हुआ था।''[1]

यह कहना समीचीन होगा कि ''भारतीय दार्शनिक विचारधारा के कारण ही गांधी पश्चिम से एकत्रित अपने विचारों को एक सूत्र में बाँध पाए। गांधी जी के विचारों पर भगवद्गीता, रामायण आदि का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। श्रवण पितृभक्ति, राजा हरिश्चन्द्र जैसे नाटकों ने भी उन्हें प्रेरित किया। और यही विचार आगे 'ट्रस्टीशिप' तथा 'न्यासिता' के सिद्धान्तों की नींव डालते हैं। 'राजा हरिश्चन्द्र' के नाटक ने उन्हें सत्य की राह पर चलने को प्रेरित किया और श्रवण की पितृभक्ति ने उनके लिए कर्तव्य का मार्ग प्रशस्त किया। रामायण से तो वे इतने अधिक प्रभावित हुए कि अपने सपनों का भारत को उन्होंने रामराज्य की संज्ञा दे डाली।''[2]

यूँ तो महात्मा गांधी जी ने हर विषय पर अपने विचार प्रकट किये हैं, जिसके केन्द्र में सत्य अहिंसा और मानवतावाद रहा है। हिन्दी साहित्य भी उनके विचारों से अछूता नहीं रहा। हिन्दी के अनेक महान रचनाकारों ने उनके विचारों को केन्द्र में रखकर लेखन किया है। हिन्दी कविता की बात करें, तो वह भी गांधी जी के विचारों

से ओतप्रोत है– ''गांधी जी राष्ट्रीयता और संस्कृति के उन्नायक एक महापुरूष के रूप में अवतरित होते हैं, इसलिए उनसे प्रभावित साहित्य की मूल प्रेरणा राष्ट्रीय और सांस्कृतिक मानी जाती है। हिन्दी साहित्य की प्रत्येक विधा पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से गांधी जी की विचारधारा एवं दर्शन का कितना प्रभाव है इस संबंध में डॉ0 नगेन्द्र लिखते हैं– ''गांधी दर्शन हमारा युग–दर्शन है। और इसके सर्वव्यापी प्रभाव से आधुनिक कवि अछूते नहीं रहे हैं।''[3]

गांधी जी की विचारधारा के केन्द्र में मूल रूप से सत्य और अंहिसा रहा है भारतीय रजनीति में गांधी जी की सक्रियता मूल रूप से सन् 1915–16 से मानी जाती है। हिन्दी साहित्य की दृष्टि से यह काल द्विवेदी युग के समापन और छायावाद के आगमन का काल माना जाता है, इस दौर के अधिकांश कवि महात्मा गांधी जी के विचारों से अत्यन्त प्रभावित थे। जिनमें माखनलाल चतुर्वेदी, अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, रामधारी सिंह दिनकर, सियाराम शरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पंत, आदि कवि प्रमुख हैं।

गांधी जी की पुस्तक 'हिन्द स्वराज' विशिष्ट, अनोखी और मौलिक वैचारिक रचनाओं में शामिल है,– ''यह एक ऐसी पुस्तक है, जिसकी उपेक्षा मानव के सामाजिक, आर्थिक और मानसिक विकास के संदर्भ में तथा समकालीन समस्याओं पर होने वाले किसी भी विचार विमर्श या वाद–विवाद में नहीं की जा सकती। यह पुस्तक न केवल गांधी के जीवन, विचार और दर्शन को स्पष्ट करती है..... वरन वह मानव जाति की मानसिक स्वतंत्रता तथा उसके पशुत्व से मनुष्यत्व और फिर मनुष्यत्व से देवत्व तक की यात्रा का खाका भी प्रस्तुत करती है।''[4]

मूल रूप से गांधी जी अपने स्वराज्य में रामराज्य की कल्पना को साकार करना चाहते थे उनके इस राम राज्य की कल्पना को 'पंचवटी' काव्य में मैथिलीशरण गुप्त लक्ष्मण के माध्यम से रामराज्य की स्थिति के बारे कहते हैं–

''अहा आर्य के विपिन राज्य में सुख पूर्वक सब जीते हैं,
सिंह और मृग एक घाट पर आकर पानी पीते हैं।''[5]

गांधी जी को आस्था और प्रार्थना में कितना विश्वास था, इसका उत्तर हमें उनके स्वयं के वक्तव्य से मिल जाता है, इस संबंध में वे लिखते हैं–''मैं स्वयं को आस्था और प्रार्थना का व्यक्ति मानता हूँ, और मुझे टुकड़े–टुकड़े भी कर दिया जाय तो भी मेरा विश्वास है कि ईश्वर मुझे इतनी शक्ति देगा कि मैं उनके व्यक्तित्व से इन्कार न करूँ और जोर देकर कहूँ कि वह है।''[6]

रामधारी सिंह दिनकर जी की विचारधारा एवं कविता में भी गांधी जी की विचारधारा की तरह ही ईश्वर में अटूट आस्था है, उर्वशी में वे लिखते हैं–

भ्रान्ति नहीं, अनुभूति, जिसे ईश्वर हम सब कहते हैं,
शत्रु प्रकृति का नहीं, न उसका प्रतियोगी, प्रतिबल है।
किसने कहा तुम्हें परमेश्वर और प्रकृति ये दोनों साथ नहीं रहते।
ईश्वरीय जग भिन्न नहीं है इस गोचर जगती से
इसी अपावन में अदृष्य वह पावन सना हुआ है।"[7]

गांधी जी की दृष्टि ईश्वर और अल्लाह एक ही हैं, वे राम और रहीम को एक मानते है इस संबंध में उनका विचार है– ''मुझे मार भी दिया जाये तब भी मैं राम और रहीम के नामों का जाप नहीं छोडूँगा, जो मेरे लिए एक

ही ईश्वर के दो नाम हैं, होंठों पर इन नामों को लेते हुए मैं प्रसन्नता पूर्वक मर सकता हूँ।''[8]

गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर प्रभु राम के अनन्य भक्त सियाराम शरण गुप्त भी राम और रहीम को एक मानते हैं। उनका मानना है कि नाम में भिन्नता हो सकती है लेकिन मूल रूप में उनमें कोई अन्तर नहीं है। 'आत्मोसर्ग' काव्य संग्रह की निम्न पंक्तियों में इसे देखा जा सकता है–

''नहीं दूसरा कोई,
उसे रहीम कहो या राम,
भिन्न उसे कर सकते हो क्या,
देकर भिन्न–भिन्न कुछ नाम?''[9]

गांधी जी भारत को कर्म भूमि मानते हैं, कर्मवाद उनके जीवन का अहम हिस्सा रहा है। यह सर्वविदित है कि वे गीता से अत्यन्त प्रभावित थे, कहना न होगा कि गीता के कर्मवाद के सिद्धान्तों को उन्होंने अपने जीवन और दैनिकचर्या में उतारा था। भारत की विशेषता एवं प्रवृत्ति के प्रति उनकी दृढ़ आस्था, और गहन आकर्षण है। 'मेरे सपनों का भारत' पुस्तक में वे भारत के बारे में लिखतें हैं– ''भारत की हर चीज मुझे आकर्षित करती है। सर्वोच्च आकांक्षायें रखने वाले किसी व्यक्ति को अपने विकास के लिए जो कुछ चाहिए, वह सब उसे भारत में मिल सकता है। भारत अपने मूल स्वरूप में कर्मभूमि है भोगभूमि नहीं।''[10]

गांधी जी के इस कर्मवाद के आकर्षण से हिन्दी कविता भी अछूती नहीं रही है। हिन्दी के महत्वपूर्ण कवियों ने कर्मवाद के महत्व को समझा और इसे केन्द्र में रखकर कविताओं की रचना की। रामधारी सिंह दिनकर जी 'कुरूक्षेत्र' कविता में कर्म की महत्ता को समझाते हुए कहते हैं कि निष्काम कर्म से ही समाज का कल्याण और उन्नति सम्भव है–

''बुला रहा निष्काम कर्म वह
बुला रही है गीता
बुला रही तुम्हें आर्त हो
मही समर सम्मीता।''[11]

इसी कविता में वे आगे भीष्म पितामह के माध्यम से कर्मवाद के महत्व को समझाते हुए कहते हैं कि कर्मलोक से दूर नहीं भागना चाहिए :–

''कर्मभूमि है निखिल महीतल
जब तक नर की काया
तब तक है जीवन के अणु–अणु
में कर्तव्य समाया।''[12]

गांधी जी का संम्पूर्ण जीवन मानवतावादी रहा है वे 'सत्य और अहिंसा के पक्षधर रहे हैं और जीवन के अंतिम पड़ाव तक उन्होंने इसका अक्षरशः पालन किया, सत्य के संबंध में उनका यह विचार कि–''मैं एक ही ईश्वर का दास हूँ और वह है सत्य।''[13]

अहिंसा के अर्थ एवं महत्व को समझाते हुए वे लिखते हैं– ''अपने सक्रिय रूप में अहिंसा का अर्थ है ज्ञानपूर्वक कष्ट सहना। उसका अर्थ अन्यायी की इच्छा के आगे दबकर घुटने टेकना नहीं; उसका अर्थ यह है

कि अत्याचारी की इच्छा के खिलाफ आत्मा की सारी शक्ति लगा दी जाये।''[14]

गांधी जी के सत्य एवं अहिंसा की वास्तविकता को समझाते हुए शंभू नाथ दुबे लिखते हैं– '' आज की दुनिया में हिंसा का सवाल एक बड़ा सवाल है। एक तरह से यह तथाकथित आधुनिक सभ्यता हिंसा की चपेट में है। भय और हिंसा इस सभ्यता के मूल में है। लेकिन यह ध्यान रखने की जरूरत है कि हिंसा का विकल्प हिंसा नहीं हो सकता और न ही हिंसा को हिंसा के सहारे पराजित किया जा सकता है। अन्याय को न्याय से घृणा को प्रेम से, असत्य को सत्य से और हिंसा को अंहिसा से ही समाप्त किया जा सकता है गांधी ने मानवता को अंहिसा का पाठ पढ़ाया ..... दरअसल गांधी ने बहुत पहले ही यह पहचान लिया था कि हिंसा से किसी समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सकता ..... गाधी ने हिंसा का जवाब सत्याग्रह और आत्मबल से देने की बात कहीं।''[15]

गांधी जी की सत्य और अंहिसा संबंधी अवधारणा को हिन्दी के बहुसंख्य कवियों ने अपनी कविता का विषय बनाया। छायावाद के प्रमुख स्तम्भों में एक, प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पंत अपनी कविता 'नवदृष्टि' में सत्य एवं शिव का समन्वय करते हुए लिखते हैं–

''सुंदर, शिव सत्य
कला के कल्पित माप–मान
बन गए स्थूल
जग जीवन से हो एक प्राण,।''[16]

इतना ही नहीं सुमित्रानन्दन पंत तो गांधी जी के व्यक्तित्व, आदर्शों एवं विचारधारा से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने 'बापू' और 'बापू के प्रति' शीर्षक से कविताएं रच डाली। 'बापू' शीर्षक कविता में पंत जी महात्मा गांधी को संबोधित करते हुए प्रश्नावली शैली में कहते हैं कि वो कौन से तत्व होंगे जिससे आप भावी मानव जाति का निर्माण करोगे, जिससे मानवता एवं भारतीय संस्कृति का परचम लहरा सके–

''किन तत्वों से गढ़ जाओगे तुम भावी मानव को?
किस प्रकाश से भर जाओगे इस समरोन्मुख भव को?
सत्य अंहिसा से आलोकित होगा मानव का मन?
अमर प्रेम का मधुर स्वर्ग बन जाएगा जग–जीवन?
आत्मा की महिमा से मंडित होगी नव मानवता?
प्रेम शक्ति से चिर निरस्त हो जाएगी पाश्वता?''[17]

इसी कविता में पंत जी गांधी जी को मानवता के कल्याण के लिए अवतरित मानने के साथ–साथ नव संस्कृति के दूत के रूप में मानते हैं :–

नहीं जानता युग विवर्त में होगा कितना जन क्षय,
पर मनुष्य को सत्य अहिंसा इष्ट रहेंगें निश्चय !
नव संस्कृति के दूत ! देवताओं का करने कार्य
मानव आत्मा को उबारने आये तुम अनिवार्य।''[18]

महात्मा गांधी के बहुसंख्य परिवर्तनकारी विचार तत्कालीन समय में जिन्हें नजरअंदाज कर दिया गया था,

वर्तमान में स्वीकार्य ही नहीं अपितु अपनाए भी जा रहे हैं। वर्तमान पीढ़ी के लिए तो गांधी जी के विचार और अधिक प्रासंगिक हो गए हैं, इसमें कोई दो राय नहीं कि बीसवीं शताब्दी में वे भारत के लिए ही नहीं, कहना चाहिए कि बहुसंख्य देशों में सर्वाधिक प्रभावशाली चिर–परिचित व्यक्तित्व रहे, यही कारण है कि हिन्दी साहित्य के चर्चित एवं महत्वपूर्ण कवियों ने उनके मौलिक, सर्वग्राही, मानवतावादी एवं परिवर्तनकारी विचारों से अंतःकरण से प्रभावित होकर अपने लेखन में प्रमुखता से स्थान दिया। इनकी रचनाओं और गांधी जी के विचारों को पढ़ने और गढ़ने से यह स्वयं ही प्रमाणित हो जाता है। यही कारण है कि प्रत्यक्ष रूप में न सही परोक्ष रूप में वर्तमान में भी हर क्षेत्र में उनका दखल एवं उपस्थिति देखी जा सकती है।

**संदर्भ :–**


1. उत्तराखंड का हिन्दी साहित्य, सं0, डॉ0 शेर सिंह बिष्ट पृ0–72
2. गांधी अध्ययन, सं0, मनोज सिन्हा, पृ0–72
3. आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ, डॉ0 नगेन्द्र पृ0–19
4. गांधी अध्ययन, सं0, मनोज सिन्हा, पृ0 35
5. पंचवटी, रामधारी सिंह दिनकर पृ0–04
6. यंग इंडिया, महात्मा गांधी, 08–12–1927, पृ0–427
7. उर्वशी, रामधारी सिंह दिनकर, पृ0–81
8. हरिजन, महात्मा गांधी, 20–04–1947, पृ0–118
9. आत्मोसर्ग, सियारामशरण गुप्त, पृ0– 40
10. मेरे सपनों का भारत, महात्मा गांधी, पृ0–09
11. कुरूक्षेत्र, रामधारी सिंह दिनकर, पृ0–20
12. वही, पृ0–21
13. हरिजन, महात्मा गांधी, 15–04–1939 पृ0–87
14. मेरे सपनों का भारत, महात्मा गांधी, पृ0–68
15. गांधी अध्ययन, सं0, मनोज सिन्हा, पृ0–199–200
16. युगवाणी, सुमित्रानन्दन पन्त, पृ0–19
17. रश्मिबंध, सुमित्रानन्दन पंत पृ0– 74
18. वही, पृ0–74



vikramrathour2010@gmail.com

मो0 नं0 – 8859904670

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 50-53

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# प्रेमचंद के साहित्य में गांधीवादी विचारधारा

**डॉ. ममता**

असि0 प्रो0 (गेस्ट), हिन्दी, महाराणा प्रताप राजकीय महाविद्यालय, नानकमत्ता (ऊ0सिं0न0)

हिंदी साहित्य जगत में स्वनामधन्य सुप्रसिद्ध साहित्यकार 'प्रेमचंद' की साहित्यिक भूमि अत्यंत विस्तृत रही है। उपन्यास, जीवनी, कहानी इत्यादि के क्षेत्र में 'प्रेमचंद' अग्रणी है। उनकी अनूठी अद्वितीय लेखनी के कारण उन्हें कथा सम्राट, उपन्यास सम्राट जैसे नाम से संबोधित किया जाता है। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में भारतीय जीवन की यथार्थ झलक प्रस्तुत की है। जीवन के गहन, अनूठे रंगों से साहित्य सराबोर है। वहीं उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग के जीवन दर्शन होते हैं। जैसे–जैसे प्रेमचंद साहित्य रचना करते गए वैसे–वैसे मानव जीवन से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक समस्याओं के प्रति उनकी समझ गहरी होती चली गई। 'प्रेमचंद' के समय गांधी राजनीति के क्षेत्र में पर्दापण कर चुके थे और गांधी के राजनीतिक क्षेत्र में आते ही राष्ट्रीय संघर्ष में एक नए दौर की शुरुआत होती है। भारत देश के अनगिनत लोग गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित होकर ब्रिटिशों के विरुद्ध खड़े हो गये। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में गांधी का साथ दिया। गांधीवादी विचारधारा से प्रेमचंद भी प्रभावित थे, इसलिए उनके साहित्य में गांधीवादी विचारधारा स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है; क्योंकि साहित्यकार चाहे जिस किसी भी युग में जीता है, युगीन परिस्थितियों की झलक उसके साहित्य में स्पष्ट परिलक्षित होती है।

जब गांधी देश को अंग्रेजी हुकूमत से मुक्त करने के लिए आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे एवं भारतीय लोकमानस के हृदय में गुलामी की जंजीरों को तोड़कर आजादी का बिगुल बजाकर राष्ट्रीयता जगाने का प्रयास कर रहे थे, तो ऐसे में देशभक्त हिंदी साहित्यकार कैसे देशभक्ति, राष्ट्रीयता की भावना से अछूता रहता? स्वदेशी अनुराग, माटी के प्रति प्रेम, समर्पण का प्रतिपादन उन्होंने पूरी तन्मयता से किया। ''यह गांधी की आंधी जो भारत ने देखी और जिससे सारा संसार प्रभावित हुआ। वह थी सामान्य व्यक्ति के त्याग सामर्थ्य को बढ़ाने वाले वातावरण की पावनता।''[1]

'प्रेमचंद' का संपूर्ण व्यक्तित्व महासमुद्र की तरह है। वह ऐसा महाआख्यान है जिसे एक उपन्यास में वर्णित, चित्रित नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार गांधी मानवीय गुण को सर्वोपरि मानते हैं, प्रेमचंद ने भी मानव मात्र को सुखी बनाने की बात को अभिव्यक्त कर के गांधी के सिद्धांतों को स्वीकार किया है। तत्कालीन समाज की दशा का निरूपण करते हुए समाज में व्याप्त ऊंच–नीच की भावना का विरोध किया। समाज के निम्न वर्ग को प्रतिष्ठा प्रदान की। 'रंगभूमि' उपन्यास पर गांधी का प्रभाव स्वीकार किया जा सकता है। इस उपन्यास का पात्र सूरदास बड़ी बेबाकी से गांधी की तरह ही बुराई का सामना करता है। 'सूरदास' पूंजीपति और उसके समर्थक जनों से टक्कर लेता है और अधिकारों की लड़ाई में अपने प्राण न्यौछावर कर देता है। उसके गुणों का

बखान करते हुए 'प्रेमचंद' कहते हैं–

''हां वह साधु न था, महात्मा ना था, देवता न था, फरिश्ता न था, एक क्षुद्र, शक्ति–हीन प्राणी था, चिंताओं और बाधाओं से घिरा हुआ, जिसमें अवगुण भी थे और गुण भी। क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ये सभी दुर्गुण उसके चरित्र में भरे हुए थे, गुण केवल एक था। किन्तु ये सभी दुर्गुण उस पर गुण के संपर्क से, नमक की खान में जाकर नमक हो जाने वाली वस्तुओं की भांति, देवगुणों का रूप धारण कर लेते थे– क्रोध सत्क्रोध हो जाता था, लोभ सदनुराग, मोह सदुत्साह के रूप में प्रकट होता था और अहंकार आत्माभिमान के वेश में। और वह गुण क्या था न्याय प्रेम, सत्य–भक्ति, परोपकार, दर्द, या उसका जो नाम चाहे रख लीजिए। अन्याय देखकर उससे रहा न जाता था, अनीति उसके लिए असह्य थी।''[2]

राजनीति के क्षेत्र में 'महात्मा गांधी' ने जो भी कार्य किये, मार्ग प्रदर्शन किया, उन चीजों को 'प्रेमचंद' ने कलम का सिपाही बन लोगों के समक्ष पहुंचाया। प्रेमचंद स्वयं कहते हैं ''मैं दुनिया में महात्मा गांधी को सबसे बड़ा मानता हूं। उनका भी उद्देश्य यही है कि मजदूर और किसान सुखी हों। वह लोगों को आगे बढ़ाने के लिए आंदोलन चला रहे हैं, मैं लिखकर उनका उत्साह दे रहा हूं। महात्मा गांधी हिंदू–मुसलमान की एकता चाहते हैं तो मैं भी हिंदी और उर्दू को मिलाकर हिंदुस्तानी बना हूँ।''[3]

गांधी जी के अमूल्य विचारों में सत्य अहिंसा सत्याग्रह विशिष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उन्होंने ब्रिटिश सरकार की उग्र नीति का जवाब शांतिपूर्ण विरोध की नीति को अपनाकर दिया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बीच सत्य के मार्ग अपनाने की पहल की और सत्य के मार्ग का अनुसरण करते हुए चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ, बाधाएँ आईं, उससे विचलित न होकर अडिग रहने का संदेश दिया। इसी का अनुसरण प्रेमचंद के 'नमक का दरोगा' कहानी का पात्र बंशीधर भी करता है, जिसे न जाने कितने प्रलोभन दिए जाते हैं पर वह सच्चाई और ईमानदारी का मार्ग नहीं छोड़ता है। कहानी के पात्र अलोपीदीन जब बंशीधर को रिश्वत देता है तो वह कहते हैं–

''हम उन नमक हराम में नहीं हैं, जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में है। सवेरे आपका कायदे के अनुसार चालान होगा। बस मुझे अधिक बातों की फुर्सत नहीं है। जमादार बदलू सिंह! तुम इन्हें हिरासत में ले लो मैं हुक्म देता हूँ।''[4]

गांधी ने सदैव अन्याय का विरोध करने को कहा। उनकी दृष्टि में अन्याय करना और सहना समान है क्योंकि अन्याय सहने वाला भी कहीं ना कहीं अन्याय को बढ़ावा दे रहा होता है। प्रेमचंद की स्त्री पात्र भी अन्याय का विरोध करती हैं। 'गोदान' उपन्यास की मालती और 'बलिदान' कहानी की सुभागी उनके साथ में हुए अन्याय के लिए आवाज उठाती हैं–''सुभागी यूं चुपचाप बैठने वाली स्त्री न थी। वह क्रोध से भरी हुई कालिकादीन के घर गई और उसकी स्त्री को खूब लथेड़ा। कल का बानी आज का सेठ, खेत जोतने चला है, देखें कौन मेरे खेत में हल ले जाता है? अपना और उसका लहू एक कर दो। नारायण ने धन दिया तो क्या गरीबों को कुचलते फिरेंगे? सुभागी ने समझा मैंने मैंदान मार लिया उसका चित्त शांत हो गया।''[5]

''प्रेमचंद के उपन्यासों में जो राष्ट्रीय वातावरण का प्रभाव परिलक्षित होता है, उसका मूल कारण तत्कालीन राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियां कही जा सकती हैं। कर्मभूमि में गांधीजी के व्यावहारिक कार्यक्रमों का गांव में प्रचार–प्रसार दिखाई देता है। सूत–कटाई, बुनाई, हरिजन उद्धार, शराब बंदी, मुर्दा जानवरों

का मांस भक्षण ना करना, विभिन्न जातियों में रोटी व्यवहार, मंदिर प्रवेश का आंदोलन इन सभी सामाजिक कार्यों को प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में प्राप्त स्थान दिया है। इसे पढ़ते समय गांधी युग का वातावरण साकार होता जान पड़ता है।.....सुखदा का विलास मार्ग को त्यागना और सेवा मार्ग ग्रहण करना, राष्ट्र सेवा के लिए तत्पर होना गांधी युगीन प्रभाव को तत्पर करता है।''[6]

'कर्मभूमि' उपन्यास का सत्यान्वेषक पात्र अमरकांत भी अन्याय के मार्ग का अनुसरण कर रहे अपने पिता को सन्मार्ग की ओर उन्मुख करता है। वह व्यक्ति जो कल तक गरीब, निम्न वर्ग के लोगों को घृणा की दृष्टि से देखता था आज उनका हितधारक बन गया है। उनके हितों के लिए वह जेल जाने को तैयार हो जाते हैं। जब पुलिस उनको पकड़कर ले जाती है तब सारी जनता बोलती है–''लाला समरकान्त की जय!' गहरी, हार्दिक वेदना से भरी हुई ध्वनि किसी बंधुए पशु की भांति तड़पती, छटपटाती ऊपर को उठी, मानो परवशता के बंधन को तोड़कर निकल जाना चाहती हो।''[7]

भारतवर्ष में संप्रदायों के बीच मतभेद सदैव ही देखने को मिलता है। मतभेद के कारण कभी–कभी समाज में हिंसा की प्रवृत्ति जन्म लेने लगती है; जिससे जनसाधारण को भारी कीमत चुकानी पड़ती है। गांधी ने हिंदू –मुस्लिम एकता का पुरजोर समर्थन किया। उनकी बात का 'प्रेमचंद' ने बखूबी अनुसरण किया। 'कर्मभूमि' उपन्यास में अमर– सलीम और तथा 'पंच परमेश्वर' कहानी के पात्र अलगू चौधरी और जुम्मन शेख की मित्रता एकता का संदेश देती है–

''जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी। साझे में खेती होती थी । कुछ लेनदेन में भी साझा था। एक को दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गए थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गए थे, और अलगू जब कभी बाहर जाते तो जुम्मन पर अपना घर छोड़ देते थे। उनमें न खान–पान का व्यवहार था, न धर्म का नाता; केवल विचार मिलते थे। मित्रता का मूलमंत्र भी यही है।''[8]

अस्पृश्यता ने सदियों से भारतीय समाज के एक वर्ग को अपना गुलाम बनाकर रखा है। इस वर्ग का प्रारंभ से ही शोषण होता आया है। गांधी ने अस्पृश्यता रूपी कीड़े को समाप्त करने के लिए अनेक प्रयत्न किया, जिसकी झलक प्रेमचंद के गोदान, कर्मभूमि उपन्यास एवं अनेक कहानियों में देखी जा सकती है। प्रेमचंद ने पूरी तन्मयता के साथ समाज में व्याप्त अछूत, भेदभाव की भावना पर कटाक्ष किया है–''समरकान्त ने अविचलित भाव से उत्तर दिया–क्या बकती है बहू? इन डोम–चमारों को मंदिर में घुसने दें! तू तो अमर से भी दो–दो हाथ आगे बढ़ी जाती है। जिसके हाथ का पानी नहीं पी सकते, उसे मंदिर में कैसे जाने दें? सुखदा ने और वाद–विवाद न किया। वह मनस्वी महिला थी। यही तेजस्विता, जो अभिमान बनकर उसे विलासिनी बनाए हुए थी, जो उसे छोटों से मिलने न देती थी, जो उसे किसी से दबने न देती थी, उत्सर्ग के रूप में उबल पड़ी। वह उन्माद की दशा में घर से निकली और पुलिस वालों के सामने खड़ी होकर, भागने वालों को ललकारती हुई बोली, "भाइयो क्यों भाग रहे हो? यह भागने का समय नहीं, छाती खोलकर सामने आने का समय है। दिखा दो कि तुम धर्म के नाम पर किस तरह प्राणों को होम करते हो। धर्मवीर ही ईश्वर को पाते हैं। भागने वालों की कभी विजय नहीं होती।''[9]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि साहित्यिक गतिविधियों को सदैव उसके आसपास की गतिविधियां प्रभावित एवं परिचालित करती हैं। क्योंकि प्रेमचंद गांधी विचारधारा से प्रभावित थे, इसलिए उनके आंदोलन के

दौरान किए गये संघर्ष की झलक, अंग्रेज शासकों की भेद नीति, गांधी की नेतृत्व क्षमता, स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग का चित्र, भारतीयों की गांधी से अपेक्षा, गांधी की शांतिपूर्ण विद्रोह के चित्र प्रेमचंद के उपन्यासों में दृष्टिगोचर होते हैं। प्रेमचंद ने साहित्य साधना करते हुए भारतवासियों के हृदय में स्वाभिमान, त्याग, प्रेम की भावना जगाकर सच्चे अर्थो में देश सेवा की है।

**संदर्भ सूची :-**


1. अछूत मतवाद के सच : गांधी और अंबेडकर, डॉ0 विवेकानंद तिवारी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, पृ0 सं0– 171
2. रंगभूमि, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस बनारस, पृ0 सं0– 554
3. Vidyawarta, Feb. 2020, पृ0 सं0 273
4. कहानी सप्तक, सं0 प्रो0 नीरजा टंडन, पृ0 सं0–48
5. 'प्रेमचंद किसान जीवन संबंधी कहानियाँ', सं0 रवीन्द्र कालिया, जितेन्द्र श्रीवास्तव, पृ0 सं0– 31
6. Vidyawarta, Feb. 2020, पृ0 सं 273
7. 'कर्मभूमि', www.hindustanbooks.com, पृ0 सं0– 260
8. 'प्रेमचंद किसान जीवन संबंधी कहानियाँ', सं0 रवीन्द्र कालिया, जितेन्द्र श्रीवास्तव, पृ0 सं0– 104
9. 'कर्मभूमि', www.hindustanbooks.com पृ0 सं0 –144



मो0 नं0– 8650943044

ई–मेल– aaryamamta493@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 54-61

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिन्दी नाट्य साहित्य में गांधी दर्शन की अभिव्यक्ति

**डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल**

सह आचार्य, हिन्दी विभाग शा. घो. कला, विज्ञान एवं गो. प. वाणिज्य महाविद्यालय शिवले, तहसिल– मुरबाड, जिला–थाना (महाराष्ट्र), पिन. 421401

**प्रस्तावना :–**

युग–पुरूष अपने समय की देन होते हैं। उनका युग–प्रवर्तक व्यक्तित्व पूरे विश्व के लिए सदा–सदा के लिए प्रेरणादायी साबित होता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे राजनेता, धर्म–सुधारक, नीतिवेता और महान शिक्षा शास्त्री थे। भारतीय जनता, जो युग–युग से दीन–हीन एवं प्रताड़ित थी, गांधीजी ने उसे अंधकार के अतल सागर में डूबने से बचाकर मानवता की सेवा के इतिहास को स्वर्ण–अक्षरों से लिखने योग्य बना दिया। पूरे भारतीय जन–मानस को आन्दोलित और प्रभावित करने वाले इस व्यक्ति का अविर्भाव भारतवर्ष की एक महान घटना है। "गांधी जी ने प्रत्यक्ष जीवन के परिक्षण, निरीक्षण, समन्वय एवं साधना को अपने विश्वासों और संस्कारों के द्वारा व्यक्ति और समाज के हित में दृढ़ विश्वास के साथ प्रस्तुत किया। उनका दर्शन मानव जीवन के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालता है। गांधी–दर्शन व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति को आधार बनाकर विकसित होन वाली विचारधारा है।"[1]

महात्मा गांधी युग पुरूष थे। उनके युगान्तकारी व्यक्तित्व ने भारतीय समाज और राजनीति को जितना आन्दोलित एवं प्रभावित किया, उतना ही हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं–कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना आदि को भी प्रभावित किया। अपने विराट व्यक्तित्व और विशद् संस्कारिता तथा मानवतावादी विचार और तद्नुषंगिक सौहार्द आचरण के फलस्वरूप वे महनीय भारतीय संस्कृति के महान प्रतीक बन गये। उनके व्यक्तित्व में भारतीय ऋषि–मुनियों, मनीषियों की पवित्रता और विचार गंभीरता का मनोज्ञ संगम था। पीड़ितों के प्रति करूणा, जीवनगत नैतिकता, आध्यात्मिक भावना की व्यावहारिकता, मानवमंगल की कामना, सामाजिक विकास की तन्मयता तथा विनाश, विद्वेष एवं विध्वंस से सराबोर इस संसार में अहिंसा, प्रेम एवं विश्वास की भावना भरनेवाले इस महामानव ने हिन्दी नाटककारों को आकृष्ट कर दिया। इन नाटककारों में आ. चतुरसेन शास्त्री, सेठ गोविंद दास, लक्ष्मीनारायण मिश्र, श्री शम्भूदयाल सक्सेना, भीष्म साहनी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है।

**गांधी दर्शन का अर्थ एवं स्वरूप :–**

जिस समय भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से संघर्ष करने के लिए तथा स्वतंत्रता संग्राम में सबल नेतृत्व की आवश्यकता थी, उसी समय महात्मा गांधीजी का अवतरण हुआ था। महात्मा गांधी तद्युगीन विभीषिकाओं से उत्पन्न विष का पान करने वाले नीलकंठ थे। भारतीय इतिहास में उन्होंने एक नए युग 'गांधीयुग' को जन्म ही

नहीं दिया, बल्कि अपनी अभूतपूर्व साधना से मानवता के इतिहास में एक नए अध्याय का प्रारम्भ किया। विखण्डित मानसिकता से ग्रस्त तथा वैयक्तिक स्वार्थों में लिप्त देशवासियों को गांधीजी ने सत्य, अहिंसा, त्याग, सेवा, मानवता जैसे व्यापक मानवीय मूल्यों से जोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने सर्वप्रथम स्वयं को तमाम दोषों से मुक्त किया, तत्पश्चात सम्पूर्ण देशवासियों को भी अपने दोषों से मुक्ति की प्रेरणा दी। इस प्रकार गांधीजी ने भारतीयों के निस्पंद जीवन में एक नई प्रेरणा एवं प्राण–शक्ति भरने का कार्य किया। सामाजिक स्वतंत्र्य के लिए उन्होंने समाज में व्याप्त कुप्रथाओं और बुराइयों को समाप्त करने की ओर भी कदम बढ़ाया। आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए स्वदेशी वस्त्र, खादी, लघु उद्योगों को बढ़ावा दिया, जिसमें चरखा आत्मनिर्भरता का प्रतीक बन गया। गांधीजी ने सत्य आौर अहिंसा जैसे अस्त्रों से ब्रिटिश सत्ता की नींव हिला दी और उन्हें भारत छोड़कर जाने के लिए विवश कर दिया। ऐसे दिव्य व्यक्तित्व के विचारों को 'गांधी–दर्शन' की संज्ञा दी गई है।

'गांधी विमर्श' एक ऐसी विचारधारा है, जिसने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों को न केवल प्रभावित किया, अपितु उन्हें उनसे सम्बन्धित नवीन दृष्टि भी प्रदान की है। ऐसे में इस विचारधारा का प्रभाव तत्कालीन साहित्य पर भी पड़ना स्वाभाविक ही था। गांधी दर्शन के अविर्भावकाल से ही साहित्य की प्रत्येक विधा नाटक, कहानी, उपन्यास, कविता आदि में इस विचारधारा के प्रभाव को ग्रहण किया गया। साहित्यकारों ने देश में व्याप्त अनेक समस्याओं को आपनी रचनाओं के माध्यम से चित्रित कर उनका गांधीवादी हल प्रस्तुत किया है।

**हिन्दी नाटय साहित्य में गांधी दर्शन की अभिव्यक्ति :–**

गांधीजी का शरीर जितना दुबला–पतला था, उतना ही वह मानव–सेवा के लिए समर्पित था। उनकी वाणी जितनी सरल और मृदु थी उतनी ही वह प्रलयंकारी और मर्मभेदी। आचार्य चतुरसेन शास्त्री लिखित "पगध्वनि" नाटक का शहाबुद्दीन नामक पात्र कहता है – "बिलकुल मुठ्ठी भर हड़िडयों का ढांचा, बूढ़ा और दब्बू आदमी! वह अटक–अटक कर बोलता है। पर वह अद्‌भूत है, उसकी आवाज अन्तर्भेदिनी है। उसमें एक ऐसी ममता भरी रहती है कि सुनकर आदमी कायल हो जाता है। उसकी आवाज जितनी कोमल है, उतनी ही डरावनी है, वह जितनी तीखी है, उतनी मुलायम है।"[2]

**सत्य :–**

गांधी दर्शन के प्रमुख तत्व सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य एवं सत्याग्रह हैं। पहले तीन तत्व उनके विचारपक्ष के मूलाधार हैं। इन्हीं के आधार पर उन्होंने सत्याग्रह रूपी अस्त्र का व्यावहारिक प्रयोग किया। इसप्रकार उनके दर्शन की मुख्य विशेषता हैं– चिन्तन और व्यवहार। चिंतन पक्ष में सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य आते हैं। ये उनके त्रिरत्न माने जाते हैं। गांधीजी के मतानुसार – "सत्य" शब्द सत् से निष्पन्न है। सत् का अर्थ है अस्ति, सत्य अर्थात् अस्तित्व।"[3] गांधीवादी चेतना की आधारशिला सत्य है, जिसे श्री. गोपीनाथ धवन "गांधी जी के जीवन और दर्शन का ध्रुवतारा' कहते है।"[4] गांधीजी सत्य और ईश्वर दोनों को एक ही मानते थे। उनके अनुसार– "ईश्वर और सत्य में कोई फर्क नहीं। ईश्वर सत्य है और सत्य ईश्वर।"[5] इतना ही नहीं उनके मतानुसार– "सत्य ही धर्म की सच्ची प्रतिष्ठा है; सृष्टि में एकमात्र सत्य की ही सत्ता है, दूसरे की नहीं।"[6] ईश्वर ही सृष्टि का सृष्टा है, नियंता है, और उसके मुताबिक ही यह सृष्टि चलती है और मानव भी उसके अधीन है। गांधी जी के शब्दों में – "मनुष्य की इच्छा से ही यह सृष्टि नहीं चल रही है। चलानेवाले के हाथ की कठपुतली हैं हम। सूत्र उसके हाथ में हैं और हम नाच रहे है।"[7]

गांधी जी मानव और ईश्वर में कोई फर्क नहीं करते हैं। वे ईश्वर को मानव के हृदय में अवतरित देखते हैं। इस दुनिया में करोड़ों लोग दुःखी हैं, दरिद्र हैं। ईश्वर इन करोड़ों दरिद्रों के हृदयों में निवास करता है। अतः वे उसे दरिद्रनारायण भी कहते हैं और उसमें सेवा–परायण होते हैं। मानव–सेवा ही ईश सेवा है यह स्वीकार करते हुए वे कहते है (सेठ गोविंद दास के गांधी जी)– "मैं एक मिनट के लिए भी भगवान को नहीं भूलता, क्योंकि मैं उसे इन करोड़ों दरिद्रों के हृदयों में देखता हूँ, और इसलिए उसे दरिद्रनारायण कहता हूँ। इनकी सेवा ही में उसकी समुची सेवा मानता हूँ। ईश्वर मेरे सामने खड़ा है।"[8] – मानव और भगवान को एक मानकर अपनी मानवतावादी दृष्टि का परिचय देते हुए वे कहते हैं – "ईश्वर न काबा में हैं, न काशी में हैं, वह घर–घर में हर दिल में मौजूद हैं।"[9] इसी कारण ईश्वर पर उनकी अटूट श्रद्धा है। हवा, पानी के बिना वे जिंदा रह सकते हैं लेकिन ईश्वर के बिना वे पलभर भी जिन्दा नहीं रह सकते हैं, क्योंकि उनके अनुसार– "ईश्वर ही जीवन है, सत्य है, प्रकाश है। वही प्रेम है वह उच्चतम अच्छाई है।"[10]

**अहिंसा :-**

अहिंसा गांधी दर्शन का दूसरा मूल तत्व है। उन्होंने अपनी तत्व प्रणाली में अहिंसा की व्यापक व्याख्या की और उसी के अनुसार अपना जीवन भी व्यतीत किया। गांधीजी के अनुसार अहिंसा और सत्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। सत्य की सत्ता सर्वव्यापी है, लेकिन सत्य का रास्ता संकरा है। अतः उस रास्ते में चलना है, सत्य को ढूंढ़ता है तो अहिंसा को साधन के रूप में लेना चाहिए। अहिंसा के साधन का ठीक उपयोग करने से साध्य प्राप्त होता है। सेठ गोविंददास के महात्मा गांधी के शब्दों में – "सत्य का रास्ता संकरा है, पर सीधा। अहिंसा बिना सत्य को नहीं ढूंढा जा सकता। अभय से अगर हम सत्य के रास्तों पर चलें और साधन ठीक रखें तो जल्दी हो या देर से साध्य मिल ही जाता है।"[11] अतः "अहिंसा साधन है और सत्य साध्य।"[12]

गांधीजी ने अहिंसा और प्रेम को अभिन्न मानते हुए यह स्वीकार किया था कि इनके संयोग से ही मानव की जीवन यात्रा सुलभ हुई है और उसी पर ही यह दुनिया टिकी है। गांधीजी के मतानुसार– "प्रेम और अहिंसा का एक–दूसरे से चोली–दामन का सम्बन्ध है। जीवन धर्म ही प्रेम और अहिंसा है। यही सत्य है। अगर प्रेम और अहिंसा हमारा जीवन धर्म न होता तो इस मृत्युलोक में हमारा जीवन कठिन हो जाता। दुनिया आज इसीलिए खड़ी है कि यहां पर घृणा से प्रेम ज्यादा है, असत्य से सत्य और हिंसा से अहिंसा।"[13] गांधीजी का अहिंसा धर्म दूसरों की रक्षा के लिए और अपने सिद्धान्तों के लिए आत्मबलिदान की शिक्षा देता है।"मेरा अहिंसा धर्म मुझे शिक्षा देता है कि औरों की रक्षा के लिए और अपने उसूलों की रक्षा के लिए अपनी जान दे दो। दूसरों को मारने के लिए हाथ न उठाओ, पर मेरी अहिंसा कायरता नहीं सिखाती।"[14] गांधी दर्शन के प्राण तत्व इस अहिंसा का प्रतिपादन कराते हुए श्री शम्भूदयाल सक्सेना ने अपनी नाट्य–रचना 'बापू ने कहा था' में स्वयं बापू के मुख से ही अहिंसा के महत्व को दर्शाया है– "मुझे पक्का विश्वास है कि बुराई का बदला बुराई से चुकाने से कोई फायदा नहीं होता। भलाई के बदले भलाई करना भी कोई बड़ी बात नहीं है। बुराई का बदला भलाई से चुकाना ही सच्चा रास्ता है।"[15] गांधीजी के अहिंसा में निहित आत्मबलिदान को रेखांकित करते हुए नाटककार ने बापू के मुख से एक अन्य स्थान पर कहा है– "अन्याय को सहने की सलाह मैं किसी को नहीं दे सकता। अगर किसी इन्साफ़ की बात पर सारे हिन्दू नष्ट हो जाय तो मैं परवाह नहीं करूंगा वह सच्चाई से की गई पवित्र कुरबानी होगी।"[16]

महात्मा गांधी जी अहिंसा को वीरता का लक्षण मानते हैं। उनके मतानुसार अहिंसा का पालन करने वाला

ही सच्चा वीर पुरूष है। "हिंसा करने की पूरी सामर्थ्य रखते हुए भी जो आदमी अपनी इच्छा और प्रेम–भाव से हिंसा नहीं करता, वही अहिंसा धर्म का पालन करता है। उसे ही वीर पुरूष कहा जा सकता है।"[17] भीष्म साहनी के नाटक 'रंग दे बसंती चोला' का भाषणकर्ता भी गांधीजी के अहिंसा तत्व का पालन करने का संदेश जलियांवाला बाग में उपस्थित लोगों को देते हुए कहता है– "गांधीजी का फ़रमान है कि तुम पुलिस अथवा सरकारी अमले पर हाथ नहीं उठाओगे। भले ही वे हिंसा पर उतर आये.... ।"[18] इसी नाटक का अंग्रेजी पात्र इर्विंग जो अमृतसर का डिप्टी कमिश्नर है– गांधीजी की अहिंसा से काफी प्रभावित होकर कहता है – "गांधी की मूवमेंट को लेकर लोगों में नया जोश पाया जाता है। अपने जलसों में ये लोग हमेशा अहिंसा की बात करते हैं और कहते हैं कि कोई गैर क़ानूनी बात नहीं करेंगे और किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे।"[19]

**ब्रह्मचर्य :–**

भारतीय संस्कृति में ब्रह्मचर्य का महत्व सर्वोपरि है। यह एक महाव्रत माना गया है। गृहस्थी के लिए पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना कठिन है फिर भी देही को गृहस्थी के कारण परिमित भोग के उपरांत विषयासक्ति से दूर रहना ब्रह्मचर्य का मूल मंत्र है। गांधीजी ने ब्रह्मचर्य के महत्व को स्वीकार ही नहीं किया था उसे व्यवहार में भी लाया था। गांधीजी और कस्तूरबा दोनों ने सैंतीस वर्ष की अवस्था से अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन किया। गांधीजी के मतानुसार ब्रह्मचर्य के कारण पति–पत्नी एक–दूसरे के और निकट आ जाते हैं। इतना ही नहीं पत्नी के अर्धांगिनी रूप की महिमा पति को उसी समय ही पूरी तरह से महसूस होती है। "इस अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत के बाद तो हम एक दूसरे के और नजदीक आ गये, एक दम निकट। संस्कृत में पत्नी को पुरूष का आधा अंग कहा गया है, अंग्रेजी में उस आधे अंग के लिए 'बेटर' शब्द काम में लाया करता है, याने वह आधा अंग जो पति के आधे अंग से बेहतर अंग है। ब्रह्मचर्य के बाद मुझे अनुभव हुआ कि तुम सचमुच ही मेरा बेहतर आधा अंग हो गयी हो।"[20] गांधीजी ने अपने व्यवहार से भारतीय संस्कृति के जिन मूलभूत तत्वों की रक्षा की है उसमें ब्रह्मचर्य भी एक व्रत है।

**अस्तेय एवं अपरिग्रह :–**

भारतीय संस्कृति में चोरी करना निषेध है, यह एक अपराध माना जाता है और अपराध साबित होने पर अपराधी को सजा भी भोगनी पड़ती है। गांधीजी ने अपने बचपन में एक बार चोरी की थी, लेकिन पश्चताप की आग्नि में उनका हृदय शुद्ध हुआ था। अपने पिताजी को लिखे हुए पत्र में उन्होंने लिखा है, "भाई का वह सोना मैंने चुराया है, यह मेरी पहली चोरी है बापू! और अब मैं जिन्दगी में कभी चोरी नहीं करूंगा।"[21] इसका प्रभाव उन पर आजीवन रहा और उन्होंने अस्तेय का पालन किया।

अपरिग्रह या त्याग भी हमारी संस्कृति की एक प्रमुख विशेषता रही है। गांधीजी ने अपने जीवन में धन का संचय कभी नहीं किया। इतना ही नहीं लोगों ने जो वस्तुएं उन्हें उपहार के रूप में दी थीं वे भी उन्होंने अपने पास न रखते हुए ट्रस्ट को सुपुर्द की। सेठ गोविंददास के 'महात्मा गांधी' अपनी पत्नी कस्तूरबा से कहते हैं – "जो कुछ हो, किसी जन–सेवक को कभी भी कोई कीमती भेंट नहीं लेनी चाहिए। सन् 1901 मे मिली हुई विदाई का यह सामान ही नहीं पर सन् 1896 में जब हम भारत गये और उस वक्त हमें जो भेंट मिली थीं वे भी लौटा दी जायेंगी। इस सब धन का एक ट्रस्ट बनेगा जिससे दक्षिण अफ्रीका में बसे हुए भारतीयों की सेवा होगी।"[22]

**सत्याग्रह :–**

महात्मा गांधी जी ने जहां एक ओर सत्य की प्राण–प्रतिष्ठा की वहीं दूसरी ओर सत्याग्रह की सार्थकता भी सिद्ध की। राजनीति जैसे कुटिल क्षेत्र में भी सत्य के आग्रह पर अटल रहकर हमारे देश को स्वतंत्रता का गौरव प्रदान करने में गांधी जी का योगदान सर्वोपरि है। उनकी दृष्टि में "सत्याग्रह शब्द का अर्थ सत्य का अवलम्बन है।"[23] सत्याग्रही कोई मामूली व्यक्ति नहीं होता, वह आत्म–चिंतक होता है। अपनी आत्मा का परिष्कार कर वह उसी में ही सत्य के आग्रह की खोज करता है। "सत्याग्रही सत्य के आग्रह को कहीं बाहर खोजने के लिए नहीं जाता। सत्य के आग्रह की पैदाईश उसके स्वयं के भीतर होती है।"[24] अपने आत्मबल से अन्याय के खिलाफ लड़नेवाला, सत्य का आग्रह करने वाला, अहिंसा, प्रेम के मार्ग पर दृढ़ रहने वाला वीर पुरूष ही सच्चा सत्याग्रही है। गांधीजी के अनुसार सत्याग्रही अपना जीवन ईश्वर को अर्पित करता है, वह ईश्वरी व्यक्ति होता है और अपनी सारी शक्ति बुराइयों से युद्ध करने के लिए और अन्याय, अत्याचार आदि का सामना करने के लिए लगाता है। "सत्याग्रही वह है जो अपने जीवन को ईश्वर को अर्पण कर देता है। सच्चा सत्याग्रही ईश्वरी व्यक्ति होता है। इस दुनिया में ऐसा आदमी बुराई से जंग किए बिना रह ही नहीं सकता है। अन्याय, शोषण, निर्दयता का वह सामना करता ही है और यह सामना वह अपनी तमाम ताकत से करता है।"[25]

**असहयोग और सविनय अवज्ञा :–**

गांधीजी का असहयोग आन्दोलन गुलामी से छुटकारा पाने का जबरदस्त साधन है। वह अहिंसात्मक है, फिर भी स्वेच्छाचारी और सत्ताधारी शक्तियों के लिए घातक सिद्ध हुआ है। भारतीयों में अदम्य राष्ट्रीय चेतना निर्माण करने की अद्‌भुत क्षमता उसमें है। उनके अनुसार सहयोग ओर असहयोग परिस्थितिजन्य कर्तव्य है। वे कहते हैं– "मेरी राय में जिस तरह अच्छाई से सहयोग करना फर्ज है उसी तरह बुराई से असहयोग करना भी कर्तव्य है।"[26] गांधी जी का असहयोग आन्दोलन मानव–विद्वेषी नहीं है, उनका असहयोग अंग्रेजी जाति से नहीं है, अंग्रेजों के शैतानी राज्य के खिलाफ है। उनके असहयोग आन्दोलन के पांच प्रमुख अंग हैं – "पहला सरकारी खिताबों को छोड़ना, दूसरा सरकारी शिक्षा, संस्थाओं से तालुक न रखना, तीसरा सरकारी अदालतों का बहिष्कार, चौथा विदेशी माल का बायकाट कर स्वदेशी वस्त्रों तथा खादी का उपयोग करना और पांचवां अस्पृश्यता–निवारण।"[27] असहयोग आन्दोलन के ये पाँच–सूत्र राष्ट्रीयता के पाँच आलोक–स्तंभ है। इन्हीं के द्वारा गांधीजी ने भारतीय जनता में राष्ट्रीयता की तीव्र भावना जागृत कर, रक्तहीन राज्य–क्रान्ति का नव–सन्देश देकर देश को आज़ाद किया।

इस राष्ट्रीय आन्दोलन में 'सविनय अवज्ञा' का भी महत्वपूर्ण स्थान है। अपनी अन्तर्प्रेरणा से सविनय अवज्ञा के लिए गांधी जी ने 'नमक–कानून' को लक्ष्य बनाया और इसे तोड़ने के लिए उन्होंने दांडी–यात्रा की। गांधीजी जानते थे कि भारत गाँव–प्रधान देश है और गाँव ही सच्चा भारत है। दांडी गाँव से प्रारम्भ हुए इस यात्रा आन्दोलन की पृष्ठभूमि में वे कहते हैं– "इस आन्दोलन का आरम्भ एक गाँव से इसलिए हो रहा है कि भारत में सौ में से अस्सी आदमी गाँवों में रहते हैं। गाँव सच्चा भारत है।"[28] आजादी के लिए गांधी जी का सविनय अवज्ञा का यह प्रयोग उनके अहिंसा और प्रेम का ही प्रशस्त पथ है। भीष्म साहनी के 'रंग दे बसंती चोला' नाटक का अंगरेजी पात्र प्लोमेर भी गांधी जी के इस असहयोग और सविनय अवज्ञा आन्दोलन को रेखांकित करते हुए कहता है – "अपने ताज़ा बयान में उसने कहा है कि हिन्दुस्तान के लोग, ब्रिटिश सरकार के साथ वैसा ही बर्ताव करेंगे

जैसा प्रह्लाद ने अपने पिता के साथ किया था। प्रह्लाद एक पौराणिक चरित्र है – प्रह्लाद ने अपने बाप का हुक्म मानने से इन्कार कर दिया था, पर साथ ही साथ उसके दिल में अपने बाप के प्रति कोई दुर्भावना नहीं थी।"[29]

**मानवधर्म की प्रतिष्ठा :-**

गांधी जी मानवधर्म के सच्चे हिमायती थे। उनकी यह दृढ़ भावना थी कि पृथ्वी पर जितने भी मानव बसे हैं, सब समान है। उनके अनुसार – "मेरे लिए गोरे गेहुएं, काले किसी भी देश के रहने वाले आदमी सब बराबर हैं।"[30] इतना ही नहीं मानव–मानव में भेद करने को वे पाप समझते थे। "यह पृथ्वी परमेश्वर की है, इस पर रहनेवाले सब मानव एक हैं, कोई बड़ा नहीं कोई छोटा नहीं। एक को दूसरे से छोटा समझना भारी पाप है।"[31] गांधीजी के इन विचारों में समता, मानवता और विश्वबन्धुता का भाव निहित है।

**अस्पृश्यता निर्मूलन :-**

गांधीजी ने कांग्रेस के अन्दरूनी संगठन को मजबूत करने के लिए भारतीयों के सामने जो रचनात्मक कार्यक्रम रखा था, वह पाँच प्रकार का था – "पहला था अस्पृश्यता निवारण, दूसरा था सूत–कताई, तीसरा था शराब– बन्दी, चौथा था हिन्दू–मुस्लिम एकता और पाँचवा था नारी के समान अधिकार।"[32] गांधीजी के इस रचनात्मक कार्य में अस्पृश्यता निर्मूलन कार्य का विशेष महत्व है। इस कार्य के लिए वे अगले जन्म में हरिजन होने के लिए तैयार है। उनकी ईश्वर से प्रार्थना है – "मैं फिर से जन्म नहीं लेना चाहता हूँ, लेकिन अगर मुझे फिर से पैदा होना ही है तो मैं किसी हरिजन के यहां जन्म लेना चाहता हूँ, जिससे मैं उनके दुःखो, कष्टों और उनके प्रति जो दुर्व्यवहार हो रहा है उसका हकदार बन सकूं, साथ ही उस कष्टदायक स्थिति से अपना और उसका उद्धार करसकूं। इसलिए मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि यदि मुझे जन्म लेना ही है तो ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र के यहांजन्म न लेकर अति शूद्र के यहां पैदा होऊँ।"[33]

**नारी महिमा :-**

गांधी जी के नारी सम्बन्धी विचार अत्यन्त उदात्त है। नारी के साथ पुरूष का अटूट सम्बन्ध उन्हें स्वीकार है। उनके अनुसार पुरूष और नारी के परस्पर सम्मिलन से सृष्टि का विकास होता है, और यह ऐन्द्रिक–प्रेम भी आध्यात्मिक है। वे कहते हैं – "संसार में जितने पुरूष हैं सभी ब्रह्म हैं और जितनी स्त्रियां हैं सभी माया हैं, यह हमारे धर्म की बात है, मौलाना! धर्म से जो पति–पत्नी बने उनमें पुरूष ब्रह्म और पत्नी माया कही गयी। ब्रह्म के साथ माया मिली, यह समूची सृष्टि बन गई। पुरूष के साथ जब पत्नी मिलती है, सन्तान पैदा होती है, सृष्टि आगे बढ़ती है। पति–पत्नी का भौतिक–प्रेम भी हमारे यहां आध्यात्मिक है।"[34] गांधी जी नारी के पतिव्रत धर्म को अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते हैं। सेठ गोविंददास के 'महात्मा गांधी' नाटक में यह बात स्पष्ट रेखांकित है।

**हृदय परिवर्तन :-**

मानवीय मूल्यों की रक्षा की दृष्टि से गांधीजी का हृदय परिवर्तन का सिद्धान्त अत्यंत मौलिक है। गांधी जी ने आत्मशुद्धि द्वारा सबको अहिंसा का पाठ पढ़ाया और अहिंसात्मक मार्ग से स्वतंत्रता की प्राप्ति की। यह रक्त–हीन राज्य क्रांति गांधी जी के हृदय परिवर्तन की सुदृढ़ शिला पर आधारित है। नाटककार सेठ गोविंददास ने गांधी जी के इस हृदय–परिवर्तन के सिद्धान्त को युवक–युवतियों के वार्तालाप से रेखांकित किया है। यथा– "उन्होंने यह स्वतंत्रता अहिंसा द्वारा ली और दुनिया को एक नयी बात बतायी कि जो साहस अन्धों को न मारकर

स्वयं मरने की शक्ति रखता है, वह कठोर से कठोर शत्रु का भी हृदय–परिवर्तन कर देता है।"[35] निस्सन्देह गांधी जी का हृदय परिवर्तन का सिद्धान्त असाधारण है।

**सर्वोदय :–**

गांधी जी की सर्वोदय कल्पना मानव–निष्ठा से आपूरित है। वे सब की भलाई चाहते हैं, अतः वे अपने सिद्धान्त को सर्वोदय की संज्ञा देते हैं। वे कहते हैं – "मैं सब की भलाई चाहता हूँ। इसलिए मैं अपने सिद्धान्त को सर्वोदय कहता हूँ। सर्वोदय में वही संलग्न हो सकता है जिसके हृदय पर प्रेम का साम्राज्य हो और जो सर्वभूत हित के लिए सर्वभूतों से प्रेम कर उनके हित में मर–मिटने को तैयार हो। इसके लिए आत्म–संयम और विनय सबसे ज्यादा जरूरी है और यह बिना आध्यात्म की नींव के मुमकिन नहीं है।"[36] गांधी जी सर्वोदय के द्वारा भारत के देहातों का उद्धार करना चाहते थे। उनका विचार था कि हिन्दुस्तान की अस्सी प्रतिशत जनता देहातों में रहती है।

**रामराज्य की स्थापना :–**

भारत में रामराज्य की स्थापना करने का स्वप्न गांधी जी का था। मानव संस्कृति के प्रतीक प्रभु रामचन्द्र जी और उनके आदर्श राज्य की संस्थापना उन्हें इष्ट थी। अतः उनकी रामराज्य की कल्पना समता, सहिष्णुता और बन्धुभाव पर निर्भर है। वे कहते हैं– "स्वराज्य तो हमें मिल गया, पर अभी रामराज्य को कायम करना है। ऐसा राज्य जिसमें घृणा न हो, हिंसा न हो, सब सम्प्रदाय वाले आपस में मुहब्बत रखते हुए निवास करें। स्त्री और पुरूष के समान हक हों। गरीब से गरीब आदमी भी यह महसूस करे कि यह देश मेरा है और इसके संगठन में मेरे मत की भी किंमत हैं। ऊँची श्रेणी और नीची श्रेणी इस तरह की श्रेणियां न हों। अस्पृश्यता नाम की कोई चीज न रहे।"[37] निस्सन्देह समता, सहिष्णुता और मानवता पर अधिष्ठित गांधी जी की रामराज्य की कल्पना हमारी भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल पक्ष है।

**निष्कर्ष :–**

गांधी दर्शन वस्तुतः गांधी जी के आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक तथा सांस्कृतिक विचारों का पुंज है। गांधी दर्शन से अभिप्राय शास्त्रीय नियमों से बद्ध किसी संकीर्ण विचारधारा से न होकर व्यापक रूप में सत्य, अहिंसा, प्रेम, मानवतावाद, सत्याग्रह आदि पक्षों का प्रतिपादन है। हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं, जिसमें भौतिकता अपने चरम पर है। भ्रष्टाचार, अनाचार, रिश्वतखोरी, धोखाधड़ी जैसी कुप्रवृत्तियां समाज को खोखला कर रही है। परमाणु अस्त्रों को लेकर हुई उन्नति ने विश्व को अशांति और असुरक्षा के वातावरण में रहने को विवश कर दिया है। ऐसे में विश्व उन्नति तथा मानव जाति की आत्मिक शान्ति गांधी दर्शन में ही निहित है। गांधी दर्शन के सत्य, अहिंसा तथा मानव प्रेम आदि पक्ष ही समस्त विश्व को सुख, समृद्धि एवं शान्ति प्रदान कर सकते हैं। देश तथा विश्व में फैली असमानता, अन्याय, शोषण, भ्रष्टाचार, दुराचार, युद्ध, आतंकवाद जैसी बुराइयों को दूर करने का एक ही साधन है– गांधी दर्शन।

**सन्दर्भ संकेत :–**


1. कुलकर्णी (डॉ.) गो. रा., डॉ. सुधाकर गोकाककर, हिन्दी साहित्य में प्रतिबिम्बित चिन्तन प्रवाह, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर प्र. सं. 1968 पृ. 20.
2. शास्त्री (आ.) चतुरसेन, पगध्वनी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, प्र. सं. 1948 पृ. 44–45.

3. गांधी साहित्य, भाग–5, सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली, प्र. सं. 1980 धर्मनीति पृ. 117.
4. धवन गोपीनाथ, सर्वोदय तत्व दर्शन, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, प्र. स. 1969 पृ. 5.
5. सेठ गोविंददास, महात्मा गांधी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, प्र. सं. 1959 पृ. 88.
6. शास्त्री (आ.) चतुरसेन, पगध्वनी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, प्र. सं. 1948 पृ. 93.
7. मिश्र लक्ष्मीनारायण, मृत्युंजय, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी प्र. सं. 1969 पृ. 45.
8. सेठ गोविन्ददास, महात्मा गांधी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, प्र. सं. 1959 पृ. 130.
9. उपरिवत् पृ. 129.
10. उपरिवत् पृ. 130.
11. उपरिवत् पृ. 38.
12. उपरिवत् पृ 39.
13. उपरिवत् पृ. 57–58.
14. उपरिवत् पृ. 58.
15. सक्सेना (श्री.) शम्भूदयाल बापू ने कहा था, किताब महल, इलाहाबाद प्र. सं. 1955 पृ. 15.
16. उपरिवत् पृ. 51.
17. सेठ गोविन्ददास, महात्मा गांधी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, प्र. सं. 1949 पृ. 58.
18. साहनी भीष्म रंग दे बसंती चोला, किताबघर प्रकाशन दिल्ली प्र. सं. 1996 पृ. 30.
19. उपरिवत् पृ. 34.
20. सेठ गोविन्ददास, महात्मा गांधी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, प्र. सं. 1949 पृ. 118–119.
21. उपरिवत् पृ. 14.
22. उपरिवत् पृ. 30.
23. उपरिवत् पृ. 38.
24. उपरिवत् पृ. 38–39.
25. उपरिवत् पृ. 41.
26. उपरिवत् पृ. 40.
27. उपरिवत् पृ. 57.
28. उपरिवत् पृ. 88.
29. साहनी भीष्म, रंग दे बसंती चोला, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली प्र. सं. 1996 पृ. 09.
30. सेठ गोविन्ददास, महात्मा गांधी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, प्र. सं. 1949 पृ. 37.
31. उपरिवत् पृ. 38.
32. उपरिवत् पृ. 66.
33. उपरिवत् पृ. 103.
34. मिश्र लक्ष्मीनारायण, मृत्युंजय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण 1969, पृ. 67.
35. सेठ गोविन्ददास, महात्मा गांधी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, प्र. सं. 1949 पृ. 123.
36. उपरिवत् पृ. 132.
37. उपरिवत् पृ. 129.

दूरभाष 9423025562, prakashdhumal69@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 62-64

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिन्दी साहित्य में गाँधीवादी विचारधारा

**पूजा**

शोधार्थी, हुकुम सिंह बोरा, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर, अल्मोड़ा 263637

गाँधीवादी विचारधारा महात्मा गाँधी द्वारा अपनाए, विकसित किए धार्मिक, सामाजिक विचारों का समूह है, जो व्यवहारिक आदर्शवाद पर बल देता है। गाँधीजी की विचारधारा ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है। हिंदी साहित्य भी इन प्रभावों से अछूता न रह सका। हिंदी साहित्य पर भी गाँधीजी के विचारों और व्यवहार का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। गाँधीजी ने हिंदी भाषा के प्रयोग पर विशेष रूप से बल दिया। गाँधीजी का हिंदी भाषा के प्रति लगाव और हिंदी साहित्यकारो पर गाँधीजी का प्रभाव निरन्तर बना रहा। गाँधीजी भारत के अधिकांश प्रान्तों में बोली और समझी जाने वाली एकमात्र भाषा हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाये जाने के प्रबल समर्थक थे। इस शोध आलेख के माध्यम से गाँधीजी के चिंतन सत्य, अहिंसा, शान्ति, सद्भावना, सर्वोदय तथा अंत्योदय संबंधित विचारों का साहित्य पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाया गया है।

गाँधीवादी विचारधारा महात्मा गाँधी द्वारा अपनाए और विकसित किए गये उन विचारो का समूह है जो उन्होंने पहली बार वर्ष 1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में तथा उसके बा भारत में अपनाए थे। गाँधीवादी विचारधारा आदर्शवाद पर नहीं बल्कि व्यवहारिक आदर्शवाद पर बल देती है। गाँधीजी की इसी विचारधारा ने समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया। गाँधीजी ने अपने विचारो की व्याख्या, आत्मकथा, पत्र–पत्रिका (हरिजन, यंग इंडिया, इंडियन ओपिनियन, नवजीवन) तथा व्याख्यान और सम्भाषणों के द्वारा की है। गाँधीजी के व्यक्तित्व और विचार की छाप सभी भाषाओं के साहित्य पर पड़ी। हिंदी साहित्य भी इससे अछूता न रह सका। हिंदी साहित्य पर भी गाँधीजी के विचार और व्यवहार का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है और स्वयं गाँधीजी ने भी हिंदी साहित्य से प्रभावग्रहण किया है। वह अच्छी तरह से जानते थे कि केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो पूरे राष्ट्र को जोड़ने का कार्य कर सकती है, इसलिए हिंदी भाषा के प्रयोग पर विशेष बल देते हुए उन्होंने आजादी की लड़ाई में भी हिंदी को अपनाया।

गाँधीजी ने समाज के प्रत्येक पक्ष पर अपनी नजर बनाए रखी। गाँधीजी के चिन्तन में उनके विचारों का समन्वय है, जैसे सत्य, अहिंसा, शान्ति, सद्भावना, सर्वोदय तथा अन्त्योदय, जिनकी अभिव्यक्ति हिंदी साहित्य में बार–बार हुई है। हिंदी साहित्य की गद्य और पद्य दोनों विधाओंपर गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हिंदी साहित्यकारों में सुमित्रानंदन पतं, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, रामनरेश त्रिपाठी, सोहन लाल द्विवेदी, भवानी प्रसाद मिश्र आदि कवियों ने गाँधीजी की विचारधारा को लेखनी का माध्यम बनाकर अपने साहित्य में कविताओं के रूप में सामान्य जन के समक्ष प्रस्तुत किया।

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने गाँधी जी की विचारधारा से प्रभावित होने की बात को स्वीकार किया है। प्रेमचन्द के उपन्यासो पर भी गाँधीजी के विचारो का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

मैथिलीशरण गुप्त, हिंदी भाषी जनता के प्रतिनिधि कवि माने जाते है। गाँधीजी के स्वदेश प्रेम की भावनाएँ आगे चलकर मैथिलीशरण गुप्त रचित 'भारत भारती' में दिखाई देती हैं।सत्याग्रह, अहिंसा, मनुष्यत्ववाद, विश्वप्रेम, किसानो और श्रमजीवियों के प्रति प्रेम और सम्मान की झलक हमें इनके काव्य में दिखाई देती है। गाँधीजी के विचारों का सियाराम शरण गुप्त जी पर प्रभाव कुछ इस प्रकार पड़ा कि वे गाँधीवाद के सबसे बड़े गायक बन गये। उनके समस्त साहित्य पर गाँधीजी और उनके विचारो का प्रभाव है। सत्य अहिंसा, समता आदि को मुख्य आधार बनाकर गाँधीजी ने राष्ट्रीय आंदोलन को गति प्रदान की। सियाराम शरण गुप्त जी ने भी इन्ही तत्वों को अपने साहित्य में उतारा।

गाँधीजी ने सत्य को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया और उनका जीवन आरंभ से ही सत्य की चिरसाधना है। गाँधीजी का जीवन सत्य किसी देश या जाति की सीमा से बंधा नहीं है। वे स्वयं कहते है कि मेरे धर्म में कोई भौगालिक बंधन नहीं है। मैथिलीशरण गुप्त ने भी गाँधी जी के सत्याग्रह का विवचेन अपने काव्य सत्याग्रह में कुछ इस प्रकार किया है–

"हुई आग भी हिम की धारा।
सत्याग्रह था उसे तुम्हारा।।
राजा और पिता दोनों ने,
उसका किया विरोध,
हेतु था हरे! तुम्हारा बोध;
किन्तु न करता था वह मन में
कभी किसी पर क्रोध
कि निष्क्रिय था उसका प्रतिरोध।"[1]

"गाँधी जी के चिंतन में सत्य, अहिंसा मूल विचार रहा है वे सदा सत्य के अन्वेषी रहे हैं।

उन्होंने सत्य तथा अहिंसा के अनुसार सदाचरण के सिद्धान्तोंका अपने जीवन में पालन करके संतोष किया है।[2] महात्मा गाँधी अहिंसा के पुजारी थे। वह यह कभी नहीं चाहते थे कि हिंसा का जवाब हिंसा से ही दिया जाए। वह मन, वचन, कर्म से अहिंसा के पक्षधर थे उन्होंने अहिंसा को साधन के रूप में मानते हुए कहा है– "सत्यमय थवाने सारू अहिंसा अज मार्ग छे" (सत्यमय होने के लिए अहिंसा ही एक मार्ग है)[3]

गाँधी जी के अहिंसा संबंधित विचारों को सियाराम शरण गुप्त ने अपनी कविता 'उन्मुक्त' में इन शब्दों में पिरोया है – "हिंसा से शान्त नहीं होता हिंसानल
जो सबका है वही हमारा भी है मंगल।"[4]

महात्मा गाँधी ने अपने विचारो में सामाजिक चिंतन को भी प्रमुखता प्रदान दी है। वे समाज के सभी वर्गो को एकता के सूत्र में बांधना चाहते थे "गांधी जी के नेतृत्व में राष्ट्र एक प्राण हो उठा और देश में सामूहिक एकता प्रारंभ हुई। धार्मिक एकता की सिद्धी के लिए उन्होंने राष्ट्र भाषा की समस्या के आधार पर हिंदी उर्दू की एकता का प्रयत्न किया।"[5] उन्होंने समाज के समस्त वर्गों को केवल मनुष्य की संज्ञा प्रदान की है। उनका मानना था

कि समाज में धर्म, जाति, वर्ग के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। वे एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जिसमें भेदभाव को कोई भी स्थान प्राप्त न हो। उनके इन्हीं विचारों को दिनकर ने अपने काव्य में सम्मिलित किया है। दिनकर के काव्य कुरूक्षेत्र में भीष्म भी युद्ध के पक्षपाती नहीं है, किन्तु 'कुरूक्षेत्र' के माध्यम से वे कहना चाहते है कि जब तक समाज में विषमताएं है, जब तक दो वर्गों के सुख–सुविधाओं में अन्तर है, तब तक युद्ध की संभावनाएं मिटाई नहीं जा सकती। भीष्म के माध्यम से उन्होंने आज के समाज में वैषम्य, विसगंति और भयानक विरूपता को उद्घाटित किया है।

गाँधीजी ने व्यक्ति और समूह दोनों के महत्व को स्वीकार किया है। उनके अनुसार व्यक्ति और समूह एक–दूसरे के साथ बंधे हुए हैं। वे एक ही मानवता के दो पहलू हैं। यदि एक आगे बढ़ जाता है और दूसरा पीछे छूट जाता है तो सन्तुलन बिगड़ जाता है और अन्त में दोनों की हानि होती है।

नारी कल्याण को भी उन्होंने अपने विचारों में स्थान दिया है। उनका मानना था कि नारी किसी भी रूप में पुरूष से कम नहीं है। महात्मा गांधी ने कहा था "हमारे समाज में कोई सबसे अधिक हताश हुआ है तो वह स्त्रियां ही है, और इस वजह से हमारा अधः पतन भी हुआ है। स्त्री–पुरूष के बीच जो फर्क प्रकृति से पहले ही हैं और जिसे खुली आंखो से देखा जा सकता है। इसके अलावा मैं किसी किस्म के फर्क को नहीं मानता।"[6] इसी कारण उन्होंने नारी शिक्षा को बढ़ावा दिया। इन्हीं विचारों से प्रभावित होकर मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' आदि साहित्यकारों ने नारी को अपने साहित्य में सर्वोच्च एवं अहम स्थान दिया।

गाँधीवादी विचारधारा का हिन्दी साहित्य में जन–जीवन के साथ घनिष्ट संबंध दृष्टिगोचर होता है। "गांधी जी ने अपनी सारी शक्ति एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति में लगा दी और उसके परिणाम स्वरूप मानव कल्याण के लिए जो महत्वपूर्ण कार्य किया उसकी देन वर्तमान मानव जीवन की स्वतंत्रता से संबद्ध है।"[7] हिंदी साहित्य में गाँधीवादी विचाराधारा मनुष्य की सत्य अहिंसा, राष्ट्रीयता की भावना को सृदृढ करती है। जिसके माध्यम से वह समाज में हो रहे अन्याय अत्याचार व शोषण जैसी समस्याओं का समाधान निकाल सके। गाँधीवादी विचारधारा हिंदी साहित्य में एक ऐसे सुसज्जित समाज की ओर इंगित करती है, जो समस्त परिस्थिति का निरीक्षण कर समाज को एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करे, जिससे साहित्य द्वारा राष्ट्रीयता की रक्षा हो सके। हिंदी साहित्य में अनेक ऐसे साहित्यकार हुए है जिन्होंने महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित होकर उनके विचारों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है, जहाँ मनुष्य को सर्वोपरि माना जाता है। निश्चय ही महात्मा गाँधी जन–जन के लोकप्रिय नेता होने के साथ–साथ हिंदी साहित्य पर भी अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं।

**संदर्भ ग्रंथ :-**


1 मैथिलीशरण गुप्त ग्रन्थावली– 3 सम्पादक कृष्णदत्त पालीवाल, वाणी प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं– 102

2 गाँधी मार्ग, रामनाथ सुमन, शारदा–सदन इलाहाबाद दिसंबर 1947, पृष्ठ सं –187

3 आत्मकथा, द्वितीय खण्ड।

4 उन्मुक्त सियारामशरण रचनावली साहित्य सदन, 1941, पृष्ठ सं0 495

5 सामाजिक चेतना और हिंदी साहित्य, रत्नाकर पाण्डे, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, 2007

6 भारतीय समाज और नारीः दशा एवं दिशा, मार्क प्रकाशन जयपुर 2010, पृष्ठ सं0 199

7 सामाजिक चेतना और हिंदी साहित्य, रत्नाकर पाण्डे, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन 2007, पृष्ठ सं. 44



फोन नं0 9627130964, ईमेल : joshipooja9536335164@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 65-70

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिन्दी साहित्य में गाँधी–दर्शन की अभिव्यक्ति

**डॉ. अचला पाण्डेय**

सहायक आचार्य– हिन्दी विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। यह समाज में चल रही गतिविधियों को उदघाटित कर, जनता को सत्य से परिचित कराता है। साहित्यकारों का प्रमुख कर्तव्य है कि वे साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा प्रदान करें तथा उसकी दशा में भी उत्तरोत्तर प्रगति करें। वर्षों से गुलामी की यातना सह रही भारतीय जनता के पुनरुत्थान हेतु 'राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी' जी ने 'सर्वोदय दर्शन' दिया। जिसका प्रमुख उददेश्य भारत को गुलामी से मुक्त कराना था। इस 'सर्वोदय दर्शन' रुपी आन्दोलन का साथ साहित्यकारों ने बखूबी दिया। कहा जाता है कि साहित्य वही उत्कृष्ट होता है जिसमें जनमानस की भलाई छिपी हो।

"जब जब होय धर्म कै हानी । बाढहिं असुर अधम अभिमानी ।।
तब–तब प्रभु धरि विविध सरीरा । हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा ।।"[1]

इतिहास साक्षी है कि जब–जब दानवी प्रवृत्तियां इस धरा को कम्पायित कर वहां पर निवास करने वाली जनता पर अत्याचार करने लगती है। उन्हीं दुर्धष शक्तियों के अत्याचार के कारण चारों ओर 'त्राहि माम', 'त्राहि माम' की गूंज सुनाई देने लगती है, तब इस घोर अत्याचार को समाप्त करने हेतु कोई देव पुरुष इस धरती पर जन्म लेता है और प्रत्येक प्राणी मात्र का उद्धार करता है। 'महर्षि वेद व्यास' जी ने 'श्रीमदभागवत गीता' में लिखा है–

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम सृजाम्यहम।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम,
धर्म–संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।"[2]

भारत मां के कष्टों का निवारण करने हेतु तथा वर्षों से गुलामी की जंजीरों में जकडी भारतीय जनता को मुक्त कराने हेतु 2 अक्टूबर 1869 ई0 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने पोरबन्दर नामक स्थान पर जन्म लेकर इस पावन–पुनीत बसुन्धरा का उद्धार किया। इतना ही नहीं वर्षों से गुलामी के कारण खोयी हुयी अस्मिता को पुनर्स्थापित कर यहां के जनमानस में अटूट आत्मविश्वास और साहस की भावना को जागृत किया। ''महात्मा गाँधी जी के जन्म के समय की तत्कालीन परिस्थिति असामान्य थी। देश अनेक समस्याओं से गुजर रहा था। जिसमें सबसे बड़ी समस्या देश की गुलामी की थी। अंग्रेज यहां की भोली–भाली जनता पर तरह–तरह के अत्याचार कर रहे थे। यहां के लोग अपनी मूलभूत आवश्यकता जैसे– रोटी, कपडा और मकान को भी पूरा नहीं

कर पा रहे थे। ये लोग मुश्किल से दो वक्त का भोजन जुटा पाते थे, ऐसी स्थिति में इन लोगों के लिए शिक्षा प्राप्त करना तो बहुत दूर की बात थी, जबकि युगों युगों से ही भारत का इतिहास बहुत ही गौरवपूर्ण और समृद्धशाली रहा है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'विश्वबधुत्व' के भावों से ओत–प्रोत भारतीय संस्कृति सनातनकाल से ही शान्तिप्रिय रही है। वैदिक मन्त्रों के उच्चारण से लेकर, व्यक्ति की कार्यपरिणति तक इस बसुन्धरा पर शान्ति की कामना सदैव इष्ट रही है। 'जियो और जीने दो' की भावना को चरितार्थ करने वाला भारतवर्ष सम्पूर्ण विश्व का 'गुरु' बना हुआ था। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी राष्ट्र के गौरव के विषय में 'भारत भारती में लिखते है –

"भू–लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला–स्थल कहां?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहां ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।"[3]

'सोने की चिड़िया' कहा जाने वाला यह देश विश्व के अन्य देशों के लिए सदैव ही आकर्षण का केन्द्र रहा है। भारत के अलावा संसार के अन्य देशों की राजनीति विस्तारवादी रही है। विस्तारवादी नीति के तहत वे देश, अन्य देशों पर चढाई करते रहे। इस राज्य विस्तारक नीति का परिणाम लूट और विध्वंसकारी युद्ध था, जो कि मानव सभ्यता के नाम पर एक कलंक था। कुछ लोगों के निःस्वार्थ, तथा कुछ लापरवाहियों के कारण भारत को गुलामी का दंश सहन करना पड़ा और कई वर्षों तक देश को गुलामी के संकट का सामना करना पड़ा। ऐसी स्थिति में देश की अस्मिता पूर्णतः खण्ड–खण्ड हो गयी थी। महात्मा गाँधी जी के समकालीन कवि 'मैथिलीशरण गुप्त', जिन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि स्वयं 'राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के द्वारा ही मिली थी, वही 'राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी' ''भारत भारती' में भारत की तत्कालीन परिस्थति के विषय में लिखते है –

"निज दुर्दशा पर आज भी क्यों ध्यान तुम देते नहीं ?
अत्यन्त ऊँचे से गिरे हा ! किन्तु तुम चेते नहीं!"[4]

इस खोयी हुई अस्मिता को पुर्नस्थापित करने हेतु तथा यहां के जनमानस की चेतना को जागृत करने हेतु 'महात्मा गाँधी जी' ने यहां की जनता को 'सर्वोदय दर्शन' दिया। सर्वोदय दर्शन' का शाब्दिक अर्थ है – सबका उदय। जिसका उददेश्य है, प्रत्येक व्यक्ति का समान परिस्थिति, समान संसाधन के साथ विकास के उच्चतम आदर्श को प्राप्त करना। विशाल उद्देश्य को अपने में समाहित किए हुए गाँधी जी के सर्वोदय दर्शन का सभी ने उत्साह और सम्मान के साथ स्वागत किया और उसे पूर्ण मनोयोग से अभिसिंचित भी किया। यह दर्शन वर्षों से गुलामी में जकड़ी भारतीय जनता के लिए उम्मीद की किरण के रुप में उभरता हुआ दिखाई दिया। वर्षों से देश की खोयी हुई अस्मिता को पुनः स्थापित करने में यह दर्शन चमत्कारिक सिद्ध हुआ। कुछ ही समय में भारत के अधिकांश लोग इसके अनुयायी हो गये। 'गीता दर्शन' पर आधारित इस विचारधारा ने सिर्फ 'भारतवर्ष' को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व को अपनी ओर आकर्षित कर लिया।

इस दर्शन से साहित्य–जगत भी अछूता न रह सका। वर्षो से गुलामी की जंजीरों में जकडे रहने के कारण भारतीय जनता का आत्मविश्वास टूट गया। उसे अपने पूर्व के गौरव का भान भी नहीं रहा। पूरी तरह से टूट चुकी भारतीय जनता को पुनः जागृत करने हेतु तथा महात्मा गाँधी से प्रभावित होकर जन–जागृति में साथ

देने के लिए 'जयशंकर प्रसाद जी की लिखते है –

"वही है रक्त, वही है देह, वही है साहस, वैसा ज्ञान।
वही है शान्ति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य सन्तान।
जिएं तो सदा, उसी के लिए, यही अभिमान रहे, यह हर्ष ।
निछावर कर दें, हम सर्वस्य हमारा प्यारा भारतवर्ष।।"[5]

साहित्य जगत पर महात्मा गाँधी जी का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। साहित्य में वही लिखा जाता है जो समाज में घटित होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी साहित्य का लक्ष्य, मनुष्य जाति का हित करना मानते है और सर्वोदय दर्शन भी सभी के हित को सर्वोपरि मानता है, अर्थात दोनों का लक्ष्य प्रत्येक प्राणी मात्र का उद्धार करना है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी स्पष्ट रुप से कहते है – ''मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ। जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता, और परमुखापेक्षिता से बचा न सके, जो उसकी आत्मा को तेजोदीप्त न बना सके, जो उसके हृदय को पर दुःखकातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।''[6] गाँधी जी के लोक मंगलकारी 'सर्वोदय दर्शन' का संदेश देते हुए 'मैथिलीशरण गुप्त जी' 'साकेत' में लिखते है।

"संदेश यहां मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।"[7]

महात्मा गाँधी का जीवन दर्शन, इच्छाओं की उच्छृंखलता के विरुद्ध, उन पर नियन्त्रण तथा भौतिकता की पूजा करने के विरुद्ध, एक आध्यात्मिक साधना है। इस जीवन साधना में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, सत्याग्रह तथा कायिक–श्रम इसकी हवन, पूजन सामग्री है। मन का संयम, इन्द्रियनिग्रह और एकाग्रता इसकी सफलता के 'बीज मन्त्र' है। जब व्यक्ति अपनी इन्द्रियों को जीत कर अपने वश में कर लेता है, वही सम्पूर्ण विश्व को प्रेम और स्नेह से जीत कर अपने वश में कर पाता है। जिसका अपने पर नियन्त्रण नहीं होता है, वह सम्पूर्ण विश्व को क्या नियन्त्रित करेगा। 'सांध्यकाकली' में निराला जी लिखते हैं –

"नई शक्ति अनुरक्ति जगा दो, विकृत भाव की भक्ति भगा दो।"[8]

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के 'सर्वोदय दर्शन' की प्रथम आवश्यकता 'सत्य' की है। गाँधी जी के अनुसार सत्य का परिवेश बहुत व्यापक है। ये सत्य को 'साधन' और 'साध्य' दोनों ही रुपों में स्वीकार करते थे क्योंकि ये सत्य को स्वयं ईश्वर और ईश्वर को ही सत्य के रुप में स्वीकार करते थे। इनका मानना था कि सत्य का पालन मन, वचन, और कर्म तीनों से ही करना चाहिए क्योंकि सत्य से ही वाणी और कर्म प्रतिष्ठित होते है। सत्य ही सनातन धर्म का मूल है। सत्य में प्रेम है, मृदुता है और सत्य विद्रोह के प्रति दृढ़ता से खड़े रहने का साहस देता है। सत्य ही आत्मा है। सत्य ही परमात्मा है। सत्य को ही ईश्वर स्वीकारते हुए महात्मा गाँधी जी 'हरिजन' पत्रिका में लिखते हैं – ''मैं एक ही ईश्वर का दास हूं और वह है सत्य।"[9] अर्थात सत्य साक्षात ब्रह्म है। गाँधी जी ने 'सत्यसिद्धि' का एक मात्र उपाय अहिंसा को स्वीकार किया। अहिंसा प्रत्येक प्राणी मात्र के प्रति किसी भी प्रकार की हिंसा न करना ही अहिंसा है। सत्य, अहिंसा के विषय में गाँधी जी 'हरिजन' पत्रिका में लिखते हैं– ''सत्य और अहिंसा में मेरी आस्था बढ़ती जाती है और जैसे–जैसे मैं अपने जीवन में इनका अनुसरण करने का प्रयास करता हूं, मेरा विकास होता जाता है। मेरे सामने उनके नये–नये निहितार्थ आते जाते हैं। मैं प्रतिदिन उन्हें

एक नये आलोक में देखता हूं और उनके नये नये अर्थ पाता हूँ।"[10] गाँधी जी द्वारा स्वीकृत 'सर्वोदय दर्शन' के महत्व को स्वीकार करते हुए 'सुमित्रानन्दन पन्त' जी लिखते हैं :–

"मनुष्यत्व का तत्व सिखाता, निश्चय हमको गाँधी वाद।
सामूहिक जीवन विकास की, साम्य योजना है अविवाद।।"[11]

गाँधी जी के जीवन–दर्शन में ज्ञान, भक्ति, और कर्म का उचित समन्वय देखने को मिलता है। वे 'कर्म के महत्व' पर जोर देते हुए कहते कि अगर व्यक्ति कर्म को पूजा मानकर कार्य करता है तो यह 'कर्म' जिन्दगी से समस्त राग, द्वेष को मिटा देता है और राग–द्वेष के मिट जाने से व्यक्ति का मन, मस्तिष्क, और आत्मा की शुद्धि हो जाती है। एक कर्मयोगी व्यक्ति सदैव प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। गाँधी जी का मानना था कि संसार की समस्त उपलब्धियां सिर्फ कर्म पर ही निर्भर है। मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही फल भोगता है। उसका कर्म से ही प्रारब्ध बनता है तथा कर्म से ही वर्तमान सुनिश्चित होता है और कर्म से ही भविष्य का निर्धारण होता है इसलिए व्यक्ति को निरन्तर कर्मरत रहकर कर्म के महत्व को स्वीकार करना चाहिए। गाँधी जी के इस विचार ने साहित्य जगत को बहुत प्रभावित किया। गाँधी जी से प्रभावित होकर 'सर्वेश्वर दयाल सक्सेना'' ने 'बकरी' नाटक इसी 'कर्म के महत्व' की प्रधानता पर लिखा। राष्ट्रकवि 'मैथिलीशरण गुप्त जी' 'कर्म की महत्ता' को स्वीकार करते हुए लिखते है –

"नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो, जग में रह कर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो, समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को, नर हो न निराश करो मन को।"[12]

अतः कर्म सदैव श्रेष्ठकर होता है।

महात्मा गाँधी जी के सैद्धान्तिक विचारों की सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि यह तार्किक कसौटी पर कसे जाने के बाद दुनियां के सामने आये। इन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की दोहरी आर्थिक नीति, उनके राजनैतिक दांव–पेंच, सामाजिक, सांस्कृतिक मामलों में उनके अतिशय हस्तक्षेप को पहचाना, गहराई से उसका विश्लेषण किया और तब वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अब अपने देश की बागडोर अपनों के हाथों में होनी चाहिए, अब हम पर कोई शासन नहीं करेगा। अतः देश की राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति के लिए उन्होंने 'सर्वोदय दर्शन' देकर भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया। कहा जाता है कि जहां शक्ति होगी, वहां अनुरक्ति होगी, तथा वहीं पर सहज भाव की भक्ति भी होगी। जब यह शक्ति विकृत रुप धारण कर लेती है, तो अनुरक्ति स्वतः समाप्त हो जाती है, और भक्ति आक्रामक रुप धारण कर लेती है। यही हाल अंग्रेजों के साथ भी हुआ। जब अंग्रेजो ने यहां की भोली–भाली जनता पर अकारण अत्याचार किया, तो उन्हें यहां के लोगों का अक्रामक रुप का सामना करना पड़ा, और 15 अगस्त 1947 ई0 को अंग्रेजों को तत्काल भारत छोड़ना पड़ा। यह सब महात्मा गाँधी जी के मार्गदर्शन का प्रभाव था। देश के लाखों लोगों ने गाँधी जी की इस आदर्श विचारधारा को अपने जीवन में उतारा और उनके पदचिन्हों पर चलकर देश को स्वतन्त्र कराया। भारतीय जनता का गाँधी जी के प्रति समपर्ण देखकर सोहन लाल द्विवेदी जी लिखते है –

"चल पड़े जिधर दो डगमग में, चल पड़े कोटि पग उसी ओर।

गड़ गई जिधर भी एक दृष्टि, गड़ गये कोटि दृग उसी ओर।।
XXX XXX XXX XXX XXX XXX
हे युगे–दृष्टा, हे युग सृष्टा, पढ़ते कैसा यह मोक्ष मन्त्र
इस राजतन्त्र के खण्डहर में, उगता अभिनव भारत स्वतन्त्र।"[13]

देवदूत बनकर उभरे महात्मा गाँधी जी भारतीय जन–मानस के हृदय–पटल पर सदा–सदा के लिए अंकित होकर 'राष्ट्रपिता' बन गये। महात्मा गाँधी जी की विचारधारा ने भारतीय लोगों को ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया। 'आइंस्टाइन' गाँधी जी के विषय में कहते हैं– ''भावी पीढ़ी के लिए यह विश्वास करना कठिन होगा कि हाड़– मांस का बना एक ऐसा आदमी भी कभी इस धरती पर विचरण करता था।'' वहीं चर्चिल जैसा महान राजनीतिज्ञ ने उन्हें 'नंगा फकीर' कहा। गाँधी जी के विषय में सुमित्रानन्दन पन्त जी 'युगान्त में संग्रहित कविता 'बापू के प्रति' में वह लिखते हैं –

"तुम मांसहीन तुम रक्तहीन, हे अस्थि–शेष! तुम अस्थिहीन,
हे शुद्ध–बुद्ध आत्मा केवल, हे चिर पुराण हे चिर नवीन!
तुम पूर्ण इकाई जीवन की, जिसमें असार भव शून्य लीन,
आधार अमर होगी जिस पर, भावी की संस्कृति समासीन!"

निष्कर्षतः 'सर्वोदय दर्शन' का प्रभाव तत्कालीन समाज और साहित्य पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। साहित्यकारों ने उसी प्रकार की रचना की जो तत्कालीन परिस्थितियों की मांग थी। गाँधी जी ने लोगों को संदेश देते हुए कहा–कि ''जो बदलाव तुम दुनियां में देखना चाहते हो, वह खुद में लेकर आओ।'' गाँधी जी के सर्व कल्याणकारी विचार न केवल उस समय की परिस्थितियों पर लागू होते थे बल्कि आज भी उतने ही प्रासंगिक है। एक आदर्श समाज की संरचना और संकल्पना में यह विचारधारा बेहद प्रेरणादायक सिद्ध होती है। गाँधी जी से प्रभावित, साहित्य–सृजन से समाज को एक नवीन चेतन दृष्टि मिली। युग–सृष्टा महात्मा गाँधी जी के विषय में 'राष्ट्रकवि' 'दिनकर जी लिखते हैं –

"बापू! तू वह कुछ नहीं जिसे ज्वालाएं घेरे चलती हैं,
बापू! तू वह कुछ नहीं, दिशाएं जिसको देख दहलती हैं।
तू सहज शान्ति का दूत, मनुज के सहज प्रेम का अधिकारी,
दृग में उड़ेलकर सहज शील देखती तुझे दुनियां सारी।।"[14]

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-**


1. श्रीरामचरितमानस, मझला साइज, हनुमान प्रसाद पोददार, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृ०सं–110, अड़सठवां संस्करण– 2002 ई0
2. श्रीमद भागवत गीता, श्री श्रीमद ए0 सी0 भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद, भक्ति वेदान्त बुक ट्रस्ट, चौथा अध्याय – सातवां और आठवां श्लोक।
3. भारत–भारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगांव, दशम संस्करण, पृ० सं– 4
4. भारत–भारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगांव, पृ० सं–23
5. छायावाद, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन– सत्रहवां संस्करण– 2016, पृ० सं– 73

6. साहित्यिक निबन्ध, गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, सत्रहवां संस्करण, 2022, पृ० सं– 43
7. साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगांव, दशम संस्करण, पृ० सं– 124
8. निराला की साहित्य साधना, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नौवां संस्करण 2016, पृ० सं– 192
9. हरिजन पत्रिका, सं0 महात्मा गाँधी, 15/04/1939 को प्रकाशित, पृ० सं– 87
10. हरिजन पत्रिका, सं0 महात्मा गाँधी, 01/05/1937 को प्रकाशित, पृ० सं– 23
11. युगवाणी, सुमित्रानन्दन पन्त, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, पृ० सं– 76
12. नर हो न निराश करो मन को, पचास कविताएं, मैथिलीशरण गुप्त, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2012, पृ० सं–38
13. गाँधी अभिनन्दन ग्रन्थ, युगान्तर की कविता, सोहनलाल द्विवेदी, पृ० सं– 56
14. बापू, रश्मिलोक, रामधारी सिंह दिनकर, लोक भारती प्रकाशन, दूसरा संस्करण– 2011, पृ० सं. 191

मो0 नं0 – 9415357945

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 71-73

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिन्दी साहित्य गाँधीवादी विचारधारा में

**डॉ. शशि बाला रावत**

हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अगस्त्यमुनि, जिला रूद्रप्रयाग, पिन कोड 246421

हिन्दी साहित्य में गाँधीवादी विचारधारा एक ऐसी विचारधारा है, जिसका उद्देश्य सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों के अनुसार व्यक्ति और समाज को एक साथ बदलना पड़ता है। गाँधीजी ने इन विचारों को विभिन्न प्रेरणादायक स्रोतों जैसे– भगवत् गीता, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, बाइबिल, गोपालकृष्ण गोखले, टॉलस्टॉय, जॉन रस्किन आदि से विकसित किया। गाँधीवाद महात्मा गाँधी के आदर्शों, विश्वासों एवं दर्शन से उद्भूत विचारों के संग्रह को कहा जाता है, जो स्वतंत्रता संग्राम के सबसे बड़े राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेताओं में से थे। यह ऐसे उन सभी विचारों का समेकित रूप है, जिसका पालन गाँधी जी ने जीवन पर्यन्त किया था। गाँधीवादी विचारधारा महात्मा गाँधी द्वारा अपनायी गई थी, और इसे विकसित भी किया गया था। जो एक धार्मिक समूह के रूप में अपनाया गया था।

गाँधीवादी विचारधारा महात्मा गाँधी के उन धार्मिक, सामाजिक विचारों का समूह जो उन्होंने पहली बार1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में तथा उसके बाद फिर भारत में अपनायी थी। गाँधीवादी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है। यह कई पश्चिमी प्रभावों का प्रतीक है। जिनको गाँधी जी ने उजागर किया था, लेकिन यह प्राचीन भारतीय संस्कृति में भी निहित है, तथा सार्वभौमिकता, नैतिक और धार्मिक सिद्धान्तों का पालन करता है। यह दर्शन कई स्तरों– आध्यात्मिक या धार्मिक, नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यक्तिगत और सामूहिक आदि पर मौजूद है। इसके अनुसार आध्यात्मिक या धार्मिक तत्व और ईश्वर इसके मूल में है। गाँधीवादी दर्शन एक दोहरी अवधारणा है। जिसका उद्देश्य सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों के अनुसार व्यक्ति और समाज को एक साथ बदलना है। गाँधीजी ने इन विचारधाराओं को विभिन्न प्रेरणास्पद स्रोतों से विकसित किया है। टालस्टॉय की पुस्तक ''द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू'' का महात्मा गाँधी पर गहरा प्रभाव पड़ा था। गाँधीजी ने रस्किन की पुस्तक ''अंटू दिस लास्ट'' में हल्के फुल्के समाजवाद के साथ आध्यात्यिक मूल्यों पर विशेष बल दिया गया है। रस्किन ने राजनीति को अर्थव्यवस्था से सम्बद्ध करके देखा।

गांधी जी का चिंतन समाज, साहित्य और राजनीति बल्कि ऐसा कहें कि जीवन के अधिकांश क्षेत्रों को प्रभावित करता है, तो अतिशयोक्ति न होगी। गांधी का हिंदी साहित्य पर गहरा प्रभाव है और स्वयं गांधी हिंदी साहित्य से बहुत प्रभावित थे। गांधी जी के चिंतन में बहुत चीजों का समन्वय है। जैसे– सत्य, अहिंसा, भाईचारा, शांति, सद्भावना और जो सबसे बड़ी चीज है, वह है– सर्वोदय और अंत्योदय, यह गांधी जी के चिंतन का मूल

था और इसकी सफल अभिव्यक्ति हिंदी साहित्य में अनेक बार हुई है। महात्मा गांधी बहुजन हिताय एवं ग्राम स्वराज के पक्ष में जीवन भर रहे। जिसका प्रभाव हिंदी साहित्य में प्रेमचंद और उनके बाद के रचनाकारों पर भी देखा जा सकता है। गांधीजी के समान ही मुंशी प्रेमचंद का व्यक्तित्व सरल और सादगी से परिपूर्ण है। प्रेमचंद ने गोदान, गबन, कर्मभूमि, कायाकल्प, जैसे अनेक उपन्यासों के माध्यम से कृषि जीवन को चित्रित किया है। प्रेमचंद का सूरदास गांधी का ही प्रतीक है। प्रेमचंद के कई उपन्यासों में गांधी विचारधारा की सीधी अभिव्यक्ति हुई है। प्रेमचंद पर गांधी का सीधा प्रभाव दिखाई देता है वहीं प्रेमचंद के बाद के रचनाकारों पर भी गांधी प्रभाव दिखायी देता है– जैसे– जैनेन्द्र, रेणू इत्यादि।

जैनेन्द्र के दो उपन्यास बहुत प्रसिद्ध हैं। पहला सुखदा और दूसरा त्यागपत्र। त्यागपत्र में जो मृणाल का चरित्र है, अगर उसे ध्यान से देखें, तो वह अपने आपको इतना कष्ट क्यों देती है? वह क्यों कोयला बेचने वाले के साथ जीने के लिए अभिशप्त होती है? वह पढ़ी लिखी महिला थी, फिर भी वह क्यों बाध्य थी उस जगह जाने और ऐसा जीवन जीने के लिए? वह अन्य चुनाव भी कर सकती थी, लेकिन उसने संघर्ष का मार्ग अपनाया। अतः उस युग में गांधीजी का जो अहिंसा का सिद्धान्त था उसकी अभिव्यक्ति जैनेन्द्र अपने उपन्यास में करते हैं। इसी क्रम में फणीश्वरनाथ 'रेणू' के उपन्यास ''मैला आंचल'' में भी ग्राम–स्वराज की बात कही गयी है।

उस समय के हिंदी के कथाकार, कवि या नाटक के क्षेत्रों में भी जो भी लेखक लिख रहे थे, उन सभी के लेखन में हमें गांधी का प्रभाव देखने को मिलता है। जयशंकर प्रसाद के नाटकों में ''हिमाद्री तुंग श्रृंग से'' जो स्वतंन्त्रता पुकारती है, उसका स्वर कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हमें सुनाई देता था, वह गाँधी जी के प्रभाव से ही सुनायी देता था। प्रसाद का जो राष्ट्र के प्रति समर्पण और उनके लेखन में राष्ट्रीयता जो का स्वर सुनायी देता है, वह गांधी जी के ही प्रभाव से ही सुनायी देता है। गांधीजी ने 1909 में 'हिंद स्वराज' लिखा और उसमें मशीनीकरण का विरोध किया था। इसी मशीनीकरण का विरोध प्रसाद ने कामायनी में किया था। गांधी और प्रसाद यह मानते थे कि उसका विरोध ही होना चाहिए। यह जो अतिशय वैज्ञानिकता के कारण भीषण परिणाम सामने आये उसका विरोध गांधीजी ने किया। प्रसाद जी की रचना ''लहर'' की कविताओं, जिनमें 'पेशोला की प्रतिध्वनि' और 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण' प्रमुख हैं, उन सभी में गांधीवाद का प्रभाव दिखायी देता है।

गांधी कर्म की महत्ता पर बहुत जोर देते थे। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का एक नाटक है ''बकरी''। गांधी जी का जो कर्मवाद है उसका प्रतिफल है–''बकरी'' नाटक। कथा साहित्य और नाटकों के अलावा कविता में भी गांधी जी के आदर्शों का प्रभाव देखा जा सकता है। मैथिलीशरण गुप्त जी का एक काव्य है– 'यशोधरा'। गुप्त जी जब यशोधरा लिख रहे थे तो उन्होंने गांधी जी से पत्र व्यवहार किया और महात्मा गांधी ने उन्हें सुझाव दिया कि महिलाओं की कुछ समस्याओं को अपने काव्य के माध्यम से उन्हें उठाना चाहिए। इसलिए गुप्तजी यशोधरा लिखते हैं और ''साकेत'' में उर्मिला को केंद्र में लाते हैं। उर्मिला को बिना बनवास के जो दुःख भोगना पड़ा साकेत में उसकी स्थिति का वर्णन अत्यन्त कारूणिक है। राम साकेत की धरती को स्वर्ग बनाने के लिए आए हैं। यह गांधी के राम वाद के प्रभाव के कारण ही संभव हो पाया था। मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्य 'भारत–भारती' में गांधी के आदर्शों की बात कही है। जैसे–

''श्री गोखले, गांधी सदृश नेता महामतिमान। इतना ही नहीं सुभद्रा कुमारी चौहान 'बालिका का परिचय' नामक कविता में लिखती हैं :–

''मेरा मंदिर, मेरी मस्जिद, काबा–काशी यह मेरी,
पूजा–पाठ ध्यान जप–तप है, घट–घट वासी यह मेरी''।

महादेवी वर्मा ने तो गांधी जी को धरती का पुत्र कहकर संबोधित किया है–

''हे धरा के अमरपूत, तुमको अशेष प्रणाम।''

गांधी हिंदी भाषा को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक मानते थे, इसलिए वे हिंदी के पक्षधर थे। जो ज्यादा संस्कृतनिष्ठ न हो ऐसी हिंदी को वे ''हिंदुस्तानी'' कहते थे। गांधी भाषा को लेकर बहुत फ्लेक्सिबल थे। उसका कारण यह था कि हमारे भारत में सांस्कृतिक विविधता वाले बहुभाषी लोग रहते हैं। इसलिए महात्मा गांधी ऐसा मानते हैं कि हिंदी इन सबको एक कर सकती है। हिंदी–साहित्य में प्रेमचंद के कथा साहित्य को गांधी जी ने बहुत अधिक महत्व दिया। इसका कारण यह था कि प्रेमचंद के जिस भाषा में साहित्य रच रहे थे वह हिंदुस्तानी ही थी।

महात्मा गांधी ने हिंदी–साहित्य से जो प्रभाव ग्रहण किया कौन–सा साहित्यिक ग्रंथ उनके लिए आदर्श बना था। महात्मा गांधी जी के जीवन पर हिंदी साहित्य के जिस ग्रंथ का सर्वाधिक प्रभाव है। वह है–तुलसीदास का 'रामचरितमानस'। गांधी ने अपने हिंद स्वराज की प्रेरणा तुलसीदास के रामराज्य से ही ली है। तुलसीदास की अनेक चौपाईयाँ गांधीजी को याद थीं। अतः व्यक्तित्व से लेकर समाज, राजनीति, राष्ट्रधर्म, अध्यात्मिक जीवन से लेकर प्रेम आदि से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के संदर्भ में गांधी जी को हिंदी–साहित्य से हमेशा प्रेरणा मिलती रही और गांधी जी से प्रभावित होकर अनेक रचनाकारों ने उन्हें अपनी रचनाओं में किसी न किसी रूप में स्थान दिया है।

गांधी ने जिस आजाद हिन्दुस्तान का सपना देखा था उसकी जो परिणति हुई है वह किस तरह की हुई है? मैला आंचल में बावनदास ने एक सवाल उठाया था कि जब तक गरीबी और जहालत खत्म ना होगा यह आँचल मैला ही रहेगा। आजाद होने बाद से आज तक हम एक यही नारा देते आ रहे हैं कि'गरीबी हटाओ'। आज हम भारत की आजादी के 76 साल पूरे होने के बाद भी गरीबी नहीं हटा पाये।

**संदर्भ ग्रंथ :-**


1. गांधीवादी विचारधारा – जे0 सी0 जौहरी – पृष्ठ सं0 4, 5
2. हिन्दी साहित्य में गांधी जी का प्रभाव – जयप्रकाश नारायण पृष्ठ सं0 12, 13
3. हिन्दी साहित्य में गांधीवाद के विचारधारा – विनोबा भावे – पृष्ठ सं0– 20, 21
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – पृष्ठ सं0 8, 9



मो0नं0 – 9634105780

मेल –आईडी – Shashipanwar105@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 74-76

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गाँधीवाद की प्रासंगिकता

**प्रेमा**

शोध छात्रा, हिंदी विभाग, कुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड।

प्राचीन समय में विश्व गुरु कहलाने वाला हमारा देश भारत आज फिर से विश्व गुरु की भूमिका में आ रहा है। चंद्रयान तृतीय का चंद्रमा के दक्षिणी ध्रूव पर सफल लैंडिंग से भारत ने पूरे विश्व में अपना परचम लहरा दिया है। किन्तु हमने कुछ समय पूर्व ही, ठीक इसके विपरीत देखा कि कैसे कोरोना महामारी के चलते हमारे देश में ही नहीं, पूरे विश्व में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व मानसिक विसंगतियाँ आईं, इसके अलावा समाज में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी, आपसी मतभेद जिन के कारण समाज में अनेक अपराध हो रहे हैं, और एक देश का दूसरे देश के प्रति विद्रोह और युद्ध जैसे हालत बनते देख रहे हैं, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि चंद पर हम भले ही चले गायें हों किन्तु मानव होने के लिए हमें अभी एक लंबा सफर तय करना है। ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिए हम किस प्रकार के प्रयास कर सकते हैं और किस प्रकार देश का विकास कर सकते हैं इन सब वाद –विवादों का निवारण मिल सकता है गाँधीवाद में।

आधुनिक युग में गाँधी जी ऐसे महापुरुषों में एक आलोक स्तंभ थे जिन्होंने जाति, सांप्रदायिकता, आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त पराधीन भारत को दासता एवं कुरीतियों से मुक्ति दिलाने के लिए सत्य, अहिंसा और प्रेम को सशक्त साधन के रूप में प्रतिष्ठित किया तथा इनके व्यवहारिक पक्ष का सफलतापूर्वक प्रयोग कर देश को विकास और सुसंस्कृत करने का मार्ग प्रशस्त किया। सत्य, अहिंसा और प्रेम के उत्कृष्ट सिद्धांतों के आधार पर गाँधी जी ने जो विचार प्रस्तुत किए और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके जो प्रयोग किए उनका व्यापक प्रभाव समाज, राजनीति, साहित्य और संस्कृति पर पड़ा, जिसके कारण उनका दृष्टिकोण गाँधीवाद के रूप में प्रसिद्ध हुआ। "आधुनिक मानव जीवन को सफल और संपन्नता के उच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करने के लिए गाँधी जी ने जिस विचारधारा का जीवन की प्रयोगशाला में परीक्षण किया और उसे व्यवहार उपयोगी बनाकर विस्तृत धरातल प्रदान किया वही विचारधारा वस्तुतः गांधीवाद है। गाँधी जी ने अपने विचारों के श्रेष्ठ सिद्धांतों के आधार पर मानव को पारस्परिक सौहार्द के सूत्र में बाँधकर एक दूसरे के सुख में भागीदारी होना सिखाया। गाँधी के उदार भाव अपने देश और जाति के उत्थान तक ही सीमित ना थे, इसका प्रभाव लगभग संपूर्ण विश्व पर पड़ा।"[1]

गाँधी जी की इस विचारधारा को विभिन्न प्रेरणादायक स्रोतों जैसे. भगवद् गीता, रामायण, जैन धर्म ग्रंथों वैष्णव धर्म सिद्धांतों, बौद्ध धर्म ग्रंथों, बाइबिल, अपने राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले, विदेशी लेखक जैसे– टॉलस्टॉय एवं जॉन रस्किन आदि से विकसित किया है। गाँधीवादी दर्शन का मूल आधार धर्म, सत्य व अहिंसा है। धर्म से गाँधी जी का अभिप्राय है विश्व में व्यवस्थित नैतिक अनुशासन। उन्होंने इस धर्म के लिए सत्य अहिंसा

और प्रेम को अति आवश्यक माना है। उनकी मान्यता है कि धर्म से पृथक राजनीति मृत्यु जाल है क्योंकि वह आत्मा का हनन करती है। विश्व में शांति के लिए विश्व बंधुत्व के दृष्टिकोण को वह आवश्यक मानते हैं। हालांकि स्वयं गाँधी जी ने 1936 ई० में 'सर्व सेवा संघ' के सदस्यों से कहा था, "गाँधीवाद नाम की कोई वस्तु नहीं है और मैं अपने पीछे कोई सम्प्रदाय नहीं छोड़ना चाहता।"[2]

**गांधीवादी दर्शन के मुख्य आधार :-**

सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शारीरिक श्रम, निर्भयता, अस्पृश्यता निवारण की भावनाएं, सहिष्णुता, स्वदेशी का समर्थन, सर्वोदय, सत्याग्रह, धार्मिक–आध्यात्मिक शिक्षा आदि गाँधी जी के विचारधारा के आधार स्तम्भ थे। ये ही वे महत्वपूर्ण विचार थे जिनके आधार पर वह समाज का राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, मानसिक व सांस्कृतिक विकास करना चाहते थे।

गाँधी जी ने धर्म को आत्म शुद्धि और ईश्वर साक्षात्कार के लिए अनिवार्य बताया है। गाँधी जी का धर्म कर्मकांड और स्वर्ग प्राप्ति की भावना से प्रेरित नहीं था। वे इसे जीवन में व्यवहार में दर्शन के आग्रह के रूप में स्वीकारते थे। वे ईश्वर में आस्था रखते है और सभी धर्मों के प्रति सद्भाव रखते थे। मानव और समाज दोनों का सूक्ष्मता से अध्ययन करके संपूर्ण विश्व के कल्याण की दृष्टि से सत्य और अहिंसा को उन्होंने अत्यंत आवश्यक बताया। धार्मिक संकीर्णता, वर्ग–वैषम्य, जातीयता की दूषित भावना भारतीय समाज के लिए अभिशाप सिद्ध हुई है। ये देश की एकता और प्रगति के मार्ग में सबसे बड़े अवरोधक है। गाँधी इन दूषित प्रवृतियों से अत्यधिक चिंतित थे। अहिंसा के अर्थ को समझाते हुए वे कहते हैं "जहाँ अहंकार है, वहाँ हिंसा आवश्यक है। कार्य मात्र, प्रवृत्ति मात्र, आरंभ मात्र, उद्योग मात्र, संग्रह, असहिष्णुता, तोड़फोड़ अन्यायी कानून, आतंक, हत्या की भावना सब हिंसामय है। यही नहीं तमाम खराब विचार, हिंसा के द्वेष वैर व किसी का बुरा चाहना, युक्ति–अयुक्ति, असत्य, प्रचञ्च छल–कपट सब हिंसा है। संक्षेप में कहा जाये तो सभी अस्वच्छ कुटिल मार्गों की गणना हिंसा में है।"[3]

आज हमारे देश में धर्म के नाम पर बहुत से दंगे हो रहे हैं जैसे 1984 का दंगा, भागलपुर दंगा, मुज़फ्फरपुर दंगा। हाल में हुई मणिपुर में हिंसात्मक दंगे जोकि शांत होने का नाम ही नहीं ले रहे है। इनमें कहीं न कहीं धार्मिक कट्टरता है, लेकिन अगर हम सभी धर्मों के प्रति समभाव और आदर रखें प्रेम रखें, तो ये स्थिति कभी नहीं होती। सभी धर्मों के प्रति सम्मान भाव व विश्वास रखने के लिए गाँधी जी को ये भजन अत्यंत प्रिय था, जो कि वर्तमान समय की प्रासंगिकता को देखकर सटीक बैठता है –

ईश्वर–अल्लाह तेरो नाम। सबको सन्मति दे भगवान।।

सामाजिक वर्गभेद, बुद्धिभेद, दूसरों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का भाव, उत्पन्न शोषण आदि सभी अन्यायों का प्रतिकार करने तथा समाज में एकता और समानता की स्थापना के लिए गांधी जी ने सत्याग्रह का मार्ग अपनाया। सत्याग्रही स्वतः प्रत्येक कष्ट सहकर सहानुभूति एवं संयम से शत्रु का मत परिवर्तन करके उसे सही मार्ग पर लाता है। सविनय अवज्ञा. विनम्रता पूर्वक अवहेलना करना। किसी भी नीति का जो हमारे देश के हित में न हो, विनम्रता से उसका बहिष्कार कर देना। गाँधी जी ने अपने देश को आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया। भारत कृषि प्रधान देश है। यहाँ सभी वर्गों, धर्मों के लोग रहते हैं। किसानों और शोषित–वर्गों के प्रति उनकी सहानुभूति थी। उन्होंने अमीरी और गरीबी की खाई को कम करने के

लिये ट्रस्टीशिप के विचार पर बल दिया। जिससे सभी लोगों को संपत्ति रखने का अधिकार मिल जाये। सर्वोदय के माध्यम से गाँधी जी ने ट्रस्टीशिप के विचार को सामने रखा। गाँधी जी ने ग्राम– स्वराज्य की परिकल्पना को रचनात्मक रूप दिया। आत्मनिर्भर और स्वायत्त ग्राम पंचायतों की स्थापना के माध्यम से ग्रामीण समाज के अंतिम छोर पर मौजूद व्यक्ति तक राशन की पहुँच सुनिश्चित करना उनका स्वराज सिद्धांत का प्रथम ध्येय था। उन्होंने समाज में व्याप्त अस्पृश्यता, बाल विवाह, जातिप्रथा, पर्दाप्रथा का विरोध किया। स्त्री–शिक्षा पर बल दिया और शोषण विहीन समाज की स्थापना करने के लिए बुनियादी शिक्षा पर ही बाल नहीं दिया वरन प्रत्येक व्यक्ति को स्वावलंबी बनने के लिए भी प्रेरित किया।

वर्तमान समय में हमारे राष्ट्र में नहीं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पूरे विश्व में आतंकवाद, जलवायु–परिवर्तन, महंगाई, गरीबी, बेरोजगारी, धार्मिक कट्टरता, असहिष्णुता, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, साम्प्रदायिकता, स्त्री–शोषण, किसान–शोषण, अन्याय, उत्पीड़न, अशांति फैली हुई है और युद्ध जैसे स्थिति हमेशा बनी रहती है। वर्तमान में चारों ओर चाहे राष्ट्रीय स्तर हो या अनरराष्ट्रीय स्तर हो अफरा–तफरीमची हुई है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यूक्रेन और रूस का युद्ध हो या फिर भारत–चीन व पाकिस्तान के आपसी मतभेद जिसके कारण अशांति और युद्ध जैसी स्थिति बनी हुई है। वैश्विक स्तर पर अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए राष्ट्रों के मध्य अस्त्र–शस्त्रों की होड़ लगी हुई है, जो संपूर्ण विश्व को विनाश की ओर अग्रसर कर रहा है। शांति और एकता का अंत हो रहा है।

अगर हम वर्तमान समय की विषमताओं को देखते हुए गाँधी जी की विचारों को लेकर आगे बढ़ें तो पूरे विश्व में शांति संयम और विश्व बंधुत्व की भावना विकसित हो जाएगी। गाँधीवाद के विचारों से प्रभावित होकर नेल्सन मंडेला जी ने गांधीवादी नीतियों पर चलकर ही अपने देश को स्वतंत्रता दिलाई और इन्हीं के विचारों से प्रभावित होकर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन जी ने कहा था "अगर गाँधी नहीं होते तो मैं आज अमेरिका का राष्ट्रपति न होता।"[5]

वर्तमान स्थिति में गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता बहुत अधिक बढ़ चुकी है। उनके विचारों को अपनाने से ही आज की वैषम्ययुक्त जीवन में हम समरसता और सौहार्द की गंगा बहा सकते हैं। और संपूर्ण विश्व में वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को जागृत कर सकते हैं। गाँधीवादी विचारधारा के सूत्रों को अपनाकर उनका पालन कर हम अपने धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, बौद्धिक, वैज्ञानिक व सामाजिक किसी भी प्रकार की समस्या का समाधान कर सकते हैं। गाँधीवाद व गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर आइन्स्टीन ने कहा–"आने वाली पीढ़ियाँ शायद ही विश्वास कर सकेंगी कि गाँधी जैसे हाड़ माँस का पुतला कभी इस भूमि पर हुआ था।"[6] अर्थात् गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता आज भी है और आने वाली पीढ़ी में भी इसी प्रकार बनी रहेगी।

**संदर्भ :–**


1 गाँधीवाद एक परिचय, डॉक्टर चंद्र विजय चतुर्वेदी, डॉ जगन्नाथ आर्य, शिल्पी प्रकाशन प्रयागराज, संस्करण 1989

2 गाँधी दर्शन और अध्यात्म, उर्वशी सूरती, रंजन प्रकाशन, आगरा प्रथम संस्करण।

3 गाँधीवाद एक परिचय, डॉक्टर चंद्र विजय चतुर्वेदी, डॉ जगन्नाथ आर्य, शिल्पी प्रकाशन प्रयागराज, संस्करण 1989।

4. गाँधी दर्शन और अध्यात्म, उर्वशी सूरती, रंजन प्रकाशन, आगरा प्रथम संस्करण।

5. वही।

6. गांधी धर्म और समाज–शम्भू रत्न त्रिपाठी, पृष्ठ–67



Email- prema25890@gmail.com
Mob. 9389799348

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 77-82

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गांधीवाद और हिंदी साहित्य

**डॉ० संजीब सिंह नेगी**

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला, देहरादून।

**शोध सार :-**

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के नायक महात्मा गांधी ही माने गए हैं, जिनके नेतृत्व में भारत की जनता ने अपनी स्वाधीनता का लंबा संघर्ष चलाया। महात्मा गांधी केवल स्वतंत्रता संघर्ष के नायक ही नहीं थे बल्कि एक स्वतंत्र चिंतक भी थे। पूरे विश्व इतिहास में सत्याग्रह, सत्य, अहिंसा, साधन और साध्य की एकता को लेकर जो उनके विचार हैं वह पूरी तरह से मौलिक हैं और उनके आधार पर चलाया गया भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष पूरे विश्व में अतुलनीय और एक पूर्णतः मौलिक प्रयास रहा है। इस शोध पत्र में गांधीवाद के प्रमुख सिद्धांतो और हिंदी साहित्य पर उसके प्रभाव का आकलन किया गया है।

गांधी जी ने किसी नवीन विचारधारा, जीवन दर्शन या तत्व दर्शन का प्रतिपादन नहीं किया क्योंकि किसी भी दर्शन के लिए तीन चीजें महत्वपूर्ण हैं– पहला ज्ञान मीमांसा, दूसरा तत्व मीमांसा और तीसरा मूल्य मीमांसा। इन तीनों आधारों पर देखें तो गांधी जी विशुद्ध दार्शनिक नहीं थे, जिनका उद्देश्य एक दार्शनिक की भांति इस जीवन और जगत की व्याख्या करना रहा हो। बल्कि वह एक कर्मयोगी थे जो अपने समय और समाज की परिस्थितियों के साथ जूझते और संघर्ष करते हुए अपने स्वत्व की निर्मम मीमांसा करते हुए अपने विचारों का विकास करते हुए दिखाई देते हैं। वस्तुतः गांधीवाद भारत की आचारपरक आध्यात्मिक दृष्टि तथा सांस्कृतिक परंपरा का आधुनिक परिस्थितियों के अनुकूल परिवर्धित एवं संशोधित संस्करण है, जो शताब्दियों से सत्य, अहिंसा,सेवा, त्याग, प्रेम, सहिष्णुता, अस्तेय, अपरिग्रह, आत्मसंयम आदि नैतिक मूल्यों को भौतिक मापदंडो की अपेक्षा अधिक काम्य और वरेण्य मानती आई है। गांधी स्वयं स्वीकार करते हैं कि सत्याग्रह का सिद्धांत अपने मूल रूप में अत्यंत प्राचीन है लेकिन संभवतः मानव सभ्यता के इतिहास में गांधी ने ही पहली बार सत्य– अहिंसा आदि नैतिक नियमों के आधार पर विविध सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याओं का इतने व्यापक स्तर पर व्याख्यान विश्लेषण एवं समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

गांधी मूलतः एक दार्शनिक या राजनीतिक विचारक कम और आध्यात्मिक कर्मयोगी अधिक थे उनके लिए राजनीति आपद् धर्म के रूप रही है उन्होंने न तो आपने किसी सिद्धांत को दार्शनिक पूर्णता तक पहुंचाने का प्रयास किया न ही राजनैतिक विचारधारा वाली समस्याओं का पूर्ण समाधान खोजा, इसलिए गांधीवाद को गांधी विचार के रुप में जाना जाना अधिक उचित होगा।

महात्मा गांधी आधुनिक युग के बहुत बड़े समन्वयवादी थे, यही कारण है कि उन पर पाश्चात्य और पूर्वी

विचारों का गहरा प्रभाव रहा है। जहां उन्होंने भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति के श्रेष्ठ तत्वों जैसे– जैन धर्म की अहिंसा, हिंदुओं का सत्य, बुद्ध की करुणा, उपनिषदों के सर्वात्मवाद को अपने चिंतन का आधार बनाया वहीं उन पर टालस्टाय की पुस्तक 'स्वर्ग तुम्हारे हृदय में', न्यू टेस्टामेंट के 'सरमन आफ द माउंट', कारलाइल की वीर पूजा, एडोल्फ जुस्ट की प्राकृतिक चिकित्सा आदि का भी गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। ईसा मसीह को वे सत्याग्रहियों का सरताज मानते थे। उन पर सर्वाधिक प्रभाव रस्किन की पुस्तक 'अन टू द लास्ट' का पड़ा। जिसका अनुवाद उन्होंने स्वयं सर्वोदय के नाम से किया था। इस पुस्तक के असर के बारे में स्वयं गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है,–"इस पुस्तक को हाथ में लेकर मैं छोड़ ही न सका उसने मुझे पकड़ लिया। मेरा यह विश्वास है कि जो चीज मुझ में गहराई से भरी हुई थी उसका स्पष्ट प्रतिबिंब मैंने रस्किन के इस ग्रंथ रत्न में देखा।"[1] गांधी की सबसे बड़ी विशेषता है कि उन्होंने भारतीय आध्यात्मिक चिंतन और पश्चिमी आध्यात्मिक चिंतन के मूल्यों को आधुनिक राजनैतिक सामाजिक व्यवस्था के परिवर्तन में संभवतः पहली बार प्रयोग किया और सफलता अर्जित की।

गांधीवादी चिंतन की आधारशिला है सत्य। गांधी सत्य को केवल सत्य भाषण मात्र नहीं अपितु एक जीवनव्यापी सिद्धांत के रूप में स्वीकार करते हैं। जिसका अर्थ वाणी ही नहीं विचार और साधना द्वारा भी सत्य की साधना है। उनके सत्य की सीमाएं इतनी विस्तृत हैं कि उन्हें कहना पड़ता है कि परमेश्वर सत्य है यह कहने की अपेक्षा सत्य ही परमेश्वर है यह कहना अधिक योग्य है। सत्य शब्द सत् से बना है। सत् का अर्थ है अस्तित्व। यानी सत्य के बिना किसी दूसरी चीज की हस्ती ही नहीं है। गांधी जी के अनुसार निरंतर अभ्यास और वैराग्य द्वारा ही सत्य को प्राप्त किया जा सकता है और अहिंसा के अभ्यास द्वारा ही वैराग्य और अनाशक्ति की प्राप्ति की जा सकती है अर्थात सत्य का मार्ग निष्कर्षतः अहिंसा का ही मार्ग है।

गांधी की अहिंसा को प्रायः हिंसा का अभाव मान लिया जाता है, पर वास्तव में वह एक भावात्मक और सकारात्मक प्रक्रिया और ऐसी शक्ति है जो प्राणी मात्र से प्रेम करने के लिए प्रेरित करती है। गांधी अपने दर्शन में अहिंसा और प्रेम को अत्यंत उच्च स्थान पर रखते हैं और इस अहिंसा के माध्यम से संसार में व्यक्ति और व्यक्ति, राष्ट्र और राष्ट्र, जाति और जाति के मध्य फैली हिंसा का समाधान करने का प्रयत्न करते हैं। वे सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलने वाले को महावीर मानते हैं और लिखते हैं–"सत्याग्रह सबसे बड़ा सर्वोपरि बल है वह जब तोपबल से ज्यादा काम करता है तो फिर कमजोर का हथियार कैसे माना जाएगा? सत्याग्रह के लिए जो हिम्मत और बहादुरी चाहिए वह तोप का बल रखने वाले के पास हो ही नहीं सकती। क्या आप यह मानते हैं कि डरपोक और कमजोर आदमी नापसंद कानून को तोड़ सकेगा।"[2]

गांधीवाद का साध्य सत्य तथा साधन अहिंसा और सत्याग्रह हैं। सत्य पर आग्रह पूर्वक आचरण तथा अधर्म इत्यादि साधनों का आग्रहपूर्वक विरोध ही सत्याग्रह है। प्रेम और अहिंसा पर आधारित होने के कारण वहां अविनय का कोई स्थान नहीं है। सामाजिक राजनीतिक जीवन में साधन और साध्य की एकता की बात करने वाले गांधीजी विश्व के पहले व्यक्ति हैं। हिंद स्वराज में वह साधन और साध्य, जरिया और मुराद की एकता को घड़ी के उदाहरण से आसानी से समझाते हैं और कहते हैं कि "अगर मुझे आपसे आपकी घड़ी छीन लेनी हो तो बेशक मुझे आपके साथ मारपीट करनी होगी लेकिन अगर मुझे आपकी घड़ी खरीदनी हो, आप को दाम देने होंगे अगर मुझे बक्शीश के तौर पर आपकी घड़ी लेनी होगी तो मुझे आपसे विनय करनी होगी। घड़ी पाने के लिए मैं जो

साधन काम में लूंगा उसके अनुसार वह चोरी का माल, मेरा माल या बख्शीश की चीज होगी। इस प्रकार वह साधन की पवित्रता के साथ साध्य की पवित्रता का भी आग्रह करने वाले पहले सामाजिक राजनीतिक चिंतक हैं।"[3] वे मानते थे कि किसी को दबा देने की अपेक्षा उसका मत परिवर्तन कर देना ज्यादा अच्छा है।

स्वराज के संबंध में भी समस्त भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नायक और चिंतकों में गांधी सबसे ज्यादा मौलिक चिंतक हैं। हिंद स्वराज में उन्होंने स्वराज की अपनी अवधारणा को प्रस्तुत करते हुए पश्चिमी सभ्यता और विकास के मॉडल की कड़ी आलोचना प्रस्तुत की है। वे स्वाधीनता को केवल अंग्रेजो के चले जाने से जोड़कर नहीं देखते थे बल्कि भारत की स्वतंत्रता को वे केवल राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता से न जोड़कर विकास और सभ्यता के नए मॉडल के रूप में देखते थे। हिंद स्वराज में वह लिखते हैं कि "हमें अंग्रेजी राज्य तो चाहिए पर अंग्रेज शासक नहीं चाहिए। आप बाघ का स्वभाव तो चाहते हैं लेकिन बाघ नहीं चाहते, मतलब यह हुआ कि आप हिंदुस्तान को अंग्रेज बनाना चाहते हैं और जब हिंदुस्तान अंग्रेज बन जाएगा तब वह हिंदुस्तान नहीं कहा जाएगा यह मेरी कल्पना का स्वराज्य नहीं है।"[4]

गांधी के विचारों की प्रासंगिकता दिन प्रतिदिन युद्ध और हिंसा से ग्रस्त विश्व में बढ़ती चली जा रही है। अफ्रीकी चिंतक फ्रेंज़ फैनन हैं ने अपनी पुस्तक 'रैच्ड ऑफ द अर्थ' में लिखा है कि, "अगर हम अफ्रीका को एक नया यूरोप बनाना चाहते हैं तो आइए हम अपने अपने देशों की किस्मत यूरोपीय के हाथ में सौंप दें। हम में से अधिकांश प्रतिभाशाली लोगों के मुकाबले उन्हें यह काम बेहतर ढंग से करना आता है।"[5] गांधी भी भारतवर्ष को अपने मूल्यों अपनी संस्कृति और अपने विकास के वैकल्पिक मॉडल के रुप में विकसित होते हुए देखना चाहते थे न कि उसे यूरोप की एक नकली प्रतिकृति बनते हुए।

इसी संदर्भ में उन्होंने भाषा, शिक्षा, संस्कृति, अर्थशास्त्र, उद्योग आदि प्रश्नों पर अपना मौलिक चिंतन प्रस्तुत किया है। वह भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने के पक्षपाती थे और मानते थे कि विदेशी भाषाएं हमारे मौलिक ज्ञान और सर्जनात्मकता का क्षरण करती है। वह उस प्रकार की शिक्षा के पक्षपाती थे जो मनुष्य को अपनी इंद्रियों पर संयम बनाने में साथ दे तथा शारीरिक श्रम के प्रति व्यक्ति के मन में सम्मान पैदा करे। वह मशीनों के विरोधी थे। पश्चिम के चिंतकों मिडिल्टन मरी, डिजाइन बर्न्स जैसे चिंतकों ने जब गांधी के यंत्रों के विरोध की आलोचना यह कहकर की कि उनका चश्मा भी तो यंत्र है, हल भी यंत्र है तो गांधी स्पष्ट करते हैं– "मेरा विरोध यंत्रों के लिए नहीं बल्कि यंत्रों के पीछे जो पागलपन चल रहा है उसके लिए है। उनसे मेहनत तो जरूर बचती है लेकिन लाखों लोग बेकार होकर भूखों मरते हैं। यंत्रों के उपयोग के पीछे जो प्रेरक कारण है श्रम की बचत नहीं बल्कि धन का लोभ है।"[6] गांधी मशीनों के विरोधी नहीं थे बल्कि वह ऐसी मशीनें चाहते थे जो काम न रहने के कारण आदमी के अंगो को जड़ और बेकार ना बना दे। जैसे उन्होंने सिंगर की कपड़े सिलने की मशीन का स्वागत किया था क्योंकि सिंगर ने अपनी पत्नी को सीने और बखिया लगाने का उकताने वाला काम करते देखा था। पत्नी के प्रति उसके प्रेम ने पत्नी को गैरजरुरी मेहनत से बचाने के लिए ऐसी मशीन बनाने की प्रेरणा दी थी। ऐसी मशीनों का गांधीजी ने स्वागत किया है।

गांधी वर्तमान समाज अवस्था से असंतुष्ट थे। उनका था 18 सूत्री कार्यक्रम इस बात का सूचक है कि वे वर्तमान दोषपूर्ण समाज व्यवस्था में सुधार और उसके पुनर्निर्माण के लिए उत्सुक थे। उनका विश्वास था कि एक व्यक्ति के हृदय परिवर्तन और सुधार से पूरा विश्व लाभान्वित होता है। गांधी समाज में आर्थिक समानता की

स्थापना मालिकों के अधिकार छीन कर अथवा उनकी संपत्ति को कानून बना करए जब्त करके नहीं बल्कि उन्हें उसका तथाकथित संरक्षक/ट्रस्टी बनाकर करना चाहते थे। ट्रस्टीशिप का अर्थ है कि पूंजीपति और जमींदार को चाहिए कि अपने को जायदाद का मालिक नहीं बल्कि उस का रक्षक समझे। वह भारत की दरिद्रता और बेकारी का उन्मूलन खादी और दूसरे ग्राम उद्योगों के पुनरुत्थान द्वारा करना चाहते थे। वह बड़ी मशीनों के विरोधी थे क्योंकि उनसे बेरोजगारी और केंद्रीकरण बढ़ता है। केंद्रीकरण से आर्थिक शोषण, हिंसा, अनीति, लोभादि का प्रसार होता है। गांधी केंद्रीय उत्पादन पर आधारित वर्तमान व्यापारिक सभ्यता की जगह नवीन विकेंद्रित गार्हस्थ्य सभ्यता का निर्माण चाहते थे ताकि आधा दर्जन नगर सत्तर लाख गांव का शोषण न कर सकें।

गांधी राष्ट्रीय जीवन के लिए सांप्रदायिक सौहार्द को आवश्यक मानते थे। गांधी के सर्वधर्म समभाव का आधार धार्मिक सहिष्णुता है। वे अपने धर्म पर अविचल रहते हुए भी धार्मिक कट्टरपन के विरोधी थे। वे वर्णाश्रम का समर्थन करते हुए भी जातिगत छुआछूत और अस्पृश्यता का विरोध करते हुए जातियों के भीतर परस्पर सद्भाव और सम्मान की कामना करते थे।

वस्तुतः गांधी जी कोई दार्शनिक नहीं थे। उनके विचार अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में संघर्ष के दौरान अपने मूल्यांकन से पैदा हुए हैं, जिनमें मानवीय जीवन मूल्यों के आधार पर नए सामाजिक ओर राजनीतिक मूल्यों की सर्जना और नए समाज की स्थापना का आग्रह सम्मलित है।

**गांधीवाद और हिंदी साहित्य –**

गांधीवाद का प्रभाव आधुनिक साहित्य में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में दिखाई देता है, क्योंकि गांधीवाद उन सनातन मानवीय मूल्यों की ही अभिव्यक्ति है जो जीवन के लिए हमेशा शाश्वत हैं और साहित्य भी मानवीय मूल्यों के रक्षण का ही सर्जनात्मक प्रयास है। गांधी ने सत्याग्रह, अहिंसा, सत्य, ग्राम स्वराज जैसे शब्दों में नए अर्थ भर कर उन्हें नया संदर्भ प्रदान किया है। व्यापक दृष्टि से हिंदी साहित्य पर गांधीवाद का प्रभाव इन रूपों में देखा जा सकता है–

1. गांधी जी की मान्यताओं और विचारधाराओं का प्रभाव हिंदी साहित्य की विविध विधाओं पर।
2. गांधी जी के व्यक्तित्व से प्रभावित उन पर लिखा गया साहित्य। जैसे सोहन लाल द्विवेदी की कविताएं, पंत और बच्चन की खादी के फूल आदि।
3. उनके विचारों, क्रियाकलापों, भाषणों आदि से संबंधित गांधी साहित्य। जैसे उनकी आत्मकथा सत्य के प्रयोग हिंद स्वराज आदि।
4. उनके उद्योगों से स्थापित और प्रेरणा से संचालित पत्र–पत्रिकाओं और प्रकाशन संस्थाओं से हिंदी साहित्य का प्रकाशन और प्रचार प्रसार। जैसे सस्ता साहित्य मंडल, सर्वोदय जगत आदि।

आधुनिक हिंदी साहित्य कई विचारधाराओं से प्रभावित रहा है, जैसे मार्क्सवाद, गांधीवाद, अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद, आधुनिकतावाद, उत्तर–आधुनिकतावाद, संरचनावाद आदि। लेकिन साहित्य में जैसे मार्क्सवाद प्रगतिवादी आंदोलन का रुप ले कर हिंदी साहित्य में सचेतन रूप से स्थापित हुआ उस प्रकार गांधीवाद कोई विशिष्ट साहित्यिक आंदोलन के रुप में सामने नहीं आता है, बल्कि उस की अभिव्यक्ति हिंदी साहित्य में एक मानवीय अंतरधारा के रूप में दिखती है। यहां तक की प्रगतिवादी कवियों की मानवीय करुणा, अहिंसा और विश्वबंधुत्व के रूप में भी गांधीवाद का प्रभाव दिखाई देता है। गांधीवाद मुख्यतः राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के

माध्यम से हिंदी साहित्य को प्रभावित करता रहा है।

हिंदी साहित्य के द्विवेदी युग की शुद्धतावादी साहित्य और जीवन दृष्टि कहीं न कहीं गांधीवाद से प्रभावित है, जो जीवन में सादगी और उच्च मूल्यों की प्रतिष्ठा करती है। इसीलिए द्विवेदी युग का साहित्य जहां एक ओर उच्च नैतिक मूल्यों को प्रश्रय देता है वहीं दूसरी ओर जीवन में उपयोगितावाद को भी समेटता है। इस काल की मुख्य साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती' से इसीलिए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने शृंगारी कविताओं को छापने से मना कर दिया था क्योंकि गांधीवादी दृष्टि में 'कला कला के लिए' जैसी उक्तियों का कोई महत्व नहीं है। आचार्य द्विवेदी मानो गांधी की स्वदेशी भावना को ही अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं :–

स्वदेशी वस्त्र का स्वीकार कीजै, विनय हमारा मान लीजै।
शपथ करके विदेशी वस्त्र त्यागो, न जाओ पास उनसे दूर भागो।।

द्विवेदी युग के ही राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने संपूर्ण साहित्य में गांधीवादी जीवन मूल्यों को अभिव्यक्ति दी है। साकेत, पंचवटी, रंग में भंग, जयद्रथ वध, यशोधरा आदि काव्यों में पौराणिक पात्रों के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन के युग बोध को गांधीवादी जीवन मूल्यों के साथ अभिव्यक्त किया गया है। गुप्त जी ने उपेक्षित नारी पात्रों को उनकी मानवीय गरिमा प्रदान कर एक नया उज्जवल रुप दिया है, यहां तक कि मैथिलीशरण गुप्त के गृहस्थ जीवन का आदर्श भी गांधीवाद के सिद्धांतों से संवलित है। द्विवेदी युग के ही पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने पथिक, मिलन आदि काव्यों में गांधीवादी दर्शन की अभिव्यक्ति की है और उपेक्षित शोषित ग्रामीण जीवन को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया। गुप्त जी का कहना– "अपना हिंदुस्तान कहां, वह बसा हमारे गांवों में" पर भी गांधीवाद का प्रभाव देखा जा सकता है। गोपाल शरण सिंह नेपाली और सोहन लाल द्विवेदी पर भी गांधी का प्रभाव है। सोहन लाल द्विवेदी गांधी के प्रभाव पर लिखते हैं–"मुड़ गए जिधर दो डग मग में, मुड़ गए कोटि पग उसी ओर।"

कथा साहित्य में प्रेमचंद, छायावाद और समालोचना के क्षेत्र में रामचंद्र शुक्ल पर भी गांधी का प्रभाव देखा जा सकता है। प्रसिद्ध छायावादी आलोचक शांतिप्रिय द्विवेदी तो आधुनिक काल को 'गांधी–रवींद्र युग मानते हैं। वरिष्ठ आलोचक प्रोफ़ेसर विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं कि "प्रेमचंद पर गांधीवाद का प्रभाव स्पष्ट है। उनके अनेक प्रारंभिक उपन्यासों पर गांधीवादी आदर्शवाद, हृदय परिवर्तन एवं सुधारवाद का प्रभाव है। उपन्यास का अंत हृदय परिवर्तन और किसी आश्रम स्थापना में होता है। उपन्यासों का अंत ही नहीं पात्र, चरित्र चित्रण आदि पर भी गांधीवादी सिद्धांतों का दबाव है।"[7] वहीं छायावादी कवियों का भावमूलक आदर्शवाद भी गांधीवाद की ही साहित्यिक अभिव्यक्ति है। छायावाद जहां एक ओर विदेशी साम्राज्यवाद से मुक्ति की आकांक्षा का काव्य है वहीं दूसरी ओर वह तत्कालीन पारंपरिक रूढ़ियों से भी मुक्ति चाहता है। डॉ. नामवर सिंह के शब्दों में, "राजनीति के क्षेत्र में जो कार्य गांधीवाद कर रहा था साहित्य में वही कार्य छायावाद के द्वारा हुआ।"[8] छायावादी कवि पंत ने ग्राम्या में दलित, पिछड़ी ग्राम्य जातियों के प्रभावशाली चित्र खींचे हैं। युगांत की कविताएं भी गांधीवादी दर्शन से प्रभावित हैं। जयशंकर प्रसाद का जीवन दर्शन समरसता और आनंद की खोज से ओतप्रोत रहा है। कामायनी में उन्होंने मनु और श्रद्धा के माध्यम से समरसता और आनंद की खोज का प्रयास किया है। ईड़ा के संदर्भ में गांधी के मशीनी करण के विरुद्ध और हृदय की रागात्मिका शक्ति श्रद्धा को जीवन में प्रधान स्थान देने का आग्रह कामायनी में स्पष्ट दिखाई देता है। कामायनी की श्रद्धा गांधीवादी विश्वास की चरम प्रतीक बनकर सामने आती

है। महादेवी के गद्य और कविताओं पर भी गांधी की करुणा और अहिंसा का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। जबकि छायावादी कवि निराला संघर्ष और द्वन्द्व के कवि है जिस प्रकार निराला ने छायावाद में रहते हुए भी छायावाद को अतिक्रमित किया है उसी प्रकार उन्होंने गांधीवादी प्रभाव को लेते हुए अपने साहित्य में गांधीवाद का भी अतिक्रमण किया है।

सोहनलाल द्विवेदी की कविताओं में गांधीवादी प्रभाव सर्वाधिक स्पष्ट दिखता है। उनके काव्य में गांधी के प्रति अपार श्रद्धा, सत्याग्रह आंदोलन में अटूट विश्वास, हिंदू मुस्लिम एकता की भावना, खादी का प्रचार आदि गांधीवादी जीवन दर्शन के अनुरूप सहज शैली में व्यक्त हुई है। हिंदुस्तान, किसान, दांडी यात्रा, सेवाग्राम, बापू आदि उनकी प्रसिद्ध कविताएं हैं। इसी क्रम में पंत और बच्चन की संयुक्त रचना 'खादी के फूल' को भी देखा जा सकता है। दिनकर से लेकर भवानी प्रसाद मिश्र, नागार्जुन और मुक्तिबोध तक गांधी से प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित दिखते हैं। उपन्यासकारों में प्रेमचंद, जैनेंद्र, सियाराम शरण गुप्त, भगवती प्रसाद बाजपेई आदि पर गांधीवादी प्रभाव को देखा जा सकता है। प्रेमचंद के आदर्शवाद पर गांधीवादी प्रभाव है। 'रंगभूमि' उपन्यास का नायक सूरदास अपने आत्मबल, संघर्ष और सत्याग्रह के द्वारा औद्योगिकीकरण के विरोध में खड़ा होता है और साहित्य में सूरदास गांधी का प्रतीक बन जाता है। जैनेंद्र के अधिकांश उपन्यासों के पात्र अपने को पीड़ा देकर ही अपनी और समाज की सार्थकता बनाते हैं।'त्यागपत्र' की मृणाल सब कुछ सहकर और सब कुछ जानते हुए भी प्रमोद के साथ न रहकर अपने को पीड़ा और दुख में डुबा देती है यह सत्याग्रह का ही एक रुप है। जैनेंद्र के पात्रों में अहिंसा का सिद्धांत जैन दर्शन के साथ.साथ गांधीवादी दार्शनिकता से भी अपना आधार ग्रहण करता है।

समालोचना के क्षेत्र में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का श्रम सौंदर्य पर बल देना तथा लोक मंगल की साधनावस्था को महत्व देना गांधीवादी सिद्धांतों के प्रभाव को रेखांकित करता है। वहीं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की दृष्टि में मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है। उनकी समस्त कृतियों के सारांश वाक्य, "अपने को दलित द्राक्षा की तरह निचोड़ कर दे दो, ———— अपने को निशेष भाव से दे देना" आदि गांधीवादी सत्याग्रह और अहिंसा की ही साहित्यिक प्रस्तुति है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि गांधीवाद का प्रभाव हिंदी साहित्य पर परोक्ष अपरोक्ष रूप से रहा है, हालांकि रचनाकारों ने उसे अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार न करके अंशतः ही ग्रहण किया और जीवन और साहित्य की समस्याओं के लिए अपने खुले विवेक का इस्तेमाल किया है। गांधीवादी चिंतन भारतीय चिंतन परंपरा का ही आधुनिक रुप है। इसलिए उसके प्रभाव से साहित्य कैसे बच सकता है।

**संदर्भ :-**


1. सर्वोदय साहित्य मंडल 1991, पृष्ठ 1
2. हिंद स्वराज, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद 1949, पृष्ठ 66
3. हिंद स्वराज, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद 1949, पृष्ठ 56
4. हिंद स्वराज, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद 1949, पृष्ठ 14
5. Frantz Fanon, Wretched of The Earth, Grove Press, NewYork.
6. हिंद स्वराज, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद 1949, पृष्ठ 15
7. हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, एन सी आर टी, 1986, पृष्ठ 96
8. छायावाद, राजकमल प्रकाशन 1968, पृष्ठ 7



ईमेल– sanjeebnegi24@gmail.com,
मोबाइल नंबर–9412983612, 9410966724

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 83-87

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# आधुनिक हिन्दी–साहित्य पर गाँधीवाद का प्रभाव

**डॉ. कृष्णा**

असि0 प्रो0 हिन्दी विभाग, अ0प्र0ब0रा0स्ना0 महाविद्यालय अगस्त्यमुनि, (रूद्रप्रयाग) उत्तराखण्ड–246421

गाँधी किसी एक व्यक्ति का ही नाम नहीं अपितु एक विचारधारा का भी नाम है। महात्मा गाँधी भारतवर्ष के राष्ट्रपिता की संज्ञा से पुकारे जाते हैं। वे हमारे देश के ही लोकनायक या युग निर्माता नहीं, बल्कि सम्पूर्ण संसार के युगपुरूषों में से एक हैं। उन्होंने भारत सहित समस्त विश्व में सत्य, अहिंसा, शांति एवं सदभाव जैसे आदर्श स्थापित किये। महात्मा गाँधी जी ने अनेक मानवीय मूल्यों की स्थापना करके समस्त संसार के मनुष्यों के कल्याण को सर्वोपरि स्थान दिया। इसीलिए समस्त विश्व के लोगों ने उन्हें देखा, सुना और उनके द्वारा रचित साहित्य को पढ़कर उनसे सहमत हुए। गाँधी जी को समस्त विश्व के द्वारा समर्थन भी भरपूर मात्रा में मिला है। महात्मा गाँधी जी के विचारों से भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व प्रभावित था। उनका चिन्तन सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के लिए था। अतः उनके विचारों ने मनुष्य जगत के साथ–साथ साहित्य जगत पर भी अपनी अमिट छाप छोड़ी। उनके विचारों से जनमानस व्यापक रूप से प्रभावित हुआ और 'गाँधीवाद' नामक युग की ही स्थापना हो गयी। किसी भी विचारधारा या व्यक्तित्व का साहित्य पर भी प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता ही है। गाँधी जी का व्यक्तित्व युग निर्माता का व्यक्तित्व रहा है। अतः इसका प्रभाव भारतीय जीवन दृष्टि, जनमानस, विचारधारा के साथ–साथ हिन्दी साहित्य जगत पर भी पड़ा। भगवान राम एवं बुद्ध के बाद महात्मा गाँधी ही वह व्यक्ति हैं जिनके व्यक्तित्व से भारतीय जनमानस सवार्धिक प्रभावित हुआ है।

"सचमुच गाँधी वह पारस पत्थर हैं, जिसे छूकर न जाने कितने ही हाड़–माँस के पुतले स्वर्ण शक्ति पा सकेंगे। उसने नव–समाज के लिए आदर्श जीवन बनाया। साहित्य में एक जागरण की शक्ति दी। राजनीति में विश्व नीति का रूप स्थिर किया, समाज को उदार बनाया, व्यक्ति को सचेत किया, तथा समष्टि को उन्मुख एवं प्रगति पथ की ओर बढ़ाया।"[1]

महात्मा गाँधी जी भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के सर्वप्रमुख एवं सर्वश्रेष्ठ राजनीतिक एवं आध्यात्मिक नेता रहे हैं। उनके ही विचारों, आदर्शों, आस्थाओं, मान्यताओं एवं विश्वासों को ही 'गाँधीवाद' के नाम से जाना जाता है। महात्मा गाँधी जी नेता होने के साथ–साथ एक साहित्यिक विचारक भी रहे हैं। उन्होंने अनेक पुस्तकों के साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं की रचना एवं संपादन कार्य भी किया। इनके चिन्तन में अनेक मानवीय मूल्यों का समन्वय हुआ। सत्य, अहिंसा, प्रेम, शांति विश्व बन्धुत्व की भावना, सर्वोदय एवं अन्त्योदय जैसे मानवीय मूल्य गाँधी जी के चिन्तन के प्रमुख विषय रहे हैं। हिन्दी–साहित्य में महात्मा गाँधी के चिन्तन का गहरा प्रभाव पड़ा है। अतः इन सभी मूल्यों को हिन्दी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में प्रत्येक कालखण्ड में अभिव्यक्ति मिली है। चाहे

वह प्रेमचन्दयुगीन गद्य साहित्य रहा हो या छायावादी सुकुमार कवि पंत का काव्य, सभी में गाँधीवाद को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्ति मिली है। इस सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध आलोचक डा0 नगेन्द्र लिखते हैं कि –"गाँधी दर्शन हमारा युग दर्शन है, और इसके सर्वव्यापी प्रभाव से आधुनिक कवि अछूते नहीं रहें हैं।"

महात्मा गाँधी जी अपने विचारों में ग्राम स्वराज, सर्वजनहिताय, बहुजनहिताय की बात बड़ी मुखरता से करते हैं। उनके इन विचारों को प्रमुखता आधुनिक हिन्दी साहित्य में बहुतायत से मिली है। प्रेमचन्द्रयुगीन साहित्यकारों के साथ–साथ परवर्ती हिन्दी साहित्य में भी गाँधीवादी विचारों को प्रमुखता के साथ–साथ अभिव्यक्ति मिली है। प्रेमचन्द्र जी का 'गबन' उपन्यास भी गाँधी के आदर्शों से अनुप्राणित लगता है। इसमें नेता पर व्यंग्य करते हुए वे लिखते हैं –

"तुम सुराज का नाम लेते हो, उसका कौन रूप तुम्हारे सामने आता है? तुम भी बड़ी–बड़ी तलब लोगे, तुम भी अंग्रेजों की तरह बंगलों में रहोगे, पहाड़ों की हवा खाओगे, अंग्रेजी ठाठ बनाए घूमोगे, इस सुराज से देश का क्या कल्याण होगा।"[2]

'गबन' के अतिरिक्त प्रेमचन्द के रंगभूमि, कर्मभूमि, निर्मला एवं कायाकल्प जैसे उपन्यासों में ग्रामीण कृषक जीवन चित्रित हुआ है। 'रंगभूमि' उपन्यास का 'सूरदास' नामक पात्र तो 'गाँधी जी' का ही प्रतीक है। 'प्रेमाश्रम' उपन्यास में प्रेमचन्द ने जमीदारों और कृषकों के परस्पर सम्बन्ध का यथार्थ रूप दिखाया है, और ऐसा विश्वास दिखाया है कि जमीदारों और कृषकों के सम्बन्ध सहयोग पूर्ण हो सकते हैं। जिससे आदर्श ग्राम स्वराज की स्थापना हो सकती है। यही आदर्श ग्राम स्वराज गाँधी जी का चिंतन है। प्रेम शंकर और मायाशंकर जैसे जमींदार वर्ग के व्यक्ति किसानों की सेवा में अपने जीवन को पूर्णतया समर्पित कर देते है "प्रेमशंकर उसी का भूमि पर अधिकार मानता है जो उसे जोतते हैं। माया शंकर भी 'सबै भूमि गोपाल की ही स्वीकार करता है तथा किसान और सरकार के बीच किसी अन्य वर्ग या श्रेणी की स्थिति एवं अधिकार को वर्तमान समाज का कलंक समझता है।"[3]

इसी तरह प्रेमचन्द के 'कायाकल्प' उपन्यास में भी गाँधीवादी विचार–धारा के फलस्वरूप 'चक्रधर' आगरा के साम्प्रदायिक दंगों को शान्त कराता है। 'कर्मभूमि' में गाँधी के व्यावहारिक कार्यक्रमों का ग्रामीण अंचलों में प्रसार दिखाया गया है। हरिजनों का उद्धार, सूत–कताई, बुनाई, शराबबन्दी, मन्दिर प्रवेश के आन्दोलन को पढ़ते–पढ़ते गाँधीवादी विचारधारा पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत होती है।

अन्य लेखकों में जैनेन्द्र जी भी गाँधीवादी विचारधारा से ओतप्रोत है। उन्होंने अपने 'परख' उपन्यास के 'सत्यधन' नामक पात्र पर गाँधीवादी विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव दिखाया है। इसके साथ–साथ जैनेन्द्र जी ने अपने 'सुनीता', 'सुखदा' 'विवर्त' एवं व्यतीत' उपन्यासों में स्त्री–पुरूष के प्रेम सम्बन्धों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं का समाधान हृदय परिवर्तन के सिद्धान्त के फलस्वरूप दिखाया है, जो कि गाँधीवादी चिन्तन का एक पक्ष है। हिन्दी के प्रमुख आलोचक आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी जी इस सम्बन्ध में स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि –"ये पात्र अपनी पत्नियों को प्रत्येक दशा में पूरी छूट देते हैं और इस प्रणाली के द्वारा इनके हृदय–परिवर्तन की प्रतीक्षा करते हैं। गाँधी जी ने हृदय परिवर्तन का आदर्श राजनीतिक स्तर पर प्रतिष्ठित किया था। पारिवारिक व्यवहारों में गाँधी जी हृदय–परिवर्तन जैसी वस्तुओं को स्वीकारते थे। कदाचित जैनेन्द्र ने यह तथ्य गाँधी दर्शन से ही ग्रहण किया है।"[4]

जैनेन्द्र जी के प्रसिद्ध उपन्यास 'त्यागपत्र' की नायिका मृणाल भी समाज द्वारा प्रदत्त कष्टों को मौन रूप से सहनकर अहिंसा का आदर्श स्थापित करती है। इसके पात्र बुद्धि से ज्यादा हृदय के भावों पर निर्भर रहतें हैं, इस सम्बंध में हिंदी आलोचक नगेन्द्र लिखते हैं–"कष्ट के कारणों से घृणा न करते हुए, कष्ट की अनिवार्यता से त्रास न खाकर उसमें आनन्द की भावना करना अहिंसा है, और अहिंसा यह सिखाती है कि अमुक्त वासना का वितरण करना ही उसकी सफलता है।"[5]

महात्मा गाँधी जी की विचारधारा का प्रभाव हिन्दी साहित्य के कथा–साहित्य पर भी स्पष्ट रूप से हमें देखने को मिलता है। महात्मा गाँधी जी ने जीवन पर्यन्त भारतवर्ष की आजादी के लिए संघर्ष किया है। राष्ट्र, राष्ट्रभाषा, एकता, राष्ट्रीय शिक्षा के लिए उन्होंने अथक परिश्रम भी किया। हिन्दी कथाकारों में विष्णु प्रभाकर जी की प्रसिद्ध कहानी 'सुराज' में आजादी के बाद का संघर्ष, 'धरोहर' कहानी में बंगाल के अकाल का दर्द, तथा 'आजादी' में महात्मा गाँधी जी द्वारा देश को स्वतंत्र कराने का संघर्ष दिखाई पड़ता है। महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि –"मैं अपने देश की स्वतत्रंता इस कारण चाहता हूँ कि अन्य राष्ट्र मेरे राष्ट्र से कुछ सीख सकें।"[6]

हिन्दी कथा–साहित्य के माध्यम से हम गाँधी जी के सिद्धांतों, आदर्शों एवं विचारों को भली–भाँति जान सकते हैं। गाँधी जी हरिजनों के पक्षधर थे, उन्होंने अस्पृश्यता का निवारण करने का संकल्प लिया था। 'लक्ष्मीनारायण लाल' जी की कहानियों में यह हरिजनोद्धार दिखाई पड़ता है, उनकी 'न आने वाला कल' कहानी इसी से प्रेरित लगती है। इनके साथ–साथ प्रसिद्ध आँचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' भी गाँधीवादी दृष्टिकोण से अछूते नहीं हैं। इनका 'मैला आँचल' उपन्यास भी गाँधी जी के स्वराज की भावना की पुष्टि करता है। इसमें आजादी यानि स्वराज की खुशी में ग्रामीणों द्वारा उत्सव मनाने में जिन गीतों का प्रयोग हुआ है उसका एक उदाहरण देखिए–

"भारत में आयल सुराज, चलु सखी देखन को।
कथि जे चढ़िए आयेल, भारतमाथा,
कथे जे चढ़िल सुराज, चलु सखी देखन को।"[7]

इसके अतिरिक्त 'जगदीशचन्द्र माथुर' का 'बन्दी', उदयशंकर भट्ट का 'सागर विजय', लक्ष्मीनारायण लाल का 'अंधा कुंआ', नरेन्द्र कोहली का'शंबूक की हत्या', प्रसाद जी का 'जनमेजय का नागयज्ञ', हरिकृष्ण प्रेमी का 'शिवासाधना,' भी गाँधीवादी दृष्टिकोण से ओत–प्रोत हैं। कहने का आशय यह है कि हिंदी साहित्य के नाटक भी गाँधीवादी विचारधारा के वाहक रहे हैं। हम कह सकते हैं कि हिंदी गद्य की सभी विधाओं में गाँधीवादी दृष्टिकोण लेखकों ने अपनाया ही है, साथ ही हिन्दी कविता भी इसकी संवाहक रही है। गाँधीवादी चिंतन की स्पष्ट छाप हिंदी कविताओं में देखने को मिलती है। संपूर्ण हिंदी कविता का आधुनिककाल गाँधीवादी दृष्टिकोण, आदर्शों एवं मान्यताओं को अपने आप में समेटे हुए है। हालांकि गाँधी जी भी पूर्ववर्ती भक्तिकालीन हिंदी भक्त कवियों से प्रभावित थे तभी उन्होंने भी तुलसीदास जी जैसे रामराज्य की कल्पना अपने भारत देश के लिए की थी। गाँधी जी के आदर्शों का प्रभाव सर्वप्रथम हम राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित प्रसिद्ध काव्य 'भारत–भारती' में देख सकते हैं, वे कहते हैं कि –

"श्री गोखले, गाँधी सदृश, नेता महामतिमान है।
वक्ता विजय घोषक हमारे, श्री सुरेन्द्र समान है।।"

मैथिलीशरण गुप्त जी की एक अन्य रचना 'यशोधरा' को लिखते समय वे गाँधी जी से भी पत्र–व्यवहार करते थे, तो गाँधी जी ने उन्हें सुझाव दिया कि स्त्री समस्याओं को भी आपको अपनी कविता के माध्यम से समाज के सम्मुख लाना चाहिए। इसी के परिणामस्वरूप 'यशोधरा' व 'साकेत' जैसी स्त्री–केन्द्रित रचना पाठकों के मध्य आयी। 'साकेत' की नायिका वे उर्मिला को बनाते हैं जो कि बिना वनवास के राजभवन में रहते हुए भी कष्ट भोग रही है और समाज के सम्मुख पतिव्रता नारी का आदर्श प्रस्तुत करती है। उसकी स्थिति का बड़ा ही मार्मिक वर्णन गुप्त जी ने किया है–

"मानस मन्दिर में सटी, पति की प्रतिमा छाप।
जलती थी उस विरह में, बनी आरती आप।।
आँखों में प्रिय मूर्ति थी, भूले थे सब भोग।
हुआ योग से भी अधिक, उसका विषम वियोग।।"[8]

गाँधी जी धर्मनिरपेक्ष समाज की कल्पना करते थे, हिंदू–मुस्लिम सामंजस्य की बात करते थे,उनके इस धर्मनिरपेक्ष समाज की कल्पना को वीररस की प्रमुख कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान जी अपनी इन पंक्तियों मे अभिव्यक्ति देते हुए लिखती हैं–

"प्रभु ईसा की क्षमाशीलता, नबी मुहम्मद का विश्वास।
जीव दया जिन पर गौतम की, आओ देखो इसके पास।।"

आधुनिककालीन कवियों में इनके अतिरिक्त अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, भवानी प्रसाद मिश्र, आदि अनेक कवि हैं जो गाँधी जी के विचारों से प्रभावित हुए और उनके विचारों को अपनी कविताओं के माध्यम से जनता की आवाज बनाया। गाँधी जी की अहिंसावादी नीति का समर्थन करते हुए ही सियारामशरण गुप्त जी लिखते हैं कि –

"हिंसा से शांत नहीं होता, हिंसानल।
हिंसा का है, एक अहिंसा ही प्रत्युत्तर।।"

हिंदी साहित्येतिहास में आधुनिक हिंदी कविता का हर एक युग गाँधीवादी विचारधारा का किसी न किसी रूप में समर्थन करता प्रतीत होता है। केदारनाथ अग्रवाल, सुमित्रानंदन पंत, रामधारी सिंह दिनकर, हरिवंशराच बच्चन, भवानी प्रसाद मिश्र आदि सभी कवि गाँधीवादी विचारधारा से साम्य रखते हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि गाँधी जी ने भारतीय जनमानस के साथ–साथ भारतीय साहित्य को भी पूर्णरूपेण प्रभावित किया है। गाँधीवादी विचारधारा से हमारा हिंदी साहित्य भी अछूता नहीं रहा है। गाँधी जी सत्य, अहिंसा, प्रेम, सद्भाव, एकता, शांति, समानता, एवं मानवता की भावना से जन–जन को जगाने का प्रयास कर रहे थे और इस जागरण आन्दोलन में हिंदी साहित्य जगत ने उनका भरपूर सहयोग किया। हिंदी साहित्येतिहास के प्रत्येक कालखण्ड के कवि तथा लेखकों ने गाँधी जी के सिद्धांतों, मान्यताओं, एवं आदर्शों को अपने साहित्य के माध्यम से समाज में परोसा और समाज ने बांहें खोलकर इनका अभिवादन भी किया। गाँधी जी के आदर्शों एवं जीवनमूल्यों को आज भी भारत में बहुतायत लोग स्वीकार करते हैं, जो कि अत्याधुनिक भौतिकतावादी जगत के लिए आवश्यक भी है और उपयोगी भी। उन्होंने सत्य, अहिंसा पर आधारित आदर्श रामराज्य की स्थापना की कल्पना की थी, जिसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। उन्होंने कहा भी था कि –"सच्ची अहिंसा मृत्यु शैय्या

पर भी मुस्कुराती रहेगी। अहिंसा ही एकमात्र शक्ति है, जिससे हम शत्रु को अपना मित्र बना सकते हैं, और उसके प्रेम पात्र बन सकते हैं।"[9]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यदि गाँधी जी प्राचीन हिंदी साहित्य से प्रभावित हुए हैं तो उनकी विचाराधारा का स्पष्ट प्रभाव आधुनिक हिंदी साहित्य पर भी बहुतायत रूप में पड़ा है। गाँधीवाद ने हर युग में हिन्दी साहित्य को पूर्णरूप से प्रभावित किया है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ :-**


1. सिद्धेश्वर प्रकाश, छायावदोत्तर काव्य– पृ0 सं0– 68
2. प्रेमचंद, गबन पृ0 सं0– 110
3. प्रेमचंद, प्रेमाश्रम, पृ0 सं0– 64
4. नन्ददुलारे वाजपेयी, नया साहित्य–नए प्रश्न, पृ0 सं0–198
5. डॉ0 नगेन्द्र, विचार और अनुभूति, पृ0 सं0–139क
6. रामनाथ सुमन, गाँधीवाद की रूपरेखा, पृ0 सं0–45
7. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आंचल, पृ0 सं0–163
8. मैथिलीशरण गुप्त, साकेत नौवां सर्ग, पृ0 सं0–1
9. रजनी शर्मा, गांधी का जीवन, गांधी का संदेश, (योजना : अक्टूबर 1981 पृ0 सं0–25)



मोबाइल न0–9410554299, 8477902688

ईमेल–ranakrishna86@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 88-96

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गाँधी और हिन्दी साहित्य

**प्रो० चंद्रा खत्री**

क

"हे महा विभूति मानव अवतार
नमन करूं मैं शत–शत बार।
भारत माँ जकड़ी थी जब बेड़ियों के अन्दर
जन्म तत्क्षण में लिया, धन्य हुआ पोरबन्दर।"[1]

महात्मा गाँधी शांति के ऐसे मसीहा थे, जिन्होंने सत्य अंहिसा, सत्याग्रह, करूणा, त्याग और विश्वबधुत्व के महत्व को समझा और उसे स्वयं जीवन में क्रियान्वित भी किया। 2 अक्टूबर सन् 1869 को काठियावाड़ की रियासत पोरबन्दर के दीवान करमचन्द गाँधी परिवार में उनका जन्म हुआ था। बचपन से ही सत्यवादी हरिश्चन्द्र की पुस्तक भगवतगीता का प्रभाव इनके मन पर पड़ा, इसलिए गीता के कर्म–सिद्धान्त का प्रभाव इनके जीवन पर भी पड़ा। जिस समय भारतीय जनता पर अंग्रेज अनेक तरह के जुल्म कर रहे थे सम्पूर्ण भारतीय जनता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराकर एकता के सूत्र में बाँधकर स्वतंत्रता संग्राम का कुशल नेतृत्व महात्मा गाँधी के द्वारा ही किया गया। महात्मा गाँधी आधुनिक युग के ही नहीं, समूचे मानव–इतिहास के महापुरुष थे। उन्होंने सत्य अहिंसा और नैतिक मूल्यों के आधार पर ही सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक समस्याओं का समाधान किया।

किसी राष्ट्र का वास्तविक इतिहास उसका साहित्य होता है। साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य ही समाज की तात्कालीन धारणाओं, भावनाओं, आकांक्षाओं एवं आदर्श का यथार्थ चित्र हमारे सामने उपस्थित करता है। इस दृष्टि से साहित्य में भी गाँधी दर्शन मानवता, परोपकार, सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, विश्वबंधुत्व, नारी सम्मान और नैतिक मूल्यों का वर्णन करती है। जिससे समस्त मानव का कल्याण हो।

महात्मा गाँधी के तीन अमोघ अस्त्र थे– सत्य, अहिंसा, और सत्याग्रह। गाँधी जी के अनुसार अहिंसा मात्र दर्शन ही नहीं बल्कि प्रेमपूर्वक कार्य करने की शैली है। जिनके द्वारा हम विश्व–प्रेम विश्व–शांति की स्थापना कर सकते हैं। प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पंत गाँधी जी से मिले तो उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाए। इसलिए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर गाँधी विचारों का गहन प्रभाव दिखायी देता है। उनके लोकायतन' में मानवीय विचार और दर्शन, 'युगान्त' में 'बापू के प्रति''युगान्तर' काव्यकृति में श्रद्धा के फूल और 'युगवाणी' में 'बापू और समाजवाद' कविता में गाँधी दर्शन की अभिव्यक्ति इन शब्दों में हुई है–

"गाँधीवाद जगत में आया, ले मानवता का नवमान,

सत्य अहिंसा से मनुजोचित नवसंस्कृति का करने निर्माण।
गाँधीवाद हमें जीवन पर देता अंतर्गत विश्वास,
मानव की निःसीम शक्ति का मिलता उससे चिर आभास।"[2]

इनकी 'ग्राम्या' में 'महात्मा के प्रति', बापू, अहिंसा, चरखा गीत तथा 'स्वर्ण किरण' काव्य में 'नोआखाली' के महात्मा जी के प्रति कविताएं पंत काव्य में गाँधी–दर्शन एवं विचारों की पुष्टि करती हैं।

गाँधी जी के अहिंसा सिद्धान्त का अर्थ है बुरे व्यक्ति की अपेक्षा बुराई से घृणा करनी चाहिए। अहिंसा के बिना सत्य की खोज करना सम्भव नहीं है। सत्य साध्य है, तो अहिंसा साधन प्रेम और सद्भाव से ही प्राप्त किया जा सकता है। हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार "सत्य और अहिंसा का ही दूसरा नाम उन्होंने परमेश्वर माना है तथा समस्त सृष्टि में एक ही तत्त्व की व्याप्ति स्वीकार कर ईश्वर और मनुष्य तथा मनुष्य एवं अन्य जीवधारियों की एकता स्वीकार की है। इस अंतर्भूत एकत्व के कारण ही उन्होंने माना था कि जो घटना एक शरीरधारी पर घटती है, उसका समग्र प्रभाव जड़ पदार्थ पर और उसकी आत्मा पर पड़ता है।"[3]

छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' में गाँधी के सत्य, अहिंसा, सेवा, सूत कातने आदि का वर्णन मिलता है। जो गाँधी–दर्शन का ही प्रभाव है कि 'कामायनी' काव्य में श्रद्धा मनु द्वारा की गई पशु बलि का विरोध कर गाँधी के अहिंसात्मक विचार धारा का प्रभाव उनकी निम्न पंक्तियों में दृष्टिगोचर होता है–

"अपनी रक्षा करने में जो
चल जाए तुम्हारा कहीं अस्त्र,
वह तो कुछ समझ सकी हूँ मैं।।
हिंसक से रक्षा करे शस्त्र।
पर जो निरीह जीकर भी कुछ
उपकारी होने में समर्थ,
वे क्यों ना जिये, उपयोगी बन।।
इसका मैं समझ सकी न अर्थ।"[4]

**गाँधी जी के गाँधीवादी विचारधारा –**

अहिंसा और प्रेम का प्रभाव उपन्यासकार अमृतलाल नागर के उपन्यासों में भी मिलता है। क्योंकि इनके पिता गाँधीवादी विचारधारा के समर्थक थे। इसलिए गाँधी जी के अहिंसा और प्रेम के सिद्धान्त का संदेश इनके उपन्यास में इन शब्दों में कहा गया है–"लोक का हित सर्वदा सर्वोपरि होना चाहिए, किन्तु यह लोक हित मिथ्याचारों और कुमार्गों द्वारा अपनाए जाने पर सर्वथा त्याज्य है। सत्य के व्यावहारिक धरातल पर ही उसका पोषण होना चाहिए, क्योंकि अन्तिम विजय सदा, सत्य की होती है, और सत्य केवल वही स्वार्थ है, जो एक का नहीं, वरन् लोक का होता है।"[5]

महात्मा गाँधी वर्ण–व्यवस्था के पक्षपाती थे। वे चारों वर्णों के अस्तित्व को आवश्यक तो मानते थे, लेकिन छुआछूत और ऊँच–नीच के भेदभाव को सामाजिक दृष्टि से हानिकारक समझ कर उसे दूर करने पर बल दिया। गाँधी के अनुसार कोई भी व्यक्ति जन्म से अछूत नहीं होता। हममें से हर कोई 'ईश्वर का अंश है। इसलिए वे अछूतों को 'देवता' कहते थे। गाँधी जी अस्पृश्यता निवारण से तात्पर्य समस्त मानव जाति से प्रेम। उन्होंने इसे

अहिंसा का एक अंग माना है। गाँधी से प्रभावित जयशंकर प्रसाद ने अपने 'कामायनी' महाकाव्य में ऊँच–नीच, छुआछूत का विरोध कर समस्त मानव के प्रति सहानुभूति इन शब्दों में करते हैं–

"औरों को हँसते देखो मनु हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो सबको सुखी बनाओ।।"[6]

हिन्दी और कुमाऊँनी भाषा के सशक्त रचनाकार श्री काशीराम भट्ट 'मधुर' ने अपने काव्य के माध्यम से नवयुवकों, बच्चों के मन में राष्ट्रीय भावना जगाने, जातिगत भेदभावों का विरोध करते हुए समस्त मानव को गाँधी जी के उदारता सहिष्णुता और समानता का संदेश देते हैं –

"घृणा द्वेष की खाई पाट।
अमृत प्रेम का बरसाये।।
सौहार्दपूर्ण हो धरा सारी।
सारा गुलशन महकाए।।"[7]

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद एक ऐसे साहित्यकार थे, जिन्होंने जीवन की विषम परिस्थितियों को स्वयं अनुभव किया। उसका यथार्थ चित्रण अपने साहित्य में किया। प्रेमचंद गाँधीवाद से प्रभावित होकर समाजवाद से जुड़े और उन्होंने यथार्थवादी कहानी व उपन्यास का सृजन किया।

इन्होंने समाज के शोषित वर्ग पर हो रहे अत्याचार, देश की निर्धनता को दूर करने का प्रयास भी किया। अपने 'गोदान' उपन्यास में वे जातिभेद को मानवविकास के लिए बाधक बताते हुए सर्वधर्म समभाव का संदेश 'गोबर' नामक पात्र के इस कथन के माध्यम से देते हैं–

"तुम्हारी समझ में हम और वह बराबर हैं
भगवान ने तो सबको बराबर ही बनाया है।"[8]

नैतिकता को गाँधी जी सर्वोपरि मानते थे। करुणा, दया, ममता, न्याय जैसे मानवीय तत्वों के द्वारा ही मानव जीवन के सही उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है। उपन्यासकार अमृतलाल नागर के उपन्यास में भी हमें गाँधी विचारों का प्रभाव मिलता है। ये गाँधीवादी चिंतक थे। महात्मा गाँधी के समान ही वह समाज के सभी मानवों में नैतिक गुणों के विकास के साथ उन्हें एक श्रेष्ठ मानव बनाने को अहम मानते हैं। गांधी की भांति वे जातिवाद पर विश्वास नहीं करते "तुलसी जीवनी' पर आधारित उनके 'मानस के हंस' उपन्यास में वे प्रेम का संदेश इन शब्दों में देते हैं। "जाति–पाँति, वर्ण आदि सब कुछ अपनी जगह पर ठीक है, पर एक जगह मनुष्य केवल मनुष्य होता है।"[9]

गाँधी जी के "सर्वोदय का तात्पर्य सबका उदय, सबका कल्याण है। किसी व्यक्ति विशेष का नहीं सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण है। इस भावना को वैदिक समय से ही इस प्रकार व्यक्त किया गया है–"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाय सर्वे भद्राणी पश्यन्तु, मां कश्चित् दुःख भागभवेत्।" महात्मा गाँधी ने सम्पूर्ण संसार में शांति, अहिसां और प्रेम की भावना को जाग्रत किया। इसलिए वे शोषण, वर्गविहीन, अहिंसामूलक "ग्राम स्वराज्य" की स्थापना करना चाहते थे। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद भी गाँधीवादी विचारों से प्रभावित हुए। उन्होंने अपने गोदान उपन्यास में दलित, शोषित और समाज के निम्न वर्ग का यथार्थ चित्रण किया है। उपन्यासकार जातिगत भेदभाव का विरोध कर समस्त मानव जाति को गाँधी जी के सामाजिक समरसता के इस स्वप्न को

साकार इन शब्दों में करते हैं– "हमसे आज से कोई ब्राह्मण नहीं है, कोई शूद्र नहीं है, कोई हिन्दू नहीं है, कोई ऊँच नहीं है कोई नीच नहीं है।"[10]

गाँधी जी के सत्याग्रह, सर्वोदय आन्दोलन का प्रभाव गोदान उपन्यास में, "मैं उस आदमी को आदमी नहीं समझता, जो देश और समाज की भलाई के लिए उद्योग न करे और बलिदान न करे।"[11]

भीष्म साहनी के तमस उपन्यास में भी गाँधी दर्शन की अभिव्यक्ति हुई है। इस उपन्यास में जनरैल कांग्रेस के प्रचारक रूप में कार्य करता है, और उस समय अपनी देशभक्ति का परिचय देता है जब मुसलमान मस्जिद द्वार पर सुअर फेंक जाते हैं। इस उपन्यास में देवीदत्त जो गाँधीवादी विचारधारा के समर्थक हैं वे कहते हैं–" यहाँ हिन्दू और मुसलमान का सवाल न लाएं। यह अमन कमेटी है। .... मैं दरख्वास्त करूँगा कि सभी सियासी पार्टियों के रूकन इस कमेटी में शामिल हो।"[12]

अन्यत्र स्थल पर भीष्म साहनी तमस उपन्यास में सामाजिक सौहार्द का वर्णन करते हुए कहते हैं– "शहर में अमन कायम करना जरूरी है और इसके लिए जरूरी है कि सभी पार्टियों के लीडरों को इकट्ठा किया जाए।"[13]

अमृतलाल नागर मार्क्सवादी के साथ–साथ गाँधीवादी विचारधारा पर विश्वास करते थे। अपने 'बूँद और समुद्र' उपन्यास में सर्वोदयी विचारधारा के अनुकूल व्यक्ति और समाज के पारस्परिक सम्बन्धों के सन्दर्भ में इनका कथन दृष्टव्य है–"सुख–दुःख में व्यक्ति का व्यक्ति से अटूट सम्बन्ध बना रहे जैसे बूँद से बूँद जुड़ी रहती है, लहरों से लहरों से समुद्र बनता है इस तरह बूँद और समुद्र समाया है।"[14]

महात्मा गाँधी स्त्रियों को सम्मान की दृष्टि से देखते थे। वे नारी को अबला कहना नारी की निन्दा मानते है। नारी त्याग, विनम्रता, श्रद्धा, आस्था और ज्ञान की प्रतिमूर्ति है। समाज में उन्हें उचित स्थान एवं सम्मान मिलना चाहिए। नारी के सन्दर्भ में उनका कथन है– "मैं जीवन पर्यन्त लड़कियों को अविवाहित रखना पसन्द करूँगा ––– जो उसे पत्नी बनाने के बदले धन की माँग करें।"[15]

गाँधी जी का मानना था कि देश का भविष्य हमारी मातृभक्ति में है – "अगर अहिंसा हमारे जीवन का ध्यान मंत्र है तो कहना होगा कि देश का भविष्य स्त्रियों के हाथ में है।"[16]

नारी को सशक्त बनाने हेतु भारत में नारी जागृति आन्दोलन चलाए, जिसका उद्देश्य नारी स्वतंत्रता, नारी सम्मान था। इस आन्दोलन का प्रभाव सुमित्रानंदन पंत पर भी पड़ा। वे नारी को घर की चारदीवारी के बाहर तथा पर्दे की ओट से बाहर आने के लिए कहते हैं, और नारी मुक्ति का आह्वान इन शब्दों में करते हैं–

"मुक्त करो नारी को, मानव!
चिरबंदिनी नारी को,
युग–युग की बर्बर कारा से
जननि, सखि, प्यारी को।"[17]

जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' में नारी को साक्षात् श्रद्धा कहा है–

"नारी! तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास–रजत नग पग तल में
पीयूष–स्त्रोत सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में।"[18]

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'साकेत' महाकाव्य में भी उपेक्षित नारी 'उर्मिला' की करूण कथा के साथ–साथ गाँधीवादी विचारधारा के मूल तत्वों का भी वर्णन मिलता है। उर्मिला के माध्यम से कवि भारतीय नारी के आदर्श और उसकी संस्कृति, जो पति के संतोष में ही अपना सुख देखती है, को चित्रित करते हैं–

"हा स्वामी कितना कहना था, कह न सकी कर्मों का दोष,
पर जिसमें संतोष तुम्हें हो, मुझे उसी में है संतोष।"[19]

निराला ने अपनी 'राम की शक्ति पूजा' कृति में नारी को नर से ऊँचा, श्रेष्ठ माना है। 'राम की शक्ति पूजा' में नारी द्वारा प्रदत्त महाशक्ति ही राम को विजय की प्राप्ति कराती है–

"बोले रघुमणि मित्रवर विजय होगी न समर
यह नहीं रहा नर–वानर का राक्षस से रण,
उतरी पा महाशक्ति रावण से आमत्रंण।।"[20]

रामधारी सिंह दिनकर ने नारी को माता का रूप प्रदान किया। नारी वह सेतु है जो सम्पूर्ण संसार के लोगों का पालन–पोषण कर उनका कल्याण करती है–

"नारी ही वह महासेतु, जिस पर अदृश्य से चलकर,
नये मनुज, नव प्राण दृश्य जग में आते रहते है।
नारी ही वह कोष्ठ देव, दानव, मनुष्य से छिपकर,
महाशून्य चुपचाप जहाँ आकार ग्रहण करता है।"[21]

देश की आर्थिक स्थिति के बारे में गाँधी जी हमेशा चिंतित रहते थे। चरखे के रूप में गाँधी जी ने भातरवासियों को ऐसा अमोघशस्त्र प्रदान किया जिसकी शक्ति भगवान श्री कृष्ण के सुदर्शन चक्र से कम नहीं थीं। गाँधी जी का चरखा भारत को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने, समाज–व्यवस्था, भारत की राजनैतिक व्यवस्था और किसानों को स्वावलम्बी बनाने के उद्देश्य से इसका प्रचार–प्रसार किया। जो गरीबों का उद्धार करने वाला है। इसकी अभिव्यक्ति पंत की कविता में–

"उर के चरखे में कात सूक्ष्म
युग–युग का विषय जनित विषाद,
गुंजित कर दिया गगन जग का,
भर तुमने आत्मा का निनाद।"[22]

निबन्धकार डॉ० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल अपने 'कबीर और गाँधी' नामक निबन्ध में कबीर और गाँधी के कथनी और करनी के साम्य को बताते हुए गाँधी जी के चरखे को परिश्रम का प्रतीक मानते है। "परिश्रम का उनके मत में आध्यात्मिक महत्व है। नित्य नियमित रूप से चरखा काता करते है और प्रत्येक मनुष्य को काम करता हुआ देखना चाहते हैं इसलिए वे कांग्रेस का चंदा चवन्नी के बदले कुछ हाथ का काता सूत रखना चाहते है। उनका तो यहाँ तक यह कहना है कि दरिद्र भारत में परिश्रम ही परमात्मा है। भूखी हालत में परिश्रम का दूसरा रूप स्वीकार ही नहीं किया जा सकता। इसका सक्रिय स्वरूप उनके ग्रामोद्योग सम्बन्धी नवीन आंदोलनों में देखने को मिलता है।"[23]

कुमाऊनी भाषा में भी राष्ट्रवादी साहित्य का सृजन किया है। स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री गुणवन्त जो

कुमाऊँनी भाषा के कवि थे, उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से गाँधी जी के संदेश स्वराज्य की स्थापना चरखे की उपयोगिता, खादी प्रचार, त्याग, बलिदान की भावना को निम्न पंक्तियों में अभिव्यक्त किया है–

"गाँधी जी ले करी देछ देश सुधार।
घर– घर चरखा को सिकायो कार।
भारत का सब जाणी सुणां पुकार
अब जन होया भाई हिम्मत हार।
विदेशी कपड़ा को वण दिया छार।
घर–घर खादी को करा परचार।
ऊँच–नीच को अब न करा विचार
भारत की नाव तब है जाली पार।" [24]

महात्मा गाँधी चरखे एवं खादी के प्रचार को अत्यधिक महत्व देते थे। वे खादी के 'मुक्तिदाता' और चरखे को स्वराज्य का सबसे बड़ा हथियार कहा करते थे। खादी के सम्बन्ध में उनका कथन है–"स्वराज्य के समान खादी भी राष्ट्रीय जीवन के लिए उतनी ही जरूरी है जितना कि सांस लेना। जिस तरह हम स्वराज्य को नहीं छोड़ सकते, इसी तरह हम खादी को भी नहीं छोड़ सकते। खादी छोड़ देने के माने होंगे भारत की जनता को बेच देना, भारत की आत्मा को बेच देना।"[25]

एक अन्य कविता में स्वतत्रंता प्राप्ति हेतु स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने तथा सभी खादी वस्त्र खरीदे तभी भारत को आज़ादी मिल पाएगी गाँधी जी के इस स्वप्न की साकार अभिव्यक्ति देखिए –

"भारत में बोइगो आजादी को बीज।
के झन खरीदा भाई बिदेशी चीज।
सब जणी खरीदिया देश की खादी।
तब एलि भारत मज आजादी।।
घर–घर चरखा को करिया काज।
गोविन्द शर्मा पोछ है जालो स्वराज।"[26]

महात्मा गाँधी ने प्रत्येक भारतीय को विदेशी वस्तुओं को त्यागने और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने की सलाह दी। आज के वैज्ञानिक युग में यंत्रों, आविष्कारों के अधिक उपयोग को नकारने का संदेश देते हुए जो समाज में वर्गभेद उत्पन्न करता है, जो फिर कभी जुड़ने वाली नहीं है–

"वह विज्ञानमयी अभिलाषा, पंख लगाकर उड़ने की
जीवन की असीम आशाऐं कभी न नीचे मुड़ने की,
अधिकारों की सृष्टि और उनकी वह मोहमयी माया
वर्गों की खाई बन फैली कभी नहीं जो जुड़ने की।"[27]

महात्मा गाँधी ने गीता के कर्म–सिद्धान्त को अपने जीवन में अपनाया। राष्ट्रकवि दिनकर भीष्म पितामह के माध्यम से कर्मवाद का संदेश इन शब्दों में देते हैं–

"कर्मभूमि है निखिल महीतल

जब तक नर की काया
तब तक है जीवन के अणु–अणु
में कर्तव्य समाया।"[28]

मृतकों के लिए ताजमहल बनाएजा रहे हैं जबकि जीवित व्यक्ति फुटपाथ पर सो रहे हैं, इसका यथार्थ चित्रण पंत की 'ताज' कविता के माध्यम से बताया है कि हम जीवित व्यक्तियों के प्रति अपना कर्तव्य नहीं निभा पा रहे है, तो मृतकों के लिए कुछ भी करना व्यर्थ है–

हाय! मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन,
जब विषण्ण, निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन!
भूल गए हम जीवन का संदेश अनश्वर
मृतकों के है मृतक, जीवितों का ईश्वर।"[29]

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा दर्शन से तात्पर्य बच्चे के शरीर, मन, आत्मा में जो कुछ सर्वोत्तम हैं उसे बाहर निकालकर बालक का सर्वांगीण विकास करना है। वे शिक्षा का उद्देश्य बालक के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक और भावात्मक विकास के साथ उन्हें व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुशल बनाना है। शिक्षा बेरोजगारी के विरूद्ध एक प्रकार का बीमा होना चाहिए। महात्मा गाँधी शिक्षा में बुनियादी परिवर्तन करना चाहते थे। उनकी बुनियादी शिक्षा का तात्पर्य ऐसा समाज का निर्माण करना है। जो अहिंसक हो, जिसमें समानता, स्वतंत्रता के साथ मातृभाव का आदर्श समाविष्ट हो। स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में उनका कहना था कि स्त्रियों को भी पुरुषों के समान शिक्षा की मूलभूत सुविधाएं मिलनी चाहिए।

साहित्य में भी गाँधी के शिक्षा–दर्शन का प्रभाव मिलता है। मैथिलीशरण गुप्त का मानना है कि वह शिक्षा व्यर्थ है जिसमें अपने देश के इतिहास को छोड़कर विदेशी इतिहास पढ़ाया जाता हो, जो देश की प्रगति में बाधक हो–

"है व्यर्थ वह शिक्षा कि जिससे देश की उन्नति न हो,
जापान के विद्यार्थियों की सूक्ति है कैसी अहो?
साहब! हमें यूरोपियन हिस्ट्री न अब दिखलाए,
बेलून की रचना हमें करके कृपया सिखलाइए।"[30]

मैथिलीशरण गुप्त ने भी महात्मा गाँधी की तरह स्त्री–शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया है लेकिन अगर हम स्त्रियों के सुशिक्षित नहीं होने देंगे तब हमारी शिक्षा कुछ काम नहीं आयेगी–

"विद्या हमारी भी न तब तक काम में कुछ आयेगी,
अर्धांगियों को भी सुशिक्षा दी न जब तक जायेगी।
स्वांग के बदले हुई यदि ब्याधि पक्षाघात की,
तो भी न क्या दुर्बल तथा व्याकुल रहेगा बात की।"[31]

किसी देश की उन्नति उसकी भाषा होती है। जिसके माध्यम से वह अपने विचारों को दूसरों तक और दूसरे के विचारों को स्वयं ग्रहण करते हैं। किसी देश के लिए उसकी राष्ट्रभाषा उसके प्राण तुल्य होती है। महात्मा गाँधी ने भी हिन्दी को ही अपनी राष्ट्रभाषा माना है। गाँधी के शब्दों में–"अंग्रेजी भाषा उसके अपने स्थान

पर रखना मुझे प्रिय है, किन्तु यदि वह स्थान हड़प लेती है जो उसका नहीं है तो मैं उसका कट्टर विरोधी हूँ। मैं उसे दूसरी वैकल्पिक भाषा का स्थान दे सकता हूँ वह भी स्कूल की पढ़ाई में नहीं बल्कि विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में।"[32]

मैथिलीशरण गुप्त के भारतभारती में भी गाँधी जी की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही देशवासियों में एकता स्थापित कर सकती है–

"है राष्ट्रभाषा भी अभी तक देश में कोई नहीं,
हम निज विचार जना सकें जिससे परस्पर सब कहीं।
इस योग्य हिन्दी है तदपि अब तक न निज पद पा सकी,
भाषा बिना भावुकता अब तक न हममें आ सकी।"[33]

अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढ़ाना है तो चाहे कोई माने या ना माने राष्ट्रभाषा हिन्दी ही बन सकती है, क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है, वह किसी और भाषा को नहीं मिल सकता। हिन्दी भाषा में वे गुण हैं जो अन्य भाषाओं में नहीं इसलिए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र निज भाषा के महत्व के सन्दर्भ में कहते हैं–

"निज भाषा उन्नति अहैए सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान कै मिटै न हिय को शूल।"[34]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महात्मा गाँधी समूचे इतिहास के ऐसे महापुरुष थे, जिन्होंने सत्य, अहिंसा सत्याग्रह और नैतिक मूल्यों के आधार पर ही सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान किया। हिन्दी कवियों ने भी महात्मा गाँधी के विचार, आदर्श और सिद्धान्तों से प्रेरणा लेकर अलग–अलग विधाओं में काव्य की रचना की। उनमें प्रमुख हैं– सुमित्रानन्दन पंत, निराला, जय शंकर प्रसाद, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त तथा उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने अपने उपन्यास के माध्यम से सर्वधर्म समभाव का संदेश दिया है। गाँधी जी के सत्य, अहिंसा, मानवतावाद, स्त्री सम्मान, सर्वोदयी विचारधारा, शोषण–विहीन अहिंसामूलक ग्रामस्वराज की स्थापना करना। साम्प्रदायिक सद्भावना जैसे रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा जिसमें समस्त मानव का कल्याण हो और गाँधी के कर्म– सिद्धान्त जैसे विषय को कवियों ने अपनी रचना के माध्यम से कर्मवाद का संदेश भी दिया। अन्त में कविवर सुमित्रानन्दन पंत के शब्दों में–

"आत्मदान से लोक सत्य को दे नवजीवन
नव संस्कृति की शिला रख नए भू पर चेतन!
आओ, उसकी अक्षय स्मृति को नींव बनाएँ
उस पर संस्कृति का लोकोत्तर भवन उठाएँ।
स्वर्ण शुभ्र धर सत्य कलश सर्वोच्च शिखर पर
विश्व प्रेम में खोल अहिंसा के गवाक्ष वर!।"

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-**


1. मैं भारत हूँ– बापू, काशीराम भट्ट मधुर, पृष्ठ 05
2. युगवाणी, समाजवाद गाँधीवाद, सुमित्रानन्दन पंत, पृष्ठ 47

3. हिन्दी साहित्य कोश भाग–1, धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ 257
4. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, ईर्ष्या सर्ग, पृष्ठ 51
5. एकदा नैमिषारण्ये, अमृतलाल नागर, पृष्ठ 155
6. यू०जी०सी० नेट० जे०आर०एफ०., करनैल सिंह, पृष्ठ 347
7. मैं भारत हूँ– बापू, काशीराम भट्ट मधुर, पृष्ठ 15
8. गोदान, प्रेमचंद, पृष्ठ 15
9. मानस का हंस, अमृलाल नागर, पृष्ठ–325
10. गोदान, प्रेमचंद, पृष्ठ– 59
11. गोदान, प्रेमचंद, पृष्ठ–79
12. तमस, भीष्म साहनी, पृष्ठ–279
13. तमस, भीष्म साहनी, पृष्ठ– 282
14. बूँद और समुद्र, अमृतलाल नागर, पृष्ठ– 524
15. यंग इण्डिया, 14 फरवरी 1929
16. गाँधी व्यक्ति और विचार, विश्व प्रकाश गुप्त, मोहनी गुप्त, पृष्ठ– 187
17. युगवाणी, सुमित्रानन्दन पंत, पृष्ठ– 65
18. कामायनी–लज्जा सर्ग, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–38
19. साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, पृष्ठ–142
20. राग–विराग, निराला, पृष्ठ–97
21. उर्वशी, रामधारी सिंह दिनकर, पृष्ठ–117
22. युगान्त, सुमित्रानन्दन पंत।
23. उत्तराखण्ड का हिन्दी साहित्य, कबीर और गाँधी, प्रो० जगत सिंह बिष्ट, पृष्ठ– 84–85
24. सं0– जी०एम० जौसवाल, दया पंत., बी०एल० साह दिव्यायू जोशी Hind Swaraj : 100 Years of the GandhianVision, पृष्ठ– 72
25. महात्मा गाँधी व्यक्ति और विचार, विश्वप्रकाश गुप्त, मोहनी गुप्त, पृष्ठ–172
26. सं0– जी०एम० जौसवाल, दया पंत., बी०एल० साह दिव्यायू जोशी Hind Swaraj : 100 Years of the GandhianVision, पृष्ठ– 72
27. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–75
28. कुरूक्षेत्र रामधारी सिंह दिनकर, पृष्ठ–90
29. रश्मिबन्ध, सुमित्रानन्दन पंत, पृष्ठ–70
30. भारतभारती, मैथिलीशरण गुप्त, पृष्ठ–129
31. भारतभारती, मैथिलीशरण गुप्त, पृष्ठ–185
32. महात्मा गाँधी एवं ग्रामस्वराज्य, एस०के० आर्य, डॉ० अरुण कुमार चतुर्वेदी, पृष्ठ–25
33. भारतभारती, मैथिलीशरण गुप्त, पृष्ठ–185
34. हिन्दी भाषा, हरदेव बाहरी, पृष्ठ–158

मोबाइल नम्बर. 9410307833
dr.chardrakhatri@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 97-100

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गांधी चिंतन व प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य

**डॉ. मीनाक्षी राणा**

असि0 प्रो0–हिंदी, ओंकारानंद सरस्वती राजकीय महाविद्यालय देव प्रयाग, टि0 ग0, उत्तराखण्ड।

मोहनदास करमचंद गांधी' एक ऐसा व्यक्तित्व, जो मानवीय दुर्बलताओं से अछूता न था, लेकिन वह सत्य के आग्रह, अहिंसा और सेवा के गुणों से स्वयं को शोधित कर स्वाधीनता व स्वराज्य के आंदोलन का अग्रदूत बना। गांधी का पूरा जीवन देश व देशवासियों की स्वतंत्रता और उन्नति को समर्पित रहा। मानव समाज में व्याप्त कुरीतियों, छुआछूत, भेदभाव, अशिक्षा, दरिद्रता, शोषण व अन्याय को उन्होंने स्वयं झेला और समाज में गहरे तक व्याप्त पाया। इसके उन्मूलन हेतु अनेक उपाय गांधी जी ने किये। उन्होंने लोगों में धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, समाजिक, आर्थिक जागरण तो किया ही साथ ही नैतिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा का महत्व भी समझाया।

गाँधी जी ने ब्रिटिश शासन के दमन व अत्याचार की नीतियों, साहूकारों–पूँजीपतियों के शोषण, स्त्रियों, मजदूरों व कृषकों के दयनीय होते हालातों, लगान व बेगार लगाकर उनके जीवन को और भी हीन बनाने वाली सरकार के विरूद्ध असहयोग करने, सविनय अवज्ञा, सत्याग्रह जैसे आंदोलन किये। गांधी जी ने अहिंसापूर्वक स्वाधीनता का संग्राम लड़ा और देश को स्वतंत्र कराने में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया। इस प्रकार अपने जीवनकाल में गांधी जी ने बैरिस्टर से समाज–सेवक, देश–सेवक तथा 'राष्ट्रपिता' होने तक की यात्रा पूर्ण की। गांधी जी के अहिंसापूर्ण आचरण से प्रभावित होकर 'संयुक्त राष्ट्र संघ' ने सन् 2006 में गांधी की जन्मतिथि 2 अक्टूबर को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की।

उस समय जब समग्र राष्ट्र गांधी जी की विचारधारा से प्रेरित था तब देश का साहित्य इससे अछूता कैसे रहता। सन् 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर प्रेमचंद ने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया था। इसके उपरान्त वे साहित्य सृजन में रम गये। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के उपन्यासों पर भी गांधी चिंतन का बहुत गहरा तथा व्यापक प्रभाव दृष्टिगत होता है। जीवन के यथार्थ को आदर्श की ओर ले जाकर प्रस्तुत करने वाले 'युग प्रवर्तक साहित्यकार' प्रेमचंद का समय देश के पुनरूत्थान का काल था। देश की राजनीति में यह समय 'गाँधी युग' का था। भारत की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक दासता को दूर करने की लड़ाई गांधी जी, जो अपने आंदोलनों से कर रहे थे। वही कार्य साहित्य में प्रेमचंद अपनी लेखनी द्वारा कर रहे थे।

प्रेमचंद के उपन्यासों में हिंदू–मुस्लिम एकता, अनमेल विवाह, नारी उद्धार, ग्राम सुधार, छुआछूत, घूसखोरी, मद्यनिषेध, राग–द्वेष, राष्ट्रप्रेम, मानव सेवा, त्याग, हृदय परिवर्तन, कृषकों की दशा, शोषण व अत्याचार का

प्रतिकार जैसे गांधी के चिंतन उनके उपन्यासों के विभिन्न पात्रों से एकाकार हो उनके शब्द बनकर प्रकट होते हैं। "प्रेमचंद के उपन्यासों में विदेशी शासन के विरूद्ध स्वाधीनता की लड़ाई का खुला चित्रण नहीं मिलता,.... पर उनके उपन्यासों में इनका चित्रण अप्रत्यक्ष रूप में ही हो पाया है।"[1]

प्रेमचंद का उपन्यास 'कर्मभूमि' गांधी जी के सविनय अवज्ञा व असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि पर बना है। कर्मभूमि के समाज में गांधी युग की सभी प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती है। कर्मभूमि में डाक्टर साहब "शिक्षा के व्यापार" का पुरजोर विरोध करते हुए कहते हैं, "मैं चाहता हूँ, ऊँची से ऊँची तालीम सबके लिए मुआफ होय ताकि गरीब से गरीब आदमी भी ऊँची से ऊँची लियाकत हासिल कर सके और ऊँचे से ऊँचा ओहदा पा सके।"[2]

अमरकांत भी आधुनिक शिक्षा का विरोध करता है। वह विद्यालय में पढ़ना छोड़कर जीवन के अनुभवों से ज्ञान प्राप्त करने को महत्व देता है। गांधी जी शिक्षा के संबंध में स्वीकारते हैं, "मैंने हृदय की शिक्षा को अर्थात् चरित्र के विकास को हमेशा पहला स्थान दिया है।"[3] शिक्षा के अतिरिक्त स्वच्छता की शिक्षा के लिए गाँवों, नगरों में घर–घर जाकर जागरूकता जगायी, स्वयं भी सफाई करने का कार्य उन्होंने किया। स्वदेशी वस्त्र बनाने के लिए चरखा भी चलाया। उस समय गांधी जी के चरखे और खादी की चर्चा पूरे देश में थी। कर्मभूमि का नायक अमरकांत भी सूत कातता है, खादी बेचता है, इसके लिए अमर पर कटाक्ष किया जाता है। प्रत्युत्तर में "अमरकांत ने गर्व से कहा– चरखा रूपये के लिए नहीं चलाया जाता है, वह आत्मशुद्धि का एक साधन है।"[4]

तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक व ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों के विरूद्ध अमरकांत "क्रांन्ति में देश का उद्धार समझता था। ऐसी क्रान्ति में जो सर्वव्यापक हो, जो जीवन के मिथ्या आदर्शों का, परिपाटियों का अंत कर देय, जो एक नये युग का प्रवर्तक हो, एक नई सृष्टि खड़ी कर दे।"[5]

'रंगभूमि उपन्यास का नायक 'सूरदास' गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है। गांधी जी के समान वह अकेले ही सत्य, धर्म और न्याय के लिए अहिंसात्मक असहयोग का अनुसरण कर विरोधियों को परास्त होने पर मजबूर कर देता है। वह अहिंसा, त्याग, दया और बलिदान के गुणों से युक्त है। सूरदास घृणा के बदले प्रेम, द्वेष के बदले सहानुभूति से दूसरे का हृदय परिवर्तन करने में आस्था रखता है। हृदय परिवर्तन का यह आदर्श गांधीवादी आदर्श ही है। हिंसा को रोकने के प्रयास में सूरदास अपने प्राणों को दांव पर लगा देता है। इसी प्रकार विनय, सोफिया, इंदु, नैना सभी सत्याग्रही हैं। वे स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों के बलिदान से भी नहीं डरते। गांधी जी का मानना है– "देश के लिए मर जाना एक वीरतापूर्ण कार्य है। अत्याचारी का खून बहाने के स्थान पर अपना खून बहाने वाला सत्याग्रही एक बहादुर ही नहीं बल्कि देवता है।"[6]

सन् 1930 ई0 को गांधी जी 'यंग इंडिया' में स्त्रियों से घर की देहरी लाँघ विदेशी वस्तुओं, सरकारी संस्थानों और शराब घरों पर धरना देने का आह्वान करते हैं। प्रेमचंद का युग नारी जागृति का युग रहा है। नारी जागरण और गांधी जी के आह्वान का प्रभाव प्रेमचंद के उपन्यासों की नारी पात्रों में भी स्पष्ट नजर आता है। स्त्रियाँ आंदोलनों में भाग ले रही थीं। कर्मभूमि की सुखदा, मुन्नी, रंगभूमि की सोफिया, इंदु आंदोलन में अपना आत्मोत्सर्ग करने को भी तत्पर थीं। सोफिया राष्ट्रीय संदेश सुनने का अवसर पाकर स्वयं को भारत की सेवा के लिए समर्पित करती है–

"शांति–समर में कभी भूलकर धैर्य नहीं खोना होगा,
बज्र–प्रहार भले सिर पर होए नहीं किन्तु रोना होगा।

अरि से बदला लेने का मन बीज नहीं बोना होगा,
मातृभूमि के लिए जगत में जीना और मरना होगा।"[7]

इसके अतिरिक्त 'गोदान' की धनिया, सिलिया, मालती,'गबन' की जालपा, जौहरा जैसी स्त्री पात्रों के माध्यम से नारी जागरण व स्त्री–पुरूष समानता का भाव प्रेमचन्द ने भरा है। ये सभी भारतीय नारी के उदात्त स्वरूप को प्रकट करते हैं। 'निर्मला' में मध्यम वर्गीय समाज की समस्याओं, दहेज प्रथा व अनमेल विवाह के दुष्प्रभावों, 'प्रतिज्ञा' में विधवाओं की समस्या को, पूर्णा की कथा से प्रकट किया गया है। 'गबन' उपन्यास में जालपा व जौहरा के माध्यम से नारी की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का चित्रण हुआ है। जालपा देश प्रेम, मानवता और महानता के धरातल पर अपने चरित्र का विकास करती है। 'कायाकल्प' में पतनोन्मुखी सामंती समाज का यथार्थपूर्ण चित्रण, बहु–विवाह और नारी समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है जो समाजोत्थान के चिन्तन को दर्शाते हैं। 'सेवासदन' की स्वाभिमानी 'सुमन' अंत में अनाथ स्त्रियों की सेवा करते हुए जीवन यापन की आदर्शपूर्ण स्थिति को प्राप्त होती है।

सुधारवादी मनोवृत्ति जिसमें मनोविकार का परिष्कार, संयम का संकल्प, हृदय परिवर्तन, त्याग, सेवा, दलितोद्धार, अस्पृश्यता, भेदभाव उन्मूलन आदि में गांधी चिन्तन की छाप समेटे हुए हैं। अमरकान्त का दलितों की बस्ती में जीवन यापन करना, उन्हें मरे हुए पशुओं का मांस खाने तथा मद्यपान करने जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर करना साथ ही स्वच्छता के लिए प्रेरित करना जैसेसामाजिक सुधार के कार्य आदर्श प्रस्तुत करते हैं। छुआछूत जैसी सामाजिक कुप्रथा पर कुठाराघात करते हुए जालपा दूसरे व्यक्ति का निवाला छीनने वाले पंडित से हरिजन को श्रेष्ठ बताती है, जो अपनी मेहनत का खाते हैं। सुखदा आदि पात्र अछूतों को मंदिर में प्रवेश करने व समानता प्रदान करने के लिए आंदोलन करते हैं। सूरदास, भैरों जैसे उदण्ड व्यक्ति का हृदय परिवर्तन करने में सफल रहता है। बजरंगी, नायकराम, जॉनसेवक तक आत्मग्लानि अनुभव करने को विवश हो जाते हैं। इसी प्रकार पति द्वारा 'गबन करके भागने के बाद जालपा का हृदय परिवर्तन होता है। वह समाज सेवाए त्याग, दया जैसे गुणों को धारण करती है। कलकत्ता की जौहरा को भी उसकी उदारता ने आत्मशुद्धि के पथ पर डाल दिया "जौहरा ने अपनी सेवा, आत्मत्याग और सरल स्वभाव से सभी को मुग्ध कर लिया था। उसकी सारी कामनाएँ, सारी वासनाएँ सेवा में लीन हो गयी।"[8] स्वदेशी का प्रचार करते हुए देवीदीन के दो बेटों का शहीद हो जाना तथा देवीदीन का विदेशी कपड़ों की बिक्री बंद करवा देने में स्वदेश प्रेम की पराकाष्ठा देखने को मिलती है।

'गोदान' में किसानों की त्रासदी में साहूकारों, पूँजीपतियों, महाजनों द्वारा शोषण, अशिक्षा, छुआछूत, सामाजिक कुप्रथाओं, स्त्रियों की दशा का यर्थाथ चित्रण है। कृषक वर्ग की दुर्दशा के चित्र पूरी कथा में व्याप्त हैं। समाज में व्याप्त रूढियों द्वारा शोषण होरी भी झेलता है और अपने समय में गांधी जी भी। "गाँव वालों ने होरी के जातिबाहर कर दिया कोई उसका हुक्का नहीं पीता, न उसके घर का पानी पीता है।"[9]

गांधी जी के विलायत जाने की खबर पाकर उनकी बिरादरी के पंचो ने समुद्र पार कर विलायत जाने के लिए उन पर सवा रूपया जुर्माना लगाया था। पूँजीपति व साहूकारों के शोषण का गोबर द्वारा विरोध करना, सूरदास का सत्याग्रह, विनय का आंदोलन ये सभी गांधी जी से प्रेरित रहे हैं। गांधी जी अफ्रीका में यात्रा के समय उनके साथ हुए रंगभेद व अन्याय का विरोध करने और अपमान को सहन न करने का प्रण करते हैं वे कहते हैं– "मैंने अपना कर्तव्य सोचा, या तो मुझे अपने हकों के लिए लड़ना चाहिए या वापिस जाना चाहिए, अन्यथा

जो अपमान होते हैं उन्हें सहन करूँ.... वह गहराई में पैठे हुए एक महारोग का लक्षण है। यह महारोग है राग–द्वेष। इस गम्भीर रोग को मिटाने की शक्ति अपने में हो तो उसका उपयोग मुझे करना चाहिए।"[10]

गांधी जी व प्रेमचंद दोनां स्वराज्य के लिए हिन्दू–मुस्लिम ऐक्य की उदात्त भावना और आपसी भाईचारे को आवश्यक मानते थे। उनके नागपुर महासभा के अधिवेशन में लोकतंत्र की रक्षा के लिए, "हिंदू– मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता और खादी के विषय में भी प्रस्ताव स्वीकृत हुए। खिलाफत के मसले के सिलसिले में असहयोग की घोषणा ही हिंदू–मुस्लिम ऐक्य के साधन के लिए महासभा का महान प्रयास था।"[11] गांधी जी के साथ हिंदू–मुस्लिम स्वयंसेवी आश्रम में थे जो सत्याग्रह के लिए साथ–साथ उपवास करते, सभी साथ में अपना भोजन खाते। कर्मभूमि का कट्टर हिन्दू समरकांत सलीम के घर में साथ बैठकर भोजन करता है। रंगभूमि की रानी जाह्नवी शोक–सभा की ओर गर्वयुक्त नेत्रों से देखकर बोली– "यह युवक, जिसने विनय पर अपने प्राण समर्पित कर दिये, विनय से बढ़कर है। क्या कहा? मुसलमान है! कर्तव्य के क्षेत्र में हिंदू और मुसलमान का भेद नहीं, दोनों एक ही नाव में बैठे हुए हैं, डूबेंगे तो दोनों डूबेंगे, बचेंगे तो दोनों बचेंगे।"[12] जनता को आपसी एकता व भाईचारे का पाठ पढ़ाने वाले प्रेमचन्द व गांधी दोनों ही साम्प्रदायिक भेदभाव के घोर विरोधी रहे हैं।

**निष्कर्ष :–**

गांधी जी के समान प्रेमचंद भी अहिंसा के समर्थक थे। जिस प्रकार गांधी जी ने जन–जन में आत्मबल और आत्मगौरव जगाया, उसी प्रकार प्रेमचंद ने भी अपने उपन्यासों की कथाभूमि में पात्रों के द्वारा आम–ओ–ख़ास में मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रकल्याण की भावना का संचार किया। उन्होंने मानवीय समस्याओं को उठाया और गांधी चिंतन के आधार पर उनका निराकरण सुझाया। अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने स्वदेशानुराग का प्रसार किया। प्रेमचन्द ने साहित्य में गांधी के चिंतन को विशाल फलक पर प्रस्तुत किया। उन्होंने जीवन के यथार्थ को ग्रहण कर उच्च आदर्शों की स्थापना की। गांधी जी के पथानुगामी प्रेमचंद उन्हीं के समान रामराज्य वाले आदर्श स्वराज्य की स्थापना के लिए जीवन भर प्रयत्नशील रहे।

**संदर्भ सूची :–**


1. राय गोपाल, गोदानः नया परिप्रेक्ष्य, अनुपम प्रकाशन पटना, प्रथम संस्करण 1982, पृ0 16–17
2. प्रेमचन्द, कर्मभूमि, हंस प्रकाशन इलाहाबाद, 1932, पृ0 –74
3. गाँधी; मोहनदास करमचंद, अनुवादक महावीर पोद्दार, सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, दसवीं बार; नया संस्करण–1951, पृ0–292
4. प्रेमचंद, कर्मभूमि, हंस प्रकाशन इलाहाबाद, पृ0 –11
5. उपरोक्त, पृ0 –98
6. सम्पूर्ण गांधी वाङमय, भाग–19, प्रकाशन विभाग नई दिल्ली, 1996 पृ0 –91–92
7. प्रेमचंद, रंगभूमि, सरस्वती प्रेस बनारस, पृ0 –36–37
8. प्रेमचंद, गबन, हंस प्रकाशन इलाहाबाद, 27वां संस्करण 1960, पृ0 –328–329
9. प्रेमचंद, गोदान, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, वर्तमान संस्करण–1961, पृ0 –127
10. गाँधी; मोहनदास करमचंद, अनुवादक महावीर पोद्दार, सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, दसवीं बार; नया संस्करण–1951, पृ0 –140–141
11. उपरोक्त, पृ0 – 620
12. प्रेमचंद, रंगभूमि, सरस्वती प्रेस बनारस, पृ0 –259



ईमेल–dr.meenakshirana44@gmail.com
मोबाईल नं0 8954030678

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 101-105

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गांधी दर्शन : एक समग्र मूल्यांकन

**प्रो. रेनू प्रकाश**

आचार्य समाजशास्त्र विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, उत्तराखंड।

सामाजिक विचारकों की यदि हम बात करें, तो भारतीय संस्कृति, परम्परायें एवं मूल्यों में महात्मा गाँधी जी के विचारों एवं दर्शन को नकारा नहीं जा सकता। भारतीय दर्शन एवं भारतीय सामाजिक व्यवस्था को संगठित रखने वाले विचारों में गाँधी जी के चिंतन का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि बात करें तो गाँधी जी के लेख एवं उनके विचारों की अभिव्यक्तियों की आज अव्यवस्थित होने वाले समाज में विशेष आवश्यकता है। महात्मा गांधी जी के विचारों एवं लेखनी के अनुरूप उन्हें एक सामाजिक विचारक माना जा सकता है। जिन्होंने तात्कालीन समाज तथा भविष्य दोनों को ध्यान में रखकर अपने विचारों के माध्यम से एक दिशा निर्धारण देने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। यह सत्य है कि गाँधी दर्शन समाज में नैतिकता, परोपकार, सेवा भाव एवं सम्पूर्ण मानव कल्याण जीवन पद्धति पर आधारित है। गाँधी जी सम्पूर्ण समाज में आर्थिक समानता के पक्षधर थे। आपका मानना था कि जब तक समाज में आर्थिक विषमता रहेगी तब तक समाज विकास की दिशा की ओर अग्रसर नहीं हो सकता। अतः सर्वप्रथम हमें समाज में फैली आर्थिक असमानता को दूर करना होगा। जिसके लिए गाँधी जी ने ट्रस्टीशिप सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। गाँधी दर्शन या विचारधारा को समझने के लिए आवश्यक है कि उनके चिंतन को क्रमबद्ध तरीके से समझा जाये। यह आलेख गाँधी चिन्तन का एक समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है जो समाज में व्याप्त किसी भी समस्या के समाधान को प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकता है।

**धर्म :-**

गाँधी जी ने धर्म की व्याख्या आत्मज्ञान के सन्दर्भ में की है। गाँधी जी का मानना था कि सब धर्म समान है और सभी धर्मों का एकमात्र लक्ष्य ''सत्य'' को प्राप्त करना होता है। गाँधी जी अनुसार कोई भी धर्म न तो सम्पूर्ण होता है और ना ही अन्तिम, यही कारण है कि धर्म परिवर्तन को गाँधी जी ने कभी भी उचित नहीं माना। समाज चूंकि अलग–अलग समूहों या समुदायों में बंटा होता है, अतः प्रत्येक की संस्कृतिक परिस्थितियां भिन्न–भिन्न होने के कारण धार्मिक क्रियाकलाप भी भिन्न–भिन्न हो सकते हैं, किन्तु अन्त में लक्ष्य सबका समाज होता है। गाँधी जी का मानना है, कि "एक ईसाई को एक हिन्दू बनाने का या एक हिन्दू को एक ईसाई बनाने का प्रयास क्यों करना चाहिए? यदि एक हिन्दू एक अच्छा और ईश्वर प्रिय व्यक्ति है तो एक ईसाई को उससे सन्तुष्ट क्यों नहीं हो जाना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति के आचार–विचार से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं है तो केवल एक चर्च मस्जिद या मन्दिर में विशेष रूप से उपासना करना एक खोखली बात है। व्यक्तिगत तथा सामाजिक विकास में यह बाधक

भी हो सकता है।''[1]

गाँधी जी के अनुसार ''समाज में से धर्म को निकाल फेंकने का प्रयत्न बाँझ के घर पुत्र पैदा करना जितना ही निष्फल है और अगर कहीं वह सफल हो जाए तो समाज का उसमें नाश है। धर्म के रूपान्तरण हो सकते हैं। उनमें रहे प्रत्यक्ष अंधविश्वास, सड़न और अपूर्णताएं दूर हो सकती हैं, हुई हैं और होती रहेंगी, मगर धर्म तो जब तक जगत है तब तक चलता ही रहेगा क्योंकि जगत का धर्म ही एक आधार है, धर्म की अन्तिम व्याख्या है ईश्वर का कानून।''[2]

**अहिंसा :–**

गाँधी जी का मानना था कि प्रजातांत्रिक समाज में सामाजिक व्यवस्था को सुसंगठित बनाये रखने में अहिंसा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है, हिंसक प्रवृत्ति वाले समाज का अस्तित्व बहुत लम्बे समय तक नहीं माना जा सकता। गाँधी जी के अनुसार ''सच्चा प्रजातंत्र या जनता के स्वराज्य की प्राप्ति में असत्य तथा हिंसात्मक साधनों के प्रयोग का अर्थ है– विरोधियों को कुचलना या उनका सम्पूर्ण नाश करना। इससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता नहीं रह जाएगी। व्यक्तिगत स्वतंत्रता की पूर्ण प्राप्ति तो केवल एक अमिश्रित अहिंसा के राज्यों में ही हो सकती है।

**सत्याग्रह :–**

सत्याग्रह के शाब्दिक अर्थ को यदि समझा जाये, तो सत्य के लिए आग्रह करना। इस सन्दर्भ में श्रीमननारायण ने लिखा है कि, "सत्याग्रह की बुनियाद थी साधन–शुद्धि''। इस सन्दर्भ में गाँधी जी का मानना था कि जब तक साधन शुद्ध नहीं होंगे तब तक हम वांछित साधन को प्राप्त कर ही नहीं सकते। स्वराज्य को पुनः प्राप्त करने के लिए गाँधी जी ने हिंसापूर्ण उपायों को कभी भी उचित नहीं ठहराया। गाँधी जी इस तथ्य को स्पष्ट रूप से स्वीकार करते थे कि हिंसापूर्ण उपायों से कभी भी ना तो हम अंग्रेजी सत्ता का सामना कर सकते हैं और ना ही स्वतंत्रता की प्राप्ति कर सकते हैं।

गाँधी जी के अनुसार ''प्रतिपक्षी का बुरा चाहना या हानि पहुंचाने के इरादे से उससे या उसके बारे में बुरा बोलना सत्याग्रह का उल्लंघन है। उसमें शोरगुल, प्रदर्शन या उतावलापन नहीं होता। सत्याग्रह एक सौम्य अस्त्र है। वह किसी को चोट नहीं पहुंचाता है।''[3]

श्रीमन्नानारायण ने भी उक्त कथन को समर्थन प्रदान करते हुए माना है कि ''हमें यह भी समझ लेना चाहिए कि ''सत्याग्रह'' और पश्चिम के देशों की ''पैसिव रैजिस्टेन्स'' क्रिया में एक मूलभूत अंतर है–दूसरी पद्धति कमजोरों का शस्त्र है और उसमें शारीरिक शक्ति या हिंसा का निषेध नहीं हो सकता। सत्याग्रह का उद्देश्य रचनात्मक है। उसमें कायरता की तनिक भी झलक नहीं रह सकती।''[4]

**सर्वोदय :–**

गाँधी जी एक आदर्श समाज तथा शोषण मुक्त व्यवस्थित समाज के पक्षधर थे। सर्वोदय विचारधारा उन्हें रस्किन की पुस्तक ''अन्टू दिस लास्ट'' से प्राप्त हुई, उनके मित्र द्वारा 1904 में जोहान्सबर्ग से बर्न की यात्रा में भेट की गई इस पुस्तक ने गाँधी जी की विचारधारा को एक नयी दिशा देने का कार्य किया, इस पुस्तक ने उनके मस्तिष्क पर एक गहरा प्रभाव छोड़ा। गाँधी जी ने ''अनटू दिस लास्ट'' का अनुवाद गुजराती भाषा में किया और उसका नाम सर्वोदय रखा। इस पुस्तक में स्पष्ट रूप से गाँधी जी ने अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए लिखा

है कि जो भी चीज मेरे भीतर छिपी हुई थी उसकी छाया या प्रतिबिम्ब मैने रस्किन की पुस्तक में देखा।

गाँधी जी के अनुसार ''पहली चीज मैं जानता था, दूसरी को मैं धुंधले रूप में देखता था। तीसरी का मैंने कभी विचार ही नहीं किया था। सर्वोदय ने मुझे दिये की तरह दिखा दिया कि पहली ही चीज में दूसरी चीज समाई हुई है।"[5]

गाँधी जी के अनुसार वास्तव में सर्वोदय का अर्थ सबके उदय अथवा सबके विकास से सम्बन्धित है। ''सर्वोदय शब्द भले ही नया हो किन्तु उसका अर्थ सबके जीवन का साथ–साथ विकास हो इतना ही है। सर्वोदय का अर्थ है सबका विकास, उन्नति या सह विकास, परन्तु प्राचीन काल में अभ्युदय शब्द का प्रयोग ऐतिहासिक वैभव के अर्थ तक सीमित था, इसलिए गाँधी जी ने केवल उदय शब्द का प्रयोग किया, एक साथ समान रूप से सबका उदय हो यही सर्वोदय का उद्देश्य है।

गाँधी जी हमेशा मानते थे कि –"मनुष्य का मन चंचल है। इसे, जैसे–जैसे ज्यादा देते जायेंगे वह वैसे–वैसे ज्यादा मांगता है। ज्यादा लेकर भी वह सुखी नहीं होता क्योंकि भोग भोगने से इच्छायें बढ़ जाती हैं, क्योंकि सुख और दुःख तो मन के कारण हैं।"[6] सर्वोदय की भावना सभी व्यक्तियों के सुख से सम्बन्धित है। सर्वोदय में सभी व्यक्तियों के सुख–शान्ति की भावना छुपी हुई है–''सर्वोदय ऐसे वर्ग–विहीन, जाति–विहीन और शोषण विहीन समाज की स्थापना करना चाहता है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास के साधन और अवसर मिलेंगे, यह क्रान्ति अहिंसा और सत्य द्वारा ही सम्भव है। सर्वोदय इसी का प्रतिपादन करता है।"[7]

**संरक्षता का सिद्धान्त :–**

गाँधी जी सम्पूर्ण समाज में आर्थिक समानता लाना चाहते थे, उनका प्रमुख ध्येय समाज में आर्थिक विषमता को समाप्त करना था। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए गाँधी जी ने संरक्षता या ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इस सिद्धान्त के अनुसार "समाज के प्रत्येक वर्ग को अपनी आवश्यकताओं की वस्तुएं समान रूप से प्राप्त होनी चाहिये। ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त इस बात पर आधारित है कि जिसके पास धन है, वह उसे फिजूल व्यय ना करे। उस धन को थाती समझकर रखे और लोककल्याण में खर्च करे। जब तक धनिक वर्ग शिक्षा से अपना धन त्याग नहीं देता अथवा उसे जनता की अमानत समझकर खर्च नहीं करता तब तक अहिंसात्मक क्रान्ति अनिवार्य है।"[8]

गाँधी जी का मानना था कि अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संचय, प्रकृति के नियमों के विरूद्ध है, क्योंकि प्रकृति भी प्रत्येक दिन उतना ही उत्पन्न करती है जितनी कि मनुष्य की आवश्यकतायें होती है। अतः वस्तुओं का भविष्य के लिए संचय करना फिजूल है। गाँधी जी के अनुसार– "प्रत्येक व्यक्ति को धन का दुरूपयोग कभी नहीं करना चाहिए बल्कि ट्रस्टी की तरह आवश्यकता से अधिक धन को जन समुदाय या लोक कल्याण के लिए खर्च करें।"[9]

समाज को व्यवस्थित रखने के लिए जिस प्रकार परिवार का निर्माण होता है और प्रत्येक व्यक्ति परिवार के प्रत्येक सदस्य के सुख–दुख और आवश्यकताओं का ध्यान रखकर अपनाजीवन यापन करते हैं, तथा प्रत्येक सदस्य द्वारा अर्जित धन का उपभोग परिवार का प्रत्येक सदस्य करता है, उसी प्रकार गांधी जी भी सम्पूर्ण समाज को एक परिवार की संज्ञा देते थे। उनका मानना था कि "समाज को एक वृहद परिवार की तरह मानकर

आवश्यकतानुसार धन को स्वयं पर खर्च करके शेष धन समाज के अन्य लोगों को समर्पित करना ही बुद्धिमत्ता है। तभी धन और गरीब के मध्य आर्थिक असमानताओं को खत्म किया जा सकता है।"[10]

अपने ''संरक्षता के सिद्धान्त'' को स्पष्ट करते हुए 'हरिजन सेवक' में गाँधी जी ने लिखा था कि ''मान लीजिए कि विरासत के या उद्योग–व्यवसाय के द्वारा मुझे काफी बड़ी सम्पत्ति मिल गई, तब मुझे यह जानना चाहिए कि वह सब सम्पत्ति मेरी नहीं। बल्कि मेरा तो उस पर इतना ही अधिकार है कि जिस तरह दूसरे लाखों आदमी गुजर करते हैं, उसी तरह मैं भी गुजर करूं। मेरी शेष सम्पत्ति राष्ट्र का अधिकार है और उसी के हित के लिए उपयोग होना आवश्यक है।"[11]

अर्थशास्त्री कुमारप्पा गाँधीवादी विचारधारा के अनुयायी थे।उनका मानना था किसमाजवाद और गाँधीवाद एक एक दूसरे से भिन्न नहीं थे, और न ही उनमें कोई अन्तर स्पष्ट होता है। गाँधी जी मानना था कि हम पूंजीपति को या पूंजीवादी को नष्ट नहीं करना चाहते बल्कि एक संरक्षक की तरह उन्हें निमन्त्रित करते हैं।"[12] हिंसात्मक क्रान्ति या हिंसात्मक आचरण गाँधी जी ने कभी सही नहीं माना। आपका मानना था कि जो स्वयं को संरक्षक मानेगा वह दूसरों का शोषण करके कभी भी धन का संचय नहीं करेगा, कार्ल मार्क्स के समान गाँधी जी ने कभी पूंजीपतियों का विरोध नहीं किया।

''गाँधी और मार्क्स दोनों ने व्यक्तिगत सम्पत्ति की अधिकता का विरोध किया परन्तु दोनों ने अलग–अलग ढंग से इसका विरोध किया।"[13]

**अस्पृश्यता :–**

प्रकृति कभी भी जीवन में भेदभाव नहीं करती, समानता के आधार पर प्रत्येक मनुष्य को एक सुसभ्य जीवन जीने का अधिकार प्राप्त है। प्राचीन काल में समाज को सुव्यवस्थित रखने के उद्देश्य से वर्णव्यवस्था केवल कार्यात्मक विभाजन का आधार था, कि प्रत्येक मनुष्य अपनी रूचि तथा योग्यता के अनुसार अपने व्यवसाय का निर्धारण कर सके। कालांतर में यही वर्ण–व्यवस्था जातियों में परिवर्तित होने लगी और वर्ण व्यवस्था का विकृत रूप हमारे सामने दृष्टिगत होने लगा। साथ ही जातिगत आधार ने अस्पृश्यता को जन्म दिया। गाँधी जी सदैव अस्पृश्यता के विरोधी थे, गाँधी जी का मानना था कि जन्म के आधार पर हम किसी भी जाति को समाज में सबसे निचला स्थान नहीं दे सकते। गाँधी जी का मानना था कि "अस्पृश्यता की यह दयनीय जीर्ण शीर्ण भावना हमारे पूर्वजों के मस्तिष्क में उस समय पनपी होगी, जब उनका दृष्टिकोण अति संकुचित अवस्था से गुजर रहा होगा। यह तो एक प्रकार का अभिशाप है और जब तक यह अभिशाप हमारे साथ है तब तक हम भारत की इस पवित्र भूमि में अपने ही समाज के एक बड़े अंश को प्रत्येक प्रकार से दुख कष्ट तथा अज्ञानता के अन्धकार में रखने का महापाप करते रहेंगे। किसी व्यक्ति को केवल पेशे के आधार पर अस्पृश्य समझा जाये, यह तो किसी भी रूप में युक्तियुक्त और तर्कसंगत नहीं है।"[14]

**शिक्षा :–**

गाँधी जी समाज के विकास और प्रगति के लिए शिक्षा को एक महत्वपूर्ण अभिकरण मानते थे। गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य केवल साक्षर बनाना ही नहीं वरन् इससे नैतिकता, चरित्र निर्माण व सामाजिक व आर्थिक विकास भी होना आवश्यक है। गाँधी के अनुसार, ''शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिससे ज्ञान के साथ–साथ आय के अर्जन तथा रोजगार की प्राप्ति भी हो सके। शिक्षा ऐसी हो जो बच्चों में गुण तथा संस्कारों का विकास

करे और उन्हें ज्ञानवान् बनाकर रोजगार भी प्रदान करें।''[15]

**निष्कर्ष :-**

सम्पूर्ण शोध आलेख के संक्षप्तीकरण के आधार पर यह स्पष्ट है कि गाँधी जी के विचार वास्तव में भारतीय विचारधारा, का समर्थन करते हैं। समाज के विकास, घटनाएं, समस्याएं तथा समाज के विकास को विघटित करने वाले ज्वलंत मुद्दों पर जिस प्रकार गाँधी जी की विचारधारा है, वह आज के समकालीन अव्यवस्थित हो रहे समाज के लिए भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। समग्र मूल्यांकन के आधार पर यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा कि समाज का चाहे कोई भी परिप्रेक्ष्य रहा हो – सामाजिक हो, राजनैतिक हो, आर्थिक हो, नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित हो अथवा धर्म या आध्यात्म से जुड़ा हो, प्रत्येक पर गाँधी जी ने अपने स्पष्ट विचारों को व्यक्त किया है। यह विचारधारा न केवल हमारे वैचारिक परिवर्तन के लिए आवश्यक है बल्कि एक योग्य नागरिक के रूप में अपने उत्तरदायित्वों के लिए हमें योग्य बनाती है। गाँधी जी का मानना था कि वही समाज या उसमें निवासरत व्यक्ति अपना सर्वांगीण विकास कर सकते हैं, जिसमें वह स्वयं के विकास के साथ ही सम्पूर्ण मानव जगत के कल्याण की भावना भी रखता हो। वसुधैवकुटंबकम् की विचारधारा से ही हम अपनी तथा समाज की उन्नति में पूर्ण सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

**सन्दर्भ :-**


1. मुकर्जी रविन्द्रनाथ ''सामाजिक विचारधारा– कॉम्ट से मुकर्जी तक''–2015 विवेक प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या 476
2. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या 476–477
3. उपरोक्त, पेज नम्बर 479
4. उपरोक्त, पेज नम्बर 481
5. उपरोक्त, पेज नम्बर 481 481
6. उपरोक्त, पेज नम्बर 481
7. मेरी आत्मकथा–''सत्य के प्रयोग'' नवजीवन पब्लिशर्स, अहमदाबाद, पृष्ठ संख्या –22
8. दादा धर्माधिकारी ''सर्वोदय दर्शन'' सर्व सेवा संघ, प्रकाशन वाराणसी 1988, पृष्ठ संख्या –05
9. महात्मा गांधी ''गांधी जी ने कहा था'' सस्ता साहित्य मण्डल, 2009, पृष्ठ संख्या –07
10. मुकर्जी रविन्द्रनाथ ''सामाजिक विचारधारा– कॉम्ट से मुकर्जी तक''–2015 विवेक प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 484
11. मोहनदास करमचंद्र गांधी ''ट्रस्टीशिप संकलित रविंद्र के लेकर, नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद, 1960 पृष्ठ 89
12. मुकर्जी रविन्द्रनाथ ''सामाजिक विचारधारा– कॉम्ट से मुकर्जी तक''–2015 विवेक प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या–486
13. मोहनदास करमचंद गांधी ''ट्रस्टीशिप'' संकलित रविद्र केलेकर नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद 1960 पृष्ठ संख्या–92
14. मुकर्जी रविन्द्रनाथ ''सामाजिक विचारधारा– कॉम्ट से मुकर्जी तक''–2015 विवेक प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या–490
15. सिंह रामजी, गांधी दर्शन मीमांसा, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, बिहार–1986, पृष्ठ संख्या– 262


email id- rprakash@uou.ac.in

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 106-112

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिंदी नाट्य साहित्य में गांधीवादी दर्शन का प्रभाव, प्रसाद एवं प्रसादोत्तर सामाजिक नाटकों के विशेष संदर्भ में

**डॉ. जयश्री भंडारी**

असिस्टेंट प्रोफेसर–हिन्दी, एम. बी. जी. पी. जी. कॉलेज हल्द्वानी, उत्तराखंड।

हिंदी साहित्य में नाटकों का प्रादुर्भाव वस्तुतः भारतेंदु युग से ही माना जाना चाहिए। भारतेंदु युग से पूर्व हिंदी नाट्य साहित्य अनुदित एवं अनुकृत ही था। भारतेंदुयुगीन नाटकों में जो टेकनीक तथा नाटक के विषय चयनित किए गए, उनका आधार पाश्चात्य नाट्य साहित्य, अनेक विद्वानों ने स्वीकृत किया है। इस संदर्भ में डॉक्टर जे. पी. श्रीवास्तव एवं एच. पी. सिन्हा के विचार दृष्टव्य हैं – "जिस प्रकार पाश्चात्य शिक्षा ने भारतीय जनता में राष्ट्रीय जागृति का संचार किया, उसी प्रकार पाश्चात्य नाटकों ने भी हिंदी साहित्य के नाटकों में एक नया मोड़ उपस्थित किया। अब नाटकों में राष्ट्रीय समस्या को स्थान प्रदान किया जाने लगा।"[1] भारतेंदु काल के तो सभी नाटककारों का ध्येय समाज को नव चेतना और जागरण प्रदान करना था। फिर भी भारतेंदु युग राष्ट्रीयता की दृष्टि से शैशव अवस्था में ही था। इसमें राष्ट्रीयता के समग्र रूप के दर्शन नहीं होते। यद्यपि देशानुराग का अत्यंत उज्ज्वल रूप दिखाई देता है, परन्तु राजभक्ति भी साथ ही साथ अभिव्यक्ति पाती है। "इस राजभक्ति को शासकों के प्रति कोरी चाटुकारिता के रूप में देखना वास्तव में साहित्यकार के प्रति अन्याय होगा। यह राजभक्ति वास्तव में देश प्रेम से ही प्रेरित थी, जिसमें भक्ति की आड़ ली गई थी।"[2]

भारतेंदु युग के उपरांत द्विवेदी युग में राजभक्ति का तत्व विलोपित होता हुआ प्रतीत होता है। इस युग में साहित्यकारों ने अंग्रेजी शासकों की नीति के दोहरे रूप को अच्छे से पहचाना। उन्होंने इस नीति में मधुमिश्रित विष का आभास पा लिया था। अतः शासन की भक्ति को त्याग कर अपने अधिकारों की मांग को प्रमुखता से उठाया, किन्तु इस तथ्य से हम भली भांति परिचित हैं की इस युग में नाटक, रचना एवं विकास के दृष्टिकोण से यह युग पर्याप्त रूप से अविकसित ही रहा।

हिंदी नाटकों में राष्ट्रीय चेतना की स्पष्ट अभिव्यक्ति मुख्य रूप से प्रसाद युग में होती है। नाटक साहित्य में प्रसाद जी का अपना विशेष महत्त्व है। यह वही समय था जब भारतीय राजनीति के मंच पर महात्मा गाँधी का पदार्पण होता है। उनके द्वारा कांग्रेसी आंदोलन को जन आंदोलन में परिवर्तित किया जाता है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में विचारधारात्मक परिवर्तन दिखाई देता है। यह युग सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक दृष्टिकोण से उथल पुथल का युग रहा। इस युग में जनता में नवीन चेतना अंगड़ाई लेने लगी। भारतीय संस्कृति

को पुर्नस्थापित करने का प्रयास किया गया। अनेक चेतनाशील लोगों के द्वारा साहित्य एवं भाषणों के माध्यम से समाज में जागरण लाने का प्रयास किया गया। इस युग में जयशंकर प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक नाटकों की माध्यम से धूम मचा दी थी। डॉक्टर नरेंद्र के अनुसार, "प्रसादजी की मौलिक प्रतिभा के स्पर्श से हिंदी का यह उपेक्षित अंग जगमगा उठा। उनके नाटक साहित्य के मूल में सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की उत्कृष्ट प्रेरणा है।"[3]

जयशंकर प्रसाद के अतिरिक्त इस युग में हरिकृष्ण प्रेमी, सियारामशरण गुप्त, बद्रीनाथ भट्ट, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, उदय शंकर भट्ट, सेठ गोविंद दास, दाऊदयाल गुप्ता इत्यादि का उल्लेखनीय योगदान रहा। प्रसाद कालीन एवं प्रसादोत्तर नाटकों को विषय के आधार पर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है– सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक। इन तीनों प्रकार के नाटकों में गांधीवाद के दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सामाजिक नाटकों में उन सभी सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया गया जिन को दूर करना गाँधी जी ने अपने जन आंदोलन का लक्ष्य बनाया था। छुआछूत की समस्या को प्रसाद ने अपने नाटक 'जनमेजय का नागयज्ञ में' चित्रित किया है। नाटक में आया यह कथन दृष्टव्य है, "वर्ण समानता आर्य जाति की विशेषता और गौरव था।"[4] सेठ गोविंददास ने अपने नाटक 'कुलीनता' को अछूतोद्धार तथा दलित वर्ग के उत्थान की कामना से अभिप्रेरित होकर लिखा है। उन्होंने एक अकुलीन को राष्ट्र की स्वाधीनता हेतु चुना। प्रस्तुत नाटक का नायक यदुराम कहता है कि, "ये हमें पशु से भी निकृष्ट समझते हैं। हममें कितने ही उच्च गुण क्यों न हों, हम उनके राज्यों में किसी भी उत्तरदायी पद पर आसीन नहीं हो सकते। हम कितने ही सुन्दर क्यों ना हों, हम उनकी कन्याओं से विवाह नहीं कर सकते। हम कितने ही स्वच्छ क्यों न हों, हमारा छुआ हुआ भोजन उनके खाने योग्य नहीं रह जाता। इतना ही नहीं यदि देश पर विपत्ति आजाए तो.... , यद्यपि हम उनकी अपेक्षा इस देश के पुराने निवासी हैं, हमें अपने देश की रक्षा करने का भी अधिकार नहीं है।"[5]

'कर्तव्य' नाटक में सेठ गोविंद दास ने अछूतोद्धार समस्या को उठाया है। शूद्र कुलोत्पन्न शंबूक का राम बद्ध करना चाहते हैं, क्योंकि वह तपस्या करता है। उस समय शंबूक राम को चेतावनी देते हुए कहते हैं कि, "ब्राह्मण यह मानते हैं कि हम सूत्रों को तप का अधिकार नहीं है। मैंने यह तप इसी मत के खंडन के लिए किया है। यदि मेरे तप से कोई शूद्र का बालक मरता तो मेरे तप का कुफल हो सकता था पर ब्राह्मण का बालक मरा इससे यह स्पष्ट हो गया कि वे भूल में हैं।"[6]

इसी प्रकार प्रकाश नाटक में सेठ गोविंद दास ने पुनः सामाजिक भेदभाव का उल्लेख करके जनता में जागृति लाने का प्रयास किया है। उसका पात्र प्रकाशचंद्र मनुष्य के वर्तमान दुखों का मूल कारण सामाजिक भेद को मानता है। इस सामाजिक भेदभाव में सुधार लाने हेतु गोविंद दास जी ने गांधीवादी हृदय परिवर्तन सिद्धांत को श्रेष्ठ माना है। उनके अनुसार स्थायी परिवर्तन अंदर से होना चाहिए। इस संबंध में गोविंद दास जी मनोरमा के मुख से अपने विचार व्यक्त करते हैं, "मेरी तो राय है कि कानून द्वारा समाज सुधार करना ही ठीक सिद्धांत नहीं है। समाज सुधार राजकीय शक्ति की अपेक्षा आंतरिक परिवर्तन द्वारा ही करने का प्रयत्न अच्छा है और वही

स्थायी भी रह सकता है।"[7]

लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटक संन्यासी में गौरीदत्त उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो परंपरावादी है और किसी भी प्रकार का परिवर्तन उन्हें समाज में सह्य नहीं है। वह निम्न तबके में आई जागरूकता के लिए गांधी जी को वजह मानते हुए कहता है, "आजकल तो मंदी है, गांधी जी के मारे किसी की रोजी नहीं चल सकेगी। गांव के चमार सब सभा कर रहे हैं। हम लोगों के काम का हर्ज हो रहा है।"[8]

उदयशंकर भट्ट ने 'दाहर' अथवा 'सिंध पतन' में दाहर को कर्म व्यवस्था के समर्थक के रूप में प्रस्तुत किया हैं। जन्म के आधार पर बनी जाति व्यवस्था को वह गांधी जी की तरह नकारता है। इसीलिए वह आदेश देता है कि, "कर्म की पवित्रता प्रत्येक व्यक्ति में अपने दैनिक व्यवहार पर निर्भर है। लोहार, जाट और गुर्जरों में वैसे ही क्षत्रीयता है जैसी की वीरता का कार्य करने वाले अन्य क्षत्रियों में।"[9]

गाँधी जी की तरह इस नाटक में वर्णाश्रम व्यवस्था में विश्वास प्रकट किया गया है तथा शूद्र वर्ण को नीच न मानने का उपदेश लेखक ने गांधीवाद के प्रभाव में दिया है। बद्री नाथ भट्ट भी अपने नाटक में, चरित्र में सामाजिक भेदभाव को अनुचित बताते हुए ऐसे लोगों को उलाहना देते हैं, जो निम्न वर्ग के सदस्यों को हेय दृष्टि से देखते हैं। नाटक में शूद्रों का सरदार जखीना सवर्णों के संबंध में कहता है कि, "बड़प्पन के घमंड के नशे में इन लोगों ने सारी दुनिया को अपने से हेय समझा और जब दुनिया की सीमा खत्म हो गई तब आपस में ही एक दूसरे को नीचा समझने लगे।"[10]

सामाजिक भेदभाव के अतिरिक्त एक अन्य समस्या जिस पर गाँधीजी ने प्रहार किया, वह था भारतीय समाज में पैठ बना चुका भाग्यवाद एवं रूढ़िवाद। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन समाज की इस प्रवृत्ति से पीड़ित हो रहा था। जिसके विरुद्ध गाँधी जी ने एक तरीके का असहयोग आंदोलन अपने विभिन्न मंचों एवं पत्र पत्रिकाओं के द्वारा छेड़ दिया था। लक्ष्मीनारायण मिश्र ने 'मुक्ति का रहस्य' नाटक में इसी भाग्यवाद एवं रूढ़िवाद पर प्रहार किया है। उमाशंकर नियति की दुहाई देते हुए कहता है, "उसके भाग्य में जो होगा,.... मनुष्य जो लेकर पैदा होता है.... कोई गलत नहीं, आदमी का जीवन और यह विराट जगत.... समुद्र के बुलबुले उठें और बैठे।"[11]

'राजयोग' नाटक में मिश्र जी ने इसी रूढ़िवाद पर प्रहार किया है। 'आधी रात' नाटक में भी मिश्र जी ने आधुनिकता का विरोध प्रदर्शित करने वाली मानसिकता को उद्घाटित किया है।

गाँधी युग रचनात्मक कार्यों का युग था। गांधीजी ने अपने राष्ट्रीय आंदोलनों का एक भाग रचनात्मक कार्यों को भी बनाया था। समकालीन नाटककारों ने इन परिस्थितियों से प्रभावित होकर साम्प्रदायिकता को भी अपने नाटकों में प्रमुखता से उठाया है। प्रसाद जी के नाटकों में किसी धर्म विशेष के प्रति घृणा की भावना नहीं पायी जाती। गाँधी जी की भांति ही प्रसाद भी एक सार्वलौकिक धर्म में विश्वास करते हुए प्रतीत होते हैं। स्कंदगुप्त में वह कहते हैं, "समष्टि में भी व्यष्टि रहती है, व्यक्तियों से जाति बनती है। विश्व प्रेम, सर्व भूत हित कामना परम धर्म है।"[12] डॉ0 धर्मपाल सरीन के अनुसार, "जनमेजय का नाग यज्ञ भले ही पौराणिक नाटक हो परंतु उसमें आर्यों–दैत्यों और नारी का संघर्ष हिंदू मुस्लिम संघर्ष ही है।"[13]

प्रांतीयता और सांप्रदायिकता पर चंद्रगुप्त नाटक में प्रसाद व्यंग करते हैं। चाणक्य की नीति का प्रमुख तत्व एक राष्ट्र की स्थापना है। प्रसाद इसी एक राष्ट्र की भावना को प्रोत्साहन देते हैं।

प्रसाद के अतिरिक्त हरिकृष्ण प्रेमी जी के नाटकों में हिंदू मुस्लिम समस्या स्पष्टता से दिखाई देती है। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के लिए इस सम्प्रदायिकता को बाधक माना था। 'स्वप्न भंग' की भूमिका में वह स्वयं लिखते हैं, "मैंने अपने नाटकों के द्वारा राष्ट्रीय एकता का भाव पैदा करने का प्रयत्न किया है। मेरे इन लघु यत्नों को राष्ट्रीय एकता में क्या स्थान मिलेगा यह मैं नहीं जानता।"[14]

'स्वप्न भंग' के अतिरिक्त 'रक्षा बंधन' में मेवाड़ की महारानी कर्णावती का हुमायूँ को भाई कहकर राखी भेजना और हुमायूँ का गुजरात के मुसलमान बादशाह के विरुद्ध एक हिंदू राज्य की रक्षा के लिए पहुंचना। यह कथावस्तु हिंदू मुस्लिम भेदभाव की शांति को इंगित करता है। 'शिव साधना' नाटक में शिवाजी कहते हैं, "मैंने कभी किसी मस्जिद की एक ईंट को भी आंच नहीं आने दी। जहाँ मुझे पुराने मिली, मैंने उसे आदर के साथ किसी मौलवी के पास पहुंचा दिया। सर्वसाधारण की स्वतंत्रता की साधना करने वालों के हृदय में धार्मिक असहिष्णुता क्यों?"[15]

सेठ गोविंददास स्वयं एक स्वतंत्रता सेनानी थे अतः गोविंद दास ने हिंदुओं और मुसलमानों के मध्य सहृदयता एवं सहिष्णुता की भावना को प्रोत्साहित करने का प्रयास अपने नाटकों के माध्यम से किया। कुलीनता नाटक में एक पात्र कहता है, "श्रीमान में वैसा ब्राह्मण नहीं हूँ कि कुछ मंदिरों के मस्जिद बन जाने के भय और कुछ मूर्तियों के टूट जाने के डर से देश की स्वतंत्रता खो दूं। देश स्वतंत्र रहा तो अगणित मंदिरों और मूर्तियों की स्थापना हो जाएगी।"[16] 'हर्ष' नाटक में भी धार्मिक सहिष्णुता को स्थापित करने का प्रयास किया गया।

'विकास' नाटक में भी, आकाश कहता है कि, "इसलिए तुम्हारे भारत देश में महात्मा गाँधी ने जन्म लिया है। यह देखकर कि केवल धर्म प्रचार से मानव समाज अपने ज्ञान के अनुसार कर्म नहीं कर सकता। केवल इतने से ही प्रेम के साम्राज्य और अहिंसा की स्थापना नहीं हो सकती। उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र यहाँ तक की राजनीति में भी प्रेम और अहिंसा को प्रधान स्थान दिया है।" प्रेमचन्द ने नाटक कर्बला में सांप्रदायिक एकता को स्थापित करने का प्रयास किया है। वास्तव में प्रेमचंद गाँधी जी के मध्यम मार्ग को इस निर्देश से स्वीकार करते थे। जहाँ गाँधी जी ने हिंदुस्तान के अवधारणा को स्वीकार किया था वहीं एक राष्ट्रीय लेखक होने के नाते उन्होंने हिंदी और उर्दू को मिलाकर हिंदुस्तानी भाषा का प्रयोग किया था। इस समय के लगभग सभी नाटककारों जैसे राम नरेश त्रिपाठी,आचार्य चतुरसेन शास्त्री, नाटक अमर सिंह में, जितेन्द्र नाथ प्रसाद मिलिंद ने प्रताप प्रतिज्ञा आदि में भाषा की उसी नीति का समर्थन किया जिसे गांधीजी प्रचारित और प्रसारित कर रहे थे।

गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम में मद्यनिषेद भी एक था, जिसके लिए गाँधी जी ने पिकेटिंग को प्राथमिकता दी थी। हिंदी नाटककारों ने अपने नाटकों में गाँधी जी के इस प्रयास को स्थान प्रदान किया। जयशंकर प्रसाद के नाटक अजातशत्रु में गौतम बुद्ध मादक पदार्थों को निषिद्ध बताते हैं। कामना नाटक में स्वर्ण और मदिरा का प्रचार जाति को पतित करने का कारण माना गया है।

प्रसाद एवं प्रसादोत्तर हिंदी नाटकों में स्त्री की दशा एवं स्त्री समस्याओं को भी प्रमुखता से उठाया गया है। भारतीय समाज में स्त्री का स्थान सर्वदा से पुरुषों से निम्न माना जाता रहा था। गाँधी जी के सामने यह समस्या थी कि यदि स्त्री के प्रति यही पारंपरिक रूढ़िवादी विचारधारा समाज में रहती है तो वह अपने राष्ट्रीय आन्दोलन में स्त्रियों का सहयोग कैसे प्राप्त कर सकते हैं, इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में स्त्रियों की सहभागिता के लिए उनकी पुरुष आधीनता से मुक्ति दिलाना अवश्यंभावी समझा। गाँधी जी के इन्हीं विचारों को जयशंकर प्रसाद के अजातशत्रु नाटक में शक्तिमती व्यक्त करती है, "हमारी असमर्थता सूचित कर आकर हमें और भी निर्मूल आशंकाओं में छोड़ देने की कुटिलता क्यों है, क्या हम पुरुषों के समान नहीं हो सकते? क्या चेष्टा करके हमारी स्वतंत्रता नहीं पद दलित की गई है?"[17] ध्रुवस्वामिनी नाटक में स्त्री स्वतंत्रता की भावना की प्रखरता किसी से छुपी नहीं है। सेठ गोविंददास स्त्री पुरुष के भेदभाव को समाप्त कर उन्हें समानता के स्तर पर लाने के पक्षपाती थे। 'प्रकाश' नाटक में स्त्री पात्र रुक्मणी कहती है, "स्त्रियों का प्रश्न क्या साधारण प्रश्न है? उनमें शिक्षा नहीं, सामाजिक जीवन नहीं, कुछ भी नहीं वे जन्मभर पर्दे में सड़ाई जाती हैं। पुरुष जिस रास्ते से ले जाए वही उनका मार्ग है। क्या उन्हें कोई भी स्वतंत्रता है? माँ बाप इस उम्र में जिसके साथ चाहे विवाह कर दें। यदि दुर्भाग्य से बाल्यावस्था में वैधव्य आ गया तो जन्मभर दुःख ही दुःख। अगर कोई विधवा न हुई और कहीं उसको बुरा पति मिल गया तो और भी क्लेश।"[18] प्रेमचंद के संग्राम तथा सुदर्शन के अंजना नाटक में भी नारी स्वतंत्रता एवं नारी जागरण को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। इन नाटकों में नारी के प्रति यह चेतना गाँधी जी के विचारों का ही प्रभाव कहा जा सकता है।

सत्य और अहिंसा गाँधी जी के दो प्रमुख शस्त्र रहे। प्रसाद एवं प्रसादोत्तर नाटकों में गाँधी जी के इन दोनों ही अस्त्रों को नाटककारों ने प्रमुखता दी। जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटक विशाख में सत्य और अहिंसा की गांधीवादी नीति पर बल दिया। नाटक का पात्र प्रेमानंद गाँधी जी का ही प्रतिरूप है, जो सत्य और अहिंसा का पुजारी है। उसके चरित्र में प्रेम, दया, सत्य, अहिंसा और शांति का संदेश प्राप्त होता है। प्रसाद ने स्वयं प्रेमानंद के मुख से गांधीवादी विचारधारा का उल्लेख किया है, "मैं शास्वत संघ का अनुयायी हूँ और प्रेम की सत्ता का विश्व भर में प्रचार करना मेरा लक्ष्य है।"[19]

राष्ट्रीय आंदोलनों में गाँधी जी की शिक्षा सत्याग्रह की शिक्षा थी। जिसमें उन्होंने शारीरिक बल को नहीं वरन आत्मबल को महत्त्व प्रदान किया था। गाँधीजी का विश्वास था कि यदि लक्ष्य की पूर्ति करनी हो तो यह अहिंसात्मक साधन को अपनाकर करनी चाहिए। इसी बात की पुष्टि अजातशत्रु में अजात की बहन पद्मावती उसे अहिंसा, दया और करुणा का पाठ पढ़ाकर करना चाहती है। चंद्रगुप्त नाटक में जब सिकंदर युद्ध में आहत होकर गिर जाता है और मालव सैनिक प्रतिशोध की भावना से परिपूर्ण होकर उसका वध करना चाहता है तो उस समय प्रसाद ने सिंहरण के रूप में उपस्थित होकर अहिंसावादी नीति का प्रशिक्षण प्रदान किया है। इसके संबंध में डॉ. नगेन्द्र का मत है, "यह प्रसंग इतिहास के अनुकूल हो अथवा नहीं परंतु इसमें बोलती हुई देशभक्ति की भावना एकांत दिव्य है। देशभक्ति का इतना शुद्ध और पवित्र रूप में हिंदी साहित्य में अन्यत्र नहीं देखा।"[20]

हरिकृष्ण प्रेमी अपने नाटक 'स्वर्णविहान' में हिंसा का विरोध करते हुए लिखते हैं, "नहीं, नहीं ये पगले मन, ज्योत प्रेम से पापाचार अरे! पाप से पाप मिटाना यहाँ भूल है, व्यर्थ विचार। कहीं आग से आग बुझाना है संभव है? युवक विचार, धर्म, सत्य जिस ओर रहेंगे, उसी ओर होंगे कर्ता।"[21]

सेठ गोविंददास ने अपने 'विकास' नाटक में भी ऐसे ही विचारों को स्थान दिया है। बद्रीनाथ भट्ट जी ने 'वेन चरित्र' में गांधी जी के सत्य एवं अहिंसा के सिद्धांतों की महत्ता को प्रतिपादित किया है। बेचौन शर्मा उग्र भी अपने नाटक 'महात्मा ईसा' में ईसा के द्वारा कहलाते हैं, "तुम्हारी मिथ्या धारणा है पशुबल को यदि पशुबल दबाएगा तो महा पशुबल हो जाएगा, जिससे किसी को भी सुख न मिल सकेगा।"[22]

सत्य अहिंसा के अतिरिक्त हिंदी नाट्य साहित्य में गाँधी जी के असहयोग एवं सत्याग्रह आंदोलनों को भी पर्याप्त मात्रा में स्थान मिला है। असहयोग आंदोलन के औचित्य को सिद्ध करते हुए पांडेय बेचन शर्मा उग्र अपने नाटक 'महात्मा ईसा' में ईसा के द्वारा कहलवाते हैं, "इसका अर्थ है आत्म स्वतंत्र। युद्ध पिता की आज्ञा पुत्र की आत्मा के विरुद्ध है तो उसे चाहिए कि वह अपने पिता से अत्यंत नम्र शब्दों में असहयोग कर दे। यही नियम संपूर्ण संसार के लिए है और इसी का मैं प्रचारक हूँ।"[23] लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटक 'मुक्ति का रहस्य' जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद के 'प्रताप प्रतिज्ञा' हरिकृष्ण प्रेमी के 'शिवा साधना' सेठ गोविंददास के 'विकास' नाटक तथा 'सिद्धांत स्वतंत्र' आदि में गाँधी जी के इन आंदोलनों की न केवल चर्चा हुई है बल्कि इसके पक्ष एवं विपक्ष दोनों रूपों को सामने रखा गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी नाट्य साहित्य के सबसे महत्वपूर्ण युग प्रसाद तथा प्रसादोत्तर युग में गांधीवादी विचारधारा ने हिंदी नाटकों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। गाँधीवादी दर्शन से प्रभावित इन नाटकों ने न केवल जनता का मनोरंजन किया अपितु स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जनता को तैयार करने का कार्य भी किया। गाँधी जी के प्रभाव का ही परिणाम था कि हिंदी साहित्य की हर विधा उनके रंग में रंग गयी। नाटकों का प्रभाव सामाजिक पर सबसे अधिक पड़ता है। मंच पर नारी समानता के दृश्यों ने निश्चित रूप से तत्कालीन नारी को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया था। सहिष्णुता की गांधीवादी विचारधारा का ही परिणाम था कि अंग्रेजों ने ''फूट डालो, राज करो'' की नीति का भरपूर उपयोग किया किंतु वह अपनी इस नीति में प्रारंभिक रूप से सफल नहीं हो पाए। उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि गाँधी ने तत्कालीन राजनीतिक पृष्ठभूमि को ही नहीं अपितु साहित्यिक जगत को भी पूरी तरह से प्रभावित किया। हिंदी साहित्य की कोई विधा उस समय गाँधी जी के प्रभाव से अछूती नहीं दिखती है। गाँधी जी के सामाजिक सरोकारों को सभी नाटककारों ने अपने नाटकों में स्थान दिया, और इसके माध्यम से जनजागरण में सहयोग किया।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**


1. डॉक्टर जे. पी. श्रीवास्तव एवं एच. पी. सिन्हा, हिंदी साहित्य का इतिहास, पुस्तक मंदिर, इलाहाबाद 1965 पृष्ठ संख्या 13
2. रामविलास शर्मा, भारतेंदु युग, लोक वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या– 14

3. नगेंद्र, आधुनिक हिंदी नाटक साहित्य रत्न भंडार, आगरा, पंचम संस्करण। 2012, पृष्ठ संख्या 4
4. वही– पृष्ठ संख्या– 41
5. वही– पृष्ठ संख्या– 5
6. लक्ष्मीनारायण मिश्र, संन्यासी पृष्ठ संख्या 77
7. वही– पृष्ठ संख्या– 78
8. उदयशंकर भट्ट, दहर, अथवा सिंधु पतन, पृष्ठ संख्या 67
9. वही– पृष्ठ संख्या– 45
10. बद्रीनाथ भट्ट, वेन चरित्र, पृष्ठ संख्या 35
11. लक्ष्मीनारायण मिश्र मुक्ति का रहस्य, पृष्ठ 87
12. जयशंकर प्रसाद स्कंदगुप्त, पृष्ठ संख्या 68
13. धर्मपाल सारी हिंदी साहित्य और स्वाधीनता संघर्ष कार्य बुक डिपो, नई दिल्ली, 1973, पृष्ठ संख्या 111
14. चंद्रबाबू, पृष्ठ संख्या 59
15. हरिकृष्ण प्रेमी, स्वप्न भंग, भूमिका, पृष्ठ संख्या 5
16. ये तीन, हरिकृष्ण प्रेमी, पृष्ठ संख्या 13
17. जयशंकर प्रसाद, अजातशत्रु, पृष्ठ संख्या 121
18. सेठ गोविंदास, प्रकाश, पृष्ठ संख्या 11
19. जयशंकर प्रसाद, विशाख, पृष्ठ संख्या– 30
20. नगेंद्र, आधुनिक हिंदी नाटक, पृष्ठ संख्या–09
21. हरिकृष्ण प्रेमी स्वर्ण विहान, पृष्ठ संख्या 38
22. पांडेय बेचन शर्मा उग्र महात्मा ईसा, पृष्ठ संख्या 97– 98
23. वही, पृष्ठ संख्या – 80

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 113-118

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना एवं संस्कृत वांग्मय में महात्मा गांधी

**डॉ० शालिनी पाठक**

संस्कृत विभाग, स्व0 चंद्र सिंह शाही राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कपकोट, बागेश्वर।

**शोध सार :-**

संस्कृत साहित्य में हमेशा से ही राष्ट्रीय नायकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, वे फिर जवाहरलाल नेहरू हों या विनायक दामोदर सावरकर अथवा मोहनदास करमचंद गांधी। भारतीय संस्कृत साहित्य एवं अर्वाचीन संस्कृत काव्य में राष्ट्र नायकों की भूमिका सर्वोपरि रही है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी पर अनेक रचनाएं रची गई हैं, जिनमें गांधीचरितम्, गांधीगौरवम्, सत्याग्रहगीता, उत्तर सत्याग्रह गीता एवं स्वराजविजयः प्रमुख हैं। संस्कृत कवियों ने महात्मा गांधी जी की तुलना श्री राम से की है। उनका मानना है गांधीजी अहिंसावादी थे और वे श्री राम की राज्य नीति का पालन करते थे। निम्न शोध पत्र में महात्मा गांधी जी को राष्ट्र नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। संस्कृत भाषा के साहित्य में राष्ट्र नायकों की जागृत आंतरिक भावना एवं अंग्रेजी परतंत्र को भंग करने के उद्देश्य से विभिन्न काव्य लिखे गए हैं।

**आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना एवं संस्कृत वांग्मय में महात्मा गांधी :-**

प्राचीन काल से वर्तमान तक सर्वाधिक समृद्ध संस्कृत साहित्य और इतिहास ग्रन्थों का अनुशीलन करने से ज्ञात होता है कि हमारा गौरवपूर्ण संस्कृत साहित्य साक्षी है कि, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अद्‌भुत व्यक्तित्व से भारतवासी ही नहीं विश्व के अन्य लोग भी सुपरिचित हैं'। प्रोफेसर राधा वल्लभ त्रिपाठी के अनुसार– "20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में राष्ट्रीयता की भावना का अभूतपूर्व उन्मेष हुआ, विशेषतः महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन तथा उनके जीवन दर्शन ने सारे देश को प्रेरणा के सूत्र में बांध दिया। इस काल का संस्कृत साहित्य इस युग निर्माता महापुरुष के चरित्र और संदेश से अत्यधिक प्रभावित हुआ। तथा उन्हें केंद्र में रखकर स्वाधीनता संग्राम पर अनेक संस्कृत काव्य भी लिखे गए। स्वयं गांधी जी के जीवन को लेकर कई खंडकाव्य या मुक्तक काव्यो की संख्या सैकड़ो में है।"

**कूट शब्द :-** महात्मा गांधी, संस्कृत साहित्य, आधुनिक संस्कृत, राष्ट्रीय भावना, संस्कृत काव्य।

**प्रस्तावना :-**

"भारत में अहिंसक स्वतंत्रता आंदोलन का प्रमुखता से नेतृत्व राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद गांधी द्वारा अनुष्ठित किया गया। महात्मा गांधी को केंद्र में रखकर संस्कृत भाषा में विभिन्न साहित्य ग्रंथों का निर्माण किया

गया। महात्मा गांधी को केंद्र में रखकर नायकत्वेन वर्णित काव्य, नाटक, गद्यबद्ध जीवन चरित्र की संख्या बहुत अधिक है। जिनमें महात्मा गांधी ही नायकत्वेन वर्णित हैं। और उनके स्वतंत्रता आंदोलन को ही यह काव्य उपस्थित कराते हैं। "इन ग्रंथो में संस्कृत कवियत्री पंडित क्षमा राव द्वारा 1932 ईस्वी में प्रकाशित 'उत्तर–सत्याग्रहगीता', सत्याग्रहगीता एवं स्वराज्यविजयः नाम से तीन काव्य साहित्य जगत में सुविदित हैं। क्षमा राव का सत्याग्रह गीता काव्यपेरिस से 1932 में इसलिए छापा था क्योंकि उस समय भारत में उस कृति का प्रकाशन करवाना संभव नहीं था। भगवद्आचार्य ने 'भारतपरिजातम्' में महात्मा गांधी के जन्म से लेकर साबरमती आश्रम की स्थापना तक का इतिहास निबद्ध किया है। महात्मा गांधी के लिए संस्कृत विद्वानों द्वारा जो उद्गार व्यक्त किए गए हैं, "उनमें वैदेशक दास्ता–पाश से मुक्ति और स्वतंत्रता प्राप्ति की तीव्र अभिलाषा है।"

महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन के आधार पर धर्म एवं औद्योगिकरण एवं शिक्षा के उद्देश्य पर संस्कृत साहित्य में कई वर्तमान लेखकों ने प्रकाश डाला है। 'गाँधीगौरवम' में कहा गया है कि, गांधी जी भयमुक्त एवं निडर व्यक्तित्व वाले प्रतिभाशाली वकील थे। गाँधीगौरवम में गांधी जी के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान पर भी प्रकाश डाला गया है। हमारे लिए यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि,राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन चरित्र और उनके जीवन दर्शन को अपने साहित्य सर्जन का विषय बनाकर संस्कृत भाषा में 'सत्याग्रह गीता', 'गाँधी गीता, 'श्री महात्मा गांधी चरितम', 'श्री गांधीगौरव', 'गांधी चरितम, (श्रीसाधु शरण मिश्र महाकाव्य) श्री गांधी चरितम; (ब्रह्मानंद शुक्ला खंडकाव्य), गांधी गौरवं (रमेश चंद्र शुक्ल कृत खंडकाव्य) 'अथ श्री श्रमगीता', 'गांधी गाथा, बापू, 'गाँधीस्त्रियों गुरुवः शिष्याशच आदि अनेक और अनेक प्रकार के काव्य लिखे गए हैं। "श्री गांधीचरितम्– भारतपारिजातम्, पारिजातपहारः, एवं पारिजातसौरभम् इन तीन भागों में विभक्त है। आचार्य ब्रह्मानंद शुक्ला जी ने अपने काव्य में गांधी जी के माध्यम से यह बताया है कि उनके मन में देशवासियों एवं देश के प्रति इतना अधिक प्रेम विद्यमान था कि प्रेम के कारणवश भगवान से यह प्रार्थना करने लगे कि अपने देश में रहने वाले लोगों के कष्टों को देखकर मैं उन्हें दूर करता रहूं। मेरी बुद्धि सदैव धर्म के कार्यों में लगी रहे।" आचार्य ब्रह्मानंद जी के गांधी चरितम में ही "वहां दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी गए और भारतीय जनों की उस दुर्दशा को देखकर अत्यंत संतप्त हुए गोरे लोगों ने पैरों के ठोकर लगाई किंतु वह अपने कर्तव्य पथ से विचलित नहीं हुए।"

श्री महात्मा गांधीचरितम में स्वामी भागदाचार्य ने समाज में व्याप्त सामाजिक, राष्ट्रीय चेतना, विसंगतियां और ऐतिहासिकता के साथ–साथ अपने ग्रंथ में साहित्य की दृष्टि से सभी मुख्य तत्व जैसे छंद, अलंकार, भाषा, वक्रोक्ति, गुण, संधि के आधार पर काव्य का समालोचनात्मक अध्ययन किया है।

अधोलिखित के अनुसार संस्कृत काव्य में गांधीजी की भूमिका निम्न प्रकार से रही है।

1. **महात्मा गांन्धिचरितम् :–** महात्मा गांधी जहाज से इंग्लैंड को रवाना हुए इस बात को कवि ने इस ढंग से प्रस्तुत किया है कि– "वह जहाज मोहन को लेकर आंखों से इस प्रकार ओझल हो गया कि मानो चोर या डाकू बहुमूल्य वस्तु चुराकर पलायन कर रहे हो।"

"ससदरत्माचिछध्य् पलायमानो दयातिगो दस्युरिवाति पोतः।
आदाय त मोहनमाशु सर्वलोकेक्षणधवान्तधरो विलुप्तः।।
हरत्रय मोहनदीप्तरानं कृतार्थसामान्तमनि मन्यमानाः।
जयधवनिं चारचयश्चकार कबनिधविप्रुट सुमनांस्यभीक्षण्।। (4/3.4)

"आजीविकोपायहतिं न कुर्याधस्मादयं दीनजनाधिनाथः।
तसमादध्तेः श्री चरणावनित्किं न कामयामास मनाक् स दासः।।"(19/69)

यहां पर महात्मा गांधी को राम से अधिक श्रेष्ठ बताया गया है। श्री गांधी चरितम भारतपारिजातम्, पारिजातपहारः, एवं पारिजातसौरभम् इन तीन भागों में विभक्त है।

**2. गाँधी गौरव महात्मा :-** श्री शिव गोविंद त्रिपाठी जी के द्वारा परिणीत 'श्री गांधीगौरवम्' में पात्रो कावाक् चातुर्य अतिसुंदर रूप मे कुशल वक्ता को प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत है कुछ उदाहरण– "उवाच वाक्यं निज सुनू साक्षयं, ग्राह्य सुविधा लघुतोऽपि नीतिः।

"कुशाग्रबुद्धिपठनेच्छुरेच्छ, 'मोहनो' वैश्यकुललावतंसा।।
वाक्कील विधां पठनाय सोऽयं एकथं न प्रेष्येत विलायतंतु।।
रोगीयदिच्छेदिहतकारिपय्यं,तदेव दधात स तु वैधराजा।। "(1/25.26)

श्री भाऊ जोशी जी ने गांधी जी के विलायत गमन के संदर्भ में जो सिफारिश की है और वक्तव्य दिया है, वह निश्चय ही उनकी वाक् कुशलता को इंगित करता है–

"शतापधानीवयं जिघृक्षुणा
श्री गान्धिना शब्दमयं स्वभाण्डकम्।
रिक्तीकृतं पूरिवान स उत्तरै।

आधुनिक संस्कृत साहित्य में महात्मा गांधी जी को लेकर आज भी विभिन्न काव्य एवं महाकाव्यों की रचना की जा रही है। 'भगवत गीता दर्शन' महात्मा गांधी जी के सत्याग्रह आंदोलन में उनके अहिंसावादी नीति की आदर्श रही है। 'भारतविजयम्' एवं 'गांधीसौगिंधम्' महात्मा गांधी जी पर लिखे गए आधुनिक संस्कृत साहित्य के प्रमुख महाकाव्य रहे हैं। उस समय का भारत देश किन विपरीत परिस्थितियों एवं कष्टों से गुजरा होगा, हमारी भारतीय संस्कृति, देवावाणी संस्कृत एवं आधुनिक संस्कृत साहित्य में महात्मा गांधी की छवि एक राष्ट्र नायक के रूप में उभर कर सामने आयी है। महात्मा गांधी राष्ट्रीय नायक ही नहीं अपितु हर उस इंसान के लिए एक आदर्श हैं, जो अपने भारतीय संस्कारों के साथ–साथ अपने जीवन के मूल्य एवं आदर्शों को भी समाज एवं देश में एक आदर्श इंसान के रूप में प्रस्तुत करता है। आधुनिक संस्कृत काव्य में कवियों का ध्यान गांधीवादी विचारधारा की ओर विशेष रूप से आकर्षित हुआ है।

**अर्वाचीन संस्कृत काव्य :-**

भारत को आजादी दिलाने में जिन महापुरुषों ने अपना सर्वस्व निछावर कर दिया उनमें मोहनदास करमचंद गांधी का स्थान अविस्मरणीय है। जिन्हें राष्ट्र बापू, महात्मा, राष्ट्रपिता आदि के नाम से बुलाता है। महात्मा गांधी के चरित्त पर आधुनिक संस्कृत काव्य के बहुत से विद्वानों ने रचनाएं की हैं। कुछ प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएं इस प्रकार हैं–

पंडित क्षमाराम ने महात्मा गांधी जी के जीवन पर 54 अध्यायों का 'स्वराजविजयः' नामक काव्य लिखा है। जिसमें महात्मा गांधी जी के हिंदुस्तान पाकिस्तान के बंटवारे के समय हुए कष्टों का विवरण मिलता है।

"अयि भो बान्धवा मा मा भैष्टस्मिन् प्रस्तुते।
प्राणेभ्योऽपि हि मे प्रेयान् मातृभूमेः सुखोदयः।।

खण्डनं स्वशरीर करिष्येऽहं सहस्त्रशः।

न तु स्वप्ने विच्छेदं चिन्तयिष्ये जनुभुर्वः"।।[2]

महात्मा गांधी जी का कहना था कि, मेरे प्रिय देशवासियों चाहे मेरे शरीर के हजार टुकड़े हो जाएं पर इस जन्म भूमि के टुकड़े नहीं होने चाहिए।"

ब्रह्मानंद शुक्ल ने अपने 'श्रीगान्धिचरितम्' काव्य में गांधीजी के सत्य, अहिंसा मार्ग द्वारा देश को स्वतंत्र करने का वर्णन किया है। देश को स्वतंत्र कराने के लिए उन्होंने अहिंसा के मार्ग को दर्शाया। उनके इस कार्य के कारण आजादी के दीवानों के दो गुट बन गए थे– एक गरम दल और दूसरा नरम दल।

"अहिंसया सत्यबलेन कार्याण्यसाध्यान्पि यान्ति सिद्धिम।।

इत्थं व्रतं यस्य सदा समृद्धं।

जयत्यसौ मोहनदास गान्धि।।"[3]

**गान्धिचरितम्** – "आधुनिक संस्कृत में राष्ट्रीय भावना एवं संस्कृति वांग्मय में" महात्मा गांधी मे राष्ट्रीयता का अर्थ बताते हुए स्वामी भगवद आचार्य के द्वारा राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत साहित्य में महात्मा गांधी संबंधी संस्कृत साहित्य के स्थान का विवेचन किया गया है।

"प्रणम्य भारती देवीं, शम्भुरत्नं स्वकं गुरूमा।[1]

देववाणी समाश्रत्यि, लिख्यते गान्धिगौरवम।।"

निम्न श्लोक में महात्मा गांधी के जन्म से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उनके अवसान तक का संक्षिप्त विवरण है। वह 'महात्मा' नामक उपाधि से मंण्डित, सत्य अहिंसा के पुजारी, सेवा परायण, विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता, दृढ़ निश्चय, संस्कृति रक्षक, सफल बैरिस्टर आदि उदात्त गुणो से मण्डित हैं–

"प्रोचे बन्दी यदि चेद् भवानि कैश्चित्र धैर्य परिहीयमत्रा।[2]

सहस्रसंख्यासु यतोऽपि यामस्ततो धरित्रमिपि कम्ययामः।।"

महात्मा गांधी अहिंसावादी एवं वीर साहसी प्रवृत्ति के थे। मृत्यु का उन्हें कोई भय नहीं था। वह बार–बार यही उद्घोष करते हैं कि, यदि उन्हें कारागृह में डाल दिया जाए तब भी अन्य व्यक्ति अपना युद्ध धैर्य पूर्वक जारी रखेंगे।

भारत में अहिंसक स्वतंत्रता आंदोलन का प्रमुखता से नेतृत्व राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद गांधी द्वारा अनुष्ठित किया गया। महात्मा गांधी को केंद्र में रखकर संस्कृत भाषा में विपुल साहित्य लिखा गया। भगवदाआचार्य ने 'पारिजातम्' में भारत छोड़ो आंदोलन का इतिहास और 'पारिजातसौरभम्' में गांधी के स्वर्गारोहण तक का वर्णन किया है। 1944 ईस्वी में प्रकाशित अभिनंदन–ग्रंथ में भारत भाषा के मूर्धन्य कवियों ने लेख लिखकर गांधी जी की प्रशस्ति और उनके द्वारा किए गए संघर्षो का समर्थन किया। इनमें भारत प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान भी शामिल थे। इनमें विधि शेखर भट्टाचार्य, महादेव शास्त्री गोपाल शास्त्री और स्वामी भगवद आचार्य जैसे संस्कृत के महान कवि लेखक शामिल थे।" महाराष्ट्र के पंडिता क्षमाराव एवं श्रीधर भास्कर वर्णेकर के महाकाव्य, महात्मा गांधी जी को ही प्रमुखतया समर्पित हैं। गांधी जी हिंसा के खिलाफ थे इसलिए उन्हें अहिंसा का पुजारी भी कहा जाता है। गांधी जी का भारत की स्वतंत्रता में प्रमुख योगदान रहा है गांधीचरितम् में महात्मा गांधी जी की राष्ट्रीय भावना को अति सुंदर रूप में प्रस्तुत किया गया है।

**निष्कर्ष :-**

आचार्य डॉ. महेश शर्मा के अनुसार, "वस्तुतः संस्कृति की वाहिका रही है, हमारी देववाणी संस्कृत। इस संस्कृत का ही प्रताप है कि यह अनादि काल से भारतीय संस्कृति को समृद्ध करती आ रही है।" हम बिना संस्कृति और समृद्धि के राष्ट्र राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय एकता की कल्पना नहीं कर सकते। वंदे मातरम का जय घोष संस्कृत से ही निकलकर बंगाल के आनंदमठ से होते हुए जन गण मन का कंठहार बन सका। पूज्य महात्मा मोहनदास करमचंद गांधी ने गीता और राम राज्य का आदर्श तथा स्वाधीनता के लिए विनम्र संघर्ष की घोषणा भी संस्कृत ग्रन्थों से ही प्राप्त की। जब देश आजाद नहीं हुआ था तब भारत एक अखंड देश तो था, परंतु उस समय अखंड हिंदुस्तान सुनहरे इतिहास से मेल नहीं खाता था। आधुनिक संस्कृत साहित्य में श्री ब्रह्मानंद शुक्ल जी के द्वारा गांधीचरितम् में दक्षिण अफ्रीका और वहां भारतीय लोगों की मनोदशा का अत्यधिक भाव विभोर कर देने वाला वर्णन किया गया है जो सहृदयों के मन को अंदर तक विचलित कर देता है।

**संदर्भ सूची :-**


1. त्रिपाठी, राधावल्लभ संस्कृत साहित्य; बीसवी शताब्दी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1999, पृष्ठ सं0 21–22
2. https://hindi.oneindia.com/opinion/role&of&sanskrit&literature&in&the&independence&movement&701847.html, स्वतंत्रता आंदोलन में संस्कृत साहित्य की भूमिका।
3. https://rajasthansanskritacademy.com/memory&sanskrit/(पार तंत्रय के विरोध और स्वातंत्र्य के पक्ष में संस्कृतज्ञों ने जो आंदोलन चलाया, उसके स्मरण की आवश्यकता है)
4. वही।
5. https://www.exoticindiaart.com/book/details/mahatma&gandhipark&sanskrit&kavya&old&and&rare&book&azi012/(महात्मा गांधी परक संस्कृत काव्य डॉ. कुमुद टंडन ईस्टर्न बुक लिंकर, प्रश्न संख्या 111–164, द्वितीय अध्याय, महात्मा गांधी पर आधारित काव्य में पात्र योजना)
6. https://www.exoticindiaart.com/book/details/literary&study&of&shri&mahatma&gandhi&charitam&nzs508/
7. https://www.shodhadarsh.page/2019/11/aachaary&brahmaanand&shukl&ke&koFG3S-html\m (1) आचार्य ब्रह्मानंद शुक्ल के संस्कृत काव्य में देश प्रेम की भावना)
8. https://www.exoticindiaart.com/book/details/mahatma&gandhipark&sanskrit&kavya&old&and&rare&book&azi012/
9. https://www.exoticindiaart.com/book/details/mahatma&gandhipark&sanskrit&kavya&old&and&rare&book&azi012/
10. https://www.exoticindiaart.com/book/deta
11. वही।
12. पाठक जगन्नाथ (संपादक) आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास उ0 प्र0 संस्कृत संस्थान, लखनऊ प्रथम संस्करण 2000 पृष्ठ सं–149

13. वहीं, पृष्ठ सं 154
14. https://www.exoticindiaart.com/book/details/literary&study&of&shri&mahatma&gandhi&charitam&nzs508/ (श्री महात्मा गांधी चरितम का साहित्य शास्त्रीय अध्ययन)
15. https://www.shodhadarsh.page/2019/11/aachaary&brahmaanand&shukl&ke&koFG3S.html\m(1) (श्री महात्मा गांधी चरितम का साहित्य शास्त्रीय अध्ययन)
16. https://www.shodhadarsh.page/2019/11/aachaary&brahmaanand&shukl&ke&koFG3S.html\m(1) (श्री महात्मा गांधी चरितम का साहित्य शास्त्रीय अध्ययन)
17. https://hindi.oneindia.com/opinion/role&of&sanskrit&literature&in&the&independence&movement&701847.html (स्वतंत्रता आंदोलन में संस्कृत साहित्य की भूमिका)
18. https://hindi.oneindia.com/opinion/role&of&sanskrit&literature&in&the&independence&movement&701847.html (स्वतंत्रता आंदोलन में संस्कृत साहित्य की भूमिका)
19. https://www.deshbandhu.co.in/parishist (संस्कृत में देश भक्ति)

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 119-122

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गाँधी और राष्ट्र भाषा हिंदी

**डॉ. तजिंदर भाटिया**

विभागाध्यक्षा – हिन्दी विभाग, आर्य कॉलेज लुधियाना, पंजाब।

एक संपन्न गुजराती वैश्य परिवार में काठियावाड़ के पोरबंदर में २ अक्टूबर १८६९ को जन्मे मोहनदास करमचंद गाँधी भारत देश के राष्ट्रपिता कहलाये। वे आधुनिक भारत के असाधारण महापुरुष, महान राष्ट्रीय नेता, देशप्रेमी, राजनीति विशेषज्ञ, संत, विचारक, श्रेष्ठ समाज सुधारक होने के साथ एक सुशिक्षित वकील भी थे। वे राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक थे।उनके शब्द थे, "किसी भी व्यक्ति के लिए राष्ट्रवादी होने के बिना अन्तर्राष्ट्रवादी होना असंभव है।"[1]

महात्मा गाँधी कहलाने वाले गाँधी के बारे में डॉ. राधाकृष्णन ने कहा था, "इस वसुंधरा पर एक पवित्र, भद्र, साहसी और श्रेष्ठ आत्मावाला व्यक्ति कभी भी विचरण नहीं किया। गाँधी मनुष्यों के मनुष्य, वीरों के वीर, देश भक्तों के देशभक्त वर्णित किये जा सकते हैं। वर्तमान समय में वे भारतीय आत्मा के प्रतीक स्वरूप हैं।"[2]

महात्मा गाँधी की मातृभाषा गुजराती थी और अंग्रेजी भाषा का भी वे उच्चकोटि का ज्ञान रखते थे, किन्तु सभी भाषाओं के प्रति उनके मन में विशेष प्रकार की भावना थी। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करे। उसमे कार्य करे, परन्तु सम्पूर्ण देश में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली भाषा हिंदी, देश का प्रत्येक व्यक्ति जरूर सीखे। सं १९०६ ईस्वी में उन्होंने अपनी एक प्रार्थना में कहा था, "भारत की जनता को एक रूप होने की शक्ति और उत्कंठा दे, हमें त्याग, भक्ति और नम्रता की मूर्ति बनाएं, जिससे हम भारत देश को ज्यादा समझे, ज्यादा चाहें। हिंदी एक ही है, उसका कोई हिस्सा नहीं है। हिंदी के अतिरिक्त दूसरा कोई हमें इस दुनिया में प्यारा नहीं है।"

गाँधी जी को हिंदी नहीं आती थी। उन्होंने बड़े प्रयत्नपूर्वक हिंदी सीखी। सं. १९१६ में लखनऊ मंस अखिल भारतीय सम्मलेन हुआ, जिसकी अध्यक्षता गाँधी जी ने की थी। अपने हिंदी सीखने के बारे में उन्होंने कहा, "मैं हिंदी सीखना चाहता था। अहमदाबाद में हिंदी सिखाने वाला कोई नहीं था। एक गुजराती सज्जन से, जो टूटी फूटी हिंदी जानते थे, काशी में १५–२० वर्ष रहे थे, मैंने हिंदी सीखी।।"

८ फरवरी १९१५ को मुंशी राम जी को लिखे पत्र में उनकी हिंदी ऐसे थी–"आपका तार मुझे मिला था, उसका उतर मैंने तार से भेजा था। वे आपको मीला होगा। मेरे बालको के लिए जो परिश्रम आपने उठाया, उनको जो प्यार बतलाया उस वास्ते आपका उपकार। मैंने भाई एडरूझ को लीखा था। लेकिन आपके चरणों में सिर झुकाने की मेरी उम्मीद है।"[3] इसके बाद उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की जेल में रहते हुए विभिन्न भाषाओँ के साथ–साथ हिंदी के ज्ञान को बढ़ाया। वॉयसराय के सामने वे हिंदी में ही बोले। मई १९१८ में गाँधी जी ने अंग्रेजी

का विरोध और हिंदी का समर्थन करते हुए कहा, "हिन्दी ही हिंदुस्तान के शिक्षित समुदाय की सामान्य भाषा हो सकती है, यह बात निर्विवाद सिद्ध है। यह कैसे हो, केवल यही विचार करना है। जिस स्थान को आज कल अंग्रेजी भाषा लेने का यतन कर रही है और जिसे लेना उसके लिए असंभव है, वही स्थान हिंदी को मिलना चाहिये क्योंकि हिंदी का उस पर पूर्ण अधिकार है। अंग्रेजी की बजाए हिंदी सीखना बहुत सरल है। आज तक हमारा व्यवहार और देशी काम हिंदी में आरम्भ नहीं हो पाया। इसका कारण हमारी भीरुता, अश्रद्धा और हिंदी भाषा के गौरव का अज्ञान है। यदि हम भिरुता छोड़ दें, श्रद्धालु बनें, हिंदी का गौरव समझें तो हमारी राष्ट्रीय और प्रांतीय परिषदों तथा सरकारी व्यवस्था सभाओं का भी व्यापार हिंदी में चलने लगेगा।"[4] सन १९१७ में कलकत्ता में कांग्रेस अधिवेशन में राष्ट्रभाषा प्रचार से सम्बंधित कांफ्रेंस में तिलक ने अंग्रेजी में भाषण दिया तो गाँधी जी ने कहा, "बस इसीलिए मैं कहता हूँ कि हिंदी सीखने की आवश्यकता है। मैं ऐसा कोई कारण नहीं समझता कि हम अपने देशवासियों के साथ अपनी भाषा में बात न करें। वास्तव में अपने लोगों के दिलों तक तो हम अपनी भाषा के द्वारा ही पहुंच सकते हैं।"[5]

वे हिंदी भाषा के लिए देवनागरी लिपि प्रयुक्त करने के प्रबल पक्षधर थे, क्योंकि उनके अनुसार देवनागरी लिपि संसार की सबसे अधिक वैज्ञानिक, परिपूर्ण और निर्दोष लिपि है और राष्ट्रीय एकता में भी सहायक है। वे हिंदी भाषा के केवल प्रबल समर्थक ही नहीं थे, बल्कि वे राष्ट्रभाषा के प्रचार, प्रसार के लिए भी सदैव प्रयत्नशील रहे। उन्होंने अपने पुत्र देवदास गाँधी को दक्षिण भारत हिंदी के प्रचार के लिए भेजा था। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना भी उन्ही की परिकल्पना के फलस्वरूप हुई थी। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हिन्दीतर प्रदेशों के जन–नेताओं को भी हिंदी में कार्य करने की लिए प्रेरित किया। जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने हिंदी भाषा को सीख कर उसे जन सम्पर्क का माध्यम बनाया था। हिंदी साहित्य के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा थी। तुलसीदास के रामचरितमानस के प्रति तो उनके मन में विशेष स्नेह था। रामराज्य की कल्पना भी इसी ग्रन्थ के श्रद्धा के कारण ही थी। मीराबाई के भजन तो उनके साबरमती के आश्रम की सदैव शोभा बढ़ाते थे। आधुनिक हिंदी साहित्यकारों के साथ भी उनके कई रोचक प्रसंग मिलते है। महाकवि निराला का किस्सा तो प्रसिद्ध है ही कि जब उन्होंने कहा था कि हिंदी में कोई टैगोर नहीं है तो निराला जी भड़क गए और उनका विरोध किया, तत्पश्चात उनकी अति सुंदर रचनाएं पढ़ कर गाँधी जी ने उनके सामने अपनी भूल स्वीकार की। इसी प्रकार जब पाण्डे बेचन शर्मा उग्र की किताब 'चॉकलेट' पर बनारसी दास चतुर्वेदी ने अश्लीलता का आरोप लगा कर उसे घासलेटी साहित्य कहा तो गाँधी जी ने न सिर्फ खुद किताब पढ़ी, बल्कि उसे समाज कि लिए हितकारी बताते हुए अपने पत्र 'हरिजन' में इस पर एक लेख भी लिखा। मुंशी प्रेमचंद, जिन्हे आज हिंदी साहित्य के पाठक उपन्यास सम्राट के नाम से जानते हैं, उन्होंने अपना राष्ट्रीय आंदोलन और हिंदी लेखन से जुड़ने का श्रेय गाँधी जी को ही दिया।

गुजराती से टूटी फूटी हिंदी बोलने वाले गाँधी जी की हिंदी भाषा के प्रति लग्न और श्रद्धा इतनी बढ़ी कि उन्होंने न केवल शुद्ध हिंदी सीखी, बल्कि अपने लेखन में भी प्रयोग किया। निम्नलिखित गद्यांश में गाँधी जी द्वारा लिखे गए गंगा तट पर यात्रा वृतांत में हिंदी भाषा का सौंदर्य दृष्टव्य है– "अरुणोदय और सूर्योदय का दृश्य सब स्थानों पर भव्य होता है, लेकिन गंगा जी के तट पर तो यह दृश्य मुझे नितांत अद्भुत जान पड़ा।"[6]

बापू गाँधी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में अपनी पूरी शक्ति, पूरा सहयोग लगाया। परन्तु आज भी हिंदी

राष्ट्रभाषा बनने के लिए संघर्ष कर रही है। संन २०१८ में इंदौर में हिंदी दिवस पर हुए सम्मेलन के अवसर पर हिंदी साहित्त्य समिति के अध्यक्ष ने कहा था– "वो साल १९१८ था, आज २०१८ है। १०० साल हो चुके है। लेकिन आज तक बापू गाँधी के सपने को कोई सरकार पूरा नहीं कर पायी है। बापू ने अपने इस सपने का खुलासा इंदौर में ही किया था। यहां महात्मा गाँधी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने कि अपने सपने की घोषणा की थी। फिर देश आजाद हुआ और आज इस घोषणा को १०० साल बीत गए, लेकिन कोई भी सरकार बापू के इस सपने को साकार न कर सकी।" पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपायी ने भी कहा था–"आजादी तक राष्ट्रभाषा कही जाने वाली हिंदी संविधान लागू होते ही राजभाषा बन गयी। इंदौर में भी महात्मा गाँधी मार्ग एम जी रोड हो गया और रविंदर नाथ टैगोर मार्ग बन गया आर एन टी मार्ग। हिंदी के प्रति अनुराग तो रहा, लेकिन इसे राष्ट्रभाषा बनाने की पहल नहीं हो पायी।"[7]

आज के समय में हिंदी भाषा चाहे राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन न हो पायी हो लेकिन देश विदेश में हिंदी की धूम है। विज्ञापन जगत तो हिंदी का श्रद्धालु भक्त हो गया है।शायद गाँधी जी के हिंदी प्रेम से ही यह संभव हो पाए कि एक न एक दिन हिंदी भाषा को उसका वाजिब सम्मान प्राप्त हो। बापू गाँधी भारत के स्वतंत्रता सेनानी के रूप में पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं, तभी उन्हें राष्ट्रपिता की उपाधि से नवाजा गया है।

प्यारे लाल नामक लेखक के निजी नोट्स में उल्लेख मिलता है कि– "गाँधी से अल्बर्ट आइंस्टीन, मार्च १४–१८७९ अप्रैल की भेंट हुई थी। गाँधी की पसलियों पर उभरे भारत के नक्शे एवं गाँधी के आत्मबल की अमिट छाप उन पर पड़ी थी। तभी तो गाँधी के अवसान पर श्रद्धा स्वर में आइंस्टीन ने कहा था– "आने वाले समय में लोग मुश्किल से यकीन करेंगे कि कभी इस धरती पर हाड–मांस का एक ऐसा भी मानव था।"[8]

मगर ऐसे महामानव के आदर्शों, राष्ट्र व् राष्ट्रभाषा के प्रति योगदान को आज हम कितना सम्मान दे रहे हैं? महात्मा गाँधी भारत के न्यायालयों में हिंदी को प्रतिष्ठापित करना चाहते थे, परन्तु आज तक उच्च न्यायालयों की भाषा अंग्रेजी है। जिससे जनसाधारण तो यह जान ही नहीं पाता कि उसके साथ न्याय हुआ है या अन्याय। अभी हाल ही में संयुक्त अरब अमीरात की राजधानी आबूधाबी ने हिंदी को अपनी अदालतों में अरबी और अंग्रेजी के बाद तीसरी आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल कर लिया है। 'इसके उल्ट हमारी उच्च व उच्चतम न्यायालयों में शीर्ष नौकरशाही का आलम यह है कि वे अंग्रेजी न्याय व्यवस्था को कायम रखते हुए लकीर के फकीर बने हुए हैं। हिंदी समेत अन्य भाषाओं में न्यायिक प्रक्रिया की सभी अपीलें व सभी दलीलें अदालत की दहलीज पर पहुंचते ही ठिठक जाती हैं। इस दृष्टि से अबुधाबी की पहल भाषाई परिपेक्ष्य में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की भावना और जनतन्त्र की कसौटी भी यही मानती है कि सभी तरह के राजकाज आम लोगों की भाषा में क्रियान्वित हों। किन्तु हमारे यहां इस पुनीत भावना का जितना निरादर हुआ, उतना अन्य किसी क्षेत्र में शायद ही हुआ हो।"[9]

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने हिंदी के प्रचार–प्रसार में अपना सारा जीवन लगा दिया। इस देश के नागरिक होने के नाते हम सब भारतवासी हिंदी की प्रगति में अपना योगदान दें। आज हिंदी फल फूल रही है और इसका भविष्य उज्जवल बनाने के लिए हमे हिंदी के प्रचार प्रसार में हर सम्भव कदम उठा कर राष्ट्रपिता के हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करवाने के सपने को सच कर दिखाना होगा।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-**


1. Gandhi, Young India, उध्दृत–गाँधी दर्शन, चंदरदेव प्रकाश, अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि. चेन्नई २०१४, पृष्ठ १८ (भूमिका भाग)
2. डॉ. राधाकृष्णन, महात्मा गाँधी ऑफ़ अर्ली फ़ैज़, वॉल.–१ उद्धृत वही, पृष्ठ २५ (भूमिका भाग)
3. गाँधी विचार और साहित्य, डॉ. सुमन जैन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१०, पृष्ठ २६
4. वही, पृष्ठ २७–२८
5. बड़ों की बड़ी बात, पुन सम्पादन भारत दर्शन, https://www.bharatdarshan.com
6. गाँधी विचार और साहित्य, पृष्ठ २८
7. https://www.jagran.com. News,14 Sep-2018.
8. समाज धर्म (मासिक पत्रिका), मेहतपुर, हिमाचल प्रदेश, वर्ष ११, अंक–१, जनवरी २०१५, पृष्ठ ४३
9. अक्षरा, (साहित्य की मासिकी), मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल, जुलाई २०१६, अंक १७२, पृष्ठ ३३



फोन. ९९८८१५९३४३

इ.मेल– atsweety837@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 123-129

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# नागार्जुन के काव्य में गांधी दर्शन

**डा० नेहा भाकुनी**

सहायक प्राध्यापक –हिंदी विभाग, पं० बद्री दत्त पाण्डे परिसर बागेश्वर।

**सार :–**

एक व्यक्ति है– ठक्कन / वैद्यनाथ मिश्र / विदेह / यात्री / नागार्जुन / बाबा, आधुनिक युग का कबीर। कविवर नागार्जुन अपनी सरलता और जिजीविषा के नाते सबके लिए 'बाबा नागार्जुन' थे। साहित्य अकादमी ने उनकी मैथिली काव्य कृति 'पत्रहीन नग्नगाछ' के लिए अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया था तथा समग्र साहित्यिक योगदान के लिए उन्हें महत्तर सदस्यता प्रदान की थी। अपनी धरती से प्यार और वर्ग–शत्रु से नफरत में नागार्जुन का यही मानववादी स्वर उभरा है। नागार्जुन का व्यक्तित्व सरलता और दृढ़ता का अद्भुत समन्वय था। अपने परिवेश के प्रति विद्रोह वृत्ति ने उन्हें रचनात्मक दिशाओं की ओर सक्रिय रखा। यही विद्रोह उनके प्रेरक शक्ति भी बना। हिंदी में नागार्जुन ने मुख्यतः दो विधाओं में रचनाएं की हैं–कविता और उपन्यास। दोनों रूपों में ही उन्हें ख्याति मिली। पिछले दो दशकों से उनकी रचनाओं में विशेषतः कविता के क्षेत्र में उनकी विशिष्ट पहचान बनी। नागार्जुन सच्चे अर्थों में जन कवि थे और भारत की विराट जनता उनका प्रेरणा स्रोत रही है। नागार्जुन के काव्य संग्रह में बहुत से कविताओं में गांधी जी का जीवन दर्शन लिखा गया है। नागार्जुन ने हिंदी मे स्फुट रूप से 1930–35 में लिखना प्रारंभ किया। इस समय राष्ट्र महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता युद्ध में रत था। गांधी जी जहां एक ओर राजनीतिक संघर्ष का नेतृत्व कर रहे थे तो दूसरी ओर समाज उत्थान के लिए वे रचनात्मक कार्यों का भी नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने मानवता–विरोधिनी सामाजिक रूढ़ियों को महा–व्याधि माना और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकने का संकल्प किया। महात्मा गांधी इस समय अछूतो द्वार, ग्राम संगठन, पीड़ितों की सेवा, किसान–मजदूर का उन्नयन आदि सभी समाज सुधारो के कार्य में लगे हुए थे।

**बीज शब्द** – प्रगतिशील, मसिजीवी, दर्शन, समसामयिक, जनवादी।

**प्रस्तावना :–**

मिथिला की अमराईयों में 14वीं सदी के उत्तरार्ध में कवि कोकिल विद्यापति की स्वर–माधुरी गूंजी थी, वही सन 1911 की ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा, दुपहरी को नागार्जुन का जन्म हुआ। मिथिलांचल के जिला दरभंगा का तरौनी ग्राम नागार्जुन का पितृग्राम है। जाना प्रायः यह जाता है कि वे वही पैदा हुए होंगे, लेकिन सच्चाई यह है कि उनका जन्म मातृग्राम (ननिहाल) सतलखा में हुआ। यह उसी जिले के मधुबनी अंचल में पड़ता है। हो सकता है कि ननिहाल में पैदा होने की वजह से ही नागार्जुन के भावना लोक में मां का स्थान, पिता की अपेक्षा, बहुत ऊंचा है।[1]

किसी भी कवि को बनाने में उसके संस्कार, परिवेश, विशिष्ट व्यक्तियों से संपर्क तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, साहित्यिक परिस्थितियों का विशेष योगदान रहता है। उसकी विचारशीलता और निरंतर स्पन्दित होने वाला भावुक हृदय उसे मसिजीवी बना देता है। भारत पराधीन था अंग्रेजी कूटनीति के सामने प्रायः सारी क्रांति की चिंगारियां प्रभावहीन हो रही थी, लेकिन एक गरम माहौल बनता जा रहा था। नागार्जुन का काव्य अधिकांशतः राजनीतिक प्रभावों का दस्तावेज है। राजनीति में अवसरवादिता, चुनावी टिकट की भागमभाग, नेताओं के मुखौटे, रूस की साम्राज्यवादी नीति, समसामयिक राजनीतिक संदर्भों पर कवि नागार्जुन की पैनी नजर पहुंचती है। नागार्जुन अत्यधिक घुमक्कड़ी स्वभाव के रहे हैं। कब इस फक्कड़ का चिमटा दूसरी जगह गढ़ जाएगा, कोई नहीं जनता था। इस प्रकार मैथिली नाम यात्री को सार्थक करते रहे हैं। प्रगतिशील कवि का जनवादी व्यक्तित्व उनके अपने अध्ययन, विवेक तथा मानवीय आस्था की उपज है। हिंदी के विशालवट वृक्ष बाबा नागार्जुन का निधन 5 नवंबर 1998 को यह महान व्यक्तित्व सुबह छः पच्चीस पर इस संसार सागर को पार करके दूसरी दुनिया में प्रवेश कर गया। 60–55 वर्ष साहित्यिक जीवन में उन्होंने संसार को अपनी रचनाओं से अनुग्रहीत किया। नागार्जुन का काव्य संग्रह हिंदी साहित्य में बहुत ही समृद्ध है। उनके काव्य संग्रह हैं –युगधारा (1953) सतरंगे पंखों वाली (1959), प्यासी पथराई आंखें (1962), तालाब की मछलियां (1975), खिचड़ी विप्लव देखा हमने (1980), तुमने कहा था (1980), हजार–हजार बाहों वाली (1981), पुरानी जूतियों का कोरस (1983),रत्नगर्भ (1984), ऐसे भी हम क्या! ऐसे भी तुम क्या? (1985), आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने? (1986), इस गुब्बारे की छाया में (1990), भूल जाओ पुराने सपने (1994), अपने खेत में (1997)। नागार्जुन कवि ने अपने काव्य में गाँधी जी के चरित्र एवं दर्शन का चित्रण किया है, जो किइस प्रकार है–

**युगधारा :–**

'युगधारा' कवि का प्रथम काव्य संकलन है, जिसका प्रथम संस्करण 1953 में और तृतीय 1987 में प्रकाशित हुआ। 'युगधारा' सामाजिक यथार्थ की उन रचना–धाराओं को अपने में समेटे है जो इससे पूर्व कई पत्र–पत्रिकाओं में प्रवाहित होती रही। 'युगधारा' पक्षधर कविता का आधार–स्तंभ है। इस संग्रह की रचनाओं में कवि की विविध भाव भंगिमाओं को एक साथ देखा जा सकता है। इसमें देश की सामाजिक, आर्थिक स्थितियों का चित्रण है। बापू की हत्या पर क्षुब्ध कवि जब "साम्राज्यवादी दैत्यों के विकट खोह जब तक खण्डहर ना बनेंगे। मेरी लौह लेखनी विश्राम न लेगी' की 'शपथ' लेता है तो उसके लिए उसे कारावास दंड सहन करना पड़ा, किंतु इस वयोवृद्ध जनवादी कवि ने अपनी लौह लेखनी को विश्राम नहीं दिया। यही कारण है कि कवि ने आधी से भी अधिक 20वीं सदी को लेखनीबद्ध किया है।"[2]

**शपथ :–**

बापू, तुम तर्जनी उठा कर
आसमान से मना कर रहे–देख रहा हूं,
पर, कितनी भी लंबी हांकें
हृदय नहीं परिवर्तित होगा
क्रूर कुटिलमति, चाणक्यों का
नहीं–नहीं, कभी नहीं।[3]

कवि की यह रचना, उनकी प्रगतिवादी चेतना की भरी–पूरी विशेषताएं लिए हुए हैं। इस समय एक ओर 'शपथ' और 'तर्पण' जैसी कविताएं हैं। जिनमें गांधी की हत्या के संदर्भ में कवि की देशभक्ति तथा राष्ट्रीयता वाणी में व्यक्त हुई है। वहीं दूसरी ओर 'प्रेत का बयान' जैसी व्यंग्यशील रचनाएं भी हैं। 'बापू' की हत्या से कवि का हृदय वेदनासिक्त हो न केवल स्वयं रोया वरन् संपूर्ण प्रकृति ही आंसू बहते अनुभव हुई। उनके भावोद्‌गार संपूर्ण पृथ्वी को उन्मनावस्था में पाते हैं :

'गंगा जमुना सभी रो रही
दसों–दिशाएं ध्वनित हो रही
पृथ्वी उन्मन
विकल है गगन
नील जलधि शतशः उद्वेलित
स्तब्ध हिमालय के शिखरों पर धनीभूत हो रहे तुहिन
तृण–तरू–वृक्ष–वनस्पति सारे खिन्न खड़े हैं
मृदुल मनोरम लतिकाओं की क्रांति म्लान है
शोक–क्षोभ से पशु–पक्षी के मुंह उदास हैं।"[4]

**तर्पण :–**

गांधी की हत्या पर लिखी विशिष्ट रचना है जिसे 18 पत्र पत्रिकाओं ने संप्रेषित किया। 'शपथ' साम्प्रदायिकता के विरुद्ध कवि का आक्रोश है। इस रचना के लिए कवि को सरकार की ताड़ना सहनी पड़ी। इस रचना को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि देश का प्रत्येक जीव क्षुब्ध है और उसे समस्त क्षोभाग्नि को पीकर कवि ने 'शपथ' ली है। क्योंकि इन अमानवीय कृत्य करने वालों को वह मानवता का महाशत्रु मानता है।

''जिस बर्बर ने
कल किया तुम्हारा खून पिता
वह नहीं मराठा हिंदू है
वह प्रहरी है स्थिर स्वार्थों का
वह मानवता का महाशत्रु।[5]

कवि की समग्र काव्य चेतना के उज्ज्वल प्रकाश 'तर्पण' की किरणें इसी संग्रह में भासित होने लगते हैं। सामाजिक, राजनीतिक तथा मानवीय भूमिका पर लिखी गई। इस संग्रह की कविताएं, आस्था, निष्ठा तथा जिजीविषा की दृष्टि से ओत–प्रोत हैं। शैली का रूप भिन्न–भिन्न होने पर भी भाषिक तारल्य एक सा है। वस्तुतः अपने में अनेक भाव–निर्झर समाहित किए हुए 'युगधारा' हिंदी कविता के कविता में एक मील का पत्थर है।

**तुमने कहा था :–**

इस कविता–संग्रह का प्रथम संस्करण वाणी प्रकाशन से 1980 में प्रकाशित हुआ। संग्रह से पूर्व ही कवि की रचनाओं ने विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में अपनी काव्य–यात्रा आरंभ कर दी थी। इस संग्रह में व्यक्ति–परक रचनाओं की बहुलता है। नागार्जुन का काव्य समाज केंद्रित है और समाज के सामान्य व्यक्ति की अभिव्यक्ति है। व्यक्ति विशेष के माध्यम से भी कवि ने देश के राजनीतिक, आर्थिक चित्र प्रस्तुत किए हैं, कहानी वह प्रशस्तियां,

तो कहीं व्यंग। 'बतला दो बापू क्या थे तुम', 'तुम में' नागार्जुन गांधी के सिद्धांतों पर श्रद्धा रखते हैं, लेकिन इसमें उनके संदेशों को याद करते हुए उनके पीछे के दिखावे को भी चित्रित किया है। 'तीनों बंदर बापू के' सर्वोदयवादियों पर व्यंग्य है कि गांधी के शिष्य, उनके सरल सूत्रों को अपने स्वार्थों के अनुसार परिभाषित कर उन्हें उलझा रहे हैं।

बतला दो बापू क्या थे तुम?
शिशु सुलभ सहज मुस्कान लिए
शायद तुम हम पर हँसते हो।
छोड़ो, इस दिल में क्या–क्या है
नाहक ही अंदर धंसते हो।
बाहर वेदी पर जमे रहो
जय जय हे पूजा के प्रतीक?
अपना पाएँगे कैसे हम
फिर सत्याग्रह की वही लीक?[6]

तीनों बंदर बापू केमें वह कटाक्ष करते हैं–

बापू के भी ताऊ निकले तीनों बंदर बापू के
सरल सूत्र उलझाऊ निकले तीनों बंदर बापू के
सचमुच जीवनदानी निकले तीनों बंदर बापू के
ज्ञानी निकले, ध्यानी निकले तीनों बंदर बापू के।
जल–थल–गगन– विहारी निकले तीनों बापू के
लीला के गिरधारी निकले तीनों बन्दर बापू के।[7]

हिंदी साहित्य पर गांधी का प्रभाव परी परिशुद्धता के साथ व्याप्त है। महात्मा गांधी ने भारत भूमि की स्वाधीनता के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वे जनमानस में सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, शांति, सद्भाव, सर्वधर्म सम्भाव समानता एवं मानवता की भावना जागृत करने के लिए सतत संघर्षशील रहे। गांधी जी के आदर्शों का प्रभाव जहां हिंदी के कथा साहित्य पर संपूर्णता में व्याप्त हुआ है वही कविता साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा।

गाँधी गाँधी गाँधी
गाँधी, गाँधी, गाँधी, गाँधी,
गाँधी को घेरे हैं गाँधी
गाँधी को घेरे हैं गाँधी
अंदर गाँधी, बाहर गाँधी
नीचे गाँधी, ऊपर गाँधी
आंधी मैं गिरते हैं पत्ते
दिल्ली पहुंच गई कलकत्ते

जय माँ काली, जय माँ काली,
सुनती जै–जै, सुनती गाली।[8] (24 सितम्बर 1987)

बापू
पशु–सदृश हम चर रहे
नहीं कुछ भी कर रहे
तुच्छ स्वार्थों के लिए मर रहे
किंतु फिर भी प्यार से
देव, तुम उस पार से
झाकते हो हमें कारागार से।[9]

30 जनवरी, 1948 ई. को महात्मा गांधी की हत्या हुई और इसके 10 दिनों के भीतर ही नागार्जुन की चार क्षोभ–व्यजक कविताएं 'शपथ', 'तर्पण', 'गोडसे' और 'मत क्षमा करना', 'जनशक्ति', दैनिक, पटना में 'शोणित–तर्पण' नामक मुख्य शीर्षक के अंतर्गत छपती रही। उल्लेखनीय है कि बिहार के तत्कालीन प्रशासन ने उन रचनाओं को 'वर्जित रचना' की सूची में डालकर कभी और अखबार पर कानूनी कार्यवाही की और उन्हें प्रताड़ित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। फलस्वरुप नागार्जुन को स्वतंत्र भारत में पहली बार जेल जाना पड़ा। लेकिन इस वर्ष उन चारों कविताओं की पहली बुकलेट भी छपी। नाम था–'शपथ'। यह नागार्जुन की हिंदी कविताओं की पहली बुकलेट थी।[10] हंस के सितंबर 1945 काव्य संग्रह हजार–हजार बाहों वाली में नागार्जुन की गांधी कविता की निम्न पंक्तियां इस प्रकार हैं :–

गांधी
कल मैंने तुमको फिर देखा
हे सर्वकाय, हे कृश शरीर,
हे महापुरुष, हे महावीर
हां लगभग ग्यारह साल बाद
कल मैंने तुमको फिर देखा
हे देव, तुम्हारे दर्शन को
फल जुटे आदमी दस हजार![10]

नागार्जुन के युगधारा, जनशक्ति, 1984 में गाँधी जी पर लिखी लम्बी कविता तर्पण की निम्नलिखित पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

वह मनुष्यत्व के पूर्ण चंद्र का सर्वग्रासी महाराहु
हम समझ गए
चट से निकाल पिस्तौल
तुम्हारे ऊपर कल
वह दाग गया गोलियां कौन?
हे महाप्राण, किसने तेरी अंतिम सांसें

बरबस छीनी भारत मां से
हम समझ गए।
बापू महान
बापू महान, बापू महान
हे सत्य–अहिंसा के प्रतीक
हे प्रश्नों के उत्तर सटीक
हे युग निर्माता, युगधार
आतंकित तुमसे पाप–पुंज
आलोकित तुमसे जग महान।[11]

हिंदी साहित्य पर महात्मा गांधी जी के प्रभाव को स्पष्ट एवं व्यापक रूप में देख सकते हैं। उनके चिंतन–दर्शन, राष्ट्र नवनिर्माण एवं स्वराज की कल्पना को हिंदी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं का विषय बनाया। साहित्य समाज का दर्पण होता है और समाज में हो रही घटनाओं का समकालीन एवं उसके बाद की साहित्य पर प्रभाव पड़ना अनिवार्य हो जाता है। गांधी जी ने सभी परिस्थितियों में अहिंसा और सत्य का पालन किया और सभी को इनका पालन करने के लिए वकालत भी की।

नागार्जुन की कविताओं की तरह उनकी डायरी भी उनकी सजग राजनीतिक चेतना का प्रमाण है। नागार्जुन की पहली डायरी की शुरुआत ही नई दिल्ली में राजघाट पर बापू के समाधि–स्थल के दर्शन से हुई है। डायरी के इस अंश में लेखन में गांधी व उनके साहित्य के प्रति अपनी आस्था को प्रकट किया है।

नागार्जुन बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार थे। उन्होंने उपन्यास, काव्य, अनुवाद, कहानी, निबंध, आलोचना, संस्मरण, यात्रावृत्त, बाल–साहित्य आदि साहित्यक विधाओं को अपनी लेखनी का विषय बनाया। हिंदी, मैथिली और संस्कृत तीनों ही भाषाओं में उन्होंने साहित्य–रचना की है। आधुनिक युग में गांधी दर्शन का प्रचार काफी हो रहा है, लेकिन वास्तव में गांधी जी के चिंतन की आज के युवा को आवश्यकता है ताकि वे देश के सशक्त युवा बनकर सामने आए। गांधी जी का जन्म भारत में अवश्य हुआ था लेकिन उनका नाम महाद्वीपों में प्रतिध्वनित होता है। वर्तमान में जो गांधी जी के दर्शन एवं सिद्धांतों के प्रासंगिकता की बात होती है तो आज भी महात्मा गांधी के विचार उतने ही अनुकरणीय एवं प्रासंगिक हैं जितने अपने वक्त रहे होंगे। भारतीय युवा हमेशा गांधी जी के चिंतन का केंद्र बिंदु रहा है यह विडंबना है कि आज का युवा पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हो रहा है और उसकी सोच को आधुनिकता एवं आधुनिक उपकरणों ने निरंकुश कर दिया। ऐसी परिस्थितियों में गांधी के विचारों की सर्वाधिक आवश्यकता युवाओं को है। गांधी जी के द्वारा दिए दार्शनिक सिद्धांत इस प्रकार हैं :

**सत्य :–**

गांधी जी के जीवन का सर्वश्रेष्ठ तत्व है। इसमें शिवम और सुंदरम दोनों निहित हैं। उनका संपूर्ण जीवन सत्य के लिए एक प्रयोग रहा। उनका मानना था कि जब हम किसी सत्य की भावना का अनुभव किया जाता है तब हम ईश्वर के अस्तित्व का अनुभव करते हैं।

**अहिंसा :–**

गांधी जी का कहना है कि अहिंसा सब धर्म का मूल है। सत्य को अहिंसा के माध्यम से जाना जा सकता

है। हिंसा क्रोध और भाई की भावना पैदा करती है। इसलिए यह सत्य को समझने में बाधक है उनका मानना था कि सत्य और अहिंसा दोनों का घनिष्ठ संबंध है कि इन दोनों को एक दूसरे से अलग करना असंभव है। सत्याग्रहः सत्य पर अडिग रहना। गांधी जी के अनुसार इसका अर्थ है अन्याय और सत्य का अहिंसा पूर्ण साधनों से मुकाबला करना, सबसे प्रेम करना और इन सबके लिए कठिनाइयों को सहन करना।

**निर्भरता :–**

सत्य और अहिंसा के लिए निर्भरता आवश्यक है। जो व्यक्ति निर्भीक नहीं है वह सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का पालन नहीं कर सकता। अतः व्यक्ति को सब प्रकार के भाइयों से मुक्त होना चाहिए। ईश्वरः गांधी जी का ईश्वर में पूर्ण विश्वास था। इनको ईश्वर के अस्तित्व के विषय में किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी। गांधी जी का कहना था कि "हम सब अलग–अलग शरीर धारण करते हैं। ये ईश्वर की एकता में विश्वास करते हैं। और उसी प्रकार मनुष्य जाति के एक होने में। वे मानते हैं कि हमारे शरीर भिन्न–भिन्न होते हैं, पर हमारी आत्मा तो एक है–सूर्य की किरणें अनेक है किंतु उनके स्रोत तो एक ही है।"[12]

सरलता की पराकाष्ठा का व्यक्तित्व एवं जीवन बिताने वाले गांधी जी की विचारधारा सामाजिक, राजनैतिक अंतर्राष्ट्रीय परिपेक्ष एवं शिक्षा के संदर्भ में आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना 100 साल पहले रही। हमारा समाज कितना भी आगे बढ़ जाए किंतु गांधी जी के सिद्धांतों एवं उनके दर्शन को नकारना असंभव है। वर्तमान में आज का युवा भले ही आधुनिकता से परिपूर्ण होते जा रहा है, वही उसमें मूल्यों की कमी है। और वास्तविकता से दूर होता जा रहा है क्योंकि वह हर कार्य एवं विचारों के लिए मोबाइल, इंटरनेट पर ही निर्भर हो रहा है। जिससे उसके मानसिक थकान और शारीरिक बाधएं, स्वास्थ्य की समस्याएं उत्पन्न हो रही है। आज हमारे समाज में कई राजनैतिक एवं सामाजिक परिवर्तनों से गुजर रहा है। इन सामाजिक परिवर्तनों को सही दिशा देने में गांधी जी के सिद्धांतों की एवं उनके दर्शन की आवश्यकता है, जो उन्हें जीवन जीने की कला सीखने में मार्गदर्शन बन सके।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची :–**


1. नागार्जुन का गद्य साहित्य, डा० अनिल पारीक, पृ० सं०–01
2. नागार्जुन का गद्य साहित्य, डा० आशुतोष राय, पृ० सं०– 37
3. नागार्जुन रचनावली–01 पृ० सं०–95
4. समाजवादी यथार्थवाद और नागार्जुन का काव्यः प्रेमलता दुआ पृ० सं०–37
5. नागार्जुन एक अध्ययन, डा० ललिता अरोड़ा, पृ० सं०–35
6. नागार्जुन रचनावली –2 पृ० सं०– 42
7. नागार्जुन रचनावली –2 पृ० सं०– 44
8. नागार्जुन रचनावली –2, पृ० सं०–388
9. नागार्जुन रचनावली –2 पृ० सं०–39
10. नागार्जुन रचनावली 01, भूमिका
11. नागार्जुन रचनावली पृ० सं०–39
12. साहित्य और संस्कृति के प्रहरी गाँधी संपादक – डा० संध्या द्विवेदी डा० अरुण चतुर्वेदी पृ० सं०–90



ई–मेल आई डी– drnehapalani2019@gmail.com, मो. नं०– 97566914751

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 130-133

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गांधीवाद की प्रासंगिकता

**राघवेन्द्र सिंह**

सहायक प्राध्यापक हिन्दी, भदावर विद्या मंदिर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाह, आगरा 283104

आज से 15 वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका के 'गांधी स्मारक काउंसिल' ने विश्व के 39 देश के 185 मेयरों से अनुरोध किया कि वह अपने शहर की मुख्य सड़क का नामकरण गांधी जी के नाम से ही करें। 'गांधी स्मारक काउंसिल' ने कहा कि गांधी जी इतिहास के उन चंद महापुरुषों में से एक हैं जिन्होंने नैतिक, धार्मिक, राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक मोर्चों पर एक साथ सत्य के मार्ग पर चलते हुए अहिंसक लड़ाई लड़ी। 15 जून 2007 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने गांधी जी के जन्मदिन यानी 2अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाने की स्वीकृति हेतु मतदान करवाया और उस मतदान में सभी देशों ने सर्वसम्मति से गांधी जी के जन्मदिन को 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के रूप में स्वीकारा। जुलाई 2014 में भारत यात्रा के दौरान ब्रिटेन के राजकोष के चांसलर जॉर्ज ओसबोर्न वेस्टमिंस्टर में महात्मा गांधी की एक प्रतिमा लगाने हेतु घोषणा की और कहा कि "मुझे उम्मीद है कि यह नया स्मारक ब्रिटेन में उनकी स्मृति में एक स्थाई और उचित श्रद्धांजलि होगी और भारत के साथ हमारी दोस्ती के लिए एक स्थाई स्मारक होगा।"[1] इस मूर्ति का अनावरण 14 मार्च 2015 को भारतीय वित्त मंत्री अरुण जेटली द्वारा किया गया।

वैश्विक परिदृश्य पर गांधी जी की यह स्वीकार्यता उनके आदर्श, विश्वास व दर्शन की स्वीकार्यता है। गांधी जी का यह कथन कि 'मेरा जीवन ही, मेरा संदेश है', उनके कथनी व करनी की ऐक्यता व जीवन की प्रामाणिकता की उद्घोषणा है। वस्तुत गांधीवाद महात्मा गांधी द्वारा वैयक्तिक जीवन व सामाजिक जीवन में अपनाई व विकसित की गई, सामाजिक व धार्मिक विचारों का समूह है। गांधी जी द्वारा सत्य, अहिंसा की सैद्धांतिकी को व्यवहारिक जीवन में मूर्त रूप प्रदान किया गया। गांधी जी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत को ही गांधीवाद कहा जाता है। गांधीवाद के मूल में सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज, सर्वोदय, स्वदेशी, ट्रस्टीशिप प्रमुख तौर पर है।

"गांधीवाद केवल राजनीति ही नहीं, वह जीवन का एक दृष्टिकोण है। गांधीवाद दृष्टिकोण वैज्ञानिक नहीं। वह इतिहास और तर्क के आधार पर नहीं चलता। उसका आधार है, विश्वास और संस्कार। विश्वास को दृढ़ बनाने के लिए गांधीवाद मनुष्य की बुद्धि और विवेक पर भरोसा नहीं कर सकता, वह सहारा लेता है भगवान की प्रेरणा का।"[2] हालांकि गांधी जी को गांधीवाद शब्द से आपत्ति थी –"गांधीवाद नाम की कोई वस्तु है ही नहीं ना मैं अपने पीछे कोई संप्रदाय छोड़ जाना चाहता हूं मेरा यह दावा भी नहीं है कि मैं किसी नए तत्व या सिद्धांत का आविष्कार किया है, मैंने तो सिर्फ जो शाश्वत सत्य है उनको अपने नित्य के जीवन और प्रतिदिन के प्रश्नों

पर अपने ढंग से उतरने का प्रयास मात्र किया है। मुझे दुनिया को कोई नई चीज नहीं सीखनी है सत्य और अहिंसा अनाधिकार से चले आए हैं।"[3] लेकिन 25 मार्च 1931 को कराची के कांग्रेस अधिवेशन में गांधी ने बलपूर्वक कहा था –"गांधी मर सकता है किंतु गांधीवाद अमर रहेगा।"[4] लेकिन गांधी की मृत्यु के पूर्व ही गांधी के वचनों व विचारों को उपेक्षित करने का उपक्रम हुआ। गांधी जी का प्रस्ताव था कि स्वतंत्रता के राष्ट्रीय उद्देश्य को पूर्ण करने के उपरांत कांग्रेस की एक राजनीतिक पार्टी के रूप में हैसियत समाप्त कर दी जाएगी लेकिन गांधी जी के जीते जी ही उनके इस वचन व सोच को कांग्रेस के कर्ता–धर्ताओं ने दरकिनार कर दिया।

वस्तुतः गांधी जी की सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था सत्य, अहिंसा, प्रेम, नैतिकता, धार्मिकता व ईश्वरीय भावना पर आधारित है। वह व्यक्ति को स्वभाव से सद्‌गुणी मानते हैं और उनका मानना है कि व्यक्ति उच्च नैतिक विकास और सुधार हेतु पूर्णतया सक्षम है। गांधीजी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति और समाज को एक साथ बदलना है। गांधी जी के विचार शुद्ध आदर्शवादी नहीं, बल्कि व्यावहारिक आदर्शवाद पर ज़ोर देते हैं। उन्होंनें मानव समूह को ईश्वर का रूप माना। नर–सेवा को ही नारायण सेवा मानकर दलितोद्धार व दरिद्रोद्धार को अपने जीवन का ध्येय बनाया। उनका मानना था कि राजसत्ता और अर्थसत्ता के विकेन्द्रीकरण के बिना आम आदमी को सच्चे लोकतन्त्र की अनुभूति नहीं हो सकती। सत्ता का केन्द्रीयकरण लोकतन्त्र की प्रकृति से मेल नहीं खाता। उनकी ग्राम–स्वराज्य की कल्पना भी राजसत्ता के विकेन्द्रीकरण पर आधारित है। सत्य, अहिंसा, मानवीय स्वतंत्रता, समानता एवं न्याय पर उनकी निष्ठा को उनकी निजी जिंदगी के उदाहरणों से अच्छे से समझा जा सकता है। सामान्य रूप से स्वराज का अर्थ स्व–शासन है, लेकिन गांधी जी के लिये स्वराज का मतलब व्यक्तियों के स्व–शासन से था और इसलिये उन्होंने कहा कि उनके लिये स्वराज का मतलब अपने देशवासियों की स्वतंत्रता है और अपने संपूर्ण अर्थों में स्वराज स्वतंत्रता से कहीं अधिक है, यह स्व–शासन है, आत्म–संयम है और इसे निर्वाण के तुल्य समझ सकते है।

गांधी जी की जो मान्यताएं थी और जिसको यथासंभव उन्होंने अपने जीवन में उसे आत्मसात किया प्रश्न यह है कि इन गांधीवादी सिद्धांतों की अब हमारे लिए क्या सार्थकता शेष है?

आज जब हम भारत सहित संपूर्ण विश्व की आंतरिक व वाह्य घटनाओं व परिस्थितियों पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि आतंकवाद, उग्रवाद, नव साम्राज्यवाद, ग्लोबल वार्मिंग, बेरोजगारी, बेकारी, अमीरी–गरीबी के फासले, मूल्यों का क्षरण, नैतिकता का पतन, परमाणु युद्ध ही नहीं जैविक युद्ध के खतरे आसन्न हैं तो संपूर्ण विश्व की मानवता की रक्षा का एकमात्र उपाय बुद्ध की धरा पर उत्पन्न हाड़–मांस का वह इंसान हैं जिसके बारे में अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा –"अपने लोगों का एक ऐसा नेता जिसे किसी बाहरी शक्ति की मदद की दरकार नहीं थी। एक ऐसा राजनीतिज्ञ जिसकी सफलता किसी चाल या किसी यांत्रिक विशेषज्ञता की मोहताज नहीं थी बल्कि उसकी सीधी–सरल शख्सियत का प्रभाव ही सबको कायल कर देता था। एक विजयी सेनानी जिसने हमेशा ताकत के इस्तेमाल में इनकार किया। ज्ञान और विनय से भरा– पूरा, दृढ़ता और अटूट निरंतरता की ताकत से सज्जित एक इंसान, जिसने अपनी पूरी शक्तियां अपने लोगों के उत्थान और उनकी बेहतरी के लिए न्यौछावर कर दी। एक ऐसा इंसान जिसने यूरोप की क्रूरता का मुकाबला एक सामान्य मनुष्य की गरिमा से किया और इस प्रकार हमेशा दूसरों से अधिक अच्छा साबित हुआ। आने वाली पीढ़ियां मुश्किल से ही विश्वास करेंगी कि हाड़–मांस का उसे जैसा एक इंसान इस धरती पर चला था।"[5]

वर्तमान विश्व में गांधी जी ही वह महान शख्सियत हैं, जिनके बारे में विश्व की प्रायः सभी भाषाओं में निरंतर लिखा जा रहा है। किसी भी आयोजन की चर्चा का विषय कुछ भी हो लेकिन गांधी और गांधीवाद वहां उपस्थिति अवश्य रहता है क्योंकि गांधीवाद की उपस्थिति संसार की दो सबसे गंभीर समस्याओं का निदान प्रस्तुत करती है, समस्याओं की क्षतिपूर्ति में सहायक हैं। सबसे पहली समस्या मानवता, करुणा, सत्य, अहिंसा और संवेदनशीलता का क्षरण और स्वार्थपरता का सुरसा रूप दूसरी समस्या 'टिकाऊ विकास ''सस्टेनेबल डेवलपमेंट' के नाम पर प्रकृति के साथ असीमित खिलवाड़। विकास के लिए जो भी ऐसे कार्य हो रहे हैं जो प्रकृति और मनुष्य के संबंध को छिन्न–भिन्न कर रहे हैं और ग्लोबल वार्मिंग जैसी अनैदानिक समस्या को दिनों–दिन बढ़ा रहें हैं, पानी, हवा, धरती, जंगल समाप्त हो रहे हैं लेकिन आवश्यकता है ऐसे विकास की जिससे प्रकृति और मनुष्य का सह अस्तित्व व संतुलन बना रहे।

आसन्न सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व पर्यावरणीय समस्याओं पर विचार करते हुए गांधीवादी चिंतक वर्षा दास कहती हैं –

"गांधी जी का दिया हुआ 'ताबीज' अगर याद रखें अपने आर्थिक एवं सामाजिक कार्यों का प्रारंभ उस 'ताबीज' के सिद्धांत पर यदि किया जाए तो उसकी उपलब्धि समाज के विभिन्न स्तरों के लोगों के लिए लाभदाई होगी।"[6]

गांधी जी कर्मयोगी थे, गांधी जी ने अपरिग्रह एवं सत्याग्रह का मार्ग अपनाया। उनका मूलमंत्र था साध्य को पाने के लिए साधन की पवित्रता की अनिवार्यता। गांधीवादी अर्थव्यवस्था के केंद्र में मनुष्य था और प्रौद्योगिकी को आवश्यकता के मुताबिक स्वीकार किया जाना चाहिए मगर दुर्भाग्य है कि गांधी कि वैकल्पिक सिद्धांत को राजनीतिक और आर्थिक धरातल पर लागू नहीं किया गया। कुछ भी हो गांधी की राजनीति आज के राजनीतिज्ञों की राजनीति से पूर्णता भिन्न है क्योंकि आज की राजनीति मात्र सत्ता प्राप्त करने का साधन मात्र बनकर रह गई है जबकि गांधी जी के लिए राजनीति सत्य की स्थापना का माध्यम है, मानव मात्र के कल्याण का हेतु है, मानवता को उच्चतर शिखर पर स्थापना की जिद्द है।

गांधी जी के बारे में तमाम गलत धारणाएं प्रचलित हैं कि वह यांत्रिकीकरण, प्रौद्योगिकीकरण और विदेशी वस्तुओं का विरोध करते थे। जबकि नवजीवन पत्रिका के 28 अक्टूबर 1928 के अंक में गांधी जी ने लिखा था–"इस देश की और सारे विश्व की आर्थिक रचना ऐसी होनी चाहिए जिससे एक भी प्राणी अन्न–वस्त्र के अभाव से दुखी ना हो; अर्थात सभी को अपने निर्वाह के लिए आवश्यक उद्यम मिलता रहे।.....जैसे हवा और पानी पर सबका समान हक है अथवा होना चाहिए वैसे ही अन्न–वस्त्र पर भी होना चाहिए। इसका इजारा किसी एक देश, जाति अथवा व्यापारिक संस्था के पास हो तो वह न्याय नहीं अन्याय है..... कोई चीज केवल विदेशी होने के कारण त्याज्य है, मेरी धर्म–पोथी में ऐसा कहीं भी लिखा नहीं है। मेरी धर्म–पोथी में यह लिखा है, स्वदेश को जो हानिकारक हो, ऐसी तमाम वस्तुएं त्याज्य हैं। 'द्वेष भाव के कारण विदेशी वस्तु का त्याग करना चाहिए, मैं इस पक्ष में नहीं हूं।"[7]

वस्तुतः गांधीजी का एकमात्र लक्ष्य था शोषणमुक्त, समतायुक्त, ममतामय, परस्पर स्वावलम्बी, परस्पर पूरक, परस्पर स्नेहमय व परस्पर पोषक समाज, जहां बस और बस सत्यं शिवम् सुंदरम का भाव हो। लेकिन दुर्भाग्य रहा कि भारतवर्ष में ही गांधी के विचारों को आजादी के बाद अमलीजामा नहीं पहनाया गया। और सच भी है

गांधी जी का चिंतन कितना भी बेहतरीन क्यों ना हो संपूर्ण हिंदुस्तान के लिए एक वैकल्पिक आर्थिक तंत्र देने वाले मसीहा गांधी किसी ऐसे नेता को पैदा नहीं कर सके जो उनके सपनों को ठोस आधार दे सके और आर्थिक राजनीतिक सच्चाइयों में परिवर्तीतेश करते हैं महात्मा गांधी के बाद कार्यक्रम के रूप में कुछ बचा ही नहीं जिसे आधुनिक प्रौद्योगिकी की आक्रमण से मुकाबले में खड़ा किया जा सकती है गांधी जी इस देश की आस्था पर फूलों के एक पर्यायवाची नाम बनकर रह गए हैं और वह एकदम अब अविहारी को प्रासंगिक हो गए हैं भले ही मेरी बात किसी को शांति रहे किंतु यही सच है।

"मार्क्सवाद को लेनिन जैसा कर्मठ नायक मिला, जिसने साम्यवादी स्वप्न लोक को यथार्थ की धरती पर स्थापित किया। यदि लेनिन नहीं होते तो शायद परिभाषाओं, शंकाओं और संशोधनों के कोहरे में मार्क्सवाद की भी वही गति होती जो आज गांधीवाद की हुई है। यह पूछा जाता है की क्या आधुनिक प्रौद्योगिकी क्रांति के सामने गांधी के विचार टिक सकते हैं? टिकने और उखड़ने का प्रश्न तब पैदा होता है, जब गांधी द्वारा प्रस्तुत वैकल्पिक अर्थव्यवस्था और उससे संबंधित विकेंद्रीकृत उद्योग तंत्र को कहीं लागू करने का प्रयास हुआ होता।"[8]

गांधीवाद की प्रासंगिकता फिलहाल तबतक बनी रहेगी जबतक गांधी जी ने जिन समस्याओं के विरुद्ध शुद्ध सात्विक मन से जीवन पर्यन्त संघर्ष किया वह समस्याएं बनी रहेंगी क्योंकि समस्याओं का स्वरूप समय के साथ बदल सकता है लेकिन समस्या के मूल में निहित भाव जस के तस रहते हैं। भारत के पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी कहते हैं– "जहां तक हिंदू मुस्लिम एकता का प्रश्न है हरिजन के उद्धार का प्रश्न है, इन विषयों की प्रासंगिकता चिरस्थाई है। मद्य–निषेध के बारे में कहूं तो मद्य निषेध और भाषा दो प्रश्न ऐसे हैं जिनके बारे में गांधी जी का दृष्टिकोण शुद्ध वैज्ञानिक और सही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद अगर शासन ने प्रमाणिकता पूर्वक इन दोनों विषयों पर गांधी जी के विचारों को लागू किया होता तो, देश का बहुत बड़ा लाभ होता स्वतंत्रता प्राप्त के तुरंत बाद के वर्ष जन्म मनोवैज्ञानिक की दृष्टि से बहुत अनुकूल थे वह मौका चूक जाने के बाद आज जब हमने लागू करने का प्रयत्न करते हैं तो लाभ की जगह नुकसान कहीं अधिक दिखता है।"[9]

**संदर्भ सूची :-**


1. https%//readerblogs&navbharattimes&indiatimes&com/dil&ki&baat/gandhivad&ki&prasangikta&va&upyogita/
2. गाँधीवाद की शव परीक्षा, यशपाल पृष्ठ–10
3. वही पृष्ठ –17
4. वही पृष्ठ–18
5. आजकल अक्टूबर 2019, पृष्ठ–8
6. वही पृष्ठ –6
7. वही पृष्ठ–7
8. दिनमान, 3–9 अक्टूबर 1982 पृष्ठ–916
9. आधुनिक हिन्दी निबंध, एच0 एल पांडे, पृष्ठ– 15



मो. नं. 9451958219, ईमेल : raghavendrasinghjnp@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 134-137

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिंदी साहित्य में गांधी दर्शन

**डॉ. भावना**

असिस्टेंट प्रोफेसर–हिंदी विभाग,

हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सोमेश्वर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड।

**सारांश :–**

महात्मा गांधी हमारे देश की उन महान विभूतियों में से एक हैं, जिन्होंने अपने विचारों एवं दर्शन के माध्यम से हमारे समाज एवं साहित्य को एक नई दिशा एवं ऊर्जा प्रदान की। इनका चिंतन बहुआयामी है जिसमें साहित्य एवं समाज के लगभग सभी विषय व समस्याएं समाहित हैं। इन्होंने अपना संपूर्ण जीवन भारत भूमि की स्वाधीनता के लिए समर्पित कर दिया तथा ये सदैव जन–जन के हृदय में सत्य, अहिंसा, प्रेम, समानता, सर्वधर्म समभाव, एकता व मानवता की भावना को जागृत करने के लिए निरंतर प्रयासरत व संघर्ष करते रहे। इनका नैतिकता से परिपूर्ण जीवन दुनिया के लिए सबसे बड़ी पाठशाला सिद्ध हुआ है और इसीलिए इनके विचारों एवं दर्शन को आज हिंदी साहित्य के संदर्भ में समझना अनिवार्य एवं समीचीन है।

**मुख्य शब्द :–** दर्शन, समाज, साहित्य, स्वाधीनता, सत्य, अहिंसा इत्यादि।

"तुम मांस– हीन तुम रक्त हीन,
हे अस्थि शेष! तुम अस्थिहीन
तुम शुद्ध बुद्ध आत्मा केवल,
हे चिरपुराण, हे चिर नवीन!"[1]

हिंदी साहित्य में गांधी दर्शन का प्रभाव पूर्ण परिशुद्धता के रूप में दिखाई देता है। हिंदी साहित्य के साहित्यकारों ने गांधी के विचारों, चिंतन, दर्शन, स्वराज की कल्पना, राष्ट्र के नवनिर्माण इत्यादि को अपनी रचनाओं का विषय बनाया। क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है और यही कारण है कि समाज में वर्तमान में व्याप्त घटनाओं का उसके बाद के साहित्य पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। गांधी जी द्वारा किए गए समाजोद्धार के कार्यों को हिंदी के साहित्यकारों ने साहित्य में स्थान दिया तथा साथ ही साथ उनके नैतिक मूल्यों व आदर्शों से साहित्य की प्रत्येक धारा में अभिव्यक्ति प्रदान की। गांधी नारी उद्धार के प्रबल समर्थक थे। इन्होंने विविध सामाजिक समस्याओं जैसे– दहेज प्रथा, विधवा विवाह, वेश्यावृत्ति की समस्याएं एवं नारी शिक्षा की दिशा में बहुत प्रयास किये, जिसका सीधा प्रभाव हमें हिंदी के साहित्यकारों पर भी देखने को मिलता है। गांधी जी दहेज प्रथा को स्त्री जाति की प्रगति में एक बहुत बड़ा रोड़ा मानते थे। हिंदी कथा साहित्य की यदि बात की जाए तो गांधी जी के दहेज प्रथा विरोधी विचारों का प्रभाव हमें प्रेमचंद के उपन्यासों में अत्यधिक मात्रा में देखने को मिलता

है। इनके 'निर्मला' उपन्यास में दहेज पीड़ित महिला के जीवन को स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है। ऐसे ही 'सेवासदन' में वेश्यावृत्ति की समस्या को उजागर किया गया है। प्रेमचंद गांधी जी के विचारों से कितना प्रभावित हुए इसके एक सफल उदाहरण के रूप में उनकी रचना 'रंगभूमि' को लिया जा सकता है, जिसका कथानक गांव के एक अंधे सूरदास के जीवन संघर्ष व शहर के व्यवसाई को आधार बनाकर लिखा गया है। गांधी के सत्याग्रह का आदर्श रूप सूरदास के सत्याग्रह में देखने को मिलता है। इस रचना में सत्य, न्याय एवं धर्म के नाम पर संघर्ष करने वाले सूरदास की अवधारणा को हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि कहा जा सकता है। प्रेमचंद के 'कायाकल्प' उपन्यास में जहां गांधी के आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों से संबंधित विचारधारा का प्रतिपादन किया गया है. वहीं उनकी 'कर्मभूमि' रचना की पृष्ठभूमि गांधी के 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन व उत्तर प्रदेश के किसान आंदोलन पर आधारित है।

ऐसे ही वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों की यदि बात की जाए तो इनका 'झांसी की रानी' उपन्यास राष्ट्रीय जागरण की भावना व स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्र के लिए बलिदान होने की विचारधारा पर आधारित है। उनके 'प्रेम की भेंट' उपन्यास में जहां नारी के साहस व त्याग को महिमा मंडित किया गया है, वहीं 'अचल मेरा कोई' रचना में विधवा समस्या को उजागर करके गांधी दर्शन के अनुरूप ही इन सामाजिक समस्याओं से पार पाने के उपाय ढूंढे गए हैं। साहित्यकार इलाचंद्र जोशी के 'मुक्तिपथ' उपन्यास में जहां एक तरफ गांधीवादी विचारधारा के अनुरूप मानवतावादी दृष्टिकोण को स्थापित किया गया है, वहीं दूसरी तरफ हमें विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक के उपन्यास 'माँ' तथा 'भिखारिणी' पर गांधीवादी दर्शन का पर्याप्त प्रभाव देखने को मिलता है। यदि जैनेंद्र के उपन्यास 'सुनीता' बात की जाए तो इस उपन्यास में गांधी दर्शन के अनुरूप स्त्री की समस्याओं का समाधान तो प्रस्तुत किया ही गया है, साथ ही साथ यह उपन्यास प्रत्यक्ष रूप से हिंसा पर अहिंसा की विजय को भी दर्शाता है। नारी उद्धार के विषय में गांधी जी का कहना है कि–"जब तक हम अपने यहां की स्त्रियों को मांए बहनए बेटी समझकर उनका आदर करना नहीं सीखेंगे तब तक भारत का उद्धार नहीं होगा।"[2]

जिस प्रकार हिंदी साहित्य के अंतर्गत विविध उपन्यासों में हमें गांधी दर्शन देखने को मिलता है उसी प्रकार हिंदी की कहानियां भी गांधीवादी विचारधारा से अछूती नहीं रही। जैनेंद्र की सुप्रसिद्ध कहानी जैसे 'फाँसी', वातायन, पाजेब, 'एक रात' इत्यादि में हमें गांधीवादी दर्शन स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। ऐसे ही विनोद शंकर व्यास की स्वराज कब मिलेगा' शीर्षक कहानी में गांधी जी के असहयोग आंदोलन की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। वासुदेव अटल की कहानी 'मानवता की भेंट' में गांधीवाद के दार्शनिक चरित्र को चित्रित किया गया है। आनंद प्रकाश जैन ने गांधी जी की अहिंसावादी विचारधारा से प्रभावित होकर अपनी 'देवताओं की चिंता' शीर्षक कहानी में अहिंसा की अनिवार्यता पर बल दिया है। गांधी ने सत्य की खोज करने के लिए सेवा को आवश्यक माना और उनकी इस विचारधारा को शिरोधार्य मानकर हिंदी के अनेक कहानीकारों जिनमें बलदेव उपाध्याय की कहानी 'पतिव्रता का व्रत', सोमवीरा की 'धरती की बेटीष', स्वरूप कुमार बख्शी की 'बुलबुल', 'कुरूप कन्या' इत्यादि में गांधी की विचारधारा एवं उनके दर्शन को प्रमुखता प्रदान करते हुए साहित्य सृजन किया। हिंदी के कथा साहित्य की ही भांति हिंदी की कविताओं में भी गांधी दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ है। मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी प्रसिद्ध काव्य रचना 'भारत–भारती' में गांधी जी के विचारों एवं आदर्शों को केंद्रित करते हुए लिखा है कि–

"श्री गोखले गांधी सदृश नेता महामतिमान हैं,
वक्ता विजय घोषित हमारे श्री सुरेंद्र समान हैं।"[3]

गांधी ने अपने जीवन में अध्यात्म, शिक्षा, प्रेम एवं कर्म को महत्व देते हुए जितनी अधिक सहभागिता बड़े–बड़े राजनीतिक आंदोलन में दी, उतनी ही सहभागिता उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में भी प्रखर रूप से निभाई है। इन्होंने अपने निजी जीवन में कभी धोबी, कभी सफाई वाला, कभी वैद्य तो कभी बढ़ई बनकर समाज पर अपनी अमित छाप छोड़ी। इनके इन लोकायुक्त गुणों से युक्त अभिनव प्रयासों से प्रभावित होकर हिंदी के कवियों ने अपनी कविताओं में उनके इस लोकायुक्त गुणों का बखान करते हुए अनेक कविताएं लिखी हैं। गांधी के इन लोकायुक्त गुणों को चित्रित करते हुए सोहनलाल द्विवेदी अपनी 'तुम्हें नमन' शीर्षक कविता में लिखते हैं कि–

"युग बड़ा तुम्हारी हंसी देख,
युग हटा तुम्हारी भृकुटी देख,
तुम अचल मेखला बन भू की
खींचते काल पर अमिट रेख।।"[4]

जहां स्वतंत्रता आंदोलन के समय हमें हिंदी कविताओं में सीमित संसाधनों के बावजूद भी गांधी दर्शन के प्रति अटूट आस्था एवं विश्वास देखने को मिलता है, वहीं स्वातंत्र्योत्तर काल की कविताओं में हमें गांधी दर्शन एवं विचारधारा तथा गांधी जी के स्वर्णिम भारत के सपने की हत्या होती हुई सी प्रतीत होती है। गांधी के विचार एवं दर्शन आज सिर्फ पुस्तकालयों में रखी हुई किताबों में धूल फांक रहे हैं। गांधी दर्शन आज सिर्फ राजनीतिक भाषणों में वाह्य रूप से बोलने के लिए प्रयोग में लाया जा रहा है, जबकि आंतरिक रूप से हम दिन–ब–दिन खोखले होते जा रहे हैं। इसी खोखलेपन की मार्मिक पीड़ा को अशोक तिवारी ने अपनी कविता 'सपने में गांधी' में अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए लिखा है कि–

"गांधी उठकर राजघाट से चले वहीं फिर घर की ओर,
बंद देखकर अपना आश्रम रोए बहुत लगाकर जोर,
क्या होगा अब मानवता का रहा अगर इनका ये सफर,
आज रात सपने में गांधी।"[5]

गांधी जी का मानना था कि स्वराज की प्राप्ति का उद्देश्य मात्र राजनीतिक नहीं बल्कि उससे बहुत ज्यादा होना चाहिए। उनका कहना था कि यदि भारत स्वतंत्र हो जाता है तो इससे अखिल विश्व का कल्याण होगा। चूंकि छायावाद के सुप्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत पर गांधी दर्शन का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा और उन्होंने गांधी द्वारा कि, बतलाए गए स्वाधीनता संग्राम तथा उनके राजनीतिक दर्शन को लोकायतन में पूर्ण अभिव्यक्ति भी प्रदान की तो पंत जी का भी यही विचार था कि हमारा स्वराज्य प्राप्ति का उद्देश्य सिर्फ राजनीतिक नहीं होना चाहिए। इसीलिए उन्होंने अपनी कविता में लिखा है कि–

"इसे जगत जननी समझो तुम
दया क्षमा धृति में अंतःस्थिति
भारत के जीवन मंगल में अखिल
भुवन सब जीवों का हित।"[6]

वर्तमान में राजनीतिक आर्थिक, नैतिकश विषमताओं के चलते भारत की छवि धूमिल हो रही है। गांधी ने जिस पवित्र राजनीति का सपना देखा था वह राजनीति आज अपराधीकरण की भावना से सराबोर है। प्रोग्राम जिस कारण गांधी दर्शन व विचारधारा के प्रति लोगों के मन में अनास्था प्रकट होते जा रही है। ऐसे में हमारे हिंदी साहित्य के साहित्यकारों को आगे आकर ऐसी रचनाएं समाज को देनी चाहिए, जिससे कि उनके हृदय में पुनः गांधी दर्शन एवं विचारधारा के प्रति आस्था प्रकट हो सके तथा समाज गांधी के विचारों एवं दर्शन को सिर्फ राजनीतिक भाषणों में प्रयोग करने के बजाय उसे आंतरिक रूप से अपने जीवन में लागू कर सके।

**संदर्भ सूची :-**


1. http://kavitakosh.org
2. साहित्य और संस्कृति के प्रहरी गांधी, डॉक्टर संध्या द्विवेदी एवं डॉक्टर अरुण कुमार चतुर्वेदी। पृष्ठ –19
3. वही, पृष्ठ –19
4. https://kavitadhala.in
5. kavitakosh.org/kk/ सपने में गांधी।
6. लोकायतन, सुमित्रानंदन पंत, पृष्ठ –92

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 138-142

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गांधी जी का शैक्षिक दर्शन

**मनोज भाकुनी**

शोधार्थी एजुकेशन, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, उ०प्र०

**डॉ. शिव भोलेनाथ श्रीवास्तव**

प्राचार्य, मॉडल पब्लिक पी0 जी0 कॉलेज, चंदौसी, सम्बल, उत्तर प्रदेश।

**शोध सारांश :-**

अहिंसा के पथ–प्रदर्शक के रूप में महात्मा गांधी ने भारत के साथ–साथ पूरे विश्व को एक नवीन मार्ग दिखाया। इसके अतिरिक्त महात्मा गांधी की विरासत में उनका शैक्षिक दर्शन भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। उनका मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने के बारे में नहीं है बल्कि चरित्र निर्माण के बारे में भी है। उनका शैक्षिक दर्शन समानता, अनुशासन, सत्य, अहिंसा और सेवा के सिद्धांतों पर आधारित था। गांधी जी का मानना था कि शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए, चाहे उनकी सामाजिक स्थिति या आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की वकालत की जो समावेशी हो और सभी शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करे। उनका मानना था कि शिक्षा समग्र होनी चाहिए और न केवल शैक्षणिक उपलब्धि पर बल्कि चरित्र विकास पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। गांधीजी के लिए अनुशासन शिक्षा का एक अनिवार्य पहलू था। उनका मानना था कि आत्म–नियंत्रण के विकास के लिए अनुशासन आवश्यक है, जो व्यक्तियों को उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में मदद करेगा। उनका मानना था कि अनुशासन स्वयं लगाया जाना चाहिए न कि बाहरी ताकतों द्वारा थोपा जाना चाहिए। गांधीजी के शैक्षिक दर्शन में सत्य एक और महत्वपूर्ण सिद्धांत था। उनका मानना था कि शिक्षा को सत्य की खोज पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, और शिक्षार्थियों को प्रश्न पूछने और उत्तर खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उनका मानना था कि सत्य को केवल अनुभव और चिंतन के माध्यम से ही खोजा जा सकता है।

स्वतंत्रता के पश्चात अनेक चुनौतियों का सामना कर रहे देश को सुनहरे भविष्य के मार्ग की ओर उन्मुख करने शिक्षा की भूमिका हो गांधी जी ने महत्वपूर्ण माना। गांधीजी का मानना था कि शिक्षा व्यक्ति और समाज के विकास की कुंजी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि व्यावहारिक कौशल पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो दैनिक जीवन में उपयोगी हो। शिक्षा पर गांधीजी के विचार आत्मनिर्भरता और सामाजिक जिम्मेदारी में उनके विश्वास पर आधारित थे। उनका मानना था कि शिक्षा समाज की जरूरतों के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए और व्यावहारिक कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो व्यक्तियों को आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से जिम्मेदार बनने में सक्षम बनाएगा। शिक्षा

के प्रति गांधीजी का दृष्टिकोण समग्र था और इसका उद्देश्य केवल उनकी बुद्धि का नहीं, बल्कि संपूर्ण व्यक्ति का विकास करना था। गांधीजी का मानना था कि शिक्षा को काम से जोड़ा जाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि छात्रों को काम करके सीखना चाहिए और व्यावहारिक कार्य से उन्हें ऐसे कौशल विकसित करने में मदद मिलेगी जो उनके दैनिक जीवन में उपयोगी होंगे।

**गांधी जी का शैक्षिक दर्शन–समग्र रूप में :–**

नई–नवेली स्वतंत्रता प्राप्त कर लड़खड़ाते कदमों से आगे बढ़ते हुए देश को संभालने और संबल प्रदान करने हेतु हर क्षेत्र में सही और अनुकूल नीतियों की आवश्यकता स्वाभाविक थी। किसी भी देश की नीतियों का आधार संबंधित क्षेत्र के दार्शनिक और व्यावहारिक पक्षों तथा ऐच्छिक लक्ष्यों के प्रकाश में तय की जाती है। तमाम शिक्षाविदों एवं पश्चिमी तथा पूर्वी शैक्षिक दर्शन के मध्य गांधी जी ने भी देश की तात्कालिक परिस्थितियों में अपने शैक्षिक दर्शन को अपने लेखन और संबोधनों के माध्यम से देश के समक्ष रखा।

गांधी जी केवल साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे। उनके शब्दों में, "साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है और नया प्रारंभ।" यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा पुरुष और स्त्रियों को शिक्षित किया जा सकता है। गांधी जी मनुष्य को शरीर, मन और आत्मा के उच्चतम विकास से है। गांधीजी के दर्शन में अहिंसा एक मूल सिद्धांत था और उनका मानना था कि शिक्षा को अहिंसक व्यवहार को बढ़ावा देना चाहिए। उनका मानना था कि हिंसा कभी भी किसी समस्या का समाधान नहीं है और व्यक्तियों को शांतिपूर्ण तरीकों से संघर्षों को हल करना सीखना चाहिए। सेवा गांधीजी के शैक्षिक दर्शन का एक और अनिवार्य पहलू था। उनका मानना था कि शिक्षा को व्यक्तियों को अपने समुदाय की सेवा करने और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए तैयार करना चाहिए। उनका मानना था कि दूसरों की सेवा करना चरित्र विकास का एक अनिवार्य हिस्सा है और व्यक्तियों को दुनिया में बदलाव लाने का प्रयास करना चाहिए। गांधीजी का शैक्षिक दर्शन दुनिया में बदलाव लाने की व्यक्ति की शक्ति में उनके विश्वास पर आधारित था। उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्तियों को बदल सकती है और उन्हें समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए सशक्त बना सकती है। उनका मानना था कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए एक उपकरण होनी चाहिए, और शिक्षार्थियों को समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए अपने ज्ञान और कौशल का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

गांधी जी के अनुसार, कार्य शिक्षा पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य घटक है क्योंकि यह व्यावहारिक कौशल प्रदान करता है जो दैनिक जीवन में उपयोगी होते हैं। यह छात्रों को आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की भावना विकसित करने में सक्षम बनाता है, जो उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिए आवश्यक है। कार्य शिक्षा टीमवर्क, समस्या–समाधान और संचार जैसे गैर–संज्ञानात्मक कौशल के विकास को भी बढ़ावा देती है, जो कार्यस्थल में सफलता के लिए आवश्यक हैं। इसके अलावा, कार्य शिक्षा छात्रों को सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक व्यवहार का महत्व सिखाती है, जो एक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज के विकास के लिए आवश्यक हैं। इसलिएए छात्रों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के लिए तैयार करने के लिए कार्य शिक्षा पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग होना चाहिए। गांधी जी के अनुसार शिक्षा द्वारा मनुष्य को एकादश व्रत– (सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता, निवारण, कायिक श्रम, सर्वधर्म समभाव और विनम्रता) पालन की प्रवृत्ति की ओर बल दिया जाना चाहिए।

गांधीजी का मानना था कि छात्रों को खेती, बुनाई या बढ़ईगीरी जैसे उत्पादक कार्यों में शामिल होना चाहिए। उनका मानना था कि इससे न केवल उन्हें व्यावहारिक कौशल मिलेगा बल्कि उनमें आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की भावना विकसित करने में भी मदद मिलेगी। शिक्षा पर गांधीजी के विचार औपचारिक स्कूली शिक्षा तक सीमित नहीं थे। उनका मानना था कि शिक्षा एक आजीवन प्रक्रिया होनी चाहिए और व्यक्तियों को जीवन भर सीखना और विकास करते रहना चाहिए। गांधी जी का मानना था कि शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिएए चाहे उनकी पृष्ठभूमि या सामाजिक स्थिति कुछ भी हो। शिक्षा पर महात्मा गांधी के विचार आत्मनिर्भरता, सामाजिक जिम्मेदारी, अहिंसा, चरित्र विकास और आजीवन सीखने में उनके विश्वास पर आधारित थे। उन्होंने व्यावहारिक शिक्षा के महत्व पर जोर दिया जो दैनिक जीवन में उपयोगी हो और काम से जुड़ी हो। शिक्षा के प्रति गांधीजी का दृष्टिकोण समग्र था और इसका उद्देश्य संपूर्ण व्यक्ति का विकास करना था। शिक्षा पर उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं और उनके विचारों ने दुनिया भर में शैक्षिक प्रथाओं को प्रभावित किया है।

**निष्कर्षतः** गांधीजी का शैक्षिक दर्शन समानता, अनुशासन, सत्य, अहिंसा और सेवा के सिद्धांतों पर आधारित था। उनका मानना था कि शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए और चरित्र विकास के साथ–साथ शैक्षणिक उपलब्धि पर भी ध्यान देना चाहिए। उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्तियों को बदल सकती है और उन्हें समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए सशक्त बना सकती है। उनका शैक्षिक दर्शन आज भी प्रासंगिक है, और हम उनकी शिक्षाओं से सीख सकते हैं और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए उन्हें अपने जीवन में लागू कर सकते हैं।

**'नई तालीम' के संबंध में गांधी दर्शन :–**

नई तालीम, जिसका अर्थ है, 'नई शिक्षा, पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के विकल्प के रूप में महात्मा गांधी द्वारा विकसित एक अवधारणा थी। नई तालीम आत्मनिर्भरता, सामाजिक जिम्मेदारी और व्यावहारिक शिक्षा के सिद्धांतों पर आधारित थी। गांधी का मानना था कि पारंपरिक शिक्षा प्रणाली ऐसे व्यक्तियों को तैयार करने पर केंद्रित थी जिन्हें अपने समुदायों की सेवा करने के बजाय औपनिवेशिक सरकार की सेवा करने के लिए प्रशिक्षित किया गया था। उनका मानना था कि शिक्षा समाज की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए और व्यावहारिक कौशल पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो व्यक्तियों को आत्मनिर्भर बनने में सक्षम बनाएगा। नई तालीम इस विचार पर आधारित थी कि शिक्षा को उत्पादक कार्यों के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए। गांधीजी का मानना था कि छात्रों को करके सीखना चाहिए और व्यावहारिक कार्य से उन्हें ऐसे कौशल विकसित करने में मदद मिलेगी जो उनके दैनिक जीवन में उपयोगी होंगे। उनका मानना था कि छात्रों को खेती, बुनाई और बढ़ईगीरी जैसी गतिविधियों में शामिल किया जाना चाहिए, जो उन्हें व्यावहारिक कौशल प्रदान करेगा और उन्हें आत्मनिर्भर बनने में भी मदद करेगा।

गांधीजी का यह भी मानना था कि शिक्षा को सामाजिक जिम्मेदारी से जोड़ा जाना चाहिए। उनका मानना था कि छात्रों को अपने समुदाय की सेवा करना और समाज की भलाई के लिए काम करना सिखाया जाना चाहिए। उनका मानना था कि शिक्षा को न केवल व्यक्तिगत विकास बल्कि सामाजिक विकास पर भी ध्यान देना चाहिए। महात्मा गांधी का मानना था कि व्यक्ति और समाज के विकास के लिए व्यावहारिक शिक्षा आवश्यक है। उनका मानना था कि शिक्षा को केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर ही नहीं बल्कि व्यावहारिक कौशल पर भी ध्यान केंद्रित

करना चाहिए जो दैनिक जीवन में उपयोगी हो। उनका मानना था कि छात्रों को करके सीखना चाहिए और व्यावहारिक कार्य से उन्हें ऐसे कौशल विकसित करने में मदद मिलेगी जो उनके दैनिक जीवन में उपयोगी होंगे।

गांधीजी का यह भी मानना था कि व्यावहारिक शिक्षा को आत्मनिर्भरता से जोड़ा जाना चाहिए। उनका मानना था कि छात्रों को खेती बुनाई और बढ़ईगीरी जैसी गतिविधियों में शामिल किया जाना चाहिए, जो उन्हें व्यावहारिक कौशल प्रदान करेगा और उन्हें आत्मनिर्भर बनने में भी मदद करेगा। कुल मिलाकर, व्यावहारिक शिक्षा पर महात्मा गांधी के विचार इस विचार पर आधारित थे कि शिक्षा समाज की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए और व्यावहारिक कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो व्यक्तियों को आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से जिम्मेदार बनने में सक्षम बनाएगा। अतः कहा जा सकता है कि, महात्मा गांधी की नई तालीम की अवधारणा आत्मनिर्भरता, सामाजिक जिम्मेदारी और व्यावहारिक शिक्षा के सिद्धांतों पर आधारित थी। उनका मानना था कि शिक्षा समाज की जरूरतों के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए और व्यावहारिक कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो व्यक्तियों को आत्मनिर्भर बनने में सक्षम बनाएगा। उनका यह भी मानना था कि शिक्षा को सामाजिक जिम्मेदारी से जोड़ा जाना चाहिए और छात्रों को अपने समुदायों की सेवा करना और समाज की भलाई के लिए काम करना सिखाया जाना चाहिए।

**निष्कर्ष :-**

महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन का भारतीय समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। उन्होंने भारतीय शिक्षा को भारतीय बनाने का नारा बुलंद किया और उसके उद्देश्य और पाठ्यचर्या को विस्तृत किया गया। उन्होंने प्राचीन शिक्षक निधियों के प्रयोग में बच्चों की सक्रिय साझेदारी पर बल देकर उन्हें उपयोगी बनाया। उनका मानना था कि शिक्षा समग्र होनी चाहिए, जिसमें मन, शरीर और आत्मा के विकास पर जोर दिया जाए। गांधीजी ने ऐसी शिक्षा की वकालत की जो सत्य, अहिंसा और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित हो। व्यावहारिक शिक्षा पर गांधीजी के जोर ने भारतीय समाज को कई तरह से मदद की है। उनका मानना था कि शिक्षा समुदाय की जरूरतों के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए और छात्रों को व्यावहारिक कौशल से लैस करना चाहिए जो उन्हें आत्मनिर्भर बनने में मदद करेगा। इस दृष्टिकोण ने उद्यमिता और व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा देकर भारत में गरीबी और बेरोजगारी को कम करने में मदद की है। सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक व्यवहार पर गांधीजी के फोकस का भारतीय समाज पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। उनका मानना था कि शिक्षा को करुणा, सहानुभूति और दूसरों के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों को बढ़ावा देना चाहिए। इस दृष्टिकोण ने भारतीय नागरिकों के बीच सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देने में मदद की है, जिससे एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज का निर्माण हुआ है। गांधी के शैक्षिक दर्शन ने भारत में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में भी मदद की है। उनका मानना था कि लिंग या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए। इस दृष्टिकोण ने भारत में महिलाओं को शिक्षा और व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने में मदद की है।

निष्कर्षतः, गांधी के शैक्षिक दर्शन का भारतीय समाज पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ा है। व्यावहारिक शिक्षा, सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक व्यवहार पर उनके जोर ने आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने, गरीबी और बेरोजगारी को कम करने, अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज को बढ़ावा देने और महिलाओं को सशक्त बनाने में मदद

की है। गांधी की विरासत भारत और दुनिया भर में शिक्षकों और नीति निर्माताओं को प्रेरित करती रहती है।

**शोध क्षेत्र व सीमाएं :-**

प्रस्तुत शोध कार्य में गांधी जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन मुख्य रूप से नागरिक उत्थान व राष्ट्र निर्माण के संबंध में किया गया है। इसमें प्रयास किया गया कि गांधी जी के शैक्षिक दर्शन के विभिन्न आयामों यथा मूल्य निर्माण, सामाजिक उत्थान, नई तालीम व कार्य शिक्षा का महत्व, न्यायपूर्ण समाज, लैंगिक समानता, मानवीय दृष्टिकोण का विकास इत्यादि को शामिल किया गया है जिससे विद्यार्थी इन आयामों पर अपनी समझ को सुदृढ़ कर सकें व एक बेहतर राष्ट्र के निर्माण में सहयोग कर सकें।

यह शोध कार्य उनके द्वारा प्रस्तुत शैक्षिक दर्शन जिसमें राष्ट्र निर्माण हेतु मानवीय व नैतिक मूल्यों का निर्माण शामिल है, तक ही सीमित है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**


1. गांधी, मोहनदास करमचंद (1937), नई तालिम की ओर, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद।
2. सिंह, नवनीत कुमार (2009)– "भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों का शिक्षा में योगदान और उसकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता"।
3. गांधी, महात्मा (2019)– "ग्राम स्वराज्य", प्रभात प्रकाशन।
4. रानी सुनीता; 2020, 'महात्मा गाँधी जी के शैक्षिक चिंतन का अध्ययन तथा वर्तमान भारतीय समाज में उसकी सार्थकता' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एजुकेशन एण्ड रिसर्च–वॉल्यूम 5, इशू 4– 2020।
5. रूबी; 2020, 'महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शनश, गाँधी दर्शन एवं साहित्य, साहित्य संचय प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. सिंहविभा, 2011, महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा प्रणाली की वर्तमान व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में प्रासंगिकता, http://hdl.handle.net/10603/288537
7. दुबे कीर्ति; 2017, स्वन्तंत्र्योतर भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर महात्मा गांधी का प्रभाव, http://hdl.handle.net/10603/187125
8. लालरमन बिहारी; 2009, 'भारतीय शिक्षा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य', आरण्लाल प्रकाशन।
9. श्रीवास्तव अनुज, गांधी जी का बुनियादी शैक्षिक दर्शन, जर्नल ऑफ एडवांसेज एण्ड स्कालरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, वॉल्यूम 13, इशू–1, अप्रैल 2017



मोबाइल –8532917718

mnbhakuni22@gmail.com, srivastava7410@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 143-146

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गाँधी का राष्ट्रवाद

**दुर्गेश नंदिनी**

शोधार्थी; हिन्दी विभाग– वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार।

**शोध सार :–**

राष्ट्रवाद एक अमूर्त अवधारणा है और अमूर्त अवधारणाओं की व्याख्या एक दुष्कर कार्य है। कई विद्वानों ने इसे व्याख्यायित करने का प्रयास किया है परंतु कोई एक सुस्पष्ट परिभाषा निश्चित नहीं हो पाई है। समय के साथ–साथ इसकी परिभाषा में बदलाव होते रहते हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के समय हमने राष्ट्रवाद का जो स्वरूप देखा था आज उस स्वरूप में विकृति आ गई है। जिस राष्ट्रवाद को हथियार बनाकर हमने अपनी एकजुटता का प्रदर्शन करते हुए अंग्रेज़ों को बाहर का रास्ता दिखाया था आज उसी राष्ट्रवाद के नाम पर हम आपस में लड़ रहे हैं। वर्तमान में राष्ट्रवाद एक ज्वलंत मुद्दा है और इसे संकीर्ण परिभाषा के दायरे में बांधने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसे में महात्मा गाँधी और उनके राष्ट्र संबंधी विचार को पुनः पढ़ने और समझने की आवश्यकता है। उन्होंने राष्ट्रवाद के व्यापक अर्थ को स्वीकार करते हुए उसकी व्याख्या अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के बुनियाद के रूप में की है। वे भारतीय राष्ट्रवाद को संकीर्णता के दायरे से निकालकर वैश्विक बंधुत्व को बढ़ाने वाली विचारधारा के रूप में देखते थे। आज राष्ट्रवाद को इसी व्यापक अर्थ में समझने की आवश्यकता है। इस आलेख में उनके राष्ट्रवाद सम्बंधी विचारों का विश्लेषण किया गया है।

**मुख्य बिन्दु :–** महात्मा गाँधी, राष्ट्रवाद, अन्तर्राष्ट्रीयतावाद, विश्वबंधुत्व।

**भूमिका :–**

मन, वचन एवं कर्म की शुद्धता पर बल देने वाले कर्मयोगी महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्तूबर, 1869 को पोरबंदर, गुजरात में हुआ था। बाल्यावस्था से युवावस्था तक उनका जीवन तीन महाद्वीपों में बीता। प्रथम महाद्वीप एशिया (भारत), जहां उनका जन्म हुआ, जो उनकी मातृभूमि बनी और जहां के संस्कार उन्होंने ग्रहण किए। द्वितीय महाद्वीप यूरोप, (लंदन), जहां वे वकालत पढ़ने गए। तृतीय महाद्वीप दक्षिण अफ्रीका, जहां उन्होंने वकालत के पेशे की शुरुआत की। दक्षिण अफ्रीका उनकी प्रथम कर्मभूमि बनी जहां उन्होंने अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने में सक्रिय भूमिका निभाई। दक्षिण अफ्रीका में 21 वर्ष रहने और नस्लवादी नीति के खिलाफ अहिंसक लड़ाई लड़ने व वहाँ के अश्वेत लोगों को उनके हितों के प्रति जागरूक करने के बाद वे 9 जनवरी 1915 को भारत लौट आये। भारत आने के बाद उन्होंने किसानों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया।तत्पश्चात भारतीय राष्ट्रीय

काँग्रेस के महासचिव बनें तथा इस पद पर रहते हुए अनेक उल्लेखनीय कार्य किए। उन्होंने देश को अंग्रेज़ों से मुक्ति दिलाने तथा धार्मिक एवं जातीय एकता को सुदृढ़ करने की दिशा में कार्य किया, जनता को आत्मनिर्भर बनने का संदेश दिया एवं भारत की आजादी को अपना लक्ष्य बनाने का आह्वान किया।

गाँधी स्वतंत्रता आंदोलन के पुरोधा नेता थे। उनकी राष्ट्र की कल्पना समन्वयवाद पर आधारित थी। राष्ट्र से संबंधित उनका दृष्टिकोण व्यापक था। उनका मानना था कि एक राष्ट्र के रूप में हमारा अस्तित्व अंग्रेज़ों के आने के बाद निर्मित नहीं हुआ अपितु जब अंग्रेज़ नहीं थे तब भी हम एक राष्ट्र थे। हमारा रहन–सहन एक जैसा था, हमारे विचार एक जैसे थे। वे राष्ट्र को प्राचीन सभ्यता से जोड़कर देखते थे। उनका स्पष्ट रूप से यह मानना था कि स्वतंत्र भारत का सपना सबके सम्मिलित प्रयास से ही संभव हो सकता है। इसीलिए परतंत्र भारत को स्वतंत्र बनाने के लिए सभी वर्ग के लोगों को राष्ट्रहित में साथ आने की आवश्यकता पर बल दिया।सभी वर्ग के लोगों ने गाँधी का अनुसरण किया एवं स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान दिया। स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी एवं अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने की भावना जगाने में राष्ट्रवाद ने अपनी भूमिका निभाई। साझे इतिहास, संस्कृति एवं भूमि के साथ जुड़ाव की भावना ने राष्ट्रवाद की भावना को पुष्ट किया।

भारत का राष्ट्रवाद यूरोप के राष्ट्रवाद से भिन्न था। यूरोप का राष्ट्रवाद औद्योगिक क्रांति की मांग और उसके बाद उत्पन्न आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियों के दबाव में उपजा। जबकि भारत में यह उपनिवेशवाद के गर्भ से उपजे साम्राज्यवाद के विरोध में आया। प्रारंभ में इसका उद्देश्य साम्राज्यवाद के विरोध में एकजुट करने वाली विचारधारा के रूप में था। कालांतर में इसकी भूमिका उन्माद फैलाने वाली विचारधारा के रूप में अधिक स्पष्ट होने लगी। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की घटना से यह स्पष्ट हो जाता है कि आरंभ में जिस राष्ट्रवाद ने लोगों को वैचारिक स्तर पर जोड़ने का काम किया वही राष्ट्रवाद आंदोलन के अंत में विभेद और वैमनस्य का कारण बना। यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रवाद जब चरम मूल्य बन जाता है तब सांस्कृतिक विविधता के नष्ट होने का खतरा बढ़ने लगता है। गाँधी ऐसे राष्ट्रवाद के समर्थक नहीं थे जिसका आधार हिंसा हो। वे उस राष्ट्रवाद को सच्चा राष्ट्रवाद मानते थे जो मानवता की रक्षा करता हो।

राष्ट्रवाद को लेकर जो अलग–अलग मत हैं उनमें से मुख्यतः दो तरह के राष्ट्रवाद देखे जा सकते हैं। पहला 'सिविक नेश्नलिज़्म' अथवा 'नागरिक राष्ट्रवाद' तथा दूसरा 'एथेनिक नेश्नलिज़्म' अथवा 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद'। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट हो रहा है कि नागरिक राष्ट्रवाद समुदायों के बीच आनुवंशिक रिश्तों की अपेक्षा नागरिक अधिकारों को ज्यादा महत्व देता है तथा साझे सांस्कृतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करता है और इसकी गुंजाइश बनाए रखता है कि विभिन्न उत्पत्तियों के लोग एक–दूसरे के साथ घुल–मिल कर रह सके। वहीं जब हम 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' अथवा 'नृजातीय राष्ट्रवाद' के शाब्दिक अर्थ पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि इस प्रकार का राष्ट्रवाद समुदायों के बीच आनुवंशिक संबंधों पर जोर देता है। यह किसी खास नृजातीय विरासत को आधार बनाकर इसके तहत लोगों को जोड़ता है।

भारत में राष्ट्रवाद की अनेक व्याख्याओं में से एक व्याख्या है जो इसे 'हिन्दू संस्कृति' से जोड़कर अपनी

राजनीति साधती है। इस विचारधारा ने राष्ट्रवाद का अभिप्राय 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' को माना है। हिन्दुत्व ही उनका राष्ट्रत्व है। इस तरह का राष्ट्रवाद दूसरे धर्म के खिलाफ घृणा पर टिका हुआ है। इस प्रकार का राष्ट्रवाद एक ऐसे उन्माद को जन्म देता है जिसमें देशहित कहीं पीछे छूट जाता है और विनाशकारी परिणाम परिलक्षित होते हैं। गाँधी उग्र एवं हिंसात्मक राष्ट्रवाद को कतई स्वीकार नहीं करते। उनके अनुसार राष्ट्रवाद को संकीर्ण और स्वार्थपरक भावना से मुक्त होना चाहिए। घृणा और उन्माद पर टिके राष्ट्रवाद का परिणाम सभी के लिए अहितकारी होता है। उन्होंने सदैव शांतिप्रिय और सहिष्णु राष्ट्रवाद का समर्थन किया है। सत्य और अहिंसा सदैव उनके राष्ट्रवाद के मूल में थे।

गाँधी का राष्ट्रवाद सदैव सामूहिकता का आग्रही रहा है। एकता के बल को उन्होंने बखूबी समझा और उपयोग किया। गाँधी ने एकत्व के महत्व व जरूरत को लोगों को समझाया। इस एकत्व की भावना को ही राष्ट्रवाद कहा गया। इस विचारधारा ने लोगों को एकसूत्रता के बंधन मे बाँधने का काम किया तथा देश की आज़ादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की शक्ति प्रदान की। उनका मानना था कि लोकतंत्र और हिंसा कभी एक साथ नहीं चल सकते।उनके राष्ट्रवाद में संकीर्णता, जातीय श्रेष्ठता अथवा एकाकीपन का भाव नहीं है। गाँधी के लिए राष्ट्रवाद का अर्थ स्वशासन है जिसमें राष्ट्र के प्रत्येक वर्ग के लोगों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए। उनके कथन अनुसार "राष्ट्रवाद के प्रति मेरा प्रेम या राष्ट्रवाद के बारे में मेरा विचार यह है कि मेरा देश स्वतंत्र हो जाए ताकि अगर आवश्यकता पड़े तो मानव जाति के अस्तित्व की रक्षा के लिए मैं प्राण भी दे सकूँ। इस धारणा में जातीय घृणा के लिए कोई जगह नहीं है। यही हमारा राष्ट्रवाद होना चाहिए।" जो लोग राष्ट्रीयता का सही अर्थ समझते हैं या राष्ट्रीयता की भावना के प्रति जागरूक हैं वो इस बात को भलीभाँति समझते हैं कि विविधता में एकता भारत की ताकत है। इस एकता में जब–जब कमी आई है भारत कमजोर हुआ है और आक्रान्ताओं ने इसका लाभ उठाया है। वर्तमान समय में इस बात की निहायत आवश्यकता है कि हम अपनी संकुचित स्वार्थ की सीमाओं से ऊपर उठे और धर्म, जाति, संप्रदाय, भाषा आदि के नाम पर आपस में वैमनस्य ना पालें। गांधी के राष्ट्र संबंधी विचारों पर चिंतन करने की आवश्यकता है। वे राष्ट्रवाद को साध्य बनाकर आपसी मतभेद को बढ़ाने के स्थान पर इसे विश्वबंधुत्व की आदर्श स्थिति तक पहुँचने का साधन बनाए जाने के पक्षधर थे। हरिजन के एक अंक में वे लिखते हैं, "सार्वजनिक जीवन में 50 वर्ष व्यतीत करने के बाद मेरा इस सिद्धांत में विश्वास बढ़ गया है कि राष्ट्र की सेवा, विश्व की सेवा में कोई असंगति नहीं है।"

**निष्कर्ष :–**

गाँधी समन्वयवादी राष्ट्र की कल्पना करते हैं। एक ऐसा राष्ट्र जहाँ हिंसा की संभावनाएँ न्यूनतम हो, जहाँ व्यक्ति के गौरव की रक्षा हो, जहाँ राष्ट्र एवं राष्ट्र के प्रतीकों के प्रति प्रत्येक के हृदय में सम्मान हो, जहाँ सर्वोदय की भावना का निवास हो, वही राष्ट्र वास्तव में उन्नति के शिखर को प्राप्त कर सकता है। तुच्छ कामनाओं एवं संकुचित स्वार्थ से घिरा हुआ राष्ट्र कभी उन्नति नहीं कर सकता। राष्ट्र और राष्ट्रवाद के संबंध में गाँधी का दृष्टिकोण व्यापक और नैतिक धारणा से युक्त था। उनका मानना था कि हमारा राष्ट्रवाद हमारे भीतर श्रेष्ठतावाद

उत्पन्न करनेवाला होना चाहिए, परंतु यह श्रेष्ठतावाद सृजनात्मक होना चाहिए, विध्वंसात्मक नहीं। इस देश को एक और अखंड बनाए रखने के लिए यहाँ रहने वाले प्रत्येक भारतीय, चाहे वे किसी भी वर्ग के हो, में राष्ट्रीय एकता की भावना होनी चाहिए। राष्ट्र का अस्तित्व राष्ट्र के वासियों से है। राष्ट्रवाद मानवता की सेवा का उपकरण है और जो व्यक्ति अपने राष्ट्र के प्रति ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ तथा मानवतावादी है वही सच्चे अर्थ में राष्ट्रवादी है। एक सच्चा राष्ट्रवादी ही अन्तर्राष्ट्रीय चेतना के करीब पहुँच सकताहै और विश्व बंधुत्व की भावना का प्रसार कर सकता है।

**संदर्भ सूची :-**


1. एम० गाँधी, हिन्द स्वराज, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 2015
2. https://www/mkgandhi.org/indiadreams/chap03.htm
3. डॉ० जयप्रकाश सिंह, भारतीय चिति और गाँधी चिंतन, राष्ट्रीय छात्रशक्ति, नई दिल्ली, 2020
4. हरिजन पत्रिका, अंक–17 जनवरी, 1933
5. रविकांत, आज के आईने में राष्ट्रवाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018



मो. 7369947018

ईमेल– nandinidurgesh18@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 147-151

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिंदी साहित्य में गाँधीवादी विचारधारा

**डॉ. सुनीता राठौर**

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, शासकीय एम.एम. आर. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चाम्पा।

**शोध-पत्र :-**

हिन्दी साहित्यकारों में रामधारी सिंह 'दिनकर', सुमित्रानंदन पंत, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, सोहनलाल द्विवेदी, भवानी प्रसाद मिश्र आदि कवियों ने गांधीवादी विचारधारा को साहित्य में अपनी कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है। महात्मा गांधी की विचारपध्दति का व्यापक नाम गांधी विचारधारा है, हिन्दी साहित्य पर महात्मा गांधी जी के विचारों का स्पष्ट प्रभाव हमें दिखलाई देता है। 1921 से 1940 के बीच गांधी के विचारों का प्रभाव साहित्य पर पड़ा। सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह एवं रामराज्य उनके आदर्श थे। उनका मानना था कि सत्ता संभालने का अर्थ स्वयं को समाज सेवा से जोड़ना है।

संसार मे ऐसे महापुरूष भी हैं, जो सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणा के स्रोत होते है। बीसवीं शताब्दी में उत्पन्न महानतम व्यक्तियों की श्रृंखला में अग्रणी स्थान के अधिकारी मोहनदास करमचंद गांधी, एक ऐसे ही महात्मा रहे हैं, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति में अपने विभिन्न आंदोलनों के द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। महात्मा गांधी के व्यक्तित्व की प्रशंसा केवल भारतीय विद्वानों ने ही नहीं की है, अपितु विदेशी विद्वानों द्वारा भी की गई है। विश्वविख्यात वैज्ञानिक आइंस्टाइन ने भी कहा था कि – ''आने वाली पीढ़ियाँ इस बात पर विश्वास नहीं करेंगी कि कभी हाड़ मांस का बना हुआ कोई ऐसा मनुष्य पृथ्वी पर निवास करता था।''

मैथिलीशरण गुप्त जी के 'विश्ववेदना', 'भारत–भारती' 'साकेत', 'द्वापर' आदि अनेक रचनाओं में गांधीवादी विचारधारा का चित्रण सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, हरिजनोद्धार, ग्राम सुधार व स्वावलंबन की भावना के विकास के रूप में हुआ है। 'साकेत' में सीता का वन में जो स्वावलंबी रूप प्रस्तुत किया गया, वह अयोध्या वासियों को छोटे–छोटे कुटीर उद्योगों की स्थापना की प्रेरणा प्रदान करता है।

सियाराम शरण गुप्त, भवानी प्रसाद मिश्र साहित्य में उनकी स्वीकृति उचित रूप में ना होने पर खेद प्रकट करते हुए कहते है :–

''कोई नहीं उठाता गांधी गीत
अकेला गाता तो हूँ।''

सोहन लाल द्विवेदी अपनी 'भैरवी' संकलन में गांधी जी के प्रभाव को 'गांव का संत' शीर्षक कविता में इस प्रकार व्यक्त करते है :–

''ये कोटि कोटि चल पड़े किधर? नव यौवन का आवेश लिए।

यह कौन चला जाता पथ पर नवयुग का नव संदेश लिए?

श्री मैथिलीशरण गुप्त ने 'सत्याग्रह' काव्य में गांधी जी के 'सत्याग्रह' का विवेचन किया है। श्रीधर पाठक ने भ्रमरगीत में गांधी वादी सत्य तथा अहिंसा अथवा प्रेम द्वारा विश्व को जीतने के सिद्धांत का प्रतिपादन किया, जिसे सम्बोधित करते हुए पाठक जी कहते है :–

ग्रहण कर मधुकर नीति नई
मधुर गुंज–मद से पल भर को भर दे भुवन जयी।

सियाराम शरण गुप्त ने गांधी दर्शन को प्रत्यक्ष रूप में माना है। उनके काव्य में जिस करूणा का स्वर प्रमुख है, वह भौतिक कुंठाओं की करूणा न होकर भारतीय अध्यात्म की मानव–करूणा है, जो मानव–मात्र का धर्म है। एक सत्य से अनुप्राणित होने के कारण प्राणी–मात्र का समान अस्तित्व है, उनके काव्य में सत्य के इस स्वरूप की पूर्ण अभिव्यक्ति मिलती है। गांधी जी की सत्य–अहिंसा से अनुप्रेरित नीति का समर्थन करते हुए वे लिखते हैं :–

''तूने हमें बताया–हम सब
एक पिता की है संतान,
हैं हम सब भाई–भाई ही
हैं सबके अधिकार समान।''

जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों में, समाज सुधार के रचनात्मक कार्यक्रमों को अभिव्यक्ति मिलती है। 'ध्रुवस्वामिनी' में ऐतिहासिक कथा के माध्यम से विधवा विवाह की पुष्टि की गयी है।

गांधी जी के दर्शन का हिन्दी कथा साहित्य में भी प्रभाव पड़ता है कहानियों में स्वदेशी प्रचार की कार्यप्रणाली, जनजीवन में स्वदेशी का प्रभाव खादी, चरखे आदि का वर्णन मिलता है। प्रेमचन्द, सुदर्शन, निराला, सुभद्रा कुमारी चौहान, सियाराम शरण गुप्त आदि की कहानियों में गांधी वादी विचारधारा देखने को मिलता है। प्रेमचन्द की 'होली का उपहार' पत्नी से पति, सुहाग की साड़ी' कहानियों में स्वदेशी के प्रचार की सम्पूर्ण प्रक्रिया का उल्लेख मिलता है। प्रेमचन्द जी के 'प्रेमाश्रम' और 'कर्मभूमि' उपन्यासों में ग्राम सुधार एवं ग्रामीण शिक्षा के बारे में बताया है।

महात्मा गांधी ने 'सत्य और अहिंसा' निबंध में समस्त विश्व को सत्य, अहिंसा, त्याग अपरिग्रह आदि का पाठ पढ़ाया है। गांधी जी ने सत्य के बारे में कहा है – ''सत्य के साथ शुद्ध ज्ञान होना आवश्यक है। जहां सत्य नहीं, वहां शुद्ध ज्ञान भी सम्भव नहीं।'' इस प्रकार गांधी जी ने सत्य के साथ शुद्ध ज्ञान को महत्व दिया है।

महात्मा गांधी के अनुसार 'सत्य और अहिंसा में घनिष्ठ सम्बन्ध है ये दोनों ही मानवीय गुण है। ये एक सिक्के के दो पहलू माने जाते हैं। अहिंसा के महत्व को बताते हुए महात्मा गांधी ने लिखा है – ''कि मन, वचन और शरीर से किसी को कष्ट नहीं पहुँचाना ही अहिंसा है। वैसे हिंसा न करना अर्थात् किसी को नहीं मारना ही अहिंसा है, तथापि व्यापक रूप में अहिंसा, ईश्वर के दर्शन कराने तक में सहायक है। 'अहिंसा परमोधर्मः' कहकर इसे ही परम धर्म बतलाया है।

माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित कविता 'निःशस्त्र सेनानी' में भी गांधी वादी विचारधारा देखने को मिलती है। इस कविता में माखन लाल चतुर्वेदी ने भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति के प्रयास के विषय में कह रहे है, इस

उदाहरण में हम देखते हैं–

लपकती है, लाखों तलवार, मचा डालेगी हाहाकार,
मारने–मरने की मनुहार, खड़े हैं, बलि–पशु सब तैयार।
किन्तु क्या कहता है, आकाश? हृदय! हुलसो सुन यह गुंजार,
'पलट जाये चाहे संसार' न लूँगा इन हाथों हथियार।'

इस कविता में कवि ने बताया है, कि दक्षिण अफ्रीका यात्रा के समय वहां की स्थिति का चित्रण कर रहा है, दु:शासन के बन्धु अर्थात् अंग्रेज वहां अत्याचार कर रहे थे और हमेशा युद्ध के लिए तैयार रहते थे। दूसरी ओर महात्मा गांधी और दक्षिण अफ्रीका की जनता है, जिसकी युध्द की इच्छा नहीं है, आंखे झुकी हुई है, किन्तु कभी–कभी ऐसा लगता है, कि मानो उनके दोनो हाथ कह रहें हो – हथियार उठा लो, लाखो तलवारें हाहाकार मचाने के लिए तत्पर है। सभी लोग बलि के पशु के समान असहाय और मूक खड़े है, किन्तु कवि कहता है, कि आकाश की ओर देखो इसकी प्रकृति बिल्कुल शांत है, ऐसा ही स्वयं को बनाओ। चाहे विश्व में कितनी ही क्रांति क्यों न हो जाये हम हथियार नहीं उठायेंगे। इस कविता के माध्यम में कवि गांधी जी के द्वारा अहिंसा–शांति का संदेश देना चाहते है।

माखन लाल चतुर्वेदी ने निःशस्त्र सेनानी कविता के एक प्रसंग में गांधी जी के 'अहिंसा' और 'आत्मबल' का चित्रण किया है, उन्होंने 'अहिंसा' और 'आत्मबल' दोनो को बहन–भाई बताया है। जैसे –

'बहन–भाई', हां कल ही सुना, अहिंसा, आत्मिक बल का नाम।

गांधी जी शस्त्र बल से मनोबल में हिंसक क्रांति से हृदय परिवर्तन में और मरने से खुद मरकर जीतने में विश्वास रखते है। जेल में लिखी गयी माखनलाल चतुर्वेदी जी की प्रसिद्ध कविता 'पुष्प की अभिलाषा' में केवल बलिदानी वैष्णव व्यक्तित्व की निष्ठा ही प्रकट नहीं हुई है, वरन् उसयुग के सम्पूर्ण राष्ट्रीय संघर्ष की चेतना भी ध्वनित हुई है। कवि मातृभूमि के लिए उत्सर्ग की भावना व्यक्त करते हुए फूल के मुंह से कहलवाते हैं कि वनमाली, मुझे तोड़कर जिस पथ में मातृभूमि के लिए वीर बलिदान करने गये थे, उस पथ में फेंक दो –

''मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।।''

गांधी वाद के मूल तत्व है 'सत्य और अहिंसा'। डॉ. सुषमानारायण ने कहा है – ''गांधी जी के सत्य तथा अहिंसा की मीमांसा, हिन्दी काव्य क्षेत्र में श्री त्रिशूल, श्री माखनलाल चतुर्वेदी, श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान आदि ने की है। गांधी दर्शन के प्रशंसक श्री गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' ने गांधी जी का स्तवन करते हुए कहा है कि, ''जिस सत्य, अहिंसा और प्रेम से तीनों लोक उदित हुए उनकी जय हो। सत्य और अहिंसा के राही विश्ववंश बापू की जय हो।''

''जय सत्य, अहिंसा और प्रेम, जिससे त्रिलोक हुआ उदय।''

सुमित्रानंदन पंत जी ने सत्य को मानव जीवन की परिचालन शक्ति बताया है। उनके अनुसार जिसका शरीर भूतवाद हो और मन प्राणवाद हो वही सत्य मानव जीवन का परिचालन कर सकता है। भारत जैसे ग्राम प्रधान देश में किसानों की स्थिति सोचनीय होने से महात्मा गांधी जी ने ग्रामो को विकास की ओर अधिक ध्यान दिया। हिन्दी के कवियों ने महात्मा गांधी की इसी ग्रामोद्धार भावना से प्रभावित होकर असंख्य कविताएं रची। पंत

जी ने 'ग्राम्या', मैथिलीशरण गुप्त ने 'किसान' और सोहन लाल द्विवेदी जी ने 'सेवाग्राम' आदि की रचना की। इन सभी राष्ट्र का कर्णधार किसान को माना है। देश की उन्नति उस कर्मठ के हाथ में ही है, इसलिए सोहनलाल द्विवेदी जी किसान से कहते है कि ''तुम्हारे जागृत हुए बिना देश की उन्नति की मीनार न उठेगी'' :–

''तुम्हे नहीं क्या ज्ञात राष्ट्र के, तुम हो कर्मठ कर्णधार,
बिना तुम्हारे उठ न उठे, सकती है उन्नति का मीनार।''

ऐसा माना जाता है, कि गांधी जी को अहिंसा का विचार उनकी माता से मिला था। अहिंसा का सामान्य अर्थ है – हिंसा न करना और व्यापक अर्थ में किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म, वचन और वाणी से कोई नुकसान न पहुँचाना मन में किसी का अहित न सोचना किसी को कटु वाणी न कहना तथा कर्म से भी किसी अवस्था में किसी भी प्राणी से हिंसा न करना यही अहिंसा है।

''सत्य और अहिंसा'' गांधी जी के समस्त चिंतन की आधारशीला है। सत्य के संबंध में गांधी जी कहते है – ''जो तुम्हारी अंतर्रात्मा कहती है, वहीं सत्य है। अहिंसा के द्वारा ही सत्य पर विजय प्राप्त की जा सकती है। अहिंसा के बिना सत्य अपूर्ण है। उनके अनुसार अहिंसा साधन है और सत्य साध्य है।''

'चोरी और प्रायश्चित' निबंध गांधी जी द्वारा रचित है, इसमें गांधी जी के बचपन का वर्णन किया गया है, वे बीड़ी खरीदने के लिए चोरी करना सीख जाते है, फिर उनको आत्मग्लानि होती है, कि चोरी करना बुरी बात है। गांधी जी कभी अपने भाई के पैसे चुराए, तो कभी दादा जी के पैसे चुराए। इन सब बातों का उन्हें बेहद अफसोस हुआ।

चोरी और प्रायश्चित निबंध से हमें यह सीख मिलती है, कि हमें कभी भी कोई गलत काम नहीं करना चाहिए। अगर हमसे कोई भूल हो भी गयी है, तो हमें समय रहते हुए उस भूल को सुधार कर प्रायश्चित कर लेना चाहिए। 'चोरी और प्रायश्चित' निबंध महात्मा गांधी जी के बचपन से संबंधित एक घटना है।

गांधी जी की आत्मा जब धिक्कारी तो उन्होने तय कर लिया कि वे पिता जी को चिट्ठी लिखकर अपना दोष स्वीकार कर लेंगे तथा माफी मांग लेगे। गांधी जी ने चिट्ठी में सारा दोष स्वीकार करके सजा मांगी और भविष्य में ऐसा अपराध न करने की प्रतिज्ञा की। उसके बाद कांपते हाथों से चिट्ठी पिताजी के हाथ में दे दी। पिताजी ने चिट्ठी पढ़ी, उनके ऑखों से मोती की बूंद टपक रही थी। गांधी जी को आत्म संतुष्टि हुई कि उन्होंने चोरी का अपराध स्वीकार कर सच्चा प्रायश्चित किया। गांधी जी ने अपनी गलती को अंतर्मन से स्वीकार कर एक आदर्श नैतिक मूल्यों की स्थापना की। इस तरह उन्होने चोरी की आदत का प्रायश्चित किया।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में गांधी जी का प्रभाव महत्वपूर्ण है। महात्मा गांधी ने भारतभूमि की स्वाधीनता के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वे जनमानस में सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, शांति, सद्भाव, सर्वधर्म सम्भाव, समानता एवं मानवता की भावना जागृत करने के लिए सतत् संघर्षशील रहें। भारतीय सनातन संस्कृति सत्य, अहिंसा एवं समन्वयवादी संस्कृति है, इसलिए 'रामायण' एवं श्री 'रामचरितमानस' के रचनाकारो ने श्री राम के चरित्र को आदर्श मानकर उनके चरित्र का निर्माण किया एवं एक आदर्श राज्य की कल्पना की। गांधी जी भी श्री राम के चरित्र से प्रभावित थे एवं रामराज्य की कल्पना को साकार करना उनका परम उद्देश्य था। गांधी जी के सत्य और अहिंसा से आधुनिक साहित्यकार प्रभावित हुए बिना रह पाये, जैसे जैनेन्द्र की 'वे तीन' शीर्षक कहानी में है। गांधी जी के विचारों के प्रभाव को उनकी कहानियां 'फांसी', वातायन, 'एक रात',

'पाजेब' आदि में देखा जा सकता है, और साथ ही उपन्यास 'सुनीता' में देखा जा सकता है।

महात्मा गांधी युध्द को छोड़कर शांति पर बल देते है। गांधी जी की शांति रूपी विचारधारा का प्रभाव अमृतलाल नागर की 'एटमबम' कहानी और आनंद प्रकाश जैन की 'मूंछ का बाल' कहानी में देखने को मिलता है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि, हिन्दी–साहित्य में गांधी जी की जो विचारधारा है वह अमूल्य है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, शांति, सद्भाव, सर्वधर्म सम्भाव, समानता एवं मानवता की भावना ये सब गांधी जी के विचार है। अगर हम सभी इन समस्त गुणों को अपने जीवन में अमल करेंगे तो, हम और हमारा देश उन्नति के चरम शिखर पर पहुंच जायेंगे, भले ही हमारे सामने गांधी जी नहीं है, लेकिन उनके विचार तो है, इसलिए मैं यह कहना चाहूंगी कि हम सब आपस में मिलकर जीवन में संघर्ष करें तब उन्नति जरूर मिलेगी।

**संदर्भ-ग्रंथ सूची :-**


1. सोहनलाल द्विवेदी – भैरवी, इंडियन प्रेस लिमिटेड इलाहाबाद।
2. हिन्दी साहित्य में गांधी–दर्शन की अभिव्यक्ति – (नेट से)।
3. हिन्दी के श्रेष्ठ निबंध एवं प्रयोगगत व्याकरण – प्रधान सम्पादक – डॉ. सत्यभामा आड़िल, प्रकाशक – मनहर आड़िल, विकल्प प्रकाशन, एम. आई. जी–5 सैक्टर–1, रायपुर (छ.ग.), पृ.सं. 01
4. नवबोध परीक्षा सार 2020 आ.पा. हिन्दी भाषा स्नातक –द्वितीय वर्ष नवबोध शिक्षा समिति द्वारा सम्पादित, नवबोध प्रकाशन, 7, समता कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.) पृ.सं– 09
5. अजय माला, बी.ए द्वितीय वर्ष हेतु, हिन्दी साहित्य (प्रथम प्रश्न पत्र) प्रकाशक, अजय प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.) पृ. सं –40, 41
6. शोध धारा – Chief Editor डॉ. श्रीमती नीलम मुकेश, Editor डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय बिलासपुर संगोष्ठी विशेषांक, पब्लिशर, डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय, शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान – ओरई (जालौन) उ.प्र. पृ.सं. 104, 105
7. विद्यावार्ता Editor- Dr. Bapug. Gholap, हर्षवर्धन पब्लिकेशन Pvt. Ltd. At. Post Limbaganesh. Tq. Dist Beed Pin No. (महाराष्ट्र) पृ.सं. 0165, 0166
8. चोरी और प्रायश्चित कहानी का सारांश (नेट से)



मो. नं. – 9907987060

sunitarathore1503@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 152-155

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिन्दी नाटक में गाँधी चिंतन

**डॉ रश्मि रवीन्द्रन**

अतिथि अध्यापिका .हिन्दी विभाग कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोच्चिन .682022

महात्मा गाँधी भारत के उन विरले व्यक्तित्वों में से एक हैं जिनके विचारों और जीवन गाथा को वैश्विक स्तर पर आदर से स्वीकार किया गया है। गांधीजी के जीवन और चिंतन ने विश्व मानवता को प्रभावित और आलोकित किया है। अपने प्रयोग को उन्होंने सत्य के साथ किए गए प्रयोग की परिणति बताया था। वे एक शोषण मुक्त, न्याय मुक्त समाज की रचना करना चाहते थे। आज भारत तथा संपूर्ण विश्व अशांति, आतंकवाद, विषमता, बेकारी, भ्रष्टाचार जैसे संकटों से जूझ रहे हैं। साथ में भूमंडलीकरण, निजीकरण, उदारीकरण की प्रक्रिया जो पूरी दुनिया में नित्य नए–नए संकटों को जन्म दे रही है। ऐसी परिस्थिति में विश्व मानवता के प्रतीक महात्मा गांधी का चिंतन नए सिरे से प्रासंगिक हो उठा है। आज साहित्य के विभिन्न विधाओं में गांधी चिंतन के विविध पहलुओं पर गंभीरता से विचार विमर्श हो रहे हैं। नाटक के क्षेत्र में भी अनेक नाटककारों ने अपने साहित्य के माध्यम से गाँधीवादी आदर्शों को समाज के समक्ष रखा है।

नाट्य साहित्य के क्षेत्र में गाँधीवाद के प्रमुख तत्व के रूप में सत्य और अहिंसा का सम्यक निरूपण मिलता है। सत्य जीवन का आधारभूत तत्व है। यही तत्व गांधी चिंतन का मूल मंत्र है। गांधीजी का संपूर्ण जीवन सत्य के प्रयोगों से परिपूर्ण है, गांधीजी के अनुसार सत्य ही उनके जीवन का श्वास है। वे अटूट विश्वास के साथ कहते है कि वे सत्य को पाने के लिए सतत प्रयत्नशील है। प्रसिद्ध नाटककार एवं गाँधीवाद के अनन्य उपासक श्री हरिकृष्ण प्रेमी ने अपनी नाट्य कृति 'शपथ' में सत्य के महत्व का निदर्शन किया है। इस नाटक के प्रमुख पात्र है नगर श्रेष्ठी, वे सत्य के संस्थापक है। उनका कहना है "सत्य का पथानुगामी किसी की लाल आखें देखकर पथभ्रष्ट नहीं होता।" गांधीजी के अनुसार सत्य के मार्ग पर चलना खड्ग की धार पर चलने के समान है। परंतु जो एक बार सत्य को ही अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लेता है वह किसी भी बाधा एवं संकट से घबराता नहीं, वरन उस संकट का सामना धैर्य एवं शालीनता से करने का प्रयत्न करता है।

डॉ० वृंदावनलाल वर्मा ने अपना नाटक "नीलकंठ' में सत्य के सर्वव्यापक एवं सर्वजन हिताय भाव को सार्थक रूप से रेखांकित किए हैं। नाटक में गंगा नामक पात्र का कहना है, "मैं कहानी का शेषांक बहुत संक्षेप में बतलाये देती हूँ– शंकर भगवान देवताओं की सहायता के लिए आए और उन्होंने कहा कि सत्य का हथियार काम में लाओ तो जीत जाओगे। परंतु उनकी बात को कुछ देवता समझे और कुछ नहीं समझे इसलिए देव–दानवों की लड़ाई आज तक जारी है।" गंगा अपनी कथा का सारांश यही बताती है कि कुछ देवताओं ने भगवान शिव की बात नहीं मानी अर्थात सत्य का आश्रय नहीं लिया, इसलिए आज तक सत्य और असत्य वृत्तियों

का संघर्ष चल रहा है। गांधी जी तो एकमात्र सत्य के मार्ग का अनुसरण ही मानव जीवन केलिए कल्याणकारी समझते थे। उनका मत था, कुछ भी हो जाए पर सत्य से न डिगो।

गांधी चिंतन के और एक आधारभूत तत्व है अहिंसा। गांधी जी की अहिंसा एक भावात्मक प्रक्रिया तथा शक्ति है जो हमें प्राणीमात्र से प्रेम करने के लिए प्रेरित करती है जो स्वार्थ से रहित हो। शंभूदयाल सक्सेना द्वारा रचित सशक्त नाट्य कृति है 'बापू ने कहा था', नाटक में स्वयं बापू के मुख से ही अहिंसा के महत्व को दर्शाया गया है। बापू का कहना है "मुझे पक्का विश्वास है कि बुराई का बदला बुराई से चुकने से कोई फायदा नहीं होता। भलाई के बदले भलाई करना भी कोई बड़ी बात नहीं है। बुराई का बदला भलाई से चुकाना ही सच्चा रास्ता है।" अर्थात अहिंसा का सफल प्रयोग तब होता है जब वह बुराई का बदला भलाई से करने के लिए की गई हो। नाटक में एक अन्य स्थान पर पुनः बापू अहिंसा का महत्व स्पष्ट करते हुए कहा है कि "कई लोगों ने शक किया है कि क्या मैं अहिंसा से विश्वास उठा रहा हूँ। सब जानते हैं कि मैं सत्य से लड़ाई के खिलाफ हूँ। फिर भी मैं कहता हूँ यदि पाकिस्तान से इंसाफ पाने का कोई दूसरा रास्ता नहीं रह जाएगा और पाकिस्तान की जो गलतियाँ साबित हो चुकी हैं उनसे यह मुकरता रहेगा और उन्हें हमेशा कम करके बताने का तरीका जारी रखेगा तो भारत सरकार को उसके खिलाफ लड़ाई छेड़नी ही पड़ेगी। अन्याय को सहने की सलाह मैं किसी को नहीं दे सकता। अगर किसी इंसाफ की बात पर सारे हिन्दू नष्ट हो जाए तो मैं परवाह नहीं करूँगा। वह सच्चाई से की गई पवित्र कुर्बानी होगी।"

श्री उदयशंकर भट्ट ने 'मुक्ति दूत' नामक नाटक में अहिंसा की सर्वव्यापकता और समस्त जीवों के प्रति मानवता का व्यवहार करने का संदेश प्रसारित किया है। इस नाटक का नायक है गौतम बुद्ध। अहिंसा का संदेश देते हुए बुद्ध का कहना है कि 'हिंसा सब जगह हिंसा ही है चाहे वह यज्ञ में अथवा और कहीं, धर्म हिंसा का उपदेश नहीं देता। धर्म जीवन है। मृत्यु नहीं। यह हमारा अज्ञान है धर्म का विकृत रूप है। ऐसे धर्म को हमें नहीं मानना चाहिए। देवदत्त हिंसा हीन धर्म ही सत्य धर्म है। इस धर्म की रक्षा के लिए मैं सब प्रकार दंड सहने को उद्यत हूँ महाराज।" गांधी जी भी सत्य और धर्म का आचरण ही सर्वश्रेष्ठ धर्म स्वीकार करते थे।

गांधी दर्शन मुख्य रूप से एक सामाजिक दर्शन है जिसके मूल में है वर्गगत एकता। गांधीजी का विचार था कि हर व्यक्ति को समाज में उसके विकास का पूरा–पूरा अवसर प्राप्त होना चाहिए, उसे उसकी आवश्यकता के अनुसार पर्याप्त द्रव्य मिलना चाहिए। बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्होंने आधी धोती या लँगोटी क्यों पहनी? बार–बार इसके लिए लोगों ने उनका उपहास उड़ाया, लेकिन वह तो समाज के निचले के अधनंगे, अधभूखे गरीब के साथ जुड़कर रहना चाहते थे। उन्होंने हमें एक मंत्र दिया था कि जब भी कुछ भी करने जाओ पहले यह सोच लो कि ऐसा करने का लाभ समाज के सबसे निचले तबके के व्यक्ति को मिलेगा या नहीं। वर्गगत एकता के इसी सिद्धांत को हरिकृष्ण प्रेमी जी ने अपना नाटक 'ममता' में रजनीकान्त नामक पात्र के ज़रिए व्यक्त किया है। रजनीकान्त का कहना है, "भोली हो कला। भगवान की दृष्टि में न कोई निर्धन है न धनी। न कोई छोटा है न बड़ा। विषमता तो मनुष्य की स्वार्थ वृत्ति की सृष्टि है।" अर्थात जब तक देश में विषमता और अनेकता है तब तक उस देश की स्वतंत्रता असुरक्षित और अपूर्ण है। भारत ने यद्यपि स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है परंतु अभी भी उसकी स्वतंत्रता अपूर्ण है क्योंकि विभेद की यह दीवारें अभी तक भारत को एकता की सूत्र में आबद्ध नहीं कर सकती। इसी विषमता के अंत के लिए ही वास्तव में गांधीजी ने ग्राम उद्योगों, धंधों और चरखे आदि का कार्यक्रम

रखा था। ट्रस्टीशिप तथा विकेन्द्रीकरण भी इसी दिशा में किए गए पग थे।

गांधीजी राष्ट्रप्रेम को संसार के हर रागात्मक संबंध से ऊपर मानते थे। देश सेवा को ही वह अपने जीवन का लक्ष्य मानते थे और उनका विश्वास था कि शायद मानवता की सेवा के लिए ही ईश्वर ने उन्हें जन्म दिया है। श्री रेवतीशरण शर्मा ने अपना नाटक 'अपनी धरती' में देश प्रेम का स्वरूप निर्धारित करते हुए नाटक के एक पात्र से कहलाया है, "होना भी चाहिए जिसे धरती और बेटी का मान नहीं है। जनने वाली की कोख के लिए कलंक है।"

'जागा देश हमारा','उद्धार','शक विजय' जैसे नाटकों में भी देशप्रेम सबंधी बहुत सारे मुद्दों को नाटककारों ने हूबहू पेश किया गया है। जैसे 'शक विजय' नाटक का एक कथन है, "लघु स्वार्थ और बृहत स्वार्थ में विवेचन का समय आ गया है। अब व्यक्तिगत तथा देश के संघर्ष में हमें किसे स्वीकार करना होगा यह भी विचारणीय है। ——आज देश धर्म से भी महान, व्यक्ति और समाज से भी बृहत्तर है। इस भावना को जागृत करने की आवश्यकता है। देश की स्वतंत्रता उसका सुख सर्वोपरी है।" इसी प्रकार रघुवीरशरण मिश्र द्वारा रचित 'राष्ट्रध्वज' नाटक में गाँधीवादी देश प्रेम के स्वरूप का निदर्शन हुआ है–"राजा–राष्ट्र ध्वज पर आँच नहीं आई। भारत महान के लिए हम अपना तन, मनधन बलिदान देंगे। देश की स्वतंत्रता केलिए हम सब एक हैं। हम मानवता के प्रहरी है। एक गगन के नीचे एक धार के वासी हैं। चाहे सर कटकर गिर पड़े ध्वज नहीं झुकने देंगे, राष्ट्र पताका फहराती रहेगी।" गांधीजी का भी विचार यह था कि देश की सम्मान की रक्षा में तन, मन, धन किसी का भी लोभ करना उचित नहीं।

मानवता प्रेम गांधी चिंतन के और एक महत्वपूर्ण तत्व है। गांधीजी का विचार था कि हमें किसी भी प्रकार की लोभ में पड़े बिना मानव की सेवा में रत रहना चाहिए। किसी को हमारे व्यवहार से कष्ट न पहुँचे यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए। नाटककार हरिकृष्ण प्रेमी ने अपना नाटक 'कीर्ति स्तंभ' में मानव होना सर्वश्रेष्ठ तव स्वीकार किया है। नाटक के मुख्य पात्र राणा संग्राम सिंह का इस संबंध में विचार है–"पृथ्वीराज तुम्हारी प्राणों में यह विष किसने भर दिया? पिताजी यदि अदाजी की भांति राज्य सिंहासन पर आसीन होने के लिए पिता पर खड्ग प्रहार करते तो क्या संसार उसे वीरता कहता। राजा बनने की अपेक्षा मनुष्य होना, मानव होना मानव केलिए अधिक गौरव की बात है। पृथ्वीराज प्राण लेने की वीरता से त्याग की वीरता महान है। अर्थात किसी भी वैभव को प्राप्त करने की अपेक्षा दरिद्र होकर मानव बने रहना अधिक गौरव की बात है।

गाँधीवादी अन्य सिद्धांतों के समान नाटककारों ने गृह उद्योग धंधों के प्रोत्साहन के कार्यक्रम को भी अपनी नाट्य कृतियों के माध्यम से प्रोत्साहित करने तथा उसे जनता तक पहूँचाने का कार्य किये हैं। 'बापू ने कहा था' नामक नाटक में जिसका नायक स्वयं गांधी है, जिन्होंने ग्राम उद्योगों की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहा है कि "गोबर, कचरे और मल से सुगंधित खाद का मिलना सुनहरी चीज है। वह एक ग्रामोद्योग है। चरखा भी एक ग्रामोद्योग है। उसमें करोड़ों आदमियों का श्रम लग सकता है। वह एक मध्यवर्ती सूर्य है। दूसरे ग्रामोद्योग उसके आसपास घूमने वाले गृह है। सूर्य न चले तो गृह भी नहीं चल सकते।" गांधी जी समस्त गृह उद्योगों में चरखे को सबसे अधिक महत्व देते थे।

स्त्री के लिए समान अधिकार गांधी चिंतन के एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। गांधीजी स्त्री को मानव समाज का गौरव स्वीकार करते थे। उनका विचार था कि स्त्री माता, बहन, पत्नी, पुत्री आदि सभी रूपों में पुरुष से कहीं

अधिक श्रेष्ठ है। डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने अपनी नाट्य रचना 'रातरानी' में गांधी जी के समान यह स्वीकार किया है कि समाज में स्त्रीयों को पुरुषों के समान ही अधिकार प्राप्त होना चाहिए। लेकिन इसके पश्चात भी वह घर के चारदीवारी के अंदर कैद है। नाटक में नायिका कुंतल का कहना है कि "वह उद्योग पुरुष के लिए है जो उसे धन और संपत्ति देता है। स्त्री के उद्योग का क्षेत्र केवल घर है।" स्त्री के वैधव्य को गांधीजी ने समाज के लिए अभिशाप नहीं, वरन समाज का सौभाग्य का चिह्न मानती है।

महात्मा गांधी युग पुरुष थे। उनका चिंतन एक श्रेष्ठ मानव के निर्माण की सहायक कुंजी का कार्य करता है। इसके माध्यम से एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था की स्थापना होगी, जिसमें व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के विभिन्न पहलुओं का गंभीर चिंतन मनन करने की गुंजाईश रहती है। हिंसा के तत्कालीन माहौल में मानवीय सरोकार से विश्व को जोड़ने की अनिवार्यता की ओर गांधी चिंतन हमें ले जा रहे हैं। सत्य, अहिंसा, शांति, समानता आदि को दर्शाने वाले गांधी चिंतन समूचे विश्व के लिए नई ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं।

**संदर्भ :-**


1. शपथ, हरिकृष्ण प्रेमी, पृ. 117
2. नीलकंठ, डॉ. वृंदावनलाल वर्मा, पृ. 79
3. बापू ने कहा था, शंभूदयाल सक्सेना, पृ. 16
4. वही, पृ. 51
5. मुक्ति दूत, उदयशंकर भट्ट, पृ. 27
6. ममता, हरिकृष्ण प्रेमी, पृ. 73
7. अपनी धरती, रेवतीशरण शर्मा, पृ. 63
8. शक विजय. उदयशंकर भट्ट, पृ. 46
9. राष्ट्रध्वज. रघुवीरशरण मिश्र, पृ. 15
10. कीर्ती स्तंभ, हरिकृष्ण प्रेमी, पृ. 8
11. बापू ने कहा था, शंभूदयाल सक्सेना, पृ. 23
12. रातरानी लक्ष्मीनारायण लाल, पृ. 46



ई.मेल– reshmibinu144@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 156-163

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिंदी दलित कविता में गाँधी व अम्बेडकर की वैचारिक दृष्टि

**डॉ० गोपाल राम**

असि० प्रो० हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, दुगनाकुरी, बागेश्वर।

**सारांश :–**

विश्व के मानवीय धरातल पर दृष्टि डाले तो अनेकों महापुरुषों ने इस संसार में जन्म लिया है, वे महापुरुष सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणा स्रोत्र बने और उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को एक नया आइना दिखाकर मानव जाति को सभी प्राणियों में श्रेष्ठ बनाया, उन्हीं महापुरुषों में भारत के राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद गाँधी व बाबा साहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकर का नाम अग्रणी है। इन दोनों महापुरुषों ने भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में आज तक अपने वैचारिक पृष्ठभूमि की छाप छोड़ी है। गाँधी व अम्बेडकर के विचारों से सम्पूर्ण विश्व का साहित्य ही नहीं बल्कि हिंदी दलित काव्य भी अछूता नहीं रहा। हिंदी दलित पट्टी के दलित व गैर दलित कवियों पर गाँधी व अम्बेडकर के विचारों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। गाँधी जैसी विभूति और अम्बेडकर जैसे विद्वान का सार्वभौमिक प्रभाव हिंदी दलित कविता में देखने को मिलता है। प्रस्तुत शोध आलेख में गाँधी व अम्बेडकर की वैचारिक दृष्टि का विमर्श करते हुए, उनके सिद्धान्तों का हिंदी दलित कविता पर, जो प्रभाव पड़ा उसके विविध रूपों की अभिव्यक्ति किस प्रकार हुई है उन्हीं बिंदुओं पर विचारकर उन्हें समझने का प्रयास किया गया है।

**बीज शब्द :–** सार्वभौमिक, विमर्श, विभूति, सहानुभूति, स्वानुभूति, हरिजनोद्धार, अस्तित्व, मिथ्या, संवाहक, मुक्ति, एकलव्य, आयाम, हस्तक्षेप, संकीर्ण, संयुक्त।

**प्रस्तावना :–**

हिंदी दलित कविता की पृष्ठभूमि पर नजर डाले तो, हिंदी दलित साहित्य 70–80 के दशक से अस्तित्व में आया, परन्तु यह नहीं मानना चाहिए कि हिंदी दलित कविता की जड़े यहीं से जन्मी है। हिंदी दलित कविता का उदय आदिकालीन नाथ–सिद्ध कवियों से माना जाना चाहिए, उन्हीं के वैचारिक दृष्टिकोण से भक्तिकाल व आधुनिक काल की हिंदी कविता में दलित–चेतना काउदय हुआ, हाँलाकि 70 व 80 के दशक में हिंदी दलित कविता आम आदमी की पहुँच बन गई, जिस पर कालान्तर में अनेक महापुरुषों की वैचारिक पृष्ठिभूमि का प्रभाव रहा। हिंदी दलित कविता में गाँधी व अम्बेडकर की वैचारिकता काप्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है; क्योंकि ये दोनों युग–पुरुष रहे हैं।

मुख्यतः गाँधी की वैचारिक पृष्ठभूमि का दलित लेखकों/कवियों पर उतना प्रभाव नहीं दिखाई पड़ता, जितना कि गैर दलित लेखक–कवियों पर पड़ा। अगर हम स्वतंत्रता पूर्व की कविताओं का अध्ययन करें तो द्विवेदी युग से छायावादोत्तरयुग तक के गैर दलित कवियों ने अपनी कविताओं में दलितों का चित्रण किया है,

परन्तु जो दलित विषयक कविताएं लिखी गई, उन कविताओं में गाँधी की वैचारिक दृष्टि का प्रभाव सहानुभूति के रूप में दिखाई पड़ती है, जबकि अम्बेडकर की विचारधारा का प्रभाव दलित कवियों की कविताओं में स्वानुभूति व समानतावादी दृष्टिकोण उभर कर आता है। दलित वर्ग के अधिकतर कवि अम्बेडकरवादी विचारधारा से प्रभावित हैं क्योंकि इस विचारधारा में सामाजिक समानता हेतु वर्ण व वर्ग संघर्ष स्थापित है। स्वतंत्रता आंदोलन के मध्य गाँधी जी के नेतृत्व में हरिजनोद्धार का आंदोलन चला। गाँधी जी ने मंदिरों में हरिजन प्रवेश को मुख्य मुद्दा बनाया और छूआछूत का विरोध किया। स्वयं वे भंगी बस्ती में रहने लगे। उन्होंने हरिजन शब्द का आविष्कार करके हरिजन पत्र निकाल कर साथ ही डॉ० अम्बेडकर को प्रतीक के रूप में सर्वोपरि स्थान देकर अपने हरिजन प्रेम का प्रमाण दिया। इसका गाँधीवादी लेखकों कवियों पर गहरा प्रभाव पड़ा। परिणामस्वरूप उपन्यासों, कहानियों में केवल दलितों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की गई, बल्कि दलित पात्रों को चरित्र नायक बनाया गया।"[1]

वास्तव में दलितों को वाणी व ऊर्जा देने का श्रेय डॉ० अम्बेडकर को जाता है, इनकी विचारधारा से प्रभावित होकर दलित वर्ग के कवियों ने सन् 1960 के उपरांत कविता लिखना प्रारम्भ किया, जो कि अम्बेडकरवादी क्रान्तिकारी विचारों को एक नये स्वरूप प्रदत्त करते हुए हिंदी दलित कविता के रूप में उभरकर आई, जो कालान्तर में वटवृक्ष के तरह विस्तृत होती गई। नब्बे के दशक के आते ही हिंदी दलित कविता के रूप में स्थापित हो गई और उसने कई आयामों को छूते हुए दलित साहित्य को शिखर तक पहुँचाया।

अस्तु हिंदी साहित्य में मुख्यतः छायावादोत्तर काल में जिन कवियों पर गाँधी जी के व्यक्तित्व व कृतित्व का प्रेरणादायक प्रभाव पड़ा, वे कवि हैं–मैथलीशरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सुभद्राकुमारी चौहान, आर०सी० प्रसाद, माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी आदि। इन कवियों ने गाँधी की हरिजनोद्धार वैचारिक दृष्टि से प्रभावित होकर हासिए पर खड़े दलितों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए काव्य लेखन किया परन्तु यह काव्य अति अल्प होने के कारण समाज में इसका प्रभाव कम देखने को मिला।

**उद्देश्य :-**

1. हिंदी दलित कविता में गाँधी व अम्बेडकर के वैचारिक दृष्टि विमर्श का अध्ययन करना।
2. गाँधी एवं अम्बेडकर के दलित–आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि का हिंदी दलित कविता में प्रभाव पर प्रकाश डालना।

**गाँधी की वैचारिक दृष्टि :-**

आजादी से पूर्व दलित आन्दोलन में दो महापुरुष मसीहा के रूप में आते हैं, जिनका तत्कालीन समाज व राजनीति पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा, परन्तु दलित समाज जो अभी तक गुलामी का जीवन जी रहा था उसे इन दो महापुरुषों से कई नई आशा की किरणें दिखाई देने लगी। डॉ० अम्बेडकर और गाँधी के बीच हुए संवाद और समझौते (पूना पैक्ट) ने इस धारा को सर्वाधिक प्रभावित किया और महात्मा गाँधी दलितों के मसीहा के रूप में हिंदी साहित्य में दलितों पर लिखे काव्य में नजर आते हैं, इस काव्यधारा में डॉ० अम्बेडकर आदि से अंत तक अनुपस्थित थे। दलित मुक्ति का जिस व्यक्ति ने इतना विशाल और युगांतरकारी आन्दोलन चलाया कि महात्मा गाँधी का हरिजन आन्दोलन भी उससे पैदा हुआ।[2]

इस प्रकार के दलित–चेतना आन्दोलनों ने हिंदी दलित कविता में तत्कालीन दौर में कोई अपना पृथक अस्तित्व कायम नहीं किया, वरन् यदा–कदा दलित एवं गैर दलित लेखक दलित विषयक कविताएं लिखने की

कोशिश कर रहे थे।

वस्तुतः देखा जाए तो आजादी से पूर्व गैर दलित कवियों द्वारा गाँधीवादी दलित विचारधारा से प्रभावित होकर दलित विषयक कविताएं लिखने का प्रयास किया, उनकी रचनाओं में दलितों के प्रति संवेदना का भाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। आधुनिक काल के द्विवेदी युग से हमें दलितों पर लिखा गया काव्य दिखाई पड़ता है। इस काव्य में गाँधीवादी वैचारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। इस प्रकार के काव्य लिखने का खास कारण यह था कि दलितों के प्रति सवर्ण समाज के मन को उदार बनाना। इस संबंध में द्विवेदी युग के कवि आर० सी० प्रसाद सिंह की 'हरिजन' नामक लम्बी कविता की पंक्तियाँ निम्नवत् है :–

"रे कौन तुम्हें कहता अछूत?
तुम तो प्रभु की सच्ची विभूति।
यह पति प्रताड़ित दीन–जाति,
मांगती तुम्हीं से आज भीख।
तुम क्षमाशील कर क्षमा इसे
दे दो नव युग की स्वर्ण सीख।"[3]

यह कविता महात्मा गाँधी के हरिजनोद्धार आन्दोलन से प्रभावित होकर लिखी गई, जिसमें दलितों के प्रति गैर दलित कवि सहानुभूति स्पष्ट–झलकती है और गाँधीवादी वैचारिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन उक्त कविता में मिलता है। स्वाधीनता आन्दोलन में हिंदी कविता में महात्मा गाँधी व उनके विचारों से प्रभावित होकर गाँधीवादी विचार–दर्शन को आधार बनाकर मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, गया प्रसाद शुक्ल 'स्नेही', अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', भगवती चरण वर्मा, सोहनलाल द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी आदि कवियों ने गाँधीवादी वैचारिकता को लेकर हरिजनोद्धार को अपना समर्थन दिया। महात्मा गाँधी के हरिजनोद्धार से प्रभावित होकर मैथिलीशरण गुप्त ने अछूतों को शुद्धाचार सिखाने की शिक्षा देते हुए गाँधीवादी विचारधारा के अन्तगर्त अछूतों को 'भगवान ने बनाया है' ऐसा गुप्त जी ने निम्न कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

जन्म जहाँ चाहे दे दैन।
निज वश है गुण कर्म सदैव।
पंकज रूप रंग या गंध।
रखते नहीं पंक संबंध।।
करो अछूतों का उद्धार।
उन्हें सिखाओं शुद्धाचार।। [4]

गाँधीवादी वैचारिक दृष्टि में हरिजनोद्धार और मन्दिर प्रवेश विचार–धारा से प्रभावित होकर हिंदी के प्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी ने दलित मन्दिर प्रवेश हेतु एक दलित (हरिजन) से इस प्रकार प्रार्थना कराई है –

खोलों मन्दिर द्वार पुजारी।
मत ठुकराओ चरण धूलि लूं बार–बार जाऊँ बलिहारी।
क्यों तुमने सबरी निषाद की, अपने मन से बात बिसारी।
मैं भी एक उन्हीं के कुल का, प्रभु–पद पूजन का अधिकारी।"[5]

सियाराम शरण गुप्त ने महात्मा गाँधी के दलितोद्धार के विचारों को हवादेने का कार्य किया। उन्होंने 'प्रसाद का एक फूल' काव्य में यह प्रश्न पूछा किक्या दलितो के मंदिर प्रवेश से छूत फैलती है? इस कविता में 'सुखिया' के पिताईश्वर से पूछते हैं–

"मैं तो अछूत हूँ लेकिन क्या मेरी प्रार्थना भी अछूत है?
अपवित्र है? मैं अछूत तो मेरी विनती भी है हाय! अछूत,
उससे भी क्या लग जाऐगी तेरे श्री–मंदिर को छूत।"[6]

उक्त कविता में गाँधी जी के दलितों के मंदिर प्रवेश आन्दोलन का प्रभाव कवि पर पड़ा, जिसमें कवि ने एक अछूत दलित के माध्यम से उसकी पीड़ा पर सहानुभूति प्रकट करते हुए, उसे जन सामान्य तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

हिंदी साहित्य के महान कवि मैथिलीशरण गुप्त पर गाँधी जी के विचारों का इतना व्यापक प्रभाव था कि पूना–पैक्ट के बाद गाँधी जी काहरिजनों/दलितों के प्रति जो प्रेम उमड़ा उस प्रेम से हरिजनोद्धार आन्दोलन चलाया गया। उससे मैथिलीशरण गुप्त इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने दलितों को अछूत कहने वाल समाज को सचेत करते हुए लिखा–

"इन्हें समाज नीच कहता है, पर हैं ये भी तो प्राणी।
इनमें भी मन और भाव है, किंतु नहीं वैसी वाणी।।"[7]

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत पर गाँधी का इतना प्रभाव था किसन् 1921 में जब पंत ने गाँधी का प्रथम बार भाषण सुना, तो उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया, यहीं से गाँधीवादी विचारों की अवधारणा पर काव्य लिखने लगे जो हिंदी कविता में बहुत प्रसिद्ध हैं। जब गाँधी जी के मन में दलित प्रेम व मुक्ति के विचार उत्पन्न हुए, तो पंत जी ने दलित–चेतना के कई प्रश्न अपने काव्य में गाँधी के वैचारिक दृष्टि से प्रस्तुत किए, जो तत्कालीन समय की छुआछूत की समस्या पर केंद्रित थे –

छुआछूत का भूत भगाने
किया व्रती नेजय़ आंदोलन।
हिले द्विजों के रुद्ध हृदय पर,
खुले मंदिरों के जड़ प्रांगण।[8]

गाँधीवादी विचारधारा से ओत–प्रोत अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने अस्पृश्यता को समाज को दूषित करना बताया है –

छीनी जाति–जाति के, सच्चे बल बूते हैं,
छाती से लगा लो कौन छूत इनमें है लगी,
छूत क्यों नहीं हो ये अछूत तो अछूत हैं।[9]

रामधारी सिंह 'दिनकर' पर गाँधीवादी विचारों का प्रभाव अत्यधिक था। उन्होंने गाँधी के हरिजनोद्धार आंदोलन से प्रभावित होकर कहा कि भारतीय समाज में जाति व कुल मिथ्या अंहकार रहा है, वे जो समाज में ऊँच–नीच का भेद मानते हैं वे ज्ञानी नहीं हैं, समाज में इसके नाम पर घोर अत्याचार हो रहा है, आज इन सब को छोड़ना होगा–

ऊँच–नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,
दया, धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है।।[10]

गाँधी के दलितोद्धार व मंदिर प्रवेश आंदोलन का प्रभाव तत्कालीन समय के गाँधीवादी लेखकों, कवियों व विचारकों पर पड़ा। राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी भी इसके अछूते नहीं रहे। उन्होंने कहा दलितों व पिछड़ों को भी अपना आत्मसम्मान बनाया रखना चाहिए, उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए–

भंगी अत्याचार न सह तू,
अपनी हारी हार न कह तू
आँसू बनकर व्यर्थ न सह तू।।[11]

ऊपरिलिखित विवरण से यह स्पष्ट होता है गाँधी की परिकल्पना में एक ऐसे समाज की कल्पना थी जिसमें सम्प्रदाय–भेद, वर्ग–भेद, जाति–भेद, शोषण व ऊँच–नीच भेद नहीं होगा। वे एक समरस समाज चाहते थे, परन्तु परम्परागत चली आ रही वर्ण–व्यवस्था के समर्थक थे और गैर दलित वर्ग उनकी इस विचारधारा से नाखुश न हो जाए, इसलिए वे वर्ण व्यवस्था में लचीलापन स्वीकार करते थे।

गाँधी जी के मान्यता थी कि सभी व्यक्ति ईश्वर की संतान है, उनके अनुसार अस्पृश्यता एक ऐसा पाप है जो भारतीय समाज पर सदियों से कलंक है। उनकी इस वैचारिक दृष्टि से तत्कालीन कवियों पर बहुत व्यापक प्रभाव पड़ा, जिस कारण हिंदी काव्य में दलितों पर सहानुभूति काव्य लिखा गया और हासिये पर खड़े दलितों को मुख्यधारा से जोड़ने का प्रत्यन किया गया।

**डॉ० अम्बेडकर की वैचारिक दृष्टि :–**

डॉ० भीमराव अम्बेडकर स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय थे, जो कि लगातार दलित मुक्ति के कई सवाल उठा रहे थे, उन्होंने सार्वजनिक तालाबों और कुओं से पानी लेने के अधिकार को लेकर महाड़ में और प्रवेश के अधिकार को लेकर नासिक में सत्याग्रह किया था। 1925 से 1935 तक का दस वर्ष का काल राष्ट्रीय आन्दोलन में दलित मुक्ति के व्यापक संघर्ष के रूप में डॉ० अम्बेडकर के नाम दर्ज है।[12]

डॉ० अम्बेडकर के दलित मुक्ति आन्दोलन के प्रत्यक्ष प्रभाव ने भारतीयदलित कविता को नई ऊर्जा व नई उमंग प्रदान की थी। इसी प्रकार दलित कविता भारतीय भाषाओं में नए स्वरूप की भूमिका के साथ खड़ी हो गई। हिंदी दलित कविता के अधिकतर दलित कवि अम्बेडकर की दलित मुक्ति आन्दोलन की विचारधारा से इतने प्रभावित थे कि गाँधी द्वारा चलाए गए 'हरिजन' शब्द का विरोध करने लगे। अम्बेडकरवादी दलित कविता बुद्ध और उनके दर्शन के समर्थक और संवाहक हो गई, परन्तु गाँधीवादी दलित कविता ने बौद्ध धर्म को अपने केन्द्र में नहीं रखा, लेकिन उसका विरोध भी नहीं किया। गाँधी के प्रति उनकी आस्था के बावजूद वह अम्बेडकर की विरोधी नहीं रही।[13]

दलित वर्ग में जन्में कुछ लेखक व कवि भी गाँधीवादी काव्य के पक्षमें थे, क्योंकि वे दलित कवि राजनैतिक लाभ चाहते थे इसलिए वे गाँधी व कांग्रेस की विचारधारा के पक्ष में थे। कालान्तर में उनके द्वारा रचित साहित्य दलित काव्य नहीं माना गया। इसलिए बिहारीलाल 'हरित' और माता प्रसाद आदि जैसे गाँधीवादी विचारों से प्रभावित दलित कवियों को अम्बेडकर के जीवन व संघर्ष पर काव्य लिखना पड़ा। अम्बेडकरवादी दलित काव्य का उद्देश्य मौजूदा वर्ण व्यवस्था को ध्वस्त कर एक नवीन जाति विहीन समाज को स्थापित करना था इसलिए

उन्होंने शम्बूक तथा एकलव्य जैसे ग्रन्थ लिखकर हिंदू धर्म की वर्ण–व्यवस्थाओं पर प्रहार किया। बिहारीलाल 'हरित' की अम्बेडकरवादी दलित कविता जिसमें महात्मा गाँधी को बूढ़े की उपमा दी गई है –

भीम बाबा मैदां में लो अब सज गए।
कि खुदगर्जों की शक्ल पे तीन बज गए।।
एक बूढ़े का दिल तो तार–तार हो गया।[14]

यहाँ पर जिस बूढ़े का चित्रण किया गया है वह स्वयं गाँधी थे, जो दलित वर्गों को हिंदू व्यवस्था में बनाये रखना चाहते थे। परन्तु अम्बेडकर दलित मुक्ति चाहते थे इसलिए दलित लेखक अम्बेडकरवादी विचारधारा में बहते गए।

दलित साहित्यकार जो वामपंथी हो, ऐसे अनेक लेखक मिल जाएंगे। परन्तु गाँधीवादी विचारधारा वाले माता प्रसाद अकेले ही लेखक थे। उनका गाँधीवाद, कांग्रेस के गाँधीवाद से अलग था। वे जिस रूप में गाँधीवाद को लेकर चले, वह अम्बेडकरवाद में कभी व्यवधान नहीं बना। गाँधी जी वर्ण–व्यवस्था के समर्थक थे परन्तु छुआछूत के खिलाफ थे।[15]

हिंदी दलित कविता के संरक्षक कवि माता प्रसाद भले ही स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व गाँधीवादी कवि रहे हैं, परन्तु आजादी के बाद उनकी कविताओं में अम्बेडकरवादी विचारधारा प्रमुखता से उभरकर आयी, जो कि उनके द्वारा लिखित खण्ड काव्य 'एकलव्य' में मुखरित होती है। इस खण्ड काव्य के प्रथम अध्याय 'भीम सुशासन' में ही अम्बेडकरवादी विचारधारा का प्रभाव देखा जा सकता है –

एकलव्य की यह कथा
लिए व्यथा आभास।
जाति वर्ण संघर्ष से
कांप रहा इतिहास।[16]

सन् साठ के दशक की दलित धारा को हम चंद्रिका प्रसाद 'जिज्ञासु' युग कानाम दे सकते हैं, इस युग की दलित–चेतना संकीर्ण नहीं थी। उसमे डॉ० अम्बेडकर और राहुल सांकृत्यायन की विचारधारा का संयुक्त प्रवाह था। यह धारा न केवल समाज सुधारों की पक्षधर थी, बल्कि आर्थिक सुधारों की भी समर्थक थी, लेकिन परिवर्तन दलित साहित्य केवल वर्ण–व्यवस्था के विरोध तक सीमित होकर रह गया, उसने डॉ० अम्बेडकर के केवल सामाजिक–विमर्श को स्वीकार किया, आर्थिक विमर्श को साहित्य के केन्द्र में रखने की कोशिश नहीं की। निस्संदेह इसका यह कारण है कि दलित समस्या में सबसे पहले सामाजिक समस्या है।[17]

इसी समस्या पर चंद्रिका प्रसाद 'जिज्ञासु' ने लिखा है– ''ब्राह्मण शाही का आंतक इस देश में इतना प्रबल है शक्तिशाली अंग्रेजी साम्राज्य से मोर्चा लेने वाले महात्मा गाँधी भी जिन्हें राष्ट्रपिता कहा गया, उनसे बहुत डरते थे और ब्राह्मणों को संतुष्ट करने के लिए उन्होंने 'रामधुन' का लटका निकाल रखा है।"[18]

हिंदी दलित कविता में दलित कवियों के प्रेरणा स्रोत डॉ० अम्बेडकर थे। डॉ० अम्बेडकर का मूल मंत्र है – शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित रहो। इसी संदर्भ में डॉ० जय प्रकाश 'कर्दम' लिखते हैं – ''साठ के दशक में आकर इस स्वर में व्यापकता और तेजी आनी शुरू हुई, जब कुछ आर्य समाज का प्रचार छोड़कर डॉ० अम्बेडकर और बौद्ध धर्म के प्रचार में संलग्न होने वाले और कुछ बाबा साहब अम्बेडकर के क्रान्तिकारी विचारों

की ऊर्जा लेकर उतरे नई पीढ़ी के रचनाकारों ने साहित्य सृजन के क्षेत्र हस्तक्षेप करना शुरू किया। उस दौर की रचनाओं का प्रमुख स्वर बाबा साहब डॉ० अम्बेडकर का जयगान, भगवान बुद्ध की स्तुति या फिर सामाजिक सामंजस्य और सुधारवादी दृष्टिकोण तक सीमित रहा। इन रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें व्यक्त आक्रोश और विरोध का स्वर तीखा होते हुए भी संयत, शालीन व रचनात्मक है।''[19]

हिंदी दलित कविता में अम्बेडकारवादी कविता का केन्द्रीय विषय वस्तु मानवीय संवेदनाएं रही हैं, आजादी के बाद भी लम्बी अवधि तक दलितों को प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति से वंचित रखा गया। उन प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति व सामाजिक असमानताओं पर अम्बेडकरवादी विचारों का प्रभाव रहा है और अम्बेडकर ने मानव के लिए सभी स्तरों पर समानता के सिद्धांत को प्रतिपादित किया। अम्बेडकर ने यह कहा :–

"निज देश की तू शक्ति है।
निर्माणकर्ता देश का तू,
धर्म है तू भक्ति है।
पहचान अपनी तू बना,
उठ ओ दलित संघर्ष कर,
बलि का न बकरा तू बन
उठ हो निडर। उठ हो निडर।"[20]

डॉ० अम्बेडकर व गाँधी आधुनिक समाज के मुख्य नायकों में से सर्वश्रेष्ठ नायक रहे, परन्तु हिंदी दलित कविता में दलितों द्वारा लिखे गए काव्य में डॉ० अम्बेडकर आदर्श स्थापित हुए, जबकि अधिकतर उक्त कविताओं में गाँधी का विरोध देखने को मिलता है। हिंदी दलित कविता की सुप्रसिद्ध कवयित्री सुशीला टाकभौरे लिखती हैं –

अपने तीन बंदर।
शायद यही था आपका,
दूरदर्शी अभियान।
भोले–भाले लोगों को भरमाने के लिए,
देते रहे ऐसा ज्ञान
सत्य मत देखो, सत्य मत कहो, सत्य मत सुनो।[21]

वास्तव में देखा जाए तो हिंदी दलित साहित्य व काव्य का सहज व सर्वांगीण विकास यात्रा का आरम्भ 1980 के उपरान्त तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं में मिलता है। परन्तु 1985 से 1990 तक कई दलित कवियों द्वारा डॉ० अम्बेडकर के विचारों को आदर्श मानकर अम्बेडकरवादी काव्य ग्रंथ लिखे गए, जिन ग्रन्थों में डॉ० अम्बेडकर का व्यक्तित्व, कृतित्व व सामाजिक, राजनीतिक आन्दोलनों का प्रभाव दलित रचनाकारों व रचनाओं में देखने को मिलता है। इसलिए नब्बे के दशक तक हिंदी दलित कविता ने कई आयामों को छूते हुए, दलित साहित्य को उच्चतम शिखर तक पहुँचाया। डॉ० भीमराव अम्बेडकर की वैचारिक दृष्टि का प्रभाव हिंदी दलित कवियों पर इतना व्यापक रूप से पड़ा कि उन्होंने हिंदी दलित कविता को एक नई पहचान दिलाई। वस्तुतः देखा जाए तो दलित साहित्य को केन्द्र में रखकर हिन्दी काव्य में दलित कविता अस्तित्व में आ गई परन्तु जो हिंदी दलित कविता को गति प्रदान हुई, वह 1990 दशक के उपरान्त हुई इस दशक के दलित कवियों ने डॉ० भीमराव

अम्बेडकर की विचारधारा से प्रभावित होकर काव्य लिखा। अपने दलित समाज व स्वयं के अनकहे अनुभवों को कविता के माध्यम से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। डॉ० भीमराव अम्बेडकर की विचारधारा को हिंदी दलित कविता के माध्यम से जन जन तक पहुँचाने का कार्य इन कवियों ने किया, जिनमें प्रमुख हैं– ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, जयप्रकाश कर्दम, कुसुम वियोगी, डॉ० एन० सिंह, कंवल भारती, मलखान सिंह, दयानन्द बटोही, सुखवीर सिंह, श्योराज सिंह 'बैचेन', सुशीला टाकभौरे, सूरजपाल चौहान, रजतरानी 'मीनू' आदि।

**निष्कर्ष :-**

आजादी से पूर्व हिंदी दलित कविता पर जो गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव था, उसमें गैर दलित लेखकों द्वारा दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति की अभिव्यक्ति थी, जो कि उस दौर की कविताओं में देखा जा सकता है। हिंदी साहित्य में गाँधी की वैचारिक दृष्टि का प्रभाव द्विवेदी युगीन कविताओं से देखा जा सकता है, जो उत्तरोत्तर बढ़ता गया, जिसमें हरिजनोद्धार व अछूत–सछूत की बात कही गई परन्तु समानतावादी दृष्टिकोण अत्यअल्प रहा, इसलिए आजादी के उपरांत दलित कवियों ने गाँधीवादी वैचारिक दृष्टि का विरोध किया। डॉ० अम्बेडकर की वैचारिक दृष्टि का दलित कवियों व लेखकों पर इतना प्रभाव पड़ा कि इन कवियों द्वारा लिखी गई हिंदी दलित कविता में सहानुभूति कम स्वानुभूति ज्यादा रही है। इसलिए इनकी कविताओं में तीव्र आक्रोश, सच्ची संवेदनाएं व गहरा दर्द–झलकता है, जो भारतीय गैर दलित समाज द्वारा हो रहे दलितों के प्रति जातिवादी भेदभाव व अमानवीय अत्याचारों का विरोध करती हैं।

**सन्दर्भ सूची :-**


1. प्रो0 रूवाली, केशवदत्त दलित साहित्य सन्दर्भ–1998 05, अभिषेक प्रकाशन, सीतापुर रोड़, लखनऊ।
2. भारती, कँवल दलित विमर्श की भूमिका 2007, 114, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. भारती, कँवल दलित विमर्श की भूमिका 2007, 114, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. भारती, कँवल दलित विमर्श की भूमिका 2007, 114, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. भारती, कँवल दलित विमर्श की भूमिका 2007, 114, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. गुप्ता, सरोज सियाराम शरणगुप्त के काव्य में समाज व संस्कृत–1995 51 अनामिका प्रकाशन, दिल्ली।
7. गुप्त, मैथिलीशरण, पंचवटी 2015–81 भारतीय साहित्य प्रकाशक।
8. पंत, सुमित्रानन्दन पंत ग्रंथावली 1980 रामकमल प्रकाशन, दिल्ली–180
9. जोशी, अरविंद गाँधी विचारधारा का हिन्दी साहित्य का प्रभाव 1973, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा–220
10. दिनकर, रामधारी सिंह, रश्मिरथी 2008 उदयांचल प्रकाशन, पटना–09
11. सूरप पाडु, ऐसा हिंदी और तेलुग, आधुनिक काव्यधारा 1986, ऋषवरण जैन, प्रकाशन–51
12. भारती, कँवल दलित निर्वाचित कविताएं 2006, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद–17
13. भारती, कँवल दलित निर्वाचित कविताएं 2006, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद–17
14. भारती, कँवल, फारवर्ड प्रेस पत्रिका जनवरी 2021
15. स्नेही, कालीचरण, फारवर्ड प्रेस पत्रिका, जनवरी 2021
16. भारती, कँवल, फारवर्ड प्रेस पत्रिका, जनवरी 2021
17. भारती, कँवल दलित विमर्श की भूमिका 2007, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद–124
18. भारती, कँवल चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु ग्रन्थावली, खण्ड –137
19. कर्दम, जयप्रकाश, हिंदी दलित कविता के पचास वर्ष, 37–38
20. विद्रोही मंशाराम, दलित मंजरी –09
21. कविता कोश।


मो०– 9690412622

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 164-167

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# मैथिलीशरण गुप्त रचित 'पंचवटी' में व्यक्त गाँधी विचारधारा

**प्रो. रिद्धि पी. तलाविया**

हिन्दी विभाग, मातुश्री मोंघीबा महिला आर्ट्स क़ॉलेज अमरेली, (गुजरात) 365601

उन्नीसवीं सदी के महान व्यक्तित्व महात्मा गाँधी जी ने हमारे देश को ही नहीं समग्र विश्व को प्रभावित किया था। महात्मा गाँधी जी के व्यक्तित्व, विचारधारा और दर्शन ने पूरे विश्व को प्रभावित और आकर्षित किया। गाँधी जी की विचारधारा से साहित्य, धर्म, समाज, राजनीति आदि कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा। आज भी गाँधी जी और उनकी विचारधारा प्रासंगिक है। गुप्त जी 'गाँधी युग' और 'द्विवेदी युग' के प्रतिनिधि कवि रहे हैं।

गाँधी जी और उनकी विचारधारा ने समग्र भारतीय साहित्य को दूर तक प्रभावित किया था और आज भी प्रभावित है। हिन्दी साहित्य के राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त भी गाँधी जी और उनकी विचारधारा से खूब प्रभावित हुए थे। इस संदर्भ में कहें तो गुप्त जी गाँधीवादी कवि हैं। हिन्दी साहित्य में मैथिलीशरण गुप्त जी दद्दा और राष्ट्रकवि के नाम से लोकप्रिय हैं तो गाँधी जी महात्मा, बापू और राष्ट्रपिता के रुप में विश्वप्रसिद्ध हैं। स्वयं गाँधी जी ने सर्वप्रथम गुप्त जी को सन् 1936 ई. में 'मैथिली मान ग्रंथ' से सम्मानित करते हुए 'राष्ट्रकवि' की उपाधि दी थी। उस समय गाँधी जी ने गुप्त जी के विषय में कहा था "पर मैं तो गुप्त जी को इसलिए बड़ा मानता हूँ कि वे हम लोगों के कवि हैं। और राष्ट्र भर की आवश्यकताओं को समझकर लिखने की कोशिश कर रहे हैं। हम लोग सब काशी के विद्वान और साहित्यिक नहीं है। मैं साहित्यिक दृष्टि से निश्चित रुप से मूर्ख हूँ और गुप्त जी हम सभी मूर्खों के प्रतिनिधि कवि हैं।"[1]

बाद में तत्कालीन राष्ट्रपति स्व. राजेन्द्र प्रसाद जी ने संवैधानिक रुप से गुप्त जी को राष्ट्रकवि के रुप में घोषित किया था।

गाँधी जी और गुप्त जी के जीवन की सबसे बडी समानता यह है कि दोनों की दिनचर्या, खान–पान, वेश–भूषा, आचार–विचार में काफी सादगी और पुरातनता के दर्शन होते हैं। इसलिए महादेवी जी ने गुप्त जी के बाह्य व्यक्तित्व के विषय कहा है– "गुप्त जी के बाह्य दर्शन में ऐसा कुछ नहीं जो उन्हें असाधरण सिद्ध कर सके।"[2] गाँधी जी के राजनीति में आगमन से पूर्व ही गुप्त जी की रचनाओं में राष्ट्रीयता देखी जा सकती है पर उस समय गुप्त जी तत्कालीन गरम दल और क्रांतिकारियों से अधिक प्रभावित थे, इसका प्रतिबिंब 'भारत भारती' में देखा जा सकता है। बाद में गाँधी जी के निकट संपर्क में आने से वे गाँधीवाद के व्यावहारिक पक्ष, सुधारवादी आंदोलन के प्रखर प्रवक्ता बने। जिस समय बंगाल में रवीन्द्रनाथ जी का प्रादुर्भाव हुआ उस समय हिन्दी में

मैथिलीशरण गुप्त का प्रादुर्भाव हुआ।

गुप्त जी की रचनाओं में गाँधी जी की विचारधारा मानवतावाद, अछूतोद्धार, स्वावलंबी जीवन, चरखा कातना, मानव का मानव से प्यार, जातिभेद का खंडन, निम्नवर्ग के प्रति सद्भाव, आदर्श परिवार, राम राज्य आदि का यथार्थ निरुपण हुआ है।

**'पंचवटी' में व्यक्त गाँधी-विचारधारा :-**

'पंचवटी' मैथिलीशरण गुप्त जी की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक है। इस संदर्भ में डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय लिखते हैं, "साकेत, भारत भारती, यशोधरा, जय भारत आदि के महत्व से अविरोधी होती हुई भी 'पंचवटी' गुप्त साहित्य में, तुलसी की 'विनय पत्रिका' की भाँति अपनी विशिष्ट दीप्ति रखती है। अकेली यही कृति है जहाँ मैथिलीशरण गुप्त संपूर्ण कवि हैं।"[3]

'पंचवटी' काव्य की मूल कथावस्तु गुप्त जी ने वाल्मीकि कृत 'रामायण' और तुलसीदास कृत– 'रामचरित मानस' से ली है। कवि ने राम वनवास के दौरान के एक छोटे से प्रसंग को अपने काव्य का विषय बनाया हैं। राम, लक्ष्मण और सीता वनवास के दौरान गोदावरी नदी के किनारे कुछ समय तक पर्णकुटी बनाकर रहे थे। उस समय शूर्पणखा ने राम–लक्ष्मण के समक्ष विवाह प्रस्ताव रखा था और उसके अभद्र व्यवहार के कारण लक्ष्मण उसके नाक–कान काट लेते हैं। गुप्त जी ने इस मूल कथावस्तु को अपनी मौलिकता से 'पंचवटी' काव्य में एक नया आयाम दिया है।

'पंचवटी' काव्य में कवि ने राम, लक्ष्मण और सीता के माध्यम से अपने गाँधीवादी विचारधारा को सार्थक अभिव्यक्ति दी है। 'पंचवटी' काव्य का आरंभ कवि ने 'पूर्वाभास' से किया है। पूर्वाभास में कवि ने पारिवारिक भावना का परिचय दिया है।

"पूज्य पिता के सहज सत्य पर,
वार सुधाम,
धरा धन को,
चले राम,
सीता भी उनके
पीछे चलीं गहन वन को।
उनके भी पीछे लक्ष्मण थे।"[4]

इन पंक्तियों गाँधी जी के आदर्श पारिवारिक भावना का परिचय मिलता है। पिता के वचन का पालन करने के लिए राम सब कुछ छोड़कर तुरंत वनवास के लिए निकल पडते हैं। पर उनके साथ–साथ पत्नी धर्म निभाने के लिए सीता और भातृधर्म निभाने के लिए लक्ष्मण भी चलते हैं। गुप्त जी ने रामायण के इन पात्रों के माध्यम से वचन पालन, त्याग–बलिदान, सेवा, प्रेमभाव आदि का उत्तम प्रमाण दिया है।

गाँधी जी ने हमारे देश में आदर्श रामराज्य की कल्पना की थी। 'पंचवटी' में गुप्त जी ने इस विचारधारा का इन पंक्तियों में समर्थन किया है –

"जो हो, जहाँ आर्य रहते हैं
वहीं राज्य वे करते हैं;

उनके शासन में वनाचारी
सब स्वच्छन्द विहरते हैं।"[5]

आगे वे कहते हैं :–

"अहा! आर्य के विपिन राज्य में सुखपूर्वक सब जीते हैं,
सिंह और मृग एक घाट पर
आकर पानी पीते हैं।"[6]

स्वाधीनता प्राप्ति गाँधी जी की का अहम लक्ष्य था। 'पंचवटी' में लक्ष्मण की इन पंक्तियों में गाँधी जी इस विचारधारा का परिचय मिलता है –

"पर अपना हित आप नहीं क्या
कर सकता यह नरलोक।"[7]

गाँधी जी जानते थे कि हमारे देश में उँच–नीच, अमीर–गरीब का भेदभाव है और इस कारण ही देश का विकास नहीं हो रहा है। अंग्रेजों ने इसका हमेशा लाभ उठाया था। भगवान राम चौदह वर्ष के वन जीवन में गुह, निशाद, शबर आदि वनवासी जातियों के लोगों के साथ भी रहे थे और उनके साथ प्रेमपूर्वक बातें भी की। लक्ष्मण के शब्दों में गाँधी जी की इस विचारधारा का प्रमाण मिलता है–

"गुह, निषाद, शबरों तक का मन
रखते हैं कानन में।"
इन्हें समाज नीच कहता है
पर हैं ये भी तो प्राणी,
इनमें भी मन और भाव हैं
किंतु नहीं वैसी वाणी।"[8]

इन पंक्तियों मे गाँधी जी के दलितोत्थान, अछूतोद्धार, करुणा और मानवतावादी विचारधारा का प्रमाण मिलता है। गाँधी जी के करुणा और प्रेम का फलक 'पंचवटी' में व्यापक रुप में मिलता है। लक्ष्मण की पशुओं के प्रति संवेदना इन शब्दों में मिलती है–

"मैं मनुष्यता को सुरत्व की
जननी की भी कह सकता हूँ,
किंतु पतीत को पशु कहना भी
कभी नहीं सह सकता हूँ।"[9]

गाँधी जी की शरीरिक श्रम और स्वावलंबन की विचारधारा को 'पंचवटी' में गुप्त जी ने राम, लक्ष्मण और सीता के माध्यम से सार्थक अभिव्यक्ति दी है। राम, लक्ष्मण और सीता राजघराने के थे पर वनवास के दौरान उनके साथ कोई नौकर–चाकर या दास–दासियाँ नहीं थे। सीता के माध्यम से गुप्त जी ने अपनी गाँधीवादी विचारधारा 'सादाजीवन उच्च विचार' को व्यक्त किया है– "स्वामी–दास स्वयं हैं हम जिन, स्वयं स्वामिनी–दासी हैं।"[10]

सीता जी स्वयं अपना काम करती है। वह अपने पौधों में पानी डालती है, खुरपी लेकर स्वयं खेती करती है तब परम सुख, गौरव और आनंद का अनुभव करती हैं।

इसलिए लक्ष्मण कहता है –

"स्वावलंबन की एक झलक पर
न्यौछावर कुबेर का कोष।"[11]

गाँधी जी के स्वावलंबी विचारधारा का प्रमाण इन पंक्तियों में मिलता है।

'पंचवटी' में गुप्त जी ने लक्ष्मण के चरित्र को गाँधीवादी रंग से रंगा है। 'रामायण' के लक्ष्मण शीघ्र ही में क्रोधित हो जाते हैं, लड़ने की बात करते हैं, तलवार या धनुष उठा लेते हैं, पर 'पंचवटी' के लक्ष्मण के चरित्र में विनय, विनम्रता, विवेक, संयमी, एक पत्नीव्रत, पशु–प्रेम, नारी भावना, त्याग–बलिदान, पारिवारिक भावना, वीरता आदि का अद्‌भुत समन्वय मिलता है। यह गुप्त जी की नवीन उद्‌भावना है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि 'पंचवटी' काव्य में गुप्त जी ने गाँधीवादी विचारधारा को सुंदर, सार्थक और मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति दी है। हम कह सकते हैं कि 'पंचवटी' मैथिलीशरण गुप्त जी की श्रेष्ठ गाँधीवादी विचारधारा से युक्त रचना है और गुप्त जी हिन्दी के श्रेष्ठ गाँधीवादी कवि हैं।

**संदर्भ :–**

1. मैथिलीशरण गुप्त काव्य संदर्भ कोश– डॉ. नगेन्द्र, पृ. 6
2. मैथिलीशरण गुप्त काव्य संदर्भ कोश– डॉ. नगेन्द्र, पृ. 6
3. मैथिलीशरण गुप्त – व्यक्ति और अभिव्यक्ति–संपा. डॉ. सी. एल. प्रभात, प्र. 177
4. 'पंचवटी'– मैथिलीशरण गुप्त, पृ. 1
5. वही पृ. 10
6. वही पृ. 13
7. वही पृ.
8. वही पृ. 14
9. वही पृ. 10
10. वही पृ. 40
11. वही पृ. 15

**संदर्भ ग्रंथ सूची :–**


1. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और अभिव्यक्ति– संपा. डॉ. सी. एल. प्रभात बम्बई, हिन्दी विद्यापीठ– बम्बई–1987 ई.
2. मैथिलीशरण गुप्त काव्य संदर्भ कोश– डॉ. नगेन्द्र प्रभात प्रकाशन– दिल्ली–1987
3. 'पंचवटी'– मैथिलीशरण गुप्त साकेत प्रकाशन चिरगाँव झाँसी– 2008 ई.
4. पंचवटी और मैथिलीशरण गुप्त– डॉ. घनश्याम अग्रवाल– मीनाक्षी प्रकाशन अजमेर 1986 ई.



Email ID- talaviyaridhdhi1@gmail.com

M. No. 8141447848

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 168-170

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिन्दी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा

**डॉ. बबीता गुप्ता**

श्रीरमणी ट्रीटमेंट सेन्टर, कल्पना विहार, नेहरू नगर, अमेरी रोड, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

समतामूलक समाज की स्थापना के पक्षधर, खादी की धोती, गोल–गोल ऐनक और कमर में घड़ी बाँधें गांधी जी का पूरा जीवन ही उनकी आत्मकथा है। बहुजन हिताय और ग्राम स्वराज के पक्षधर गांधी जी की आँखों में आजाद भारत का स्वप्न तैरता था। बहुभाषी सांस्कृतिक विविधता वाले देशवासियों को एकता के सूत्र में बांधने वाले गांधी जी हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में मानते थे। समाज और साहित्य को एक नया रास्ता दिखाने में गांधी जी के विचार, भाषण, लेख, कार्यक्रमों ने प्रभावित किया।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के सबसे बड़े राजनीतिज्ञ व आध्यात्मिक नेता गांधी जी के आदर्श विचारों का समेकित रूप, जिसे उन्होने जीवनपर्यंत अपने व्यवहार में ढाला, इनकी अभिव्यक्ति के वास्तविक स्वरूप को साहित्य में सुंदर ढंग से विवेचित की गई। प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित साहित्यकारों में प्रोफेसर अनिल राय का कहना है कि प्रेमचंद का सूरदास गांधी जी का प्रतीक है। गाँधी जी के ही समान सरल, सादगी प्रिय प्रेमचंद गांधीवादी तूफान से प्रभाव ग्रस्त लेखकों में से अग्रगामी हैं। प्रथम कहानी संग्रह 'सोजे वतन' में उल्लेखित सकारात्मक यथार्थवादी उग्रता के भविष्यगामी अहितकारी परिणाम का अंदेशा जान ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया था। सूरदास के रूप में रंगभूमि उपन्यास में उसके नैतिक विचार, संयम, शत्रु के प्रति निर्दोष आत्मीयता, मशीनीकरण का विरोध, पूंजीवादी संस्कृति के प्रति उपेक्षित विद्रोही स्वर अहिंसक ढंग से चलते हैं।

प्रेमाश्रम में जमींदार के प्रति भक्ति व किसानों की सेवा में अपना जीवन समर्पित करते उमाशंकर व प्रेमाशंकर हैं। आदर्श गांव की स्थापना कर निषेध पर कहते हैं कि हमारा घरेलू शिल्प इन सब बाधाओं से मुक्त रहेगा। कायाकल्प में ऐश्वर्य और विलास से पतित व्यक्ति, जो एक गिरते नैतिक मूल्यों की सच्चाई का आईना है, पृथ्वी पर व्याप्त स्वार्थ, द्वेष, अन्याय से विक्षुब्ध लोग, जमींदारी प्रथा का विरोध करते हुये न्याय की खोज करते हैं। विवादित जीवन की अच्छा त्यागमय साधू जीवन की महिमा उपन्यास गबन में अभीष्ट है। वहीं मांस मच्छी, शराबबंदी, छुआछूत के प्रति उठते विरोधी स्वर में गांधीवाद दृष्टिगोचर होता है। धन लोभी अमरकांत सेठ सुखद मार्ग त्याग कर सेवा मार्ग अपना लेता है। राष्ट्र व समाज उन्नति के लिए नारी उत्थान पर बल देते हुये इसमें नारियों का राष्ट्र सेवा योगदान परिलक्षित किया है। दहेज जैसी सामाजिक कुप्रथा, बेमेल विवाह, अमानवीय व्यवहार से ग्रस्त भारत की अबला, निरीह नारी के रूप में निर्मला उपन्यास में चित्रित है। परिस्थितियों को उद्घाटित कर संदेश दिया है कि संगठित होकर ही किसी समस्या का हल निकाला जा सकता है। व्यक्तित्व में झलकता गांधीवादी विचार, मानवतावादी चिंतन, सृजनशीलता में प्रसंगानुकूल चित्रांकन 'गोदान' उपन्यास में

स्पष्ट रूप से दृष्टव्य हैं।

धरातलीय आम व्यक्ति के लिए गाँधी दर्शन को जीवन में ढालना असंभव सा प्रतीत होता है जो जैनेन्द्र के उपन्यास 'परख' में है, जिसमें मान प्रतिष्ठा लोलुप वकील है। आदर्शवादी व्यक्तित्व की झलक बिहारी है। प्रेम की भावना को उजागर करने का असफल प्रयास 'सुनीता' कहानी है। स्पष्टतः मनोवैज्ञानिक समस्याओं का समाधान गांधीवादी विचारों से करना उतना सरल नहीं है। मानव जीवन के सुख–दुःख के दो पहलुओं में कष्ट जीवन का अभिन्न अंग है। 'त्याग पत्र' उपन्यास में मौन रहकर कष्टों को सहना भी अहिंसावादी विचार का ही प्रभाव ही है। वहीं ग्राम स्वराज की कल्पना फणीश्वरनाथ रेणू जी के उपन्यास 'मैला आंचल' है। इसमें बावनदास का सवाल कि जब तक गरीबी और जहालत खत्म नहीं होगी तब यह आंचल मैला ही रहेगा। जयशंकर प्रसाद जी के नाटक में देशभक्ति व राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना कश्मीर से कन्याकुमारी तक दिखती है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा सृजित नाटकों में गांधी जी के कर्मवाद की प्रतिच्छाया है।

सत्य, अहिंसा सिद्धांतों पर चलित स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव अनेक अन्य कवियों की लेखनी में भी दिखता है। माखनलाल चतुर्वेदी जी लिखते हैं–

"क्या? देख न सकती जंजीरों का गहना
हथकड़ियां क्यों? यह ब्रिटिश राज का गहना!

सत्य के साथ अहिंसा का समर्थन करते हुये सियाशरण जी लिखते हैं –

"हिंसा से शांत नहीं होता हिंसा नल
हिंसा का है, एक अहिंसा है प्रत्युत्तर।"

अहिंसा से जनकल्याण की भावना से ओत–प्रोत नरेन्द्र शर्मा की पंक्तियाँ –

क्रांतियाँ जग में हुईं अब तक कई,
यह अहिंसक क्रांति की संज्ञा नई, शैली नई।

इसी तरह सोहनलाल द्विवेदी समतावादी सोच के साथ नारी शिक्षा नारी कल्याण के लिए समर्थक हैं। भाईचारे की भावना से ओत–प्रोत पंक्तियाँ देखिए –

"हिन्दू–मुस्लिम सिख ईसाई
क्या न सभी हैं भाई–भाई?
जन्मभूमि हैं सबकी भाई!

अपने अहं को विस्मृत कर अहिंसावादी स्थिति प्राप्त कर लेना, पूर्वाग्रही सामाजिक समस्याओं का निदान गांधीवादी तरीके से करने को आतुर ऐसे ही व्यक्तित्व में परिलक्षित होता है सियाशरण जी के साहित्य में परिलक्षित होता है। प्रताड़ित भाभी के प्रति मानवीयता के भाव देवर में जाग्रत होकर अपने भाई के प्रति विरोधी स्वरों की प्रताड़ना से ह्रदय परिवर्तन कराया उपन्यास गोद में। निम्न जाति का स्वामी भक्त सत्यवान व्यक्ति के हाथो डाकू की हत्या हो जाना, नारी अत्याचार की सहनशीलता के आक्रोश से खात्मा आदि गांधीवादी की समष्टि के संबंध में कहा गया है कि सियाशरण जी के दोनों उपन्यास देखन में छोटे लागे, घाव करे गंभीर।

साहित्य पर गांधीवाद का समग्र प्रभाव केवल गद्य विधा में ही नहीं पद्य विधा में भी देखने को मिलता है। मैथिलीशरण गुप्त जी की यशोधरा में महिलाओं की समस्या के कारणों का वर्णन, साकेत के राम गांधी के सपनों

का भारत रामराज की संकल्पना साकार, भारत भारती में गांधी जी के दर्शन है। 'बालिका का परिचय' नामक कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान ने लिखा हैं –

मेरा मंदिर मेरी मस्जिद, बाबा काशी मेरी,
पूजा पाठ ध्यान तप जप हैं घर–घरवासी यह मेरी।

वही गांधीवाद से प्रभावित पंक्तियाँ महादेवी वर्मा जी की–

हे धरा के अमर सपूत, तुमको अशेष प्रणाम!

इसी तरह सोहनलाल द्विवेदी 'महात्मा और पुण्यात्मा' कहते हुये लिखते हैं.....

ठहरो चिता लगाओ मत,
ओ निर्मम देश महात्मा की,
एक बार फिर चरण धूलि ले लेने दो पुण्यात्मा की।

सैद्धान्तिक पक्ष की व्यवहारिकता को ग्रहण करने से ही गांधी दर्शन साधन बना परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से जन–जन में व्याप्त है। भारतीय जीवन मानस पर पड़ते प्रभाव के संबंध में जैसा कि सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा कि, "गांधी जी एक क्रांतिकारी चिंतक थे, उन्होंने राजनीति को शुद्ध बनाने के लिए मानव स्वभाव के परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका व्यक्तित्व–कृतित्व साहित्यकारों के लिए प्रेरणा स्रोत बना। आजादी की लड़ाई में गांधीवादी विचारधारा का जितना योगदान है उतना ही साहित्यिक कृतियों में। नैतिकता परक जीवन के पक्षधर कर्म योगी बन्धुत्व भाव लिए गांधी जी के विषय में अल्वर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि आने वाली पीढ़ियों में यह विश्वास जीवित रखने का उत्तरदायित्व हमारे देश के प्रबुद्ध कवियों व लेखकों का है। धरोहर स्वरूप गांधीवादी विचारधारा जो भारतोत्थान सांस्कृतिक चेतना को अपने लेखों, विचारों, आंदोलनों से सिंचित करती रही है और सदैव करती रहेगी। बौद्धिक अहिंसा में विश्वास रखने वाले कला, साहित्य और संस्कृति के ज्ञाता गांधी जी का विश्वास था कि मानव व समाज की उन्नति साहित्य के माध्यम से ही हो सकती है।

**संदर्भ :–**


1. उजास पत्रिका।
2. गांधीवादी विचारधारा का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव।
3. हिन्दी उपन्यास और गांधी दर्शन : डॉ. सीताराम।



मोबाइल नंबर 9179008780

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 171-176

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# साहित्य में चित्रित गाँधी जी के विभिन्न सिद्धान्त

**डॉ. सुधा देवी दीक्षित**

शिक्षण सहायक– हिन्दी विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी।

साहित्य का विस्तार अनादि, अनन्त 'परमेश्वर' की भांति विस्तृत और विशाल है, जिसमें ब्रह्माण्ड का सत्य समाहित है। कहा जाता है कि शब्द 'ब्रह्म' है, 'ब्रह्म' रुपी शब्द ही साहित्य को विस्तार और आकार देते है। साहित्य सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी घटना तथा प्रत्येक प्राणी मात्र को चित्रित कर स्वयं को अधिक से अधिक विस्तृत करता है। 'तमसो मा ज्योर्तिगमय' की भावना को चरितार्थ करने वाला 'सूर्य का प्रकाश' सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के तिमिर को हटाकर प्रकाशमयी स्थिति प्रदान करता है, ठीक उसी प्रकार साहित्य भी समाज में व्याप्त बुराई रुपी तिमिर को हटाकर समाज को दैदीप्यमान बनाता है और उसे नवीन दिशा प्रदान करता है। देश की सर्वोतम दिशा निर्धारण हेतु तथा भारत माता को स्वतन्त्रता प्रदान कराने हेतु राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने अहम भूमिका निभायी तो साहित्यकारों ने भी अपनी लेखिनी को सक्रिय कर देशहित में गाँधी जी का भरपूर साथ दिया। उनके द्वारा दिखाये गये मार्ग तथा सिद्धान्त को साहित्य में चित्रित कर समाज के समक्ष उजागर किया।

किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए मानवीय मूल्य, दूरदर्शी नीति, समृद्धिशाली योजनायें, संसाधन और वहां का समृद्ध साहित्य बहुत आवश्यक होता है। यह साहित्य जनता की चित्तवृतियों को चित्रित कर समाज के सम्मुख प्रकट करता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' की भूमिका' में लिखते है – ''प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।''[1]

यह साहित्य वहां की जनता की सोच और उनके ज्ञान को दर्शाता है। उन्नतिशील साहित्य देश की सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था को प्रत्येक कदम पर संभालते हुए मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वहन करता है। राष्ट्रकवि 'मैथिलीशरण गुप्त' जी भारत भारती में भारतीय साहित्य का चित्रण करते हुए लिखते है –

''साहित्य का विस्तार अब भी, है हमारा कम नहीं,
प्राचीन किन्तु नवीनता में अन्य उसके सम नहीं।
इस क्षेत्र से ही विश्व के साहित्य– उपवन है बने,
इसको उजाड़ा काल ने आघात कर यद्यपि घने।।''[2]

देश की समृद्धशाली राज–व्यवस्था की जानकारी, आने वाली पीढ़ी को साहित्य के माध्यम से ही प्राप्त होती है। समाज की दशा और दिशा के निर्धारण में साहित्य की अहम भूमिका होती है, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण 'पं0 जवाहर लाल नेहरु' और 'राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर' की बातचीत है। एक बार 'पं0 जवाहर लाल नेहरु'

संसद की सीढियां चढ़ते हुए लड़खड़ा गये तो दिनकर जी ने उन्हें संभालते हुये कहा कि ''जब–जब राजनीति लड़खड़ाती है तो साहित्य ही उसे संभालता है। साहित्य एक साधना है। यह तपस्या से प्रतिफलित होता है। साहित्य में मानवीय संवेदनाओं का समुचित प्रतिफलन होता है। समृद्ध साहित्य देश की अमूल्य धरोहर है जो प्रत्येक स्थिति में लाभकारी होता है। अब प्रश्न उठता है कि साहित्य है क्या? ''सहितस्य भाव साहित्यम'' या सहित का भाव ही साहित्य है अर्थात ऐसी रचना या कृति जिसमें सभी का हित समाहित हो। समाज हित का चित्रण करना ही साहित्य का परम उददेश्य होना चाहिए। ''गोस्वामी तुलसीदास जी' 'श्री रामचरित मानस' में लिखते हैं –

''कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।"[3]

भारतीय मनीषियों का मानना है कि कीर्ति, सम्पत्ति और साहित्य वही श्रेष्ठ होता है जिसमें मां गंगा के समान सबका हित करने की क्षमता हो। वही राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने भी कला का व्यापक प्रयोजन, समाजहित स्वीकार किया। वे लिखते हैं –

''मानते है जो कला को कला के अर्थ ही, स्वार्थिनी करते कला को व्यर्थ ही।''[4]

साहित्य अपनी विराटता में उसे ही समाहित करता है या उसी के विषय का चित्रण करता है जो व्यक्ति तथा समाज के लिए महत्वपूर्ण हो, हितकर हो, देश का कल्याण ही उसके जीवन का उददेश्य हो। 'राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी' जी का सम्पूर्ण जीवन देशहित और जनहित के लिए ही समर्पित रहा है। इन्होंने वर्षों से अंग्रेजों के अधीन रही भारतीय जनता को मुक्त कराया। उसे सम्मान से जीवन यापन करने का गौरव दिलाया। इसके लिए गाँधी जी को भी अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ा। अपने विशाल उद्देश्य की पूर्णता हेतु ये कई बार जेल भी गये। 'राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त'' जी 'मनुष्यता' कविता में गाँधी जी के सिद्धान्त ''परोपकार'' को चित्रित करते हुये लिखते हैं –

''विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करे सभी।
हुई न यों सु–मृत्यु तो बृथा मरे, बृथा जिये,
मरा नहीं वही कि जो जिया न अपने लिए।
यही पशु–प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।''[5]

भारत मां को आजाद कराना ही गाँधी जी के जीवन का मुख्य ध्येय था। ये अपने देश तथा देशवासियों के सम्मान का संरक्षण एक पिता की भांति करने लगे। 4 जून, 1944 ई0 को सुभाषचन्द्र बोस ने सिंगापुर रेडियो से एक संदेश प्रसारित करते हुए 'महात्मा गाँधी को 'देश का पिता' यानि राष्ट्रपिता कह कर सम्बोधित किया फिर सम्पूर्ण देश इन्हें 'राष्ट्रपिता' कहकर बुलाने लगा और इनके बताये गये मार्ग का र्निविरोध अनुसरण करने लगा। इसका प्रभाव साहित्य जगत पर अत्यधिक पड़ा। साहित्य और समाज एक सिक्के के दो पहलुओं के समान है। साहित्य का प्रभाव समाज पर और समाज का प्रभाव साहित्य पर पड़ता ही है। गाँधी जी के दिखाये गये मार्ग और सिद्धान्तों को साहित्यकारों ने शीर्षतम स्थान देकर साहित्य में सुनहरे अंकों से चित्रित किया। हिन्दी साहित्य की गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं पर गाँधीवाद स्पष्टतः चित्रित है। 'सुमित्रानन्दन पन्त' अपनी कृति 'साठ वर्ष

एक रेखाकंन' में गाँधी जी के व्यक्तित्व का चित्रण करते हुए लिखते है–''मेरे कवि हदय को नवयुग मंगल के लिए एक सर्वांगपूर्ण रस सिद्ध चैतन्य की खोज थी जिसकी प्राप्ति के लिए गाँधी जी का अन्तः स्पर्श शुभ्र सोपान बन सका।''[6] गाँधी जी के द्वारा दिये गये जीवन–सिद्धान्त राष्ट्रनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई0 को वर्तमान गुजरात प्रदेश के पोरबन्दर नामक स्थान में हुआ था। इनका वास्तविक नाम 'मोहनदास करमचंद गाँधी था। गाँधी जी का पारिवारिक वातावरण धार्मिक था। अतः इनके जीवन पर भी धार्मिक वातावरण का प्रभाव पड़ा। इनका जीवन–दर्शन 'श्रीमदभगवत गीता' पर आधारित था जो निष्काम कर्म पर बल देता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य पर गाँधी जी के जीवन दर्शन का प्रभाव 'छायावाद' से स्पष्ट परिलक्षित होने लगा था और 'छायावाद' का आरम्भ 1918 ई0 से माना जाता है। गाँधी जी प्रथम विश्व युद्ध के बाद सन 1915 ई0 में भारत आये और देश को अंग्रेजों के जुल्म से आजाद कराने के लिए दृढतापूर्वक सक्रिय रुप से कार्य करने लगे। गाँधी जी के 'दृढ निश्चय' रुपी सिद्धान्त से प्रभावित होकर 'महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' जी इस 'संकल्पसिद्धि' को चित्रित करते है –

''भारति जय विजय करें, कनक–शस्य–कमल धरे। भारति जय विजय करें।।''[7]

महात्मा गाँधी जी की मानवतावादी तथा कल्याणकारी विचारधारा ने सम्पूर्ण समाज को अपनी ओर आकर्षित किया। देखते ही देखते अधिकांश लोग इनके अनुयायी हो गये। वर्षों से प्रतीक्षारत, अंग्रेजों के अत्याचार को सह रही भारतीय जनता को महात्मा गाँधी जी के रुप में आशा की एक किरण नजर आयी और देखते देखते ही यह आशा की किरण करोडों रश्मियों से युक्त सूर्य की भांति प्रखर हो गयी, जिसके प्रकाश ने समूचे विश्व को अपनी प्रखर दीप्ति से ढक लिया। 'स्व' के अस्तित्व का चित्रण करते हुए निराला जी 'राम की शक्ति पूजा' में लिखते है –

''शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!''[8]

निराला जी पुनः चित्रित करते है –

''होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन।
कह महाशक्ति, राम के वदन में हुई लीन।[9]

कार्यसिद्धि हेतु स्वयं की क्षमता को जानना परम आवश्यक होता है। स्वयं का बोध तथा परिस्थति का बोध जीवन का परम अनुभव है। इस बोध में 'ज्ञान' और 'प्रेम' की पराकाष्ठा होती हैं। जहां चरम ज्ञान तथा परम प्रेम मिल जाते हैं वही बोध का प्राकट्य होता है। इस बोधत्व की प्राप्ति मानव चेतना का शिखर है। लक्ष्य प्राप्ति हेतु 'आत्मानुभूति' आवश्यक है।

गाँधी जी का जीवन दर्शन अनेक 'सिद्धान्तों पर आधारित है, जिनमें प्रमुख दो है। गाँधीजी के जीवन दर्शन का प्रमुख प्रथम सिद्धान्त 'सत्य' है। गाँधी जी का मानना है कि जो नित्य है, अपरिवर्तनशील है, वह सत्य है और जो सत्य है, वह ईश्वर है। अतः इस सत्यता रुपी ईश्वर की साधना मनुष्य को निरन्तर करनी चाहिए। सत्यता से व्यक्तित्व में दृढता आती है। सत्य का आचरण करने बाला व्यक्ति बड़ी से बड़ी विपरीत परिस्थति में भी विचलित नहीं होता इसलिए मन, वचन तथा कर्म से व्यक्ति को सदैव सत्य का पालन करना चाहिए। गाँधी जी का प्रमुख दूसरा सिद्धान्त अहिंसा है। गाँधी जी सत्य प्राप्ति तथा प्रेम निर्धारण हेतु अहिंसा को परम आवश्यक

मानते है। अहिंसा का अर्थ है– इस चराचर जगत के प्रत्येक प्राणी मात्र पर मन, वचन तथा कर्म से किसी को भी क्षति न पहुंचाना ही अहिंसा है। गाँधी जी ने 'भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम' अहिंसात्मक नीति से ही सम्पन्न किया। गाँधी जी से प्रेरित हो तथा ''अहिंसा परमो धर्मः'' की भावना को चित्रित करते हुए 'सुमित्रानन्दन पन्त' जी 'बापू' कविता में लिखते है –

''सत्य, अहिंसा से आलोकित होगा मानव का मन,
अमर प्रेम का मधुर स्वर्ग बन जावेगा जगजीवन।
आत्मा की महिमा से मोहित होगी नव मानवता,
प्रेम शक्ति से चिर निरस्त हो जावेगी पाशवता।।"[10]

गाँधी जी का अगला सिद्धान्त 'कायिक श्रम' है। 'गाँधी जी' हमेशा 'कर्म के महत्व' को स्वीकार करते है। इनका मानना है कि 'आत्मानुभूति' के लिए 'कर्मयोग' आवश्यक है। अतः कर्म से व्यक्ति को कभी विचलित नहीं होना चाहिए। प्रकृति का नियम है कि संघर्ष से कर्म में तेजी आती है। कर्म हेतु किया गया संघर्ष बहुत कठोर प्रतीत होता तो है लेकिन जब इन्हीं संघर्षों के द्वारा कर्मफल रुपी 'सौन्दर्य–प्रकाश' का प्राकट्य होता है तो व्यक्तित्व निखर जाता है। जैसे–सूर्य तपता है, तभी प्रकाश बिखेरता है, सोना भी जब आग में तपता है, तभी आभूषण का रुप धारण करता है। पत्थर जब छेनी और हथौड़े की मार खाता है, तभी मूर्ति का रुप धारण करता है। गाँधी जी के कर्म के महत्व से प्रभावित होकर 'राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी 'भारत–भारती' में 'कर्म के महत्व' का चित्रण करते हुए लिखते है –

''वैश्यों! सुनो व्यापार सारा मिट चुका है देश का ,
सब धन विदेशी हर रहे है, पार है क्या क्लेश का?
अब भी न यदि कर्त्तव्य का पालन करोगे तुम यहां,
तो पास है वे दिन कि भूखों मरोगे तुम यहां।।''[11]

गाँधी जी का अगला सिद्धान्त 'सत्याग्रह' है– जिसका शाब्दिक अर्थ–सत्य के प्रति आग्रह। अर्थात हिंसा न करते हुए, अन्याय का सर्वथा विरोध करते हुए, दृढता के साथ अपनी बात कहना। महात्मा गाँधी जी के शब्दों में– ''सत्याग्रह शारीरिक बल नहीं है। सत्याग्राही शत्रु को कष्ट नहीं पहुंचाता, वह अपने शत्रु का विनाश नहीं चाहता। सत्याग्रह के प्रयोग में दुर्भावना के लिए कोई स्थान नहीं होता है।" जयशंकर प्रसाद जी महात्मा गाँधी के 'सत्याग्रह' आन्दोलन से प्रभावित हो, इन्होंने अपने 'विशाख' नाटक में सत्याग्रह पर बल, तथा सत्कर्म की प्रतिष्ठा को चित्रित किया वे लिखते है–

''निर्बल भी हो, सत्य पक्ष मत छोड़ना।
शुचिता से इस कुहुक जाल को तोड़ना।।''[12]

अतः सभी प्रकार के अन्याय, अत्याचार और शोषण का विरोध करते हुए सत्य, अहिंसा को ही अपनी शक्ति का आधार बनाकर अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना और किसी से बैर भाव रखे बिना दृढता से अपनी बात को कहना ही सत्याग्रह है। इसमें दुर्भावना के लिए कोई जगह नहीं होती है। नेपाली जी महात्मा गाँधी जी की इस अहिंसात्मक रणनीति से बहुत प्रभावित हुए। वे इस युद्ध का चित्रण करते हुए वे लिखते हैं–

''है अपूर्व यह युद्ध हमारा, हिंसा की न लड़ाई है,

नंगी छाती की तोपों, के ऊपर विकट चढ़ाई है।
तलवारों की धार मोडने, गर्दन आगे आयी है,
सिर की मारों से डंडों की होती यहां सफाई है।।''[13]

महात्मा गाँधी जी का अगला सिद्धान्त 'मातृभाषा हिन्दी' में अभिव्यक्ति करना है। गाँधी जी हिन्दी के प्रति लोगों की उपेक्षा को लेकर बहुत चिन्तित थे। इनका मानना था कि कोई भी राष्ट्र तभी समृद्धशाली हो सकता है जब उसकी भाषा समृद्धशाली हो। 'राष्ट्रनिर्माण' में भाषा अहम भूमिका का निर्वहन करती है।

''सुनी राष्ट्रभाषा की जबसे, भव्य मनोहर तान।
मिटी मोह माया की निद्रा, गये रुप पहचान।।"[14]

ज्ञान आप किसी भी भाषा से ले सकते है लेकिन अभिव्यक्ति हमेशा हिन्दी में ही करनी चाहिए। अपने साहित्य को समृद्धशाली बनाने का प्रयास प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए। 'मुंशी प्रेमचन्द' जी कहते है कि– अगर मरते ही तुम भुला न दिये जाओ, तो ऐसा कुछ लिख जाओ कि लोग पढ़ने पर मजबूर हो जाये या ऐसा कुछ कर जाओ कि लोग लिखने पर मजबूर हो जाये। हिन्दी के विकास के लिए 'महात्मा गाँधी जी ने बहुत प्रयास किए। इसके लिए इन्होंने अनेक समितियों का गठन भी किया, जिसमें 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा' विशेष उल्लेखनीय है।

गाँधी जी का अगला सिद्धान्त 'स्वदेशी वस्तुओं' का उपयोग करना था। इन्होंने अपने देश की जनता को स्वदेशी वस्तुओं का अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया। गाँधी जी के इस आन्दोलन से प्रभावित हो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी 'भारत भरती' में चित्रित करते है–

''अब तो उठो, हे बन्धुओं! निज देश की जय बोल दो,
बनने लगें सब वस्तुएं, कल–कारखाने खोल दो।
जावे यहां से और कच्चा माल, अब बाहर नहीं,
हो 'मेडइन' के बाद बस अब, इण्डिया ही सब कहीं।"[15]

गाँधी जी खादी के प्रयोग पर बल देते थे। ये स्वयं चर्खा चलाकर सूत कातते थे और उसी से बने वस्त्रों को धारण करते थे। इन्होंने दैनिक जीवन में खादी के प्रयोग पर बल दिया। 'सोहनलाल द्विवेदी जी' इसका चित्रण करते हुए लिखते है –

''खादी के धागे–धागे में, अपनेपन का अभिमान भरा,
माता का इसमें मान भरा, अन्यायी का अपमान भरा।"[16]

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि राष्ट्रपिता 'महात्मा गाँधी' जी और देश के महान साहित्यकारों का एक मात्र उद्देश्य यही रहा है कि भारतवर्ष और यहां पर निवास करने वाले हम सभी भारतीय लोग सदैव प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे। इसी सोच को चित्रित करते हुए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी 'भारत भारती' में लिखते हैं –

''मानस–भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती,
भगवान! भारतवर्ष में गूंजे हमारी भारती।।''[17]

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-**


1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, बीसवां संस्करण– 2022, पृ0 सं0 – भूमिका
2. भारत भारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन चिरगांव, झांसी, पृ0 सं0 – 30
3. श्री रामचरित मानस, मझला आकार, हनुमान प्रसाद पोददार, गोरखपुर प्रकाशन, पृ0 सं0 – 18
4. उदधृत, साहित्यिक निबन्ध, गणिपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, सत्रहवॉ संस्करण, 2022, पृ0सं0–42
5. मनुष्यता, कविता, काव्यमंजरी, मैथिलीशरण गुप्त, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2018, पृ0 सं0– 17
6. साठ वर्ष एक रेखांकन, सुमित्रानन्दन पन्त, राजकमल प्रकाशन, पृ0 सं0 – 52
7. भारति जय विजय करें, गीतिका में संकलित, माधुरी मासिक पत्रिका, लखनऊ, फरवरी 1936 ई0 में प्रकाशित।
8. निराला रचनावली भाग–1, संपादक– नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, पांचवां संस्करण – 2009 पृ0 सं0 –335
9. निराला रचनावली भाग–1, संपादक– नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, पांचवां संस्करण– 2009 पृ0 सं0 –337
10. बापू, कविता, युगवाणी संग्रह से, सुमित्रानन्दन पन्त, लोकभारती प्रकाशन।
11. भारत भारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन चिरगॉव, झॉसी, पृ0 सं0 –168
12. उदधृत– जयशंकर प्रसाद ग्रंथावली, खण्ड–1, डॉ0 सत्यप्रकाश मिश्र, लोक भारती प्रकाशन, संस्करण – 2010, पृ0 सं0 – भूमिका
13. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियां, डॉ0 जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, पृ0 सं0 – 326– 327
14. निराला रचनावली, भाग–1, संपादक– नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, पांचवां संस्करण, 2009 पृ0 सं0 – 44
15. भारत भारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन चिरगांव, झांसी, पृ0 सं0 –178
16. खादी गीत, भैरवी संकलित, सोहनलाल द्विवेदी, पृ0 सं0 – 6 – 7
17. भारत भारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन चिरगॉव, झांसी, पृ0 सं0 – 01



मो0 नं0 – 8887719570

email Id – sudhadixit0191@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 177-180

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गाँधीवाद से प्रभावित आधुनिक हिंदी साहित्य

**कु. सपना**

शोधार्थी –हिंदी विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा।

महात्मा गांधी आजादी के संघर्ष और आजाद भारत के बीच की कड़ी है। जिनसे होकर भारतीय विचार और संस्थाएं परिमार्जित और उन्नत होती हैं। जब किसी व्यक्ति का इतना संस्थागत प्रभाव रहेगा तो वह निश्चित ही साहित्य या समाज को दशकों को तो प्रभावित करेगा, क्योंकि अंत में साहित्य समाज को ही चित्रित करता है। महात्मा गांधी का भारतीय साहित्य और राजनीति पर 1917 से प्रत्यक्ष प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगता है। 15 अक्टूबर 1917 बिहार के भागलपुर सम्मेलन में हिंदी भाषा के महत्व पर जोरदार भाषण देते हुए उन्होंने कहा –"मातृभाषा का अनादर माँ के अनादर के बराबर है"।[1] महात्मा गांधी आज इसलिए भी प्रासंगिक हो जाते हैं कि वह समाज के माध्यम से राजनीति को बदलते हैं, न कि राजनीति के माध्यम से समाज अतः साहित्य पर उनके प्रभाव का मूल्यांकन और अध्ययन जरूरी बन जाता है।

इसी बात को प्रेमचंद का कथन चरितार्थ कर सकने में सक्षम है, उ" साहित्य राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं, बल्कि राजनीति के आगे मशाल दिखाते हुए चलने वाली सच्चाई है।"[2] यद्यपि हिंदी साहित्य में गांधीवाद का प्रभाव छायावाद से पूर्व भी रहा लेकिन छायावाद के समय, विशेषतया वर्ष 1920 से 1940 में जब देश स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत था, उस समय गाँधीवाद का प्रभाव अपने चरम पर था। गाँधी जी के सत्य, अहिंसा, प्रेम, लोककल्याण, मानवता, एकता, आदि सर्वोत्कृष्ट विचारों का और उनके साधा जीवन उच्च विचार वाले व्यक्तित्व से समस्त देश प्रभावित हुए जा रहा था। तो ऐसे में हिंदी के साहित्यकार भी उन से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके, हिंदी के द्विवेदी युग के साहित्यकारों ने सर्वप्रथम गांधी के सर्वोच्च विचारों से प्रेरित होकर नवीन साहित्य सृजित करने का प्रयास किया, जो सशक्त रूप से भवानी प्रसाद मिश्र तक दिखाई देता है।

गांधीवाद का प्रभाव हिंदी की लगभग सभी विधाओं पर है, जिसे हम हिंदी साहित्य में सोहन लाल द्विवेदी के (गांधी शतदल) में, द्विवेदी गांधी की युगधर्मिता चित्रित करते हुए कहते हैं :–

"तुम बोल उठे, युग बोल उठा
तुम मौन बने युग मौन बना।"[3]

सुमित्रा नंदन पन्त ने अपने (लोकायतन) मे गांधी को इष्टदेव के रूप में देखा और लिखा कि–

"देखो न चरित्र धरा ने तुमसा समग्र संयोजित।"[4]

मैथिलीशरण गुप्त के (यशोधरा) और (साकेत) में भी गांधीवाद विचारों की अभिव्यक्ति हुई है। उर्मिला जिस तरह अन्य प्रोषित पतिकाओं से भी सहानुभूति रखती है, अपनी दुःखों के साथ दूसरों के दुःखों का भी ध्यान रखना गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव है।

महात्मा गांधी के विचारों का प्रभाव साहित्य के प्रमुख रचनाकारों में मैथिलीशरण गुप्त के काव्य संसार पर देखने को मिलता है। सियारामशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, राम नरेश त्रिपाठी, प्रेमचंद सभी लेखकों का (राष्ट्रपिता बापू का मेरे जीवन पर प्रभाव) शीर्षक संस्मरणात्मक लेख में गांधी जी के महान व्यक्तित्व और अपने जीवन का मार्मिक विश्लेषण किया है। कथा साहित्य की दृष्टि से हम देखे तो प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यास में हमें सर्वाधिक अंश में गांधी का प्रभाव दृष्टिगत होता है। गांधी ने जिस तरह से नारी के लिए अशिक्षा, दहेज प्रथा, आदि को आज़ादी की राह में बाधा मानते थे, इसी तरह की समस्या को लेकर प्रेमचंद साहित्य में खड़े होते हैं। उनके कथा साहित्य में भी सत्य, अहिंसा, हृदय परिवर्तन, सत्याग्रह, आश्रमों की स्थापना, गांधीवाद के अनेक पक्ष अभिव्यक्त हुए हैं। उनके 'निर्मला' उपन्यास में दहेज प्रथा और अनमेल विवाह की समस्या और 'रंगभूमि' में नायक सूरदास गांधीवादी मूल्य अहिंसा के अस्त्र अपनाता है। इस कारण रंगभूमि के सूरदास को गांधी की साहित्यक प्रतिमूर्ति माना गया है। इसके अलावा प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, गबन, उपन्यासों एवं नमक का दरोगा, कहानी में भी गाँधीवादी पक्ष व्यापक उभरकर सामने आते हैं। विष्णु प्रभाकर की कहानी 'उस दिन' में नायिका मंजू हिंसात्मक माहौल में एक मुसलमान बच्चे को स्वयं अपने घर में शरण देती है। तो वह पर गांधीवादी विचारधारा के अनुसार मानवीय उदारता का परिचय देती है।

जब एक तरफ से गांधी जी सत्य अहिंसा के दिव्य अस्त्रों से देश की आजादी के लिए संघर्षरत थे, तो दूसरी ओर देश के साहित्यकार अपने कलमरुपी शस्त्र से स्वतंत्रता के संघर्ष के प्रति जनता में जागृति, साहस, भरने का प्रयास कर रहे थे। भवानी प्रसाद मिश्र 'कविता के गांधी कहे जाते हैं। उनकी कविताओं में गांधी के विचारों की बेबाक अभिव्यक्ति मिलती है। भवानी प्रसाद मिश्र की 'गांधी सप्तशती' कविता की कुछ पंक्तियां इस प्रकार है..

"बात बापू के मन में चलती है।
एक ज्वाला सरीखी जलती है
आंख से प्राण चुए जाते हैं।
हाय हम राख हुए जाते हैं।"[5]

इसके अतिरिक्त हमें हिंदी के अन्य कवियों में भी गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव किसी न किसी अंश तक देखने को मिलता है। इस कड़ी में इलाचंद्र जोशी, जैनेंद्र, महादेवी वर्मा, सूर्य कांत त्रिपाठी निराला, धर्मवीर भारती, आदि नाम उल्लेखनीय है,.. गांधी के चरित्र का अनुसरण करने वाले हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक भी हुए हैं.. हजारी प्रसाद द्विवेदी मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है और जनपक्षधरता को साहित्य के मूल में रखते हुए कहते है.. "मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ। जो वाग्जाल मनुष्य की दुर्गति, हीनता और पमुखपेक्षिता

से बचा न सके, जो उसकी आत्मा को तेजोदिप्त न बना सके, जो उसके हृदय को पर दुखकातर और संवेदनशील ना बन सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।"[6]

द्विवेदी की ये पंक्तियाँ गांधी के मानवतावादी विचार को दृष्टिगोचर करती हैं। द्विवेदी गांधी के चरित्र का अनुसरण करना चाहते थे। उनके विचारों से अत्यधिक प्रभावित भी थे। गांधी के निधन के बाद हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं "वह जिधर मुड़ा जीवन लहरा उठा वह जिधर झुका प्रेम बरस पड़ा वह जिधर चला, ज़माना ढरक पड़ा, वह शक्ति का भंडार था क्योंकि वह सच्चे अर्थ में भक्त था।"[7]

नन्ददुलारे वाजपेयी भी गांधीवादी विचारों के प्रति आसक्त थे। जब हमारे देश में आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी। सांप्रदायिक दंगे हो रहे थे, गांधी जी के नेतृत्व का निरंतर विरोध हो रहा था। उस समय नंददुलारे बाजपेई आलोचना कर्म में व्यस्त थे। भारत पत्रिका उन्होंने लिखा.. "महात्मा जी के महान प्रभाव के संबंध में हमें कुछ कहना नहीं है। वे भारत के हृदय सम्राट हैं, और उनकी वाणी राष्ट्रवाणी है, त्याग और तपस्या, बुद्धि, विवेक, और ज्ञान, का जैसा समन्वय महात्मा गांधी जी में है किसी भी राष्ट्रीय नेता में नहीं है। सत्य और अहिंसा की प्राचीन दिव्यास्त्रों का आधुनिक युग के लिए अविष्कार कर महात्मा जी ने देश को जो उपहार दिए हैं, वे एकदम अमूल्य हैं।"[8]

इसके अतिरिक्त अन्य आलोचकों की कृतियों में गांधीवाद के स्वर मुखरित हुए है, जैसे : डॉ. नगेंद्र प्रभाकर माचवे, नंद किशोर आचार्य, विजय देवनारायण साही, आदि नाम अग्रणीय है।

**गांधीवाद की हिंदी साहित्य में प्रासंगिकता पर विचार :-**

महात्मा गांधी की मातृभाषा गुजराती थी और उन्हें अंग्रेजी का भाषा का भी बहुत अच्छा ज्ञान था फिर भी वे हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित देखना चाहते थे। 24वें हिंदी साहित्य सम्मेलन में वह सभापति के रूप में राष्ट्रभाषा पर विचार करते हुए कहते हैं.. "अगर हिन्दुस्तान को सचमुच एक राष्ट्र बनाना है। तो चाहे कोई माने या ना माने राष्ट्रभाषा तो हिंदी ही बन सकती है, क्योंकि जो स्थान हिंदी को प्राप्त है वह किसी दूसरी भाषा को कभी नहीं मिल सकता है"।[9]

हिंदी का राजभाषा से राष्ट्रभाषा तक का सफ़र आज भी जुझारू रूप से जारी है। राष्ट्रभाषा की मंजिल आज भी दूर ही नजर आती है, इस बात को (काका साहेब) की ये पंक्तियाँ चरितार्थ करती है.. "मैंने हिंदी वालों को यह भी कहा है, कि आप उर्दू को सांप समझते हैं, मैं उसे घर की एक भाषा समझता हूं, लेकिन राष्ट्रभाषा का स्थान लेने की दृष्टि से उर्दू मरा हुआ सांप है। अंग्रेजी जिंदा सांप है। आप मरे हुए सांप को पीट रहे हैं, और जिंदा सांप को दूध पिला रहे हैं, इससे हिंदी का भला नहीं होगा।"[10]

गांधीवाद विचारधारा आज के समय इसलिए भी प्रासंगिक हो जाती है, क्योंकि उन्होंने अहिंसा और सत्य के दिव्यास्त्रों से कम से कम रक्त बहा कर देश को आजाद करने का प्रयास किया। आज के समय में विश्व युद्धरत दिखाई देता है। ईर्ष्या और आपसी द्वेष के कारणों से अपने ही मित्र देशों को परमाणु अस्त्र–शस्त्रों से पराजय कर निर्बल करने की होड़ में भारी निर्दोष जनमानस को हानि पहुँचाने में एक क्षण सोचने का कष्ट

संबंधित देश नहीं करना चाहते हैं। आगे बढ़ने की जद्दोजहद में वे मानवतावाद को ही पीछे छोड़े जा रहे है। हम कोरोना वायरस का ही प्रकोप देखें तो समझ आता है उस जनहानि के समक्ष एकता, भाईचारा, अहिंसा सहयोग की भावना, ही एक औषधि बनकर देश प्रेम का पाठ सिखाने आयी।

यही कारण है, कि देश का प्रत्येक संवेदनशील व्यक्ति गांधी को अपना आदर्श मानता है। यहां तक की दक्षिण अफ्रीका के नेल्सन मंडेला एवं अमेरिका की पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा भी गांधी जी के आदर्श विचारों से प्रेरित है। ऐसे में हिंदी के संवेदनशील साहित्यकारों का प्रभावित होना स्वाभाविक है।

**संदर्भ सूची :-**


1. डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना का आलोचनात्मक इतिहास, पृ. 176
2. वही पृ. 181
3. श्री भगवान सिंह, गांधी का साहित्य एवं भाषा चिंतन, प्रकाशन–राजघाट वाराणसी।
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली, खंड–10, पृ. 24
5. वही, खंड 9 पृ. 403
6. डॉ. राम गोपाल सिंह जादौन, हिंदी साहित्य में व्यक्त गांधी, साहित्य संस्थान गाज़ियाबाद।
7. भवानी प्रसाद मिश्र गांधी सप्तशती, प्रकाशन–सरला, नई दिल्ली।



मोबाइल 7668647074

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 181-183

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# किसानों का मसीहा गाँधी–चंपारण किसान आंदोलन के संदर्भ में

**अन्नपूर्णा भोसले**

शोध छात्रा, कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर कर्नाटक–586 101

इतिहास गवाह है कि संघर्ष के बिना शोषण से मुक्ति नहीं मिलती है। संघर्ष दो रूप के होते है– अहिंसात्मक और हिंसात्मक संघर्ष। जब–जब शोषण हुआ है शोषितों के बचाव के लिए एक मसीहा का जन्म अवश्य हुआ है। ठीक इसी भाँति बिहार के चंपारण के किसानों को निलवारों से मुक्ति दिलाने हेतु 1764 ई० से आरंभ हुए इस संघर्ष को 1917 ई. में गाँधी जी के नेतृत्व में मुक्ति एवं सफलता मिली। 17वीं शताब्दी के अंत में पहला नील का कारखाना भारत में स्थापित हुआ। कई कारणों से भारत में प्रवेश कर चुके अंग्रेज हर जगह अपनी सत्ता ज़माने का भरसक प्रयास कर रहे थे। बिहार में नील की खेती के कारण उन्होंने चंपारण में प्रवेश किया। क्योंकि बंगाल के आलावा सिर्फ चंपारण में ही खेती के लिए अच्छी जमीन थी, अंग्रेज नील की खेती को "ब्लू गोल्ड" कहा करते थे। इसकी खेती के लिए कई सारे अंग्रेजी अफ़सर अपना सब कुछ छोड़कर नील की खेती के कारखाने खोलने में लगे थे क्योंकि नील की खेती नीलगारों के लिए अधिक लाभदायक थी, न की किसानों के लिए।

चंपारण में किसानों के लिए तीन कठिया कानून लागू किया गया। यानि किसान अपनी खेती में 3/20 हिस्से में नील की खेती करने के लिए मजबूर थे। अनाज की जगह नील उगाना इनके लिए अनिवार्य बन गया था। भले ही किसान खाने के लिए अनाज बोयें या न बोयें पर नील बोना आवश्यक बना। 1900 में यूरोप में कृत्रिम नील से प्रतिस्पर्धा शुरू हुई जिससे भारत में नील के दाममें गिरावट आ गई। निलगारों को इससे कष्ट होने लगा। किसान इस उम्मीद से खुश थे कि नील कि खेती बंद हो जाएगी। परन्तु अपने नस्ट का हर्जाना निलगारों ने किसानों से वसूलने की ठानी। किसानों को 100 रु प्रति बीघा देना पड़ा। अगर कोई किसान हर्जाना नहीं भर पाता तो उसके नाम पर ऋण पत्र बनाये जाने लगे। इस तरह किसानों का शोषण बड़ गया था।

1907 में इस शोषण से तंग आकर किसान भड़क उठे। उन्होंने अंग्रेज अधिकारी ब्रूम फील्ड को घेर लिया और डंडे से मारकर उनकी हत्या कर दी गयी। यही कारण था कि अंग्रेज किसानों के खिलाफ और ज्यादा सख्त हो गए। चंपारण के रहने वाले एक समृद्ध किसान राजकुमार शुक्ल ने तय कर लिया था की किसानों को इससे मुक्ति दिलाऊँगा। इसलिए उन्होंने तय कर लिया था कि वो गाँधी जी को चंपारण लाकर ही रहेंगे। इस कार्य में वकील ब्रजकिशोर ने उनकी सहायता की। कांग्रेस अधिवेशन में राजकुमार शुक्ल नेनीलगार और किसान शोषण पर भाषण देकर सब का ध्यान इस ओर आकर्षित करने का भरसक प्रयास किया। आखिर महात्मा गाँधी को

चंपारण लाने में सफल हुए। 15 अप्रैल 1917 में मोतिहारी जिले में गाँधी जी ने अपना पहला कदम रखा। यह खबर अंग्रेजों को मिल चुकी थी। अंग्रेज अधिकारियों में हलचल मच गयी थी। अंग्रेजो का मानना था की गाँधी के आने से चंपारण में लोग निलागारों के खिलाफ भड़क उठेंगे। गाँधी का साथ देंगे। चंपारण आने से पहले ही गाँधी जी ने तिरहुत प्रमंडल के आयुक्त को पत्र लिखकर चंपारण में घूमने तथा पीड़ित किसानों की शिकायतों के बारे में पूछताछ करने के बारें में अनुमति मांगी थी। परन्तु गाँधी से डरकर अंग्रेज धारा–144 के तहत शांति भंग करने के आरोप में गाँधी को जिला छोड़कर जाने की नोटिस दे दी। पुलिस ने गाँधी को मजिस्ट्रेट को मिलने के लिए कहा। पर गाँधी ने सविनय से इनकार कर दिया, और कहा "अवज्ञा का दंड भुगतने के लिए मैं तैयार हूँ, पर चंपारण से नहीं लौटूंगा।" परिणाम यह हुआ की गाँधी पर मुकद्दमा चला, और सुनवाई हुई। इससे पहले गाँधी ने इस घटना की जानकारी तार द्वारा मदनमोहन मालवीय को जे पी कृपलानी, राजेन्द्र प्रसाद और ब्रजकिशोर को दे दी थी और कहा था "जेल जाने के बाद भी कार्यक्रम नहीं रुकना चाहिए। यह आंदोलन अब जनांदोलन हो गया। आंदोलन अब भारतीय स्तरका हो गया। मजिस्ट्रेट के सामने गाँधी ने अपने बयान में कहा – किसानों का कहना है कि निलहे कोठी वालों द्वारा उनके साथ सही बर्ताव नहीं होता है। समस्या का अध्ययन किये बिना मैं किसी तरह की सहायता नहीं दे सकता था, फलतः मैं यहाँ यदि संभव हो तो प्रशासन और कोठी वालों की सहायता से समस्या का अध्ययन करने आया हूँ। मेरा उद्देश्य आंदोलन शुरू करना नहीं था बल्कि शोषित किसानों के लिए मानवीय और राष्ट्रीय सेवा करना था, जिसे अधिकारियों के सहायता के साथ मैं करना चाहता था।"

मजिस्ट्रेट ने कहा "यदि आप अभी जिला छोड़कर चले जाते हैं और कभी नहीं लौटने का वादा करते हैं, तो मुकद्दमा उठा लिया जायेगा।" पर गाँधी नहीं माने। कानून न मानने की वजह से मजिस्ट्रेट के सामने गाँधी स्वयं जेल जाने की इच्छा प्रकट करते है। गाँधी का बयान सुनकर न्यायालय ने स्थानीय प्रशासन से मुकद्दमा वापस लेने का आदेश दिया। और गाँधी को बाइज्जत रिहा कर दिया गया। यह खबर देश–विदेश की पत्रिकाओं में छपी। इससे प्रभावित होकर गाँधी जी के साथ देने के लिए राजेन्द्र प्रसाद, मजहरुल हक़, जे.बी कृपलानी जैसी नामी हस्तियाँ चंपारण पहुंची।

**आंदोलन की विशेषता :–**

1. गांधी जी ने इस आंदोलन को कांग्रेस का आंदोलन नहीं होने दिया बल्कि किसानों, जमींदारों व मजदूरों को साथ जोड़कर चले।
2. आंदोलन को सिर्फ चंपारण तक ही नहीं रहने दिया, बल्कि भारत के आंदोलन के साथ जोड़ दिया।
3. सबसे बड़ी विशेषता यह थी, कांग्रेस के सभी नेता इस आंदोलन में कार्यकर रहे थे, लेकिन पता नहीं चला कांग्रेस लड़ रही है।
4. आंदोलन का खर्च गाँधी ने चंपारण की जनता से नहीं लिया बल्कि अन्य राज्यों से लिया।
5. आंदोलन बिलकुल अहिंसात्मक रूप में रहा।
6. आंदोलन में चंपारण के किसानों की पूर्ण निष्ठा एवं सक्रियता दिखाई पड़ी।

यहीं से शुरू हुआ नील किसानों की मुक्ति का सफ़र। यही पर गाँधी बने बापू। गाँधी जी के नेतृत्व में भारत में आरंभ हुआ पहला सत्याग्रह। बापू कई प्रान्तों में घूमकर किसानों से बातचीत कर उन पर हुए शोषण

को हस्तलिपिका रूप दिया। इस रिपोर्ट को गवर्नर को दिया। 4 मार्च 1918 को गवर्नरजनरल ने 'चंपारण एग्रोरियन बिल' पर हस्ताक्षर करके 135 साल से चली रहीजबरन खेती की व्यवस्था का अंत कर दिया।

**बिल में निहित कुछ अंश :–**

1. तिनकठिया को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया जाए।
2. अगर किसी खेत में नील उगेगा तो किसान का निर्णय प्रमुख होगा।
3. मोतिहारी एपिपरा सस्थाओं में मालगुजारी दर 26 से 20 प्रतिशत कर दिया गया।
4. जिन किसानों ने नगद या हैण्डनोट के द्वारा तावान भरा था उनको भाग वापस कर दिया जायेगा।
5. लगान की वसूली सर्वतः गैर क़ानूनी है।
6. किसानों के वारिसों के नाम दर्ज कराने के लिए किसी तरह की फीस नहीं ली जाएगी।
7. बेतिया में जो गांजा, चरस उत्पादन होता था उसे बंद कर दिया जाये।
8. किसानों को तेल बेचने के लिए लाइसेंस की जरुरत नहीं है।
9. जमींदार, पटवारी को सूचित किया जाए कि अपने इलाके में मवेशियों के लिए सूक्त चारगाह छोड़ दे।
10. जमींदार एसत्तेदार, ठेकेदारों से वसूली करना रोक दिया जाना चाहिए।

गाँधी जी अपनी आत्मकथा में लिखते तीन कठिया प्रणाली जो लगभग एक सदी से अस्तित्व में थी, इस तरह समाप्त कर दी गयी और इसके साथ निलगारों का राज्य भी समाप्त हो गया। इस प्रकार दक्षिण अफ्रीका से लौटे गाँधी बने नील आंदोलन से भारत के हीरो। अतः चंपारण का आन्दोलन देश की स्वतंत्रता आंदोलन का पहला चरण है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :–**


1. हिंदी उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन, सुभाष धन्नाजी कड्डे।
2. चंपारण का किसान आंदोलन और गाँधी, हरिशंद्र चौधरी।
3. महत्मा गाँधी का चंपारण सत्याग्रह, सं. ओमप्रकाश पांडे।
4. चंपारण में गाँधी की सृजन– यात्रा, भैरव लाल दास।
5. पुण्यतिथि विशेष – चंपारण में गाँधी बने बापू, हिंदुस्तान टाइम्स पत्रिका।



मोबाइल नं. 9901969820

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 184-190

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गांधी का चिंतन : प्राचीनता से समन्वय और आधुनिकता का प्रकटीकरण

**डॉ. शैलेन्द्र तिवारी**

प्राध्यापक, इतिहास (कला संकाय), बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश, भारत

गांधी जी ने आत्मकथा में लिखा है, "मैं साधारण व्यक्ति हूँ, सत्य का तुच्छ अन्वेषक हूँ, गलतियां तो करता हूँ परन्तु उन्हें स्वीकार करने में कभी हिचकता नहीं तथा जीवन की सनातन विविधताओं के सम्बन्ध में प्रयोग करता हूँ। हरिभाऊ उपाध्याय, "सत्य का जब कभी, जहां कहीं, जिस किसी रूप में उन्हें दर्शन होता, वे उसे तत्काल ग्रहण कर लेते और उसे अपने आचरण, व्यवहार में शामिल कर लेते थे।'[1] हिन्द स्वराज की प्रस्तावना में भी गाँधी जी ने स्वीकार किया है कि, "जो विचार यहां रखे गये हैं वो मेरे हैं भी और नहीं भी। वे मेरे हैं क्योंकि मैं यह उम्मीद करता हूँ कि उन विचारों का अनुकरण किया जाय। यह सारे विचार मेरी आत्मा में रचे बसे हुए हैं। दूसरी तरफ यह विचार मेरे नहीं भी हैं क्योंकि ऐसा नहीं है कि सिर्फ मैंने ही इन विचारों को सोचा हो गया लिखा हो। कुछ पुस्तकों को पढ़ने के बाद ये विचार बने हैं। दिल के भीतर जो मैं महसूस करता था, उनका इन पुस्तकों ने समर्थन किया। इन विचारों में कुछ पश्चिमी विचारकों द्वारा प्रभावित हैं तो कुछ भारतीय कृतियों से भी मैं प्रेरित हुआ हूँ।[2] काका कालेलकर ने गांधी से कहा था कि, "हिन्द स्वराज में आपने जो विचार दिये हैं वे मौलिक हैं भी या नहीं, इस पर शंका होती है।"[3]

गांधी द्वारा दिये गये विचार कुछ ही दिनों में तैयार नहीं हो गये, उसके पीछे उनका गहन अध्ययन था और इसके उद्विकास पर पश्चिमी और पूर्वी दोनो ही तरह के स्रोतों का अवदान एवं प्रभाव परिलक्षित होता है। गांधी जी प्रारम्भिक जीवन में सम्पर्क आने वाले व्यक्तियों, घटनाओं आदि से बहुत संवेदनशील रहे और उनके बालमन पर इनका गहरा छाप रहा, ऐसा बहुत कुछ उनके स्वभाव के कारण भी हुआ। बचपन में पढ़ा 'राजा हरिश्चन्द्र' नाटक उन्हे प्रेरित करता है कि विपत्तियों का भोगना और सत्य का पालन करना ही वास्तविक सत्य है।[4] नाटक 'श्रवण पितृभक्ति' उनके लिए कर्तव्य का मार्ग प्रशस्त करता है। गांधी ने लिखा है, मन में इच्छा होती की मुझे भी श्रवण के समान बनना चाहिए।[5] स्कूल में कहीं भी धर्म की शिक्षा नहीं मिली यों कह सकते हैं कि शिक्षकों से जो आसानी से मिलना चाहिए था वह नहीं मिला फिर भी वातावरण से कुछ न कुछ मिलता ही रहा। हवेली (वैष्णो मन्दिर) में चलने वाली अनीति की बातें सुनकर मन उसके प्रति उदासीन बन गया। वहां से मुझे कुछ भी न मिला। पर जो हवेली से न मिला, वह मुझे अपनी धाय रम्भा से मिला। मुझे भूत–प्रेतों से डर लगता था। रम्भा ने मुझे समझाया इसकी दवा राम नाम है। बचपन में जो बीज बोया गया, वह नष्ट नहीं हुआ। आज राम नाम मेरे लिए अमोघ शक्ति है।[6] रामायण ने भी उनके हृदय पर गहरा प्रभाव डाला। पिता की बिमारी के समय

बीलेश्वर के 'लाधा महाराज' उनके घर आया करते थे। वे 'राम नाम' का पाठ किया करते थे।

गांधी ने यह सब सुना उन्होंने लिखा है, रामायण श्रवण, रामायण के प्रति मेरे अत्यधिक प्रेम की बुनियाद है, आज मैं तुलसीदास के रामचरित मानस को भक्ति मार्ग का सर्वोत्तम ग्रन्थ मानता हूँ।[7] अपने सपने के भारत को उन्होंने 'राम–राज्य' की संज्ञा दी। उनके अन्तिम शब्द 'हे राम' थे। बचपन की गलती (मांसाहार, धूम्रपान, चोरी) और भूल स्वीकारोक्ति का उल्लेख करते हुए गांधी ने लिखा है, "मेरे लिये यह अहिंसा का पदार्थ–पाठ था। उस समय तो मैंने इसमें पिता के प्रेम के सिवाय और कुछ नहीं देखा पर आज मैं इसे शुद्ध अहिंसा के नाम से पहचान सकता हूँ।"[8] पिता की बिमारी के समय आने वाले जैन, पारसी, मुसलमान धर्माचार्य अपने–अपने धर्म की चर्चा करते इस सारे वातावरण का प्रभाव मुझ पर यह पड़ा की मुझमें सब धर्मों के लिये समान भाव पैदा हो गया। एक ईसाई धर्म अपवाद रूप था उसके प्रति कुछ अरूचि थी। जो आगे चल कर ठीक हुई। पिता जी के पुस्तक संग्रह से मनुस्मृति प्राप्त की उसमें संसार की उत्पत्ति आदि की बातें पढ़ी, यह संसार नीति पर टिका हुआ है, नीति मात्र का समावेश सत्य में है। फिर नीति का छप्पय[9] दिल में बस गया। अपकार का बदला अपकार नहीं उपकार ही हो सकता है, यह एक जीवन सूत्र ही बन गया। अपकारी का भला चाहना और करना इसका मैं अनुरागी बन गया।[10] गांधी जी के विचारों को प्रभावित करने वाले व्यक्तियों में 'राजचन्द्र' प्रमुख थे। वे एक गुजराती, जैन, हीरे के व्यापारी थे। उनके ज्ञान, शुद्ध चरित्र और आत्म दर्शन से गांधी जी बहुत प्रभावित थे। गांधी जी ने एक पत्र द्वारा राजचन्द्र से 27 प्रश्न पूछे।[11] जो आत्मा, मोक्ष, ईश्वर, वेद, गीता, आर्यधर्म, ईसाई धर्म, बाइबल, भक्ति, पुनर्जन्म, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ईसामसीह से सम्बन्धी चमत्कार, अगला जन्म, दुनिया की अन्तिम स्थिति क्या होगी, कृष्णावतार, रामावतार क्या यह सच्ची बाते हैं, जैसे विषयों से सम्बन्धित थे। राजचन्द्र द्वारा इन प्रश्नों का विस्तृत जबाब दिया गया।[12]

उनका कहना था कि आत्मा अजर–अमर है, मानव दुःखों का प्रधान कारण उसकी बाहरी लालसायें हैं और इन लालसाओं से मुक्ति आवश्यक है। अर्न्तचेतना का ज्ञान भी जरूरी है लेकिन यह सब उतना आसान नहीं है इसीलिए जन्म और पुनर्जन्म का सिलसिला चलता रहता है। राजचन्द्र ने दूसरे धर्मों पर भी अपने विचार दिये। उन्होंने गांधी को सच्चे धर्म का अर्थ भी समझाया कि 'धर्म का अर्थ शास्त्रों के नाम से जानी जाने वाली पुस्तकों को रटना नहीं है। यह तो आत्मा का गुण है जो दृश्य या अदृश्य रूप में मनुष्य मात्र में विद्यमान रहता है। धर्म वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने आपको पहचान सकते हैं इसके द्वारा ही हम दूसरे जीवों के प्रति अपने सच्चे सम्बन्धों को जान सकते हैं। यह साधन हमें जहां से मिले वहां से ले सकते हैं चाहे भारत से, यूरोप से या फिर अरब से। इस साधन का सामान्य रूप सब धर्मशास्त्रों में एक सा है। असत्य, हिंसा, अन्याय की बात तो कोई धर्म नहीं करता। ईश्वर एक है, ऐसा सभी धर्मों ने कहा है। धर्म तो बाड़े के समान है जिसमें सभी मनुष्य कैद हैं।[13] राजचन्द्र ने गांधी को कुछ धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया जैसे मणिरत्नमाला, मोक्षमाला, पंचीकरण, मुमुक्षु प्रकरण इत्यादि।

यद्यपि गांधी ने राजचन्द्र को अपना अध्यात्मिक गुरू स्वीकार नहीं किया, लेकिन उनके सत्य की अनेकरूपता के विचार तथा धर्म वही है जिसमें सभी धर्मों के विचार समाहित हैं, आदि गांधी विचारों पर राजचन्द्र का प्रभाव स्वीकार किया जा सकता है। अपनी आत्मकथा में गांधी ने स्वीकार किया कि मेरा धर्मज्ञान वातावरण से मिला ज्ञान है। बचपन में उन्होंने भट्ट जी से 'भागवत' सुनी, बाद में उसे गुजराती में पढ़ा, उन्होंने स्वीकार

किया है कि भागवत एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसके पाठ से धर्म–रस उत्पन्न किया जा सकता है।[14] गांधी लिखते हैं, बचपन में पड़े शुभ–अशुभ संस्कार बहुत गहरी जड़ें जमाते हैं इसे मैं खूब अनुभव करता हूँ।[15] लन्दन और दक्षिण अफ्रिका में उन्होंने न केवल भारतीय दर्शन का अध्ययन किया, बल्कि दूसरे धर्मों का भी सूक्ष्म अध्ययन किया, इसमें भगवद्गीता का गांधी विचारो पर व्यापक प्रभाव[16] देखा जा सकता है। संकट की घड़ियों में गीता उनके लिये पथ प्रदर्शक के समान थी। गांधी के अपरिग्रह और निष्काम कर्म के सिद्धान्त पर गीता की प्रेरणा स्वीकृत है। यही विचार आगे न्यासिता के सिद्धान्त की नींव डालते है।

शाकाहार का मुद्दा गांधी के लिये गम्भीर विषय था। विदेश यात्रा से पूर्व जैन संत बेचर जी द्वारा मां के सम्मुख यह प्रतिज्ञा लिवायी गई की मैं मांस, मदिरा तथा स्त्रीसंग से दूर रहूँगा। जिसे उन्होंने जीवन पर्यन्त निभाया। गांधी ने लिखा है साल्ट की 'अन्नाहार की हिमायत' नामक पुस्तक लन्दन में पढ़ी। मुझ पर उसकी अच्छी छाप पड़ी। इस पुस्तक को पढ़ने के दिनो से मैं विचार पूर्वक अन्नाहार में विश्वास करने लगा। अब स्वयं अन्नाहारी रहकर दूसरों को वैसा बनाने का लोभ मुझमें जागा[17] आहार पर पुस्तक जिसको गांधी जी ने पढ़ा और प्रभावित हुए :–

1. हावर्ड विलियम्स की 'आहार–नीति' में अलग–अलग युगों के ज्ञानियों, अवतारों और पैगम्बरों के आहार का और आहार विषय उनके विचार।
2. डॉक्टर मिसेज एना किंग्सफर्ड की 'उत्तम आहार रीति'।
3. डॉक्टर एविन्सन के आरोग्य विषयक लेख में दवा के बदले केवल आहार के हेरफेर से रोगी को निरोग करने की पद्धति को समर्थन।

गांधी लिखते हैं कि इन सब पुस्तकों के अध्ययन का परिणाम यह हुआ कि मेरे जीवन में आहार विषयक प्रयोगों में आरोग्य की दृष्टि मुख्य थी, बाद में धार्मिक दृष्टि सर्वोपरि बन गई।[18] मैंने अन्नाहार पर अंग्रेजी की पुस्तकों का बहुत सूक्ष्मता से विचार किया था। मुझ पर इन दृष्टियों का प्रभाव पड़ा, मैं समझ चुका था, केवल उन्हीं वस्तुओं का सेवन करना योग्य है जो शरीर व्यापार के लिये आवश्यक है। इस समय तक मेरे प्रयोग आर्थिक और आरोग्य की दृष्टि से होते थे। विलायत में धार्मिक स्वरूप ग्रहण नहीं किया था। धार्मिक दृष्टि से मेरे कठिन प्रयोग दक्षिण अफ्रिका में हुए। पर कहा जा सकता है कि उनका बीज विलायत में बोया गया।

गांधी जी के रहन–सहन में सादगी का बीजारोपण विलायत में ही दिख पड़ता है, रहन–सहन में अधिक सादगी लाने का प्रयत्न शुरू किया। इन फेर–फार के कारण मेरी आंतरिक और बाह्य स्थिति के बीच एकता पैदा हुई।[19] इस तरह गांधी जी ने प्रायः सम्पर्क में आने वाली पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति को परिश्रमपूर्वक अभ्यास के पश्चात् ही अपनाया। उन्होंने मैनचेस्टर छात्रावास के अन्नाहारी ईसाई मित्र की सलाह पर बाइबल पढ़ा। गांधी लिखते हैं कि ईसा के गिरि प्रवचन का मुझ पर अच्छा प्रभाव पड़ा। उसे मैंने हृदय में बसा लिया। विशेषतः यह उपदेश कि, जो तुझसे कुर्ता मांगे अंगरखा भी दे दे, जो तेरे दाहिने गाल पर तमाचा मारे, बायां गाल भी उसके सामने कर दे' यह पढ़ कर मुझे अपार आनन्द हुआ। मेरे किशोर जिज्ञासु मन ने गीता, आर्नल्ड कृत बुद्धचरित और ईसा के वचनों का एकीकरण किया। मन को यह बात जंच गई की 'त्याग में धर्म है'।[20] ब्रह्मसमाजियों (थियोसोफिस्टों) और उनके साहित्य से सम्पर्क होने के कारण उनके हृदय में धर्म समन्वय के लिये आन्दोलन करने की प्रेरणा हुई। कार्लाइल की प्रसिद्ध पुस्तक 'वीर और वीर पूजा' से उन्होंने पैगम्बर हजरत मुहम्मत साहब

की महानता, वीरता और साधनामय जीवन का पाठ सीखा।[21] लन्दन में गांधी जी ने कानून की कुछ मौलिक पुस्तकों को पढ़ा और उनकी सोच पर काफी प्रभाव पड़ा कि ''नैतिक कानून ही सब कानूनों से बड़े हैं'' दो महत्वपूर्ण बातें ग्रहण की– पहली बात तो यह कि तथ्यों की निःस्पृह खोज ही कानून का आधार है। उन्होंने अपने जीवन में कानून और राजनीतिक कामों में इसका प्रयोग किया। वास्तविक तथ्यों की इस साधना का उनकी सत्यनिष्ठा से खूब मेल बैठता है। गांधी जी को कानून की दूसरी बड़ी देन यह मिली थी कि इसी के कारण उनके मन पर संरक्षण सिद्धान्त की अमिट छाप पड़ी, जिसका उन्होंने सम्पत्ति के समान वितरण के लिये प्रयोग किया। लंदन में अपने प्रवास काल में उन्होंने खूब मितव्ययिता से खर्च करने का और एक–एक पाई का सही–सही दैनिक हिसाब भी रखने का अभ्यास किया था। जिसके कारण उन्होंने आजीवन सार्वजनिक कोष को सुव्यस्थित ढंग से संचालित करने में सफलता पाई। इस प्रकार कह सकते हैं कि 1891 ई0 में ब्रिटेन से भारत आने तक उनके जीवन में आधारभूत सिद्धान्त परिपक्व हो चुके थे और तद्नुरूप वे उनके परिपालन में अभ्यस्त भी हो चुके थे। इस समय तक उनका एक ऐसे जीवन–दर्शन की ओर झुकाव हो चुका था जिसे उनके अनुसार संसार के मनीषियों ने आदर्शरूप में प्रतिष्ठित किया था और जो प्राची–प्रतीची का समन्वयक कर सकता था।

भारत, दक्षिण अफ्रीका और फिर अंत में भारत। गांधी जी का जीवन सचमुच उनके प्रारम्भिक जीवन के मूलभूत सिद्धान्तों का विभिन्न क्षेत्रों में विस्तार और प्रयोग मात्र रहा है। दक्षिण अफ्रिका गांधी जी के प्रयोगों की प्रयोगशाला थी, वहां गांधी जी ने पश्चिमी लेखकों के विचारों का अध्ययन किया। गांधी जी, मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाले आधुनिक तीन पुरूष हैं रायचन्द्र भाई ने अपने सजीव सम्पर्क से, टॉलस्टाय ने 'बैकुण्ड मेरे हृदय में है' नामक अपनी पुस्तक से और रस्किन ने अन्टुदिलास्ट नामक पुस्तक से।[23] गांधी ने हिन्द स्वराज की परिशिष्ट सूची में टॉलस्टाय की छः पुस्तकों का अध्ययन करने की सलाह दी है। यह पुस्तकें मुख्यतः चार विषयों पर हैं– ईसाई धर्म एक नैतिक धर्म के रूप में, सौन्दर्य शास्त्र, नई औद्योगिक सभ्यता की आलोचना तथा भारत में उपनिवेशवाद का प्रश्न। 1894 में गांधी ने पुस्तक पढ़ी 'बैकुण्ठ तेरे हृदय में है', इस पुस्तक का बहुत गहरा प्रभाव उनके हृदय पर पड़ा। टालस्टॉय ने इसमें ईसाई धर्म को एक नैतिक व्यवस्था के रूप में देखा है। 'बाइबल के गिरि प्रवचन' हमें अहिंसा का पाठ पढ़ाते हैं तथा अपनी अन्तर्चेतना से कार्य करने को प्रेरित करते हैं। न्यू टेस्टामेन्ट द्वारा कई प्रश्न उठाए गये हैं, जैसे बढ़ती हुई लोभ की प्रवृत्तियां, शक, द्वेष, मृत्यु, पुर्नजन्म और इन सबसे हटकर 'सत्य क्या है? इस सन्दर्भ में ईसा मसीह द्वारा सुझाया 'अहिंसा' का मार्ग ही उचित प्रतित होता है। धर्म हमें जीवन की सच्ची दिशा दिखाता है। टॉलस्टाय का मानना है कि जब मानव अपने अन्तर्मन की आवाज सुनेगा तो ही वे ईश्वर के निकट पहुँच सकेगा। यह अन्तर्मन की आवाज सत्य और अहिंसा की आवाज होगी। गांधी द्वारा स्थापित फीनिक्स आश्रम के सदस्यों के लिये यह पुस्तक 'बैकुण्ठ तेरे हृदय में है' पढ़ना आवश्यक था। बाद में गांधी ने इस पुस्तक का गुजराती में अनुवाद भी किया।

टालस्टाय की एक और पुस्तक 'What is Art' ने गांधी को प्रभावित किया। टॉलस्टाय के तरह उन्होंने भी स्वीकार किया की प्रकृति, कला, सौन्दर्य, नैतिकता तथा राजनैतिक गतिविधियां सब आपस मंह जुड़ी हुई हैं। कला को अगर प्रकृति तथा नैतिकता से अलग कर देते हैं तो यह जीवन में भ्रष्टता ला देगी। गांधी, टालस्टाय की तरह यह भी स्वीकार करते थे कि हिंसक युद्ध की तरह अहिंसक युद्ध में भी योद्धाओं को समुचित प्रशिक्षण मिलना चाहिए। कला हममें भावनायें जागृत करती हैं। टॉलस्टाय की तीन अन्य पुस्तके 'How Shall we escape',

'The Slavery of Our Times'o The First Step मुख्यतः नई औद्योगिक सभ्यता की आलोचना करती है। इन पुस्तकों के माध्यम से मजदूरों पर होने वाले शोषण का मुद्दा, किसानों की दयनीय दशा, आधुनिक युग में सद्गुणों का अभाव तथा आधुनिकता के दौर में उपभोक्तावाद की तरफ बढ़ती प्रवृत्तियां आदि विषयों पर विचार दिए गए हैं। जिनसे गांधी पूरी तरह सहमत दिखते हैं। टॉलस्टाय की एक और पुस्तक 'Letter to a Hindoo' का भी गांधी ने अध्ययन किया। टॉलस्टाय का मानना है कि अगर भारतीय हिंसा की प्रवृत्ति छोड़ दें तो एक भी व्यक्ति को गुलाम नहीं बनाया जा सकता। आज भारतीयों के लिये जरूरी है अहिंसा के मार्ग को अपनाना। गांधी टॉलस्टाय के इस मत से भी पूरी तरह सहमत थे कि घृणा करनी है तो पाप से करोपापी से नहीं, क्योंकि पापी का हृदय परिर्वतन सम्भव है।

गांधी के आर्थिक विचार काफी हद तक रस्किन के विचारों से प्रेरित थे। रस्किन की रचना। Joy Forever and Its Price in the Market' में औद्योगिक सभ्यता की आलोचना की गयी है। रस्किन का मानना है कि यदि श्रम को सही तरीके से संतुलित किया जाय तो सुविधाएं प्रदान करना कठिन नहीं है। गांधी, वर्तमान समय में यह सारी सुविधाएं एक खास वर्ग तक सीमित हैं, जबकि समाज के बहुसंख्यक वर्ग की न्यूनतम आवश्यकताएं भी पूरी नहीं हो पाती। रस्किन का मानना था कि जब तक मनुष्यों की आवश्यकताएं पूर्ण न हों विलासता का जीवन जीना एक अपराध है। रस्किन की दूसरी पुस्तक 'Unto this last' ने गांधी के विचारों को ज्यादा प्रभावित किया। आटोबायोग्राफी के अध्याय 'एक पुस्तक का चमत्कारी प्रभाव'[24] में उन्होंने लिखा है कि मेरे मित्र हेनरी पोलक ने यह पुस्तक मुझे 1904 में डरबन यात्रा में दी। पुस्तक को हाथ में लेने के बाद इसे छोड़ नहीं पाया। इसने मुझे पकड़ लिया। जो चीज मेरे अन्दर गहराई में छिपी थी, रस्किन के ग्रन्थ में मैंने उसका स्पष्ट प्रतिबिम्ब देखा, इस पुस्तक से सीखा–

1. सबकी भलाई हमारी भलाई निहित है।
2. वकील और नाई दोनो के काम की कीमत एक सी होनी चाहिए क्योंकि आजीविका का अधिकार सबको एक समान है।
3. मेहनत मजदूरी का, किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है।

गांधी के अनुसार, पहली चीज मैं जानता था, दूसरी की मैं धुंधले रूप में देखता था, तीसरी का मैंने कभी विचार ही नहीं किया था। सर्वोदय ने मुझे दीये की तरह दिखा दिया की पहली चीज में दूसरी दोनों चीजें समाई हुई हैं और सवेरा हुआ और मैं इन सिद्धान्तों पर अमल करने के प्रयत्न में लग गया।[25]

स्वराज का अर्थ है राजनीतिक सत्ता। इसकी प्राप्ति अंग्रेजों को बल पूर्वक भारत से निकालने पर होगी। स्वराज के लिये आर्थिक सम्पन्नता और समृद्धि का होना भी जरूरी है। जो हमें औद्योगिकरण से प्राप्त होगी। गांधी स्वराज की इस अवधारणा को स्वीकार नहीं करते थे। ''सच्चा स्वराज केवल राजनीतिक सत्ता और आर्थिक सम्पन्नता की बात नहीं करता यह आम लोगों नैतिक विकास की बात करता है। भारत का नया मध्यम वर्ग अभी नैतिक विकास के उस स्तर पर नहीं पहुंचा। आज जरूरत है सद्गुणों से युक्त जीवन व्यतीत करने की, अगर हम इस दिशा में सत्य के मार्ग पर चलते हैं तो स्वराज की प्राप्ति साथ ही हो जायेगी। एडवर्ड, कारपेन्टर की रचना Civilization : Its Cause and Cure' टेलर की पुस्तक 'The Fallacy of Speed', R.H. Sherared की पुस्तक The White Slaves of Engaland' ब्लाऊंट के विचार पत्र 'A New Crusade' नार्डू की दो पुस्तकें Conventional Lies of

Civilization' rFkk Paradoxes का भी प्रभाव गांधी पर दिखता है।

अमेरिकी विचारक हेनरी डेविड थोरू के विचारों से गांधी जी काफी प्रभावित दिखते हैं। थोरो के 'प्रिन्सिपल ऑफ सिविल डिसोबिडिऐन्स' के विचार उन्होंने 1907 में इंण्डियन ओपिनियन में प्रकाशित किये। गांधी की सत्याग्रह की परिकल्पना का यहां समर्थन पाते हैं। गांधी ने एमर्सन के निबन्धों को पढ़ने योग्य बताया था। उनके अनुसार, एमर्सन के निबन्धों में भारतीय ज्ञान पाश्चात्य गुरू के माध्यम से प्रकट हुआ था। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि गांधी जी पाश्चात्य विचारों की प्रतिच्छाया पुस्तकों में देखे थे। जिनमें उन्हें यह प्रतिच्छाया सर्वाधिक परिलक्षित होती थी,वे उनसे अपने को प्रभावित मानने लगते थे। पूर्ण पाश्चात्य प्रभाव जैसी कोई वस्तु गांधी जी के चिन्तन में स्पष्ट परिलक्षित नहीं होती। छुआ–छूत तथा बाल विवाह को नकारना अथवा राष्ट्रवाद का समर्थन आदि ऐसा विचार हैं जो पाश्चात्य प्रभाव में विकसित हुए किन्तु गांधी जी ने ये विचार अपने पाश्चात्य चिन्तन के अध्ययन से ग्रहण किये अथवा भारतीयों के प्रभाव में स्वीकार किये जो स्वयं पाश्चात्य विचारधारा से प्रभावित थे, कहना कठिन है। ये प्रगतिशील विचार भारत के बौद्धिक वातावरण में व्याप्त थे। और यदि गांधी जी इनसे प्रभावित हुए तो कोई आश्चर्य नहीं है। बसारिया ने लिखा है, " 'गांधी चिंतन विश्व के प्रत्येक कोने के साधु शिक्षाओं का सम्मिश्रण है। उन्होंने विचार व विवेक के विभिन्न स्रोतों से प्रेरणा ली और बिल्कुल नये और विशिष्ट चिन्तन का सृजन किया'' अस्तु, गांधी विचार मुक्त एकत्र कर अपनी चिन्तन माला में पिरोया समन्वयवादिता उनकी मौलिकता थी तो अभिव्यक्ति उनकी विलक्षणता और इस तरह वे अग्रणी चितंको में सम्मिलित हो गये।

**सन्दर्भ :–**


1. हरिभाऊ उपाध्याय, बापूकथा (1920–1948), सर्वसेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2000 ई0, पृ0 2.
2. हिन्द स्वराज, गांधी (अनुवादक, अमृतलाल ठाकोरदास नाणावटी), सर्व सेवा संघ, वाराणसी, जून 2009, पृ0 3.
3. एन्थनी जे0 परेल(2) 1993, गांधी, फ्रीडम एण्ड सेल्फ रूल्स, पृ0 16.
4. सत्य के प्रयोग, एम0के0 गांधी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, जनवरी 2002, पृ0 5.
5. वही, पृ0 5
6. वही, पृ0 25–26.
7. वही, पृ0 26.
8. वही, पृ0 22.
9. वही, पृ0 28.
10. वही, पृ0 29.
11. कलेक्टिड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, वॉल्यूम–1, पृ0 90–91.
12. वही, वॉल्यूम– 32, पृ0 593–602
13. वही, वॉल्यूम– 32, पृ0 11.
14. सत्य के प्रयोग, एम0के0 गांधी, नवजीवन, प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृ0 26.
15. वही पृ0 27.
16. Carlyle की Life of Prophet in Heros and Heroworship, सर एडविन अर्नोल्ड की The song celestial (गीता का अनुवाद), The Lisht of Asia (बुद्ध की जीवनगाथा) The saying of Zarathustre (पारसी धार्मिक पुस्तक)

17. सत्य के प्रयोग, पृष्ठ 40.
18. वही, पृष्ठ 41.
19. वही पृष्ठ 46–47.
20. वही, पृष्ठ 59–60.
21. वही, पृष्ठ 44
22. वही पृष्ठ 76.
23. सत्य के प्रयोग, पृष्ठ 270–271.
24. सत्य के प्रयोग, पृष्ठ– 271.
25. लुई फिशर, गांधी की कहानी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012 पृ0 93.
26. सत्य के प्रयोग, पृष्ठ 20.

मोबाईल नंबर– 9453513394
ई मेल– s9453513394@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 191-193

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गाँधीवाद की वर्तमान समय में प्रासंगिकता

**श्री भूपेन्द्र सिंह**

शोधछात्र– हिन्दी विभाग, कुमाऊँ केसरी पं0 बद्रीदत्त पाण्डेय परिसर, बागेश्वर (उत्तराखण्ड)

1931 में काँग्रेस के करॉची अधिवेशन में महात्मा गाँधी जी ने कहा था, गाँधी मर सकता है लेकिन गाँधीवाद नहीं, गाँधीवाद से तात्पर्य महात्मा गाँधी जी के अपने सिद्धान्तों से था। गाँधी जी ने अपने सिद्धान्तों से आजीवन कभी समझौता नहीं किया भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गाँधी जी ने अहिंसा के रास्ते पर चलकर ही भारत को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया था। महात्मा गाँधी जी के प्रमुख सिद्धान्तों में सत्य, अहिंसा, स्वराज, रामराज्य और सर्वोदय की भावना थी 'हिन्द स्वराज' पुस्तक में स्वराज के सम्बन्ध में महात्मा गाँधी बताते हैं – "स्वराज के लिए तो हम आप सभी अधीर हो रहे है, पर वह है क्या चीज, इस बात पर अभी तक हमने ठीक तौर से विचार नहीं किया है। अंग्रेजों को निकाल बाहर करने की बात पर अभी तक हमने ठीक तौर से विचार नहीं किया है। अंग्रेजों को निकाल बाहर करने की बात तो बहुतों के मुँह से सुनाई पड़ती हैं, पर ऐसा क्यों करना चाहिए, इस पर हमने ठीक तौर से विचार किया हो, यह नहीं दिखाई देता। आपसे ही पूछता हूँ, जो कुछ हम चाहते हैं, अंग्रेज वह सब हमें दे दें, तब भी क्या आप उन्हें निकाल बाहर करने की जरूरत समझेगे?"[1]

महात्मा गाँधी जी ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान तीन बड़े जन आन्दोलनों का नेतृत्व किया– असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा एवं भारत छोड़ो आन्दोलन, असयोग आन्दोलन के द्वारान चौरा–चौरी की घटना घटित होती है, इस घटना के बाद महात्मा गाँधी जी असहयोग आन्दोलन को वापस ले लेते हैं क्योंकि चौरा–चौरी घटना में आन्दोलनकारी द्वारा पुलिस चौकी में आग लगाई जाती है और आन्दोलन हिंसात्मक होता है, इस घटना घटित होते ही महात्मा गाँधी असहयोग आन्दोलन को वापस लेने का निर्णय करते हैं। महात्मा गाँधी के इस निर्णय के बाद महात्मा गाँधी की लोकप्रियता में काफी गिरावट आती है 'गाँधी एक असम्भव सम्भावना' पुस्तक में सुधीर चन्द्र गाँधी के अहिंसात्मक तरीके के बारे में लिखते है "मैं तो दिवालिया हो गया हूँ लेकिन अहिंसा का दिवाला कभी नहीं निकल सकता। जिस अहिंसा का हमने इस तीस साल में उपयोग किया वह निर्बल की अहिंसा ही रही है। आज की बदलती हुई हालत में कमजोरों की अहिंसा के लिए जगह नहीं है। सच तो यह है कि हिन्दुस्तान को आज तक वीरों की अहिंसा के प्रयोग करने का मौका ही नहीं मिला। अगर मैं बराबर कहता रहूं कि बहादुरों की अहिंसा के समान दुनिया में दूसरी कोई शक्ति नहीं है तो उससे कोई खास फायदा नहीं हो सकता। इस सत्य को साबित करने के लिए तो बार–बार और विस्तार से जीवन में उसे प्रकट करने की जरूरत है जहां तक मुझसे बन पड़ता है मैं तो अपने जीवन में उसे प्रकट करने की कोशिश कर ही रहा हूँ।"[2]

सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान काँग्रेस ने अपने मंच से आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए गाँधी जी को अधिकृत नहीं किया तो तब महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि मैं देश के बालू से भी काँग्रेस से बड़ा आन्दोलन खड़ा कर सकता हूँ, भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान महात्मा गाँधी जी ने करो या मरो का नारा दिया था इस नारे का उद्देश्य था कि आप कर्म करते–करते देश के लिये शहीद हो जाओ लेकिन हिंसा मत करना। हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध उपन्यासकार यशपाल अपने उपन्यास 'गाँधी की शव परीक्षा' में लिखते हैं, "गाँधीवाद हिंसा या द्वेष को मनुष्य के हृदय का पाप बताता है। गाँधीवाद या ईश्वर के आदेशों के अनुसार चलने का दावा करने वाले सम्प्रदाय, हिंसा को परमेश्वर के आदेश के विरूद्ध अपराध और अहिंसा को, परमेश्वर को प्रसन्न करने और परमेश्वर से साक्षात्कार पाने का मार्ग बताते हैं। अहिंसा के इस प्रयोजन और परिभाषा के अनुसार अहिंसा एक पारलौकिक और आध्यात्मिक वस्तु बन जाती है और उसके रूप का निश्चय व्यक्ति और उसके समाज के हाथ की बात नहीं जान पड़ती।"[3]

गाँधी जी के दर्शनों में सत्याग्रह और आत्मबल प्रमुख था भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था, ऐसी स्थिति में आन्दोलनकारी द्वारा व्यक्तिगत सत्याग्रह चलाया गया। व्यक्तिगत सत्याग्रह के पहले सत्याग्रही विनोवा भावे थे जिन्होंने बाद में भूदान आन्दोलन भी चलाया था। 'हिन्द स्वराज' में महात्मा गाँधी खुद बताते हैं, "सत्याग्रह या आत्मबल को अंग्रजी में 'पैसिव रेजिसटेंस' कहते हैं। यह शब्द उस तरीके के लिए व्यवहार किया गया है जिसमें अपने हक पाने के लिए लोंगो ने खुद कष्ट उठाया है। यह शस्त्र–बल का उलटा है। मुझे जो काम पसंद न हो उसे मैं न करूँ तो मैं सत्याग्रह या आत्मबल से काम लेता हूँ। मिसाल के लिए मान लीजिए सरकार ने एक कानून बनाया जो मुझे पर 'लागू' होता है। वह मुझे पसंद नहीं है। अब अगर मैं सरकार पर हमला कर के उसे वह कानून रद्द करने को मजबूर करूँ तो मैंने शरीर बल से काम लिया। पर मैं उस कानून को मंजूर ही न करूँ और उसे न मानने की जो सजा मिले उसे खुशी से भुगत लूँ, तो मैंने आत्मबल से काम लिया अथवा सत्याग्रह किया। सत्याग्रह में अपनी ही बलि देनी होती है"।[4]

भारत के आजादी आन्दोलन के दौरान माहत्मा गाँधी जी ने भारतीयों को आजादी दिलाने के लिए तथा अंग्रेजों की नीतियों के खिलाफ अहिंसात्मक तरीके से कई दिनों तक भूख हड़ताल भी की उन भूख हड़तालों के परिणाम स्वरूप अंग्रेजों को भारतीयों की बहुत सारी माँगे मानने के लिये बाध्य होना पड़ा। महात्मा गाँधी जी के उपवासों के विषय में सुधीर चंद्र अपनी पुस्तक 'गाँधी एक असंभव संभावना' लिखते है "मेरे पहले उपवासों के वक्त टीकाकारों ने कहा है कि उपवास ने लोगों पर दबाव डाला और अगर मैं उपवास न करता तो जिस मकसद के लिए मैंने उपवास किया, उसके स्वतंत्र गुण दोष के विचार से निर्णय विरूद्ध जाने वाला था। अगर यह साबित किया जा सके कि मकसद अच्छा है तो विरूद्ध निर्णय की क्या कीमत है। शुद्ध उपवास भी शुद्ध धर्म पालन की तरह है। कोई परिणाम लाने के लिए उपवास नहीं करना चाहता। मैं उपवास करता हूँ, क्योंकि मुझे करना ही चाहिए।"[5]

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गाँधी जी ने भारतीयों को आजादी दिलाने के लिए जिस तरह से अहिंसात्मक तरीका अपनाया था उस अहिंसात्मक तरीके से आजादी के बाद भी भारत में लोंगों द्वारा अपनी सरकारों से अपनी माँगें को मनवाने के लिए गाँधी जी द्वारा बताए गए अहिंसा के मार्ग पर चलकर अपनी माँगें सरकारों को मनवाने के लिए बाध्य किया था। समकालीन कथाकार श्री सुभाष पन्त अपने उपन्यास 'पहाड़ चोर'

में गाँधीवाद के अहिंसात्मक तरीके का इस तरह से वर्णन करते है। "रामपत ने गद्‌गद हृदय से घोषणा कर दी, "महात्मा गाँधी जी उपजे है अपने गांम में"। गाँधी जी के प्रति उसमें सम्मानभाव था। उसका विश्वास था कि वे ही देश में आजादी लाए थे। सन् तैतालीस की बात रही होगी उसने परेड ग्राउंड में उनके दर्शन किए थे। वे आजादी का अलख लेकर यहां आए थे। इतनी भीड़ थी कि वह सिर्फ धोती पहने, नंगे बदन, कृशकाया की एक झलक देख सका था। वे उसे कतई चमत्कारी या अवतारी नहीं लगे थे। हाथ में धनुष, न सिर पर जूड़ा, न मोरपंख, न बांसुरी, न गले में सर्पों की माला, न भस्म–भभूत, कहीं से भी अवतारोंवाला कोई लक्षण नहीं। सीधासादा एक बूढ़ा। लेकिन साहब कोई बात तो जरूर थी उस आदमी में, भूखा रहकर और जेल जाकर देश को आजाद करा दिया।"[6]

राष्ट्रपति महात्मा गाँधी जी ने तत्कालीन समाज में व्याप्त बुराइयों के खिलाफ अहिंसात्मक तरीके से प्रतिरोध के स्वरों को जोरदार तरीके से मुखर किया उन्होंने छुआछूत जातीय अस्पृश्यता आर्थिक असमानता इस प्रकार की तमाम बुराइयों को छोड़कर ऐसे समाज की स्थापना की बात की जिसमें रामराज्य हो गाँधी जी के रामराज्य की संकल्पना के बारे में यशपाल 'गाँधीवाद की शव परीक्षा' पुस्तक में लिखते है। "गाँधीवाद के अनुसार समाज की व्यवस्था का आदर्श 'रामराज्य' है। 'रामराज्य' का लक्ष्य भी यही है कि समाज के लोगों को वैयक्तिक प्रोत्साहन और सामूहिक रूप से परमेश्वर का साक्षात्कार करते के उद्देश्य में और सुविधा मिल सके। गाँधीवाद समाज की आर्थिक और राजनैतिक समस्याओं को हल करते समय भी परमेश्वर के साक्षात्कार के उद्देश्य को ही मुख्य समझता है। गाँधीवाद का उद्देश्य समाज के लोगों की भौतिक समृद्धि और संतोष नहीं है।"[7]

इस प्रकार महात्मा गाँधी के सिद्धान्तों की वर्तमान समय में भी वही प्रासंगिकता है जो उस समय भी आज भी दुनिया के अनेक देशों में महात्मा गाँधी द्वारा बताए गये मार्ग का अनुसरण किया जाता है, महात्मा गाँधी वैचारिक प्रसंगिकता के कारण ही प्रत्येक वर्ष 2 अक्टूबर को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

**सन्दर्भ सूची :-**


1. गाँधी. महात्मा. हिन्द स्वराज. ज्ञान प्रेस. नई दिल्ली. प्रथम सं0 2022. पृष्ठ सं0 24.
2. चन्द्र. सुधीर, गाँधी एक असम्भव सम्भावना. राजकमल प्रकाशन. नई दिल्ली. प्रथम सं0 2011. पृष्ठ संख्या 88.
3. यशपाल. गाँधीवाद की शव परीक्षा. लोकभारती प्रकाशन. लखनऊ. प्रथम सं0 1941 .पृष्ठ संख्या 42.
4. गाँधी. महात्मा. हिन्द स्वराज. ज्ञान प्रेस. नई दिल्ली. प्रथम सं0 2022. पृष्ठ सं0 85.
5. चन्द्र. सुधीर. गाँधी एक असम्भव सम्भावना. राजकमल प्रकाशन. नई दिल्ली. प्रथम सं0 2011. पृष्ठ संख्या 134.
6. पन्त. सुभाष. पहाड़ चोर. राजपाल एण्ड सन्स. दिल्ली प्रथम सं0 2005. पृष्ठ संख्या 26.
7. यशपाल. गाँधीवाद की शव परीक्षा. लोकभारती प्रकाशन. लखनऊ. प्रथम सं0 1941. पृष्ठ संख्या 23.


संपर्क सूत्र– 9760102637

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 194-199

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गांधी बनाम प्रेमचंद

**डॉ. सीमा कुमारी**

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रा. म. बादली, झज्जर (हरियाणा)

गांधी–दर्शन के चार आधारभूत सिद्धांत हैं– सत्य, अहिंसा, प्रेम और सद्भाव। उनका विश्वास था कि सत्य ही परमेश्वर है। उन्होंने सत्य की आराधना को भक्ति माना और अपनी आत्मकथा का नाम 'सत्य के प्रयोग' रखा। 'मुंडकोपनिषद' से लिए गए राष्ट्रीय वाक्य 'सत्यमेव जयते' के प्रेरणा–श्रोत बापू हैं। बापू सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। उनका विचार था, 'अहिंसा के बिना सत्य की खोज असंभव है। अहिंसा साधन है और सत्य साध्य।' शांति प्रेमी रूस के टॉलस्टाय और अमेरिका के हेनरी डेविड थॉरो उनके आदर्श थे।

यद्यपि उन्होंने इस प्रकार के दर्शन की कोई व्याख्या अथवा उसकी गूढ़ता के विषय में कहीं विशद और व्यवस्थित रूप से कुछ लिखा नहीं है, पर उनके विचारों का अध्ययन करने पर उनकी उपर्युक्त दृष्टि का आभास मिलता है। उनका वह प्रसिद्ध वाक्य है–– जिस प्रकार मैं किसी स्थूल पदार्थ को अपने सामने देखता हूँ उसी प्रकार मुझे जगत के मूल में राम के दर्शन होते हैं। एक बार उन्होंने कहा था, अंधकार में प्रकाश की और मृत्यु में जीवन की अक्षय सत्ता प्रतिष्ठित है।

यहाँ उन्हें जीवन और जगत का प्रयोजन दिखाई देता है। वे कहते हैं कि जीवन का निर्माण और जगत की रचना शुभ और अशुभ जड़ और चेतन को लेकर हुई है। इस रचना का प्रयोजन यह है कि असत्य पर सत्य की और अशुभ पर शुभ की विजय हो। वे यह मानते हैं कि जगत का दिखाई देनेवाला भौतिक अंश जितना सत्य है उतना ही और उससे भी अधिक सत्य न दिखाई देनेवाला एक चेतन भावलोक है जिसकी व्यंजना जीवन है।

फलतः वे यह विश्वास करते हैं कि मनुष्य में जहाँ अशुभ वृत्तियाँ हैं वहीं उसके हृदय में शुभ का निवास है। यदि उसमें पशुता है तो देवत्व भी प्रतिष्ठित है। सृष्टि का प्रयोजन यह है कि उसमें देवत्व का प्रबोधन हो और पशुता प्रताड़ित हो, शुभांश जागृत हो और अशुभ का पराभव हो। उनकी दृष्टि में जो कुछ अशुभ है, असुंदर है, अशिव है, असत्य है, वह सब अनैतिक है। जो शुभ है, जो सत्य है, जो शुभ्र है वह नैतिक है।

इसी के प्रकाश में महात्मा गांधी ने सारी सृष्टि के विकास और मानव के इतिहास को देखा। उनका दर्शन एक प्रकार से जीवन, मानव समाज और जगत का नैतिक भाष्य है। इसी की गर्भ दृष्टि से उनकी अहिंसा का प्रादुर्भाव हुआ है। अहिंसा का अर्थ है–मन, वाणी अथवा कर्म से किसी को आहत न करना। ईर्ष्या–द्वेष अथवा किसी का बुरा चाहना वैचारिक हिंसा है तथा परनिंदा, झूठ बोलना, अपशब्दों का प्रयोग एवं निष्प्रयोजन वाद–विवाद वाचिक हिंसा के अंतर्गत आते हैं। उनकी अहिंसा प्राचीन काल से संतों और महात्माओं की अहिंसा मात्र नहीं है।

गांधी जी में युग युग से मनुष्यता के विकास द्वारा प्रदर्शित आदर्शों का प्रादुर्भाव समवेत रूप में ही दिखाई देता है, उनमें भगवान राम की मर्यादा श्रीकृष्ण की अनासक्ति, बुद्ध की करुणा, ईसा का प्रेम एक साथ ही समाविष्ट दिखाई देते हैं। ऊँचे–ऊँचे आदर्शों पर, धर्म और नैतिकता पर, प्राणिमात्र के कल्याण की भावना पर जीवनोत्सर्ग करने वाले महापुरुषों की समस्त उच्चता निहित दिखाई देती हैं।

गांधी जी की तरह मुंशी प्रेमचंद्र ने भी लड़ी हैं लड़ाइयां, जहां गांधीजी सत्याग्रह के माध्यम से लड़े वहीं मुंशी प्रेमचंद भी समाजिक कुरीतियों के खिलाफ पहले से ही अपनी लेखनी से लड़ाई लड़ रहे थे। गांधी जी की क्रियात्मकता की झलक हमें प्रेमचंद्र के प्रारम्भिक साहित्य में ही मिलने लगती है फिर चाहे बात देशप्रेम की हो या फिर सामाजिक कुरीतियों की।

बीसवीं सदी का वह भारत, जिसकी सोई हुई आस्था जागने के लिये अकुलाने लगी थी...उसमें एक नाम साहित्य की दुनिया से था तो दूसरा राजनीतिक हलचलों से, वे नाम थे...प्रेमचंद और महात्मा गांधी। देश के और सामाजिक कुरीतियों के प्रति दोनों महापुरुषों की चिंता समान थी। एक ने उसका प्रतिकार अपनी लेखनी से किया तो दूसरे ने सत्याग्रह से।

यहां प्रारम्भ में ही यह बात विचारणीय है कि क्या प्रेमचंद गांधीजी से प्रभावित थे? निस्संदेह इसमें दो मत नहीं हैं कि प्रेमचंद पर गांधी जी का प्रभाव था पर यह भी निर्विवाद सत्य है कि गांधी की लड़ाई जिन–जिन समस्याओं के विरुद्ध रही, उस लड़ाई को प्रेमचंद पहले से ही लड़ रहे थे या यूं कहें कि हम प्रेमचंद के विचारों में, उनके साहित्य में गांधी के आगमन से ही गांधी दर्शन की छाया पाने लगते हैं। गांधी की क्रियात्मकता की झलक हमें प्रेमचंद के प्रारम्भिक साहित्य में ही मिलने लगती है...चाहे वह देश प्रेम की बात हो या सामाजिक समस्याओं की।

भारतीय राजनीति में गांधीजी का आगमन 1916 के आस–पास हुआ पर प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ लगभग 1901 से ही हो चुका था। स्वाभाविक था कि ऐसे प्रेमचंद के लिये तत्कालीन परिस्थितियां अत्यंत प्रभावित कर देने वाली थीं जिनमें राष्ट्रीय चेतना और राजनीतिक संघर्ष का बिगुल बज चुका था। देश की उन परिस्थितियों ने प्रेमचंद की लेखनी को जैसे धार दे दी और वे चल पड़े उन्हीं रास्तों पर, जिन पर आगे गांधी जी को आना था।

अमृतराय के इस कथन से इसका स्पष्ट प्रमाण मिलता है जिसमें वे लिखते हैं..."सन् 1901 के आसपास प्रेमचंद ने अपना पहला उपन्यास "श्यामा" लिखा। मुझे बताया गया है कि उसमें प्रेमचंद ने बड़े सतेज, साहसपूर्ण स्वर में ब्रिटिश कुशासन की निंदा की है।"

यही भावधारा उस काल की कहानियों में मिलती है। इन कहानियों का संग्रह, संभवतः 1906 में "सोजेवतन" के नाम से छपा था। यह किताब फौरन जब्त कर ली गई।... देश की परिस्थितियां ही ऐसी थीं कि हर सच्चे भारतीय के सीने में देश प्रेम उफान मार रहा था। "सोजेवतन" संग्रह की पहली कहानी "दुनिया का सबसे अनमोल रतन" में उसी की परिणति दिखती है जिसमें उस प्रेमिका के द्वारा मंगाई गई रत्नजड़ित मंजूषा में से निकली तख्ती पर सुनहरे अक्षरों में लिखा है... "खून का वह आखिरी कतरा जो वतन की हिफाजत में गिरे, दुनिया की सबसे अनमोल चीज है...।" इस संग्रह की पांचों कहानियों में देश प्रेम की ही महिमा है। "यही मेरा वतन है" कहानी में अपने बच्चों के साथ अमेरिका में बस जाने वाले एक भारतीय के सीने में अपने देश के प्रति

प्रेम का दर्द कुछ इसी तरह बोलता है।

प्रेमचंद की वैचारिक चेतना के इसी क्रम में 1912 में "वरदान" उपन्यास आता है जिसमें बड़े–बड़े जनांदोलनों का रूप पहली बार दिखाई देता है। उपन्यास का प्रारंभ ही देश सेवा की अभिलाषा के साथ उसी के लिये वरदान मांगने से होता है। प्रेम कथा के ताने–बाने में बुनी इस रचना का अंत भी देश सेवा के ही संकल्प से होता है।

उन दिनों देश में स्वतंत्रता आंदोलन के साथ ही सामाजिक सुधार के भी आंदोलन चल रहे थे। प्रेमचंद का "प्रेमा" अथवा "प्रतिज्ञा" उपन्यास उसी का प्रतिफल था जिसमें उपन्यास का विधुर नायक अमृतराय वैधव्य के भंवर में पड़ी हुई अबलाओं के साथ अपने कर्तव्य का पालन करने के लिये आर्य मंदिर में प्रतिज्ञा करता है।

प्रेमचंद देश में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों से अत्यधिक आहत थे। अछूतोद्धार और विधवा विवाह की समस्या पर उनकी लेखनी आहत होकर चली है। यह उनकी कथनी और करनी की समानता ही थी कि उन्होंने स्वयं 1905 में एक बाल विधवा शिवरानी देवी से विवाह किया। 1907 का यह उपन्यास गांधी के आने से पूर्व का है, जिसमें उठाई गई समस्याओं को आगे चलकर गांधीजी ने अपने समाज सुधार का प्रमुख अभियान बनाया।

प्रेमचंद ने "प्रतिज्ञा" उपन्यास भारतीय समाज की सबसे पीड़ित विधवा नारी की समस्या को लेकर लिखा है जिसमें वे इस सामाजिक समस्या को सुधारवादी ढंग से सुलझाने की कोशिश करते हैं।

यहां यह बताना महत्वपूर्ण है कि प्रेमचंद की इस समाज सुधारक कृति में गांधीवादी विचारधारा क्यों दिखाई देती है, वह इसलिये कि महात्मा गांधी केवल राजनीतिक आंदोलनकारी ही नहीं थे बल्कि एक समाज सुधारक भी थे, जिनका मानना था कि राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त करने के लिये देश की सामाजिक बुराइयों से मुक्ति जरूरी है।

प्रेमचंद की इसी सामाजिक चिंता के क्रम में उनका उपन्यास "सेवासदन" आता है जो 1918 में प्रकाशित हुआ। भारतीय राजनीति का यह वह समय था जब गांधीजी भारत की राजनीति के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर रहे थे। ऐसे समय में प्रेमचंद का यह उपन्यास नारी समस्या को लेकर आया। प्रेमचंद की बहुत बड़ी विशेषता है कि वे यथार्थ का चित्रण तो करते हैं पर उसकी परिणति आदर्श में होती है। पर वे अपने आदर्शवादी रूप में भी सामाजिक यथार्थ को छूटने नहीं देते। उनका यही रूप "सेवासदन" में उनके आदर्श की स्पष्ट छाप छोड़ता है जिसमें वे गणिका हो चली सुमन को दालमंडी के कोठे से निकाल कर सेवासदन की अध्यक्षा बना देते हैं। एक समाज सुधारक के रूप में महात्मा गांधी ने भी इस समस्या को एक प्रमुख सामाजिक समस्या के रूप में देखा था जिसे वे अनैतिक और पशुवृत्ति जैसा मानते थे। प्रेमचंद भी इस उपन्यास में यही भाव लेकर चले हैं।

बिहार के चंपारण में हजारों भूमिहीन मजदूर और गरीब किसान अंग्रेजों के शोषण से खाद्यान्न के बजाय नील और अन्य नकदी फसलों की खेती करने को मजबूर थे। किसानों पर होने वाले इस तरह के अत्याचार के विरोध में गांधी जी द्वारा 1917 में चंपारण का पहला सफल सत्याग्रह किया गया जिसके बाद उनकी समस्या दूर होने के साथ ही वे अपनी जमीन के मालिक बन सके। इसी के बाद इसी तरह की समस्याओं से त्रस्त भारत के किसानों में एक संगठनात्मक चेतना का विकास होने लगा था। ऐसे समय में प्रेमचंद की किसानी चेतना इन हलचलों के साहित्यिक आंदोलन के लिये उठ खड़ी हुई और उन्हीं कृषक समस्याओं का सच लिये 1922 में उनका उपन्यास आया..."प्रेमाश्रम"। गांधी जी का चंपारण सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, जिसने भारतीय

जनमानस में अत्याचार का विरोध करने की शक्ति भर दी थी, जिसके कारण समाज में एक जाग्रति का उदय हो चला था ये सब "प्रेमाश्रम" के प्रेरणास्रोत बने। स्वयं प्रेमचंद इस प्रेरणा को स्वीकार करते हुये अपनी पत्नी शिवरानी देवी से कहते हैं" "गांधी जी राजनीति के माध्यम से भारत के किसानों और मजदूरों के सुख–चैन के लिये जो प्रयत्न कर रहे हैं, "प्रेमाश्रम" उन्हीं प्रयत्नों का साहित्यिक रूपांतर है। ("प्रेमचंद घर में") प्रेमचंद ने किसानों के सारे दर्द की अनुभति कर ली थी तभी तो वे ऐसे पहले लेखक हुए, जिन्होंने भारत में जमींदारी उन्मूलन की बात कही।

1925 में आया प्रेमचंद का उपन्यास "रंगभूमि", जो राजनीतिक मंच पर गांधीवाद के चरमोत्कर्ष का काल था। यह वह समय था जब गांधी जी असहयोग आंदोलन को स्थगित कर सविनय अवज्ञा आंदोलन की तैयारी में संघर्षरत थे। उनका "यह" उपन्यास गांधी जी के इसी सत्याग्रही आत्मबल से प्रेरित है जिसमें इसका मुख्य पात्र, अंधे भिखारी सूरदास का आत्मबल, पशुबल के विरुद्ध लड़ते दिखाई देता है। सूरदास बनारस के पाण्डेयपुर गांव का निवासी है जिसके पास पूर्वजों से मिली उसकी कुछ जमीन है जिसे वह अपने जीवनयापन के लिये इस्तेमाल न कर गांव के पशुओं को चरने के लिये छोड़ देता है। उसका ऐसा त्याग कि वह भीख मांग कर अपना जीवन व्यतीत करता है।

पूंजीपति जनसेवक उसकी जमीन पर सिगरेट का कारखाना लगाने के लिये उसे अच्छे दाम देकर इस जमीन को खरीदना चाहता है पर सूरदास इससे साफ इनकार कर देता है। वह जमीन खरीदने के तमाम प्रलोभनों से भी विचलित नहीं होता और अपने आदर्शों की रक्षा के लिये सत्याग्रह करते हुए अपने को होम कर देता है। उपन्यास की मुख्य समस्या औद्योगिकीकरण के कारण होने वाली समस्या है जिससे गांधी जी भी चिंतित थे, जिसके मूल में पूंजीपतियों के निजी लाभ और बाकी सब शोषण ही शोषण था। सच्चाई की यही लड़ाई सूरदास अकेले बंद आंखों और खुले दिल से लड़ता रहा। "रंगभूमि" में महत्व इस बात का नहीं है कि सूरदास एक हारी हुई लड़ाई लड़ता है बल्कि महत्व इस बात का है कि वह अन्याय को चुपचाप सहन नहीं करता, बल्कि लड़ता है।

निश्चित रूप से लेखक का आदर्श उसके उसी संघर्षमूलक आत्मबल में ध्वनित होता है जिसमें उनका पात्र हार नहीं मानता, पलायन नहीं करता बल्कि विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए शहीद हो जाता है जो उनके यथार्थ में भी आदर्श बनता है। अगर "प्रेमाश्रम" में प्रेमचंद प्रेमशंकर बनकर गांधी के सत्याग्रह की लड़ाई लड़ते हैं तो रंगभूमि में सूरदास के रूप में गांधी को ही उतार देते हैं। यही वह उपन्यास था जिसने अपनी प्रसिद्धि के चलते प्रेमचंद को कथा सम्राट की पदवी दे डाली।

आगे जैसे–जैसे अंग्रेजी हुकूमत के विरोध में गांधी जी का संघर्ष तेज होता गया, प्रेमचंद के उपन्यासों में भी उस विरोध के स्वर तेज होते गए। 1932 में आया उनका "कर्मभूमि" उपन्यास गांधी जी के स्वाधीनता और अछूतोद्धार आन्दोलन की कर्मभूमि का ही साहित्यिक रूप था। उपन्यास का नायक अमरकान्त बनारस के सेठ समरकान्त का बेटा है जो शुद्ध खद्दरधारी, चरखा चलाने वाला समाजसेवी है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने क्रान्ति का व्यापक चित्रण करते हुए तत्कालीन सभी राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं को कथानक से जोड़ा है।

प्रेमचंद जेल जाने को स्वयं उत्सुक थे, पर उनकी देश प्रेम की भावना में पत्नी भी साथ खड़ी हो गई। "प्रेमचंद घर में"...जीवनी से शिवरानी देवी की एक सक्रिय क्रांतिकारी की भूमिका का पता चलता है। प्रेमचंद के

मुंशी दयानारायण निगम को 7 जून, 1930 को लिखे पत्र से यह बात स्पष्ट होती है कि आंदोलन में जेल जाने के लिये वे पूरी तरह तैयार थे लेकिन उनकी पत्नी ने इस इच्छा को पूरा नहीं होने दिया। कारण स्पष्ट था–पत्नी की स्वयं जेल जाने की इच्छा।

इसी समय आया प्रेमचंद का "समर यात्रा" कहानी संग्रह गांधी जी के सविनय अवज्ञा आंदोलन पर जोर देता है पर "सोजेवतन" की तरह सरकार ने इसे भी जब्त कर लिया। इसके अलावा उनकी कहानियों में भी गांधी के आंदोलन की स्पष्ट छाप मिलती है जिसमें मुख्य रूप से "जुलूस", "शराब की दुकान", "लाल फीता", "अनुभव", "मैकू", "होली का उपहार", "आहुति", "जेल" और "पत्नी से पति" आदि कहानियों में गांधी जी के आंदोलनों की स्पष्ट गूंज है। 8 फरवरी, 1921 को गांधीजी ने गोरखपुर में एक विराट जनसभा में अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध अपना ओजस्वी भाषण दिया था। उस भाषण का प्रेमचंद पर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने 15 फरवरी को ही अपनी सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

एक तरफ गांधी जी का भारत तो दूसरी तरफ उसी भारत के ग्रामीण जीवन में जीने वाला प्रेमचंद का नायक नहीं बल्कि महानायक–उनका गरीब किसान जो ग्रामीण जीवन के महाकाव्य में अपने जीवन संघर्ष का नायक होकर उभरता है...जैसे लगता है, वही पूरा भारत है जिसका शताब्दियों तक शोषण और उत्पीड़न हुआ है, वह "गोदान" का होरी ही है। वह अपने कर्तव्य को समर्पित निष्ठावान है, सहता है, मरता है पर हार नहीं मानता। 1936 में आये "गोदान" को देखकर ऐसा लगता है कि प्रेमचंद की सारी उपन्यास यात्रा का अंत "गोदान" में ही होना था।

इस उपन्यास तक आते–आते प्रेमचंद गांधी जी से भी आगे निकल जाते हैं। उन्हें लगता है कि हम लोगों के द्वारा लड़ी जाने वाली वह कैसी आजादी की लड़ाई है। जहां इस कृषक देश में किसान की ऐसी हालत है कि वह ऋण के मकड़जाल में फंसकर विवश अपने परिवार की एक–एक इच्छा के लिये छटपटाता है और हल त्यागकर फावड़ा उठाने को मजबूर हो जाता है। उनके अंदर की चिंता कहती है, क्या इसका कोई हल है अपने भारत में? इसीलिये शायद अभी तक होने वाले उनके यथार्थ चित्रण में आदर्श की कोई जगह नहीं बची थी, तभी तो वह किसान से मजदूर बन फावड़ा चलाते–चलाते अंत में दम तोड़ देता है। उनकी यही मूल चिंता है भारत के किसान को लेकर, जो "गोदान" में एक किसान की किसान से मजदूर बनने की कहानी कहती है और जो कई प्रश्नों को छोड़कर समाप्त हो जाती है। प्रेमचंद ऐसे भारत के स्वप्नद्रष्टा नहीं थे, उनकी उसी चिंता की परिणति "गोदान" में अपने तमाम प्रश्नों के साथ हुई है।

प्रेमचंद का आजादी पाने जा रहे भारत को लेकर एक सपना था, जिसमें था अब तक की लड़ी गई उनकी सारी सामाजिक और राजनीतिक लड़ाई से मुक्त एक भारत। "हंस" के अपने प्रथम संपादकीय में उनके विचार उनकी इसी कामना की तरफ संकेत करते हैं..."हंस के लिये यह परम सौभाग्य की बात है कि उसका जन्म ऐसे शुभ अवसर पर हुआ है, जब भारत में एक नये युग का आगमन हो रहा है, जब भारत पराधीनता की बेड़ियों से निकलने के लिये तड़पने लगा है... हमारा यह धर्म है कि उस दिन को जल्द से जल्द लाने के लिये तपस्या करते रहें।...हंस का ध्येय आजादी की जंग में योग देना है।" बनारसी दास चतुर्वेदी को लिखे अपने एक पत्र में वे कहते हैं... "इस समय तो सबसे बड़ी आकांक्षा यही है कि हम स्वराज्य–संग्राम में विजयी हों।"

स्वतंत्रता आंदोलन को निर्ममता से कुचलने के सरकार के रवैये पर वे विक्षुब्ध होकर मुंशी दयानारायण

निगम को लिखते हैं..."गवर्मेंट की ज्यादतियां नाकाबिले–बर्दाश्त हो रही हैं।...उसके बाद मई 1930 "हंस" के अंक में वे सरकार को चेतावनी भी दे देते हैं..."संगीन से तुम चाहे जो काम ले लो, पर उस पर बैठ नहीं सकते।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि बींसवीं सदी में दो ही पुरुष हुए भारत की सोई हुई आस्था को जगाने वाले। राजनीति के क्षेत्र में यदि महात्मा गांधी थे तो साहित्य की दुनिया में प्रेमचंद। भारतीय सामाजिक–राजनीतिक क्रांति के अग्रदूत के रूप में दोनों की स्थिति और महानता समान है। प्रेमचंद को जानकर हम गांधी को अनायास पा जाते हैं और गांदी की क्रियात्मकता में हमें प्रेमचंद के जीवन–दर्शक की झलक मिलने लगती है। यहां पर एक साहित्यिक योद्धा था तो दूसरा राजनैतिक योद्धा। उद्देश्य दोनों का एक ही था। इस प्रकार प्रेमचंद और गांधी एक दूसरे के पूरक दिखाई पड़ते हैं।

**संदर्भ सूची :-**


1. श्यामा, वरदान, प्रेमा, प्रतिज्ञा, सेवासदन, रंगभूमि, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, हंस पत्रिका आदि – प्रेमचंद।
2 प्रेमचंद घर में – शिवरानी देवी।



Mobile No. 9466114488

Gmail- seemadeepak01@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 200-201

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गांधी के राम बनाम साहित्य के राम

**विजय पाटिल**

शिक्षक सह साहित्यकार, उ. मा. विगवाड़ी, जिला बड़वानी, म.प्र. Pin Code : 45166

साहित्य में गांधी जी का बहुत गहरा प्रभाव है। गांधी जी स्वयं भी हिंदी साहित्य से प्रभावित थे। उनके चिंतन में सत्य अहिंसा शांति सद्भावना और सबसे महत्वपूर्ण विषय सर्वोदय और अंत्योदय रहा। गांधी जी की स्वतंत्रता संग्राम में मुख्य भूमिका रही।उन्हें राष्ट्रपिता के नाम से भी जाना जाता है। गांधी जी एक महान दार्शनिक एवं राष्ट्र के निर्माता थे। साहित्य में उनका चिंतन और कर्म का व्यापक स्तर पर प्रभाव रहा। उनका एक पक्ष राजनीतिक चिंतन एवं दूसरा पक्ष कर्म प्रधान था। गांधी जी ऐसे साहित्यकार थे जिन्होंने सत्य पर अनवरत लिखा है। गांधी जी मानव इतिहास के सबसे बड़े प्रबंधक और प्रवृत्ति प्रवर्तक के साथ सरल संप्रेषण भी रहे हैं। हर व्यक्ति की प्रकृति, प्रवृत्ति को उन्होंने अपने स्नेह प्रेम से सिंचन किया।

गांधी जी का साहित्य पर गहरा प्रभाव रहा उनका चिंतन साहित्य जगत में बहुत अधिक प्रभावित रहा। गांधीवाद पर कई साहित्यकारों द्वारा साहित्य की रचना की गई।

गांधी जी के राम सबके राम है। वह समाज धर्म पंत से उठकर ब्राह्मण, अछूत के राम भी है। उनके हृदय में सदैव प्रभु राम का ही वास था। गांधी जी ने राम के साथ दुनिया को दो मुख्य संदेश यह दिया की बड़ी सफलता का उनका कोई ध्येय नहीं था। बस निष्काम कर्म में विश्वास करते गए राष्ट्र की सेवा श्री राम की तरह करते गए। गांधी जी श्री राम की तरह अयोध्या से लेकर लंका तक जो सब कुछ जो करना चाहिए, करते गए। उन्होंने जीवन भर प्रयोग किया उनका जीवन का एक संदेश एक परिणाम की तरह देश को प्रस्तुत किया। दूसरा संदेश उनकी रचना "वैष्णव जन तो तेने कहिए"राम बोध के प्रभाव में अपनाई है। उन्होंने श्री राम की तरह कैकईसे लेकर जटायु और विभीषण से लेकर हनुमान तक कहीं भी किसी ने राम होने की शर्त नहीं खड़ी की है। वैसे गांधी जी ने भी राम की तरह वैष्णव जन की अवधारणा भारत के जन–जन में बसाई और राष्ट्र के जननायक हो गए। यह उन पर राम के प्रभाव का ही परिणाम था।

गांधी जी ने रामबोध का प्रयोग जीवन भर किया। "ईश्वर अल्लाह तेरो नाम सबको सन्मति दे भगवान", इस प्रार्थना को सनातन धर्म, इस्लाम धर्म ने अपनी स्वतंत्रता के साथ समवेत अपनाया। गांधी जी की राम राज्य की कल्पना ने लोक राज्य, स्वराज की अवधारणा को मजबूत किया। उनके मुंह से निकले अंतिम शब्द भी "राम" ने भारतीय संस्कृति, भाईचारा, एकता को एक नई गति प्रदान की। यह ही गांधी के राम हैं। गांधी जी के राम राज्य का आशय लोगों की संप्रभुता, शुद्ध, नैतिक अधिकार पर केंद्रित थी। किसी एक धर्म विशेष का राज्य शासन नहीं अपितु नीति मर्यादा पर आधारित एक ऐसा राज्य जिसमें धर्म, जाति, लिंग, भाषा, या क्षेत्र के आधार पर

भेदभाव ना हो राम राज्य है। यही परिकल्पना गांधी जी ने भारत के लिए देखी और राम के आदर्श पर चलकर उसको साकार किया और जमीन पर प्रत्यक्ष प्रदर्शित किया।

गांधी जी बचपन में भयभीत होते रहते थे। राम नाम के अमोघ शस्त्र ने उनके डर को सदा के लिए दूर किया। राम उनके जीवन शक्ति का स्रोत बने। राम नाम के महामंत्र की हर पुनरावर्ती हर बार उनके जीवन में नया प्रकाश वाहक बनकर सामने आई।वे राम नाम को नकारात्मक पक्ष को सकारात्मक पक्ष में बदलने वाला प्रचंड समर्थशाली महामंत्र मानते थे। अतः वे राम पर पूर्णतः आश्रित भी रहे। गांधी जी के राम अद्‌भुत है, वह सोने जागने दर्द निवारक, मार्गदर्शक और आराध्य के रूप में सदैव मन के करीब रहे। श्री राम गांधी जी के इतने निकट रहे कि उन्होंने अपने आदर्श समाज का नाम ही राम राज्य रख दिया। वे राम राज्य को धर्मराज्य भी कहते थे। मृत्यु के समय भी उनके मुंह में उनके परम आराध्य प्रभु श्री राम का ही नाम था।

साहित्य जगत में श्रीराम को सकल ब्रह्मांड में निहित या रमा हुआ तत्व यानि चराचर में विराजमान स्वयं ब्रह्मा माना जाता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम सदियों से साहित्य के केंद्र में स्थित रहे हैं। कला जगत में, फिल्म निर्माण में, संतो द्वारा अपनी वाणी के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने में श्री राम के ऊपर जितनी रचनाएं साहित्य जगत में संभव है, शायद ही किसी अन्य देवी देवता पर प्रकाशित हुई है। साहित्य में राम को सीमा में बांध पाना मुश्किल रहा है, क्योंकि श्री राम सीमातीत है। वाल्मीकि कृत रामायण, तुलसीकृत रामचरितमानस में रामभक्ति के निरूपण को प्रदर्शित किया है। भक्ति काल में श्री राम पर अनेकों कालजई रचना काव्य, महाकाव्य रचा गया है। रहीम, कबीर का राम, मैथिलीशरण गुप्त के साकेत का राम, छायावादी साहित्यकार सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने राम पर साहित्य लिखा और भावुक हो गए। मशहूर शायर इकबाल ने श्री राम को 'एमाम ए हिंद' राम लिखकर गंगा जमुनी तहजीब का परिचय दिया। शायर कैफ़ी आजमी की नज़्म 'राम का दूसरा वनवास' ने काफी सुर्खियां बटोरी।

लेखकों ने समय हिसाब से साहित्य में श्री राम को विविध रूपों में रुपायित किया है। आसामी, उड़िया, बंगाली कन्नड़ भाषाओं में भी श्री राम पर रचनाएं लिखी गई। इतना ही नहीं प्रवासी साहित्य में भी श्री राम को केंद्र में रखकर कई उत्कृष्ट रचनाएं सृजित की गई हैं। राम भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की गौरवमयी आदर्श प्रतिमा है। भारत ही नहीं राम तो विश्व चेतना के आधार है। विश्व साहित्य में राम कथा बहु प्रचलित है। थाईलैंड, इंडोनेशिया, कंबोडिया, मंगोलिया में राम साहित्य ग्रंथ उपलब्ध है। राम कथा की वैश्विक सत्ता अद्वितीय हैं। श्री राम वैश्विक जनमानस के मस्तिष्क पटल पर स्वर्ण अक्षरों से अंकित है। गांधी जी के राम इतिहास के पात्र न होकर मानवीय गुणों के आदर्श उदाहरण थे। साहित्य में श्री राम को राजा राम, आदर्श योद्धा, एक महान संत, समाज सुधारक और जन–जन के नायक के रूप में काव्य महाकाव्यों में प्रस्तुत किया है।

**संदर्भ ग्रंथ :–**


1. इंटरनेट लेख सारांश।
2. यूट्यूब लेख सारांश।



मो. 9407170999, Patilvijay43053@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 202-204

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# प्रेमचंद के उपन्यास 'निर्मला' में गांधीवाद

**डॉ. आलपाटि भानु प्रसाद**

हिन्दी प्राध्यापक, यस.आर.आर सी.वी.आर शासकीय महाविद्यालय (स्वायत्त) विजयवाडा, आंध्र प्रदेश।

गांधीवाद, महात्मा गांधी जी की विचार पद्धति का व्यापक नाम हैं। अपने नाम से जुड़े वाद प्रत्यय के लिए गांधी जी ने खुद अलग–अलग समय पर अलग–अलग व्यक्त किया है कि– गांधी मर सकता है पर गांधीवाद अमर रहेगा।[1] भारतीय चिंतकों में गांधी का महान स्थान है। वे एक शास्त्रीय दार्शनिक ही नहीं, अपितु व्यावाहारिक जीवन के लिए एक नवीन दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने वाले महान विचारक हैं। गांधीवाद महात्मा गांधी के आदर्शों, विश्वासों तथा दर्शन से उदभूत विचारों के संग्रह को कहा जाता है, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे बड़े राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेताओं में से थे। यह ऐसे उन सभी विचारों का एक समेकित रूप है जो गांधीजी ने जीवन पर्यंत जिया था।

सत्य गांधी दर्शन का महत्वपूर्ण तत्व है। यह महात्मा गांधी के जीवन दर्शन का ध्रूवतारा है। गांधीजी के अनुसार सत्य ही ईश्वर का दूसरा नाम है। हिन्दू धर्म में सत्य को ब्रह्म के अंश रूप माना है। ब्रह्म सनातन सत्य है, सत्य ही धर्म का मूल है। गांधी ने अपनी आत्मकथा का नाम भी सत्य के प्रयोग रखा है। कु. शैलबाला लिखती है–सत्य ही गांधी दर्शन का प्राणाधार है।[2]

गांधी जी ने सत्य की ही भांति अहिंसा का पालन पर भीा बहुत बल दिया है। ईर्ष्या द्वेष, क्रोध, घृणा तथा स्वार्थ से प्रेरित होकर किसी प्राणी को अपने वचन या कर्म के द्वारा किसी प्रकार का कष्ट न पहुंचाए तथा कष्ट पहुंचाने का विचार न करें, यही अहिंसा है। सत्य और अहिंसा एक दूसरे के पूरक हैं, एक के बिना दूसरा अधूरा है। इसके बारे में गांधीजी ने स्वयं कहा– "इस सत्य का संपूर्ण दर्शन अहिंसा के अभाव में अशक्य है।"[3]

साहित्य का मूल भाव मानवीय संवेदना से उद्दभव होता है और पुनः मानव जीवन को ही प्रभावित करता है। "गांधीवादी विचारधारा का परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रभाव हिन्दी कथा–साहित्य पर भी है, हिन्दी कथा–साहित्य मानव–मन, मानव–जीवन और मानव–समाज पर ही अभिनय आयामों के साथ प्रतिबद्ध है। गांधी जी ने मानव जीवन के अंतः बाह्य रूप पर जो प्रकाश डाला उसे समकालीन और उत्तरकालीन हिन्दी कथा–साहित्य में आत्मसाथ किया है। गांधी जी की विचारधारा हिन्दी कथा–साहित्य के जीवन्त सूत्रों से अवलंबित है। गांधी विचारधारा में संनिहित आचार–संहताएँ साहित्य जगत के लिए अपेक्षित हो गई है।"[4]

हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद तथा उनकी रचनाओं पर गांधीवाद का प्रभाव दिखाई देता है। प्रेमचंदयुगीन कथा–साहित्य में विषय–वैविध्य दिखाई पड़ता है। इस काल की कथा–साहित्य में मध्यवर्ग का ही विशिष्ट संबंध है, जिनमें कुटुंब प्रणाली का विघटन, पूंजीवादी शोषण, आर्थिक वैषम्य, अनमेल विवाह, विधवा विवाह, वेश्यावृत्ति,

आदि अनगिनत समस्याओं को उठाया गया है। प्रेमचंद युगीन कथा–साहित्य में परंपरा के प्रति विद्रोह है तथा गांधीवादी विचारधारा का आकर्षण है। आर्थिक विषमता और उसके अनेक रूप समाविष्ट हुए हैं। समकालीन होने के कारण गांधी जी के साहित्यिक सहयात्री भी थे। गांधीवादी दृष्टि से सहमति प्रकट करते हुए डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल के शब्दों में कहा जा सकता है – "राष्ट्रीय विचारधारा में प्रेमचंद मूलतः गांधीवादी थे। अछूतोद्धार, दलित, निर्धन, देहाती के साथ अपार संवेदना तथा राष्ट्रीय भावना का जागरण इनकी कहानी कला के भाव–पक्ष का जबरदस्त मोर्चा है। इस मोर्चे से इन्होंने गांधीवाद की प्रतिष्ठा और राष्ट्रीय जागरण को जोश दिलाया है तथा झूठे विश्वासघाती राष्ट्रसेवक दंभी नेताओं को व्यंग्यात्मक आलोचना की है।"[5]

हिन्दी उपन्यास–साहित्य का द्वितीय चरण उसके विकास का स्वर्णकाल माना जाना चाहिए। मानव जीवन की वास्तविकताओं की उपेक्षा करने वाला उपन्यासकार अब मानव जीवन की गतिविधियों से एकाकार होने के लिए प्रवृत्त हो गया है। गांधी विचारधारा से प्रभावित हिन्दी उपन्यासकार अपने उपन्यासों में गांधी जी के आदर्शों को महत्व देने लगे थे। प्रेमचंद इस नवीन क्रांतिकारी परिवर्तन और चेतना के अग्रदूत बनकर उपन्यास संसार में आये। उपन्यास के प्रयोजन के संबंध में प्रेमचंद की धारणा पूर्ववर्ती उपन्यासकारों से बिलकुल भिन्न है। उपन्यास उनके लिए साध्य न होकर, मानव जीवन की व्याख्या का साधन मात्र था। सामाजिक समस्याओं पर विचार करते समय तथा उन्हें दूर करने के उपाय सुझाते समय उन्होंने गांधी–सिद्धांत का पूरा–पूरा समर्थन किया है।

निर्मला उपन्यास में प्रेमचंद जी ने गांधीवाद की भावना का चित्रण किया है। इस उपन्यास के पात्र कल्पित जरूर है पर हमारे जन–समुदाय का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। दहेज प्रथा का परिणाम अनमेल विवाह में आता है।

नारी का संपूर्ण जीवन संघर्षरत होता है। नारी को हर घड़ी, हर क्षण संघर्ष करना पड़ता है। नारी का संघर्ष बहुआयामी है। प्राचीन काल से ही नारी पुरुष वर्ग से शोषित तथा पीड़ित थी। नारी प्रकृति से सहनशील होने के कारण अन्याय तथा अत्याचार सहती है। क्षमा गुण में नारी धरित्री समान है। बर्दास्त के बाहर होने पर उसमें संघर्ष–चेतना जागृत होती है। नारी के संबंध में धर्मपाल ने इस प्रकार व्यक्त किया कि– "जहाँ नारी की अस्मिता पर प्रहार हुआ, वहाँ उसने सदैव प्रतिशोध लिया और पुरुष को अपने अस्तित्व का अहसास भी कराया।"[6]

अर्थात् नारी जितना सहनशील है, उतनी ही धीरशाली है। नारी अपने अस्तित्व तथा अधिकार के लिए सजग हो जाती है। अन्याय अत्याचार के खिलाफ लड़ने की स्वाभाविक विद्रोह उसमें पाया जाता है।
"जीवन की सारी जटिलताओं, अभावों एवं विसंगतियों को झेलते हुए प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आज की नारी अदम्य जिजीविषा धारण किए हुए हैं। समाज सदा पुरुष प्रधान रहा। ऐसी समाज व्यवस्था में पलकर भी आज की स्त्री में जिजीविषा के साथ–साथ स्वावलंबिता और स्वतंत्रता की चाह बढ़ती जा रही है। आज की स्त्री अत्यंत संघर्षशील है।"[7] नारी का सारा जीवन संघर्षमय है। जन्म से ही नारी का संघर्ष शुरू हो जाता है। समाज में नारी को व्यय मानते हैं। नारी का पालन–पोषण, पढ़ाई तथा विवाह को व्यय मानते हैं। शादी के समय दहेज देना पड़ता है। दहेज देने के बिना नारी की शादी न होती। दहेज भी नारी के संघर्ष का कारण बन जाती है। दहेज का दैत्य समाज पर किस कदर हावी था उसका वर्णन भी प्रेमचंद जी ने सत्य रूप में मोटेराम और कल्याणी के संवाद में किया है। गरीब लड़की की नैया बूढ़े अमीर ही पार लगाते हैं, उनका संसार कितना तनावपूर्ण और

दुःखद होता है वह हमें निर्मला और तोतारैम के संबंधों से ज्ञात होता है। जब डॉ. सिन्हा कहते हैं कि – यकीन साहब क्यों इस उम्र में ब्याह करने चले? तब सुधा कहती है– "ऐसे आदमी न हों, तो गरीब कुँवारियों की नाव कौन पार लगाए तुम और तुम्हारे साथी बिना भारी गठरी लिए बात नहीं करते फिर ये कुँवारी किसके घर जाएँ तुम ने बड़ा अन्याय किया है।"[8]

गांधी जी मानते थे कि शिक्षा के द्वारा ही समाज जागृत होता है, पर हृदय परिवर्तन का संबंध व्यक्ति की आत्मा से होता है। इस उपन्यास में रंगीली का हृदय परिवर्तन भी इस तरह हुआ है। रंगीली पहले दहेज की लालची थी, पर आखिर एक स्त्री थी। जब वह कल्याई का पत्र पढ़ती है तो उसे विधवा के दुःख का एहसास होता है और दहेज के खिलाफ हो जाती है। अपने पुत्र की शादी बिना दहेज से निर्मला से करने का अपना फैसला अपने पति को सुनाती है। वह कहती है – "तो मुझे क्या मालूम था कि विधवा की दशा इतनी हीन हो गई है? तुम्हीं ने तो कहा था कि उसने पति की सारी संपत्ति छिपा रखी है और अपनी गरीबी का ढोंग रचकर काम निकालना चाहती है। एक ही छटी हुई औरत है। तुमने जो कहा, वह मैं ने मान लिया। भलाई करके बुराई करने में तो लज्जा और संकोच है, मगर बुराई करके भलाई करने में कोई संकोच नहीं। अगर तुम 'हाँ' कर आए होते और मैं ना कहने को कहती, तो तुम्हारी संकोच उचित होता। 'नहीं' करने के बाद 'हाँ' करने में तो अपना बड़प्पन है।"[9]

**संदर्भ-सूची :-**


1. गांधी और गांधीवाद, पट्टाभि सीतारामय्या, पृ. 26
2. स्वतंत्रोत्तर हिन्दी साहित्य में गांधीवाद, कु. शैलबाला, पृ. 49
3. आत्मकथा, भाग–4, अध्याय–3, महात्मा गांधी।
4. डॉ. निशा गहलौत, हिन्दी कहानी में गांधीवाद, पृ. 342
5. रेखा शर्मा, गांधीवादी विचारधारा और कहानी, पृ. 21
6. नारी एक विवेचन, धर्मपाल, पृ. 52
7. मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी, डॉ. आर. एस. जगताप, पृ. 96
8. निर्मला, प्रेमचंद, पृ. 85
9. निर्मला, प्रेमचंद, पृ. 32



मो.नं. 7780629769

ई.मेल : bhanuprasadalapati9@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 205-208

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# आधुनिक हिन्दी साहित्य में महात्मा गांधी की जीवनी एक अद्भुत विश्लेषण

**कर्रा पृथ्वी**

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापटनम–५३०००३

**हिन्दी साहित्य का विश्लेषण परिचय :–**

हिन्दी साहित्य एक महत्वपूर्ण भाषा में रचित साहित्य का संक्षेपित परिचय निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है। हिन्दी साहित्य का आरम्भ वैदिक साहित्य के वेदों और उपनिषदों से हुआ, जिनमें संस्कृत भाषा का प्रमुख स्थान था। इसके पश्चात्, प्राकृत और पालि भाषा में भाषा साहित्य भी निर्मित हुआ। हिन्दी साहित्य का पहला महत्वपूर्ण पारंपरिक काल है भक्ति काल, जिसमें संत कवियों ने भगवान की भक्ति को महत्वपूर्ण रूप से व्यक्त किया। मीराबाई, सूरदास, और तुलसीदास जैसे कवि इस काल के महत्वपूर्ण हैं। इसके पश्चात्, रीतिकाल आया, जिसमें कवियों ने मुग़ल सम्राटों के दरबारों में रहकर अर्थशास्त्र और काव्य रचना की। केशवदास, भिखारीदास, देव, बिहारीलाल और घनानन्द जैसे कवि इस युग के प्रमुख थे। आदिकाव्य काल में रामायण और महाभारत की रचनाएँ हुईं, जो हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण हैं।

हिन्दी साहित्य उस साहित्य का संग्रह है जो हिन्दी भाषा में लिखा गया है। यह एक अत्यधिक विविध और समृद्ध साहित्य है, जो विभिन्न कलाओं, संगीत, नृत्य, रूपक, कहानी, काव्य, उपन्यास, नाटक, गद्य, विचार–शीलता, और नैतिकता की व्याख्या करता है। हिन्दी साहित्य का विश्लेषण विभिन्न क्षेत्रों में किया जा सकता है, जैसे कि काव्यशास्त्र (पद्य और गद्य की विशेषता), नाट्यशास्त्र (नाटक और नृत्य की विशेषता), लिंगुइस्टिक्स (भाषा की विशेषता), साहित्यिक सिद्धांत (साहित्य की सृजनात्मकता और साहित्यिक उत्थान), और सामाजिक साहित्य (समाज में हो रही परिवर्तन और समसामयिक घटनाओं की विशेषता)। हिन्दी साहित्य में कई महान लेखक और कवि हैं जिनकी रचनाएँ उनके विशेष दृष्टिकोण और सोच का परिचायक हैं। कबीर, सूर, तुलसीदास, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, मुंशी प्रेमचंद, रवींद्रनाथ ठाकुर, जगन्नाथ प्रसाद, अच्छानक्की, कविता, निर्मल वर्मा, हरिवंश राय बच्चन, जैसे प्रमुख काव्यकार उस समय की साहित्यिक दृष्टि का प्रतीक हैं। हिन्दी साहित्य का विकास विभिन्न युगों में हुआ है। भक्ति युग में संत कवियों का योगदान, भगवद्गीता के समकालीन व्याख्यान, आदि से साहित्य का विकास हुआ। ब्रज युग में कृष्ण लीला, अवधी युग में तुलसीदास की रामायण, और भगवद्गीता के संकेतात्मक व्याख्यान आदि महत्वपूर्ण रहे। मुगलकाल में दीवानी और गदरी संदर्भ महत्वपूर्ण थे।

**आधुनिक समय में साहित्यिक विकास :–**

आधुनिक समय में हिन्दी साहित्य ने भारतीय समाज, राजनीति, साहित्यिक चेतना, और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक काव्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, और गद्य क्षेत्र में महान लेखकों का विकास हुआ है, जिनमें मुंशी प्रेमचंद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', जयशंकर प्रसाद, और निर्मल वर्मा कुछ महत्वपूर्ण नाम हैं। हिन्दी साहित्य के भाग के रूप में, भारतीय संगीत, नृत्य, और रूपक के महत्वपूर्ण संदर्भ शामिल हैं। 'रासलीला', 'कृष्ण लीला', और 'रामलीला' जैसे प्रमुख प्रदर्शन इसके उदाहरण हैं।

**महात्मा गांधी जीवन का परिचय :–**

महात्मा गांधी का जीवन हिन्दी साहित्य के अद्वितीय अंचल में एक अमूल्य रत्न है। उनका जीवन एक ऐतिहासिक सागा है, जिसके रूप में वे स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता, एक आदर्श प्रेरणा स्रोत, और सामाजिक सुधारक के रूप में याद किए जाते हैं।

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर, गुजरात में हुआ था। वे पुत्रमोह के अर्थ में थे, और उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। उनके पिता करमचंद गांधी एक सामान्य व्यापारी थे, जबकि मां पुतलीबाई धार्मिक गृहस्थिन थीं। गांधीजी की प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर में हुई, और उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा इंग्लैंड में लॉ में प्राप्त की। वह एक अच्छे वकील बने, और साऊथ अफ्रीका में काम करते समय वहां के भूतपूर्वाधिकारियों के खिलाफ आवाज उठाने लगे। वह वहां रहते समय सत्याग्रह का पहला प्रयोग करने का मौका प्राप्त करे, जिससे उन्होंने अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य तैयार किया। वापस भारत लौटकर, गांधी जी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नेता के रूप में उभरे। असहमति के बावजूद गांधी जी ने सत्याग्रह के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया और अद्वितीय रूप में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक अनूठा मोड़ दिया।

सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों का पालन करते हुए, गांधी जी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को सफलता दिलाने के लिए कई महत्वपूर्ण आंदोलनों का आयोजन किया, जैसेकि नमक सत्याग्रह, खिलाफत आंदोलन, चौरी–चौरा आंदोलन, और दांडी मार्च। गांधी जी के दृढ़ आलोचनात्मक दृष्टिकोण और अद्वितीय नेतृत्व क्षमता ने स्वतंत्रता संग्राम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने समाज में जातिवाद, असहमति, और असमानता के खिलाफ अपने अहिंसा के सिद्धांतों के माध्यम से लड़ा, और भारतीय समाज को जागरूक किया। गांधी जी का जीवन और कार्य बच्चों, युवाओं, और बड़ों के लिए एक अद्वितीय प्रेरणा स्रोत रहा है। उनके दृष्टिकोण और नैतिकता का पालन करने से हम सब एक सशक्त और समृद्ध भारत की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। महात्मा गांधी का जीवन और उनके महत्वपूर्ण कार्य हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में हमारी सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा रहे हैं। उनका जीवन हमें साहस, संघर्ष, और सत्य की प्रतिबद्धता की मिसाल देता है, और हमें याद दिलाता है कि अगर हम सच्चे मार्ग पर चलते हैं, तो हम किसी भी मुश्किल को पार कर सकते हैं।

**आधुनिक हिन्दी साहित्य मे महात्मा गांधी का प्रभाव :–**

गांधी जी का प्रभाव आधुनिक हिन्दी साहित्य पर गहरा और महत्वपूर्ण रहा है। उनके विचार, सिद्धांत, और जीवनी ने हिन्दी साहित्य को अनगिनत रूपों में प्रभावित किया है, और वे आज भी हिन्दी साहित्य के हिस्से के रूप में महत्वपूर्ण हैं। निम्नलिखित हैं कुछ क्षेत्र जिनमें गांधी जी का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर प्रकट होता है :–

**लेखन कला :–**

महात्मा गांधी एक अद्वितीय लेखक और उपन्यासकार भी थे, और उनका लेखन उनके दृष्टिकोण और सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है। उनके गुजराती और अंग्रेजी में लिखे गए उपन्यासों का अनुवाद हिन्दी में किया गया है, और यह साहित्य आज भी पढ़ा जाता है और हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में माना जाता है।

**सत्याग्रह और अहिंसा :–**

गांधी जी के सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों ने हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। उनके सिद्धांतों का पालन करने वाले लेखक और कवि ने अपने काम में इन मूल्यों को प्रकट किया है और गांधी जी के साथी आदर्श का पालन किया है।

**स्वतंत्रता संग्राम :–**

गांधी जी के स्वतंत्रता संग्राम में उनका महत्वपूर्ण योगदान हिन्दी साहित्य के विकास में एक अहम भूमिका निभाता है। उनके आदर्शों और नेतृत्व के प्रेरणास्पद रूप से लेखकों और कवियों ने स्वतंत्रता संग्राम को साहित्य में उजागर किया और इसका प्रशंसा किया।

**सामाजिक सुधार :–**

गांधी जी के सामाजिक सुधार कार्य और आंदोलन ने हिन्दी साहित्य को सामाजिक और आर्थिक विकास की दिशा में प्रेरित किया। उनके आदर्शों का पालन करने वाले लेखकों ने समाज की सुधार के लिए अपने लेखन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

**अंतरराष्ट्रीय प्रसंग :–**

गांधी जी का प्रभाव हिन्दी साहित्य के पारंपरिक सीमाओं को छोड़कर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण रहा है। उनके आदर्शों और विचारों ने विश्व साहित्य के क्षेत्र में भी गहरा प्रभाव डाला है, और उनके महत्वपूर्ण भाषणों और लेखों का अनुवाद विश्वभर में हुआ है।

**धर्म और आध्यात्मिकता :–**

गांधी जी ने अपने जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता का महत्व माना और उन्होंने अपने आध्यात्मिक सड़क को अपने आदर्शों के साथ मिलाया। उनके धार्मिक सोच ने हिन्दी साहित्य के कई लेखकों को आध्यात्मिक मुद्दों पर गंभीर रूप से विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया और उन्हें आध्यात्मिक अनुभव को साहित्य में प्रकट करने के लिए प्रेरित किया।

**हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम :–**

गांधी जी ने हिन्दी भाषा के प्रति गहरा प्रेम रखा और उन्होंने इसे राष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रमोट किया। उनके सिद्धांतों के प्रकट माध्यम के रूप में हिन्दी साहित्य के कई लेखकों ने हिन्दी के महत्व को पुनः स्थापित किया और उसके विकास में योगदान किया।

महात्मा गांधी की जीवनी हिन्दी साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में एक अद्‌भुत प्रभाव छोड़कर गई है, जिससे हमारे साहित्य का आदर्श और समाज में सुधार के लिए महत्वपूर्ण सिद्धांतों का प्रसार हुआ है। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि सत्य और नैतिकता के माध्यम से हम समाज में बदलाव ला सकते हैं, और हिन्दी साहित्य

को उनके आदर्शों का पालन करने का मौका मिला है। महात्मा गांधी के सिद्धांत, विचार, और आदर्श ने हिन्दी साहित्य को सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक सुधार की दिशा में प्रेरित किया है। उनके आदर्शों का पालन करने वाले लेखक, कवि, और विचारक ने उनकी विरासत को आज भी जीवंत रखा है, और गांधी जी के साथी आदर्श को हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में स्वीकार किया है। गांधी जी की अनमोल जीवनी का अंश यहाँ तक ही सिमटाना असंभव है, क्योंकि उनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा छूपा होता है, जो उनके आदर्शों और सिद्धांतों का दर्शन कराता है। उनकी जीवनी को पूरी तरह से समझने के लिए व्यापक अध्ययन और शोध की आवश्यकता होती है, लेकिन इस छोटे आलेख में, हमने उनके महत्वपूर्ण जीवन के कुछ पहलुओं का उल्लेख किया है। एक निष्कलंक व्यक्तित्व, अद्वितीय नेतृत्व, और सच्चे भारतीय आदर्शों के प्रति उनकी अपनी अदृढ आस्था गांधी जी को एक अद्वितीय व्यक्ति बनाती हैं, और उनके जीवन का अद्वितीय योगदान हिन्दी साहित्य में अमर रूप में बच जाता है।

**निष्कर्ष :-**

महात्मा गांधी एक महानतम् स्वतंत्रता संग्रामी थे, जिन्होंने अपने आदर्शों के पक्ष में खड़ा होकर अपने देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए संघर्ष किया। उनका जीवन और विचारधारा हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और उनकी क्रांतिकारी आंदोलनों ने लाखों लोगों को प्रेरित किया। गांधी जी का जीवन और उनके आदर्श हिन्दी साहित्य में एक अद्वितीय धारा का निर्माण करते हैं, जिसमें अहिंसा, सत्य, स्वदेशी, विश्वास, और सर्वोदय की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए, महात्मा गांधी की जीवनी ने हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा दी है और उसमें उद्दीपन भरा है। उन्होंने अपने आदर्शों के साथ अपने जीवन को समर्पित किया और आत्मा की गहरी खोज की। उनका जीवन हिन्दी साहित्य में एक अद्‌भुत प्रेरणा स्रोत रहा है, और उनके आदर्शों ने न सिर्फ भारतीय समाज को प्रभावित किया, बल्कि पूरे विश्व को भी साकार किया। गांधी जी की जीवनी हमें दिखाती है कि एक व्यक्ति अपने निष्कर्षों और दृढ़ संकल्प के माध्यम से महत्वपूर्ण परिवर्तन कैसे ला सकता है और आदर्श नेता कैसे बन सकता है। इन आदर्शों के साथ, उनकी जीवनी हमें यह सिखाती है कि एक व्यक्ति अपने निष्ठाओं और प्रामाणिकता से किसी भी समस्या का समाधान प्राप्त कर सकता है, चाहे वह समस्या जैसी भी हो।

**संदर्भ ग्रंथ :-**


1. मेरे आत्मकथा – (My Experiments with Truth)
2. हिन्द स्वराज्य – (Hind Swarajya)
3. सत्यार्थ प्रकाश – (The Light of Truth)
4. भारतीय आत्मा का संघर्ष – (The Struggle for Indian Independence)
5. गांधी विचार दर्शन – (Gandhi's Vision of Life)
6. सुमित्रानंदन पंत – संग्राम और साहित्य।
7. साहित्य की भूमिका – एम.सी. गोस्वामी।
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचंद्र शुक्ल।
9. हिन्दी साहित्य की भूमिका – सी. मुक्तिबोध।



मोबाईल 8008317899, ई–मेल : karramunna7@gmail.com.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 209-213

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिन्दी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा

**डॉ. सरोज बाला श्याम**

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शा0 इन्दिरा गांधी गृह विज्ञान कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शहडोल, म0 प्र0

**शोध सारांश :–**

किसी भी विचारधारा एवं व्यक्तित्व का साहित्य पर प्रभाव प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से पड़ता है और उसको निश्चित रूप से संकेतित करना मुश्किल कार्य होता है। महात्मा गाँधी इतने बड़े व्यक्तित्ववान नेता थे कि ऐसा कहना अतिश्योक्ति पूर्ण नहीं होगा कि गौतम बुद्ध के बाद भारत में गाँधी जी ही एक ऐसे व्यक्ति थे, जिनका प्रभाव भारतीय जीवन–दृष्टि विचारधारा, संवेदना, जीवन रीतियाँ, समाज–मानस, व्यक्ति–मानस, इत्यादि पर पड़ा और यह भी कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि आज फिर से गाँधी जीवन–दर्शन महत्वपूर्ण होने लगा है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शब्दों में, "गाँधी जी एक क्रान्तिकारी चिन्तक थे, उन्होनें राजनीति को शुद्ध बनाने के लिए मानव स्वभाव के परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गाँधी जी ने सत्य, अहिंसा द्वारा पूरे राष्ट्र को एक संगठन के रूप में एकत्रित कर लिया।"[1]

**प्रस्तावना :–**

गाँधी जी की विचारधारा का प्रभाव हिन्दी साहित्य के लगभग हर विधा पर समान रूप से पड़ा। चाहे वह छायावादी काव्य हो या प्रेमचन्द युगीन कहानियाँ और नाटक या फिर प्रमुख ऐतिहासिक और सामाजिक कालजयी उपन्यास, सभी गाँधी रंग मे रंगे दिखाई पड़ते है। इस संबंध में डॉ. नगेन्द्र का कहना है, ''गाँधी दर्शन हमारा युग–दर्शन है और इसके सर्वव्यापी प्रभाव से आधुनिक कवि अछूते नही रहे है।''[2] वर्तमान परिस्थितियों में विश्व अणुशक्ति की संहारक छाया में कांपता हुआ जी रहा है। पारस्परिक संशय, भय और शंका किसी भी बौद्धिक निर्णय को स्वीकृति देने में जबरदस्त संकोच कर रही है, उपभोक्तावाद की अप–संस्कृति सम्मोहक मायाजाल में समूचे विश्व को फँसाकर निगलने को तैयार हो रही है, अपनी जरूरतों को संयत करने में मनुष्य नाकामयाब हो रहा है, राजनीति सत्ता केन्द्रित होकर भ्रष्टाचार और अपराधीकरण से सड़ रही है, ऐन्द्रिय भोग पर रोक लगाना मुश्किल होता जा रहा है, बड़े–बड़े उद्योग और मशीनीकरण, प्रकृति को भस्म कर पर्यावरण की समस्याएं पैदा कर रहे है, समृद्धि पर मुट्ठीभर लोगो का नियन्त्रण जन–जीवन को विकृत कर रहा है, मनुष्य की आत्मा और उसके व्यवहार के बीच दरार बढ़ती जा रही है और मनुष्य भयावह छदम का सहारा ले रहा है। ये स्थितियाँ स्पष्ट कर चुकी हैं कि दुनिया के लिए गाँधी मार्ग ही एक विकल्प है। गाँधी जी के इस विराट व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी प्रभाव को व्यक्त करते हुऐ फूलचन्द पांडेय ने लिखा है कि ''सचमुच गाँधी वह पारस पत्थर है, जिसे छूकर न जाने कितने ही हाड़ माँस के पुतले स्वर्ण शक्ति पा सकेंगे। उसने नव समाज के लिए आदर्श जीवन बताया।

साहित्य में एक जागरण की शक्ति दी, राजनीति में विश्व नीति का रूप स्थिर किया, समाज को उदार बनाया, व्यक्ति को सचेत किया तथा समष्टि को उन्मुख तथा प्रगति पथ की ओर बढ़ाया।"[3]

**अध्ययन का महत्व :-**

बीसवीं शताब्दी में भारतीय राजनीति के क्षेत्र में सबसे प्रभावकारी नेता के रूप में मोहनदास करमचंद गांधी का उदय हुआ। भारतभूमि को स्वतंत्रता दिलाकर स्वराज्य स्थापित करने की मंशा से इस व्यक्ति ने अपना सम्पूर्ण जीवन ही राष्ट्र को समर्पित कर दिया था। भारतीय समन्वयवादी संस्कृति की पूंजी माने जाने वाले महान ग्रंथ रामायण व गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरितमानस को उन्होंने अपना जीवनादर्श माना। सत्य, अहिंसा, प्रेम, सद्भाव, शांति तथा मानवता की भावना को समस्त मानवजाति में प्रतिष्ठित करने के लिए जीवनांत तक वे संघर्ष करते रहे। 'महात्मा गांधी ने जीवन व्यतीत करने और बेहतर समाज विकसित करने के कुछ सिद्धांत दिए थे। इन सिद्धान्तों को ही गांधीवाद कहा जाता है, आगे उनके यही विचार गांधीवादी सिद्धांत या गांधी दर्शन के रूप में स्थापित हो गए। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक पूरे भारतीय साहित्य पर उनकी इसी विचारधारा का असर देखा जा सकता है। भले ही राजनीतिक क्षेत्र में बदलते समय के अनुसार उनके विचारों की उपेक्षा की जाती रही हो पर साहित्यकार हमेशा उनसे प्रेरणा लेते रहे हैं। भारत की लगभग सभी भाषाओं के साहित्य पर गांधी के मानवतावादी वैचारिक चिंतन का गहरा असर हुआ है। विशेषतः हिंदी साहित्य और साहित्यकार गांधी दर्शन से सर्वाधिक प्रभावित हुए है।

**अध्ययन के उद्देश्य :-**

अध्ययन के उद्देश्य इस शोध आलेख को लिखने के पीछे यही उद्देश्य रहा है कि साहित्य से व्यक्ति एवं जगत के साथ रागात्मक संबंध किस प्रकार स्थापित हो सकता है तथा गांधी जी जैसे महामानव एवं विराट व्यक्तित्व का युगीन साहित्य पर प्रभाव किस प्रकार की साहित्य रचना को प्रेरित करता रहा है तथा लेखकों, रचनाकारों और उन कवियों के कविकर्म को सामने लाना जिन्होंने गांधीवादी दृष्टि के प्रभाव स्वरूप शुद्ध सात्विक सुरुचिपूर्ण एवं स्वस्थ दृष्टिकोण संपन्न कृतियों की सृष्टि की, जो वास्तव में साहित्य के मूल उद्देश्य 'सहितस्य भावः' के कल्याणकारी लेखन को सार्थक करता है। डॉ० नगेंद्र हिंदी साहित्य में उनके प्रभाव के संबंध में लिखते हैं। ''गांधी के विराट व्यक्तित्व से प्रेरित होकर भारतीय भाषाओं में विशेषकर हिंदी में काफी काव्य रचना हुई। उनके व्यक्तित्व में कठोर इंद्रिय निग्रह द्वारा अर्जित आत्मिक शक्ति, त्याग एवं अपरिग्रह, सत्य निष्ठा आत्म बलिदान अहम का समाजीकरण राग का उन्नयन नियम आदि अनेक तपः पूत गुण थे जिनका देश के अधिकांश प्रबुद्ध लेखकों साहित्यकारों कवियों की चेतना पर अनिवार्य प्रभाव पड़ा।''[4]

**हिन्दी उपन्यासों पर गांधीवादी विचारधाराओं का प्रभाव :-**

प्रेमचन्द के उपन्यासों में जो राष्ट्रीय वातावरण का प्रभाव परिलक्षित होता हैं, उसका मूल कारण तत्कालीन राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ कही जा सकती है। प्रेमचन्द के प्रथम कहानी संग्रह 'सोजे वतन' (1908) की उग्रता देखकर सरकार ने उसे जब्त कर लिया था। गाँधी युग में प्रेमचन्द का राष्ट्रीय प्रेम का स्वर अधिक प्रबल हुआ और कुछ काल तक गाँधी के जादुई व्यक्तित्व का प्रभाव प्रेमचन्द पर भी पड़े बिना न रहा। ''प्रेमचन्द सन् 1930 तक गांधी जी के जीवन दर्शन से बहुत अधिक प्रभावित थे। राजनीति के क्षेत्र में गाँधी जी के कदम जिस गति से बढ़े, प्रेमचन्द के साहित्य के क्षेत्र में बढ़े। साहित्यकार का युग पुरूष से प्रभावित होना बड़ा

स्वभाविक होता है। यहाँ हिन्दी उपन्यासों पर गाँधीवादी विचारधारा प्रभाव से सकारात्मक पक्ष को देखना अभीष्ट है।

'रंगभूमि' में सूर के नैतिक विचार, उसका संयम, शत्रु के प्रति भी निर्दोष आत्मीयता, प्रबल आशावाद, ईश्वर में प्रगाढ़ श्रृद्धा, मृत्यु के प्रति निर्भयता, विशुद्ध भावना से परिहास, मजाक करने की खिलाड़ी वृति, दान के प्रति वितृष्णा, अपनी जमीन को गाँव के गोंओ को चरने के लिए रखने की ट्रष्टी की मानसिकता, बड़े से बड़े अधिकारी के सामने निर्भय होकर बात रखने की क्षमता जबरदस्त आत्मविश्वास, सूर का साधन–शुद्धि कर आग्रह, मशीनीकरण का विरोध, पूँजीवाद संस्कृति की उपेक्षा, प्राचीन काल से चली आयी सामन्तवादी संस्कृति के प्रति आकर्षण आदि विचार गाँधीवादी विचारधारा का विचार सूचित किया करते है।

'कायाकल्प' में मनुष्य ऐश्वर्य और विलास के पीछे पड़कर किस प्रकार पतित हो जाता है, इसकी चर्चा की गई है। 'कायाकल्प के काल–चक्र में आगरा के सामप्रदायिक दंगे प्रारम्भ होते है। गाँधीवादी विचारधारा का प्रयोग करके चक्रधर उपद्रव शान्त करता है। ग्राम जगत में जमींदार के शोषण का प्राधान्य है। जनता इसके विरोध में उठ खड़ी होती है।

'गबन' में भी विलास प्रियता और शारीरिक सुख के पीछे पड़ने के भीषण पर्यवसान की ओर संकेत कर सेवा और त्यागमय जीवन की महिमा गायी गई है। यह निश्चित करना कठिन है कि इन उपन्यासों में प्रेमचन्द के खुद के कुछ विचारों का प्रभाव कितना है और उस समय के गाँधी–युग का कितना है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द के उपर्युक्त उपन्यास गाँधी युग के विशेष अनुकूल सिद्ध होते है।

'कर्मभूमि' में गाँधी कि व्यवहारिक कार्यक्रमों का गाँवों में प्रसार दिखाया गया है। सूत कताई, बुनाई, हरिजनोद्धार, शराबबन्दी, मुर्दा जानवरों का मांस भक्षण न करना, विभिन्न जातियों में रोटी व्यवहार, मन्दिर प्रवेश का आन्दोलन इत्यादि को पढ़ते समय गाँधी युग का वातावरण साकार होता जान पड़ता है।

निर्मला उपन्यास में दहेज पीड़ित महिला का जीवन दर्शाया गया है। गाँधी जी स्त्री जाति की प्रगति और स्वतन्त्रता की राह में दहेज को एक बहुत बड़ा रोड़ा मानते है। गाँधी जी ने नारी उद्धार के विषय में कहा है– ''जब तक हम अपने यहाँ की स्त्रियों को माँ, बहन, बेटी समझकर उनका आदर करन नहीं सीखेगें तब तक भारत का उद्धार नहीं होगा''[5]

'गोदान'– विशेष ध्यान देने की बात है कि आगे चलकर यथार्थ के गहरे निरीक्षण ने इस जनवादी कलाकार की गाँधीवादी विचारधारा के प्रति आस्था को कुछ विचलित कर दिया मालूम होता है और 'गोदान' में आकर वे समाजवाद की ओर कदम बढ़ाते दिखाई पड़ते है। लेकिन गाँधीवादी विचारधारी तत्व प्रेमचन्द के व्यक्तित्व से विलुप्त नहीं हुआ। ब्राह्मण मातादीन सिलिया चमारिन को अपनाता है, उसका हृदय परिवर्तन होता है।

**साहित्य के काव्य क्षेत्र में गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव :-**

हिंदी साहित्य में मुख्यतः छायावादोत्तर काल में जिन कवियों पर गांधी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का प्रेरणादायी प्रभाव दृष्टिगत होता है उनमें सर्व श्री राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, कविवर सुमित्रानंदन पंत, बालकृष्ण शर्मा नवीन, पंडित सोहनलाल द्विवेदी एवं भवानी प्रसाद मिश्र आदि प्रमुख रहे हैं।

मैथिलीशरण गुप्त जी के विश्व वेदना, अजित, भारत भारती, साकेत, द्वापर आदि अनेक रचनाओं में गांधीवादी विचारधारा का चित्रण सत्य, अहिंसा सत्याग्रह, हरिजनोद्धार, ग्राम सुधार व स्वाबलंबन की भावना के विकास के रूप में हुआ है। प्रसिद्ध कृति साकेत में सीता का वन में जो स्वाबलंबी रूप प्रस्तुत किया गया वह अयोध्या वासियों को छोटे–छोटे कुटीर उद्योगों की स्थापना की प्रेरणा प्रदान करता है। सियारामशरण गुप्त की बापू रचना में उन्हें सत्य, अहिंसा का मंत्र देने वाले ऐसे ऋषि की संज्ञा देते हैं, जिसकी वाणी में नारायण की झलक दिखती है–

''ऊर्जस्वित, सत्य के, अहिंसा के अमृत से मुक्त छल छद्म के अनृत से।
बोला यह कोई मंत्र दृष्टा ऋषि नूतन में, प्राण के पवित्र नवोदबोधन में।''[6]

गांधीवादी विचारधारा सत्यमेव जयते के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हुए अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध लिखते हैं–

''सत्य के सम्मुख ठहरेगा। भला कैसे असत्य जन स्व।
तिमिर सामना करेगा क्यों दिवस का, जो है रवि संभव।।''[7]

द्वापर में गुप्त जी इसी अहिंसात्मक विचारधारा को अपनाने का आग्रह व्यक्त करते हुए लिखते हैं :–

''तुम मेरे अनुगामी, यह तो मुझ पर प्यार तुम्हारा।
पर विरोध करने का पहले है अधिकार तुम्हारा।
सोचो समझो मेरी बातें और उचित यदि मानो,
तो फिर तुम उनके प्रसार का भार आप पर जानो।"[8]

**हिन्दी कहानी साहित्य पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव :–**

प्रेमचंद ने हिंदी में तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखी, जिनमें अधिकतर कहानियाँ गांधी दर्शन से प्रेरित रही है। उनकी राजनीतिक कहानियों में विचित्र होली, लाल फीता, दुस्साहस, आदर्श विरोध, लाग डाट आदि कहानियाँ असहयोग आंदोलन की युग चेतना पर लिखी गई है। उसी तरह बलिदान, पशु से मनुष्य, उपदेश जैसी कहानियाँ कृषि संस्कृति के महत्व को उजागर करती है। मानवी आदर्श को लेकर उन्होंने सज्जनता का दंड, पञ्च परमेश्वर, सेवा मार्ग, सच्चाई का उपहार, घमंड का पुतला आदि जैसी कहानियाँ लिखी जिसमें नैतिक मूल्यों के विजय का चित्रण है। इस तरह से गांधी युग की लगभग सभी समस्याओं का चित्रण प्रेमचंद के कथात्मक साहित्य में देखा जा सकता है।

**निष्कर्ष :–**

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्यिक क्षेत्र में ऐसे कई लेखक हैं जिन्होंने महात्मा गांधी के व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित होकर गांधी दर्शन को अपने उपन्यास, कहानी और नाटक जैसी सर्वप्रिय विधाओं के माध्यम से प्रवाहित और प्रचारित किया है। जहाँ साहित्य उद्देश्य के केंद्र में 'मनुष्य' को सर्वोपरि माना जाता है। वहीं गांधी विचारधारा के केंद्र में भी 'मनुष्य' ही है। इसी के अनुरूप हिंदी कथात्मक साहित्य में सत्य, अहिंसा, विश्व बंधुत्व, शांति, समर्पण, सर्वधर्म समभाव, मानवता आदि गांधीवादी आदर्श को साहित्यकारों ने अपने साहित्य में योग्य जगह देकर, साहित्य के उद्देश को सार्थक कर मानवता को ही सर्वोपरि माना है। गांधीवादी विचारधारा के प्रभाव की व्याप्ती केवल राजनीतिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रही है बल्कि सामाजिक, आर्थिक,

धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र भी इस विचारधारा के प्रभाव से अछूते नहीं रह पाए है। देश और दुनिया के बुद्धिजीवी तथा सर्जक वर्ग ने अपने चिंतन और सृजन में गांधी दर्शन को सन्मानपूर्वक स्थान देकर भारतीय समाज में स्वतंत्र समता तथा विश्व बंधुत्व की भावना को अधिक प्रखरता से स्थापित करने में अपना योगदान दिया है। समय के दबाव में चाहे जितने भी चुनौतियां या परिवर्तन हमारे देश में हो गांधी चिंतन से प्रेरणा लेकर ही हमें अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहना होगा। यह विचारधारा ही हमे व्यभिचार, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद तथा भ्रष्टाचार से मुक्ति दिला सकती है, इस दृष्टि से सृजनकर्मियों और संवेदनशील बुद्धिजीवियों को सजग रहना होगा।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**


1. सिद्धेश्वर प्रकाश, छायावादोत्तर काव्य–पृष्ठ–8
2. आधुनिक कवि पन्त (प्रथम संस्करण)– पृष्ठ–144
3. श्री रामनाथ सुमन गांधीवाद की रूपरेखा साधना सदन, दिल्ली प्रथम संस्करण।
4. हरिभूमि पोर्टल गांधीवाद लेख।
5. कमल किशोर गोयन, प्रेमचन्द कहानी रचनावली, खण्ड–2
6. इलाचंद्र जोशी, जिप्सी, राजकमल प्रकाशन समूह, नई दिल्ली।
7. गांधीवाद से प्रभावित आधुनिक हिन्दी साहित्य, डॉ0 छोटेलाल गुप्ता।
8. डॉ0 नागेन्द्र – विचार और अनुभूति।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 214-218

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गांधी जी का चरित्र के बिना ज्ञान

**डॉ. सुशील चन्द्र बहुगुणा**

बी. एड. विभाग, रा. स्ना. महा. कोटद्वार, गढ़वाल, उत्तराखंड।

गांधी जी ने कहा था, "दुनिया में सात तरह के पाप हैं– "कर्म के बिना धन, आत्मा के बिना सुख, चरित्र के बिना ज्ञान, नैतिकता के बिना व्यापार, मानवता के बिना विज्ञान, त्याग के बिना पूजा और सिद्धांत के बिना राजनीति।"[1] अपने चरित्र को मजबूत बनाने के साथ ही इन अवगुणों से बचना चाहिए। इस लेख में हम गांधी जी ने बिना चरित्र के ज्ञान के बारे में क्या कहा के बारे में चर्चा करेंगे।

सच्ची शिक्षा वह है, जो बालकों की मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित एवं उत्तेजित करती हो। शिक्षा से सिर्फ अक्षर ज्ञान नहीं बल्कि हमारे अधिकार एवं कर्तव्यों की सही समझ प्राप्त करना है। सच्ची शिक्षा वह है, जिससे कि चरित्र का निर्माण हो सके। छात्रों के लिए चरित्र निर्माण सबसे महत्वपूर्ण है और यह उचित शिक्षा के अभाव में संभव नहीं है। गाँधी जी का आदर्श वाक्य था, ''सादा जीवन उच्च विचार'', गांधीजी चरित्र की शक्ति के महत्व को जानते थे। उन्होंने अच्छी शिक्षा के द्वारा चरित्र के विकास पर बल दिया। सभी छात्र–छात्राओं में सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, चोरी न करना, संग्रह न करना तथा निर्भयता के गुणों का विकास करना वे अति आवश्यक समझते थे।

महात्मा गांधी का स्पष्ट विचार है कि चरित्र के बिना ज्ञान पाप है। "जो शिक्षा चरित्र का निर्माण न कर सके, वह बेकार है। ज्ञान खतरनाक है यदि वह मजबूत, सैद्धांतिक चरित्र के बिना है। आंतरिक चारित्रिक विकास के बिना बौद्धिक विकास का महत्व नहीं है। चरित्र और बुद्धि के विकास के बीच बेहतर संतुलन स्थापित होना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण एवं अनुशासन होना चाहिए। जिसे गांधी शांतिपूर्ण समाज के लिए एक जिम्मेदार व्यक्ति का मुख्य घटक मानते थे। महात्मा गांधी जी के लिए अनुशासन और शिक्षा साथ–साथ चलने वाली प्रक्रिया है। क्योंकि उन्हें लगता था कि यह एक ऐसा गुण है जो समाज में बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से उत्थानशील जीवन जीने के लिए एक इंसान के लिए आवश्यक है। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा का लक्ष्य उस व्यक्ति का चरित्र निर्माण है।

गांधी जी के अनुसार शिक्षा किसी भी बिंदु पर समाप्त नहीं होती बल्कि यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। उन्होंने दृढ़ता से महसूस किया कि शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट से समाज में सच्चाई, दृढ़ता और सहिष्णुता का अभाव हो जाएगा।

**शिक्षा और साक्षरता के बीच अंतर :–**

गांधी जी ने शिक्षा को साक्षरता से अलग किया। गांधी ने कहा, "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बच्चे और मनुष्य

के शरीर, मन और आत्मा में सर्वांगीण सर्वश्रेष्ठ को विकसित करना है। साक्षरता शिक्षा का अंत नहीं है, आरंभ भी नहीं। यह उन साधनों में से एक है जिससे पुरुषों और महिलाओं को शिक्षित किया जा सकता है। साक्षरता अपने आप में कोई शिक्षा नहीं है।"

गांधी जी शिक्षा को मानव के सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम मानते थे। अतः वर्धा योजना में उन्होंने प्रथम सात वर्षों की शिक्षा को निःशुल्क एवं अनिवार्य किये जाने पर बल दिया था। गांधी जी का यह मानना भी था कि व्यक्ति अपनी मातृभाषा में शिक्षा को अधिक रुचि तथा सहजता के साथ ग्रहण कर सकता है।

गांधी जी की दृष्टि में सच्ची शिक्षा वह है, जो बालकों की मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित एवं उत्तेजित करती हो। किसी उपयोगी हाथ उद्योग द्वारा बुद्धि का विकास होना चाहिए।

महात्मा गांधी के अनुसार, "मैंने सदैव हृदय की संस्कृति अथवा चरित्र–निर्माण को शिक्षा का उचित आधार माना है। सच्ची शिक्षा केवल आजीविका कमाने के लिए जानकारी या कौशल इकट्ठा करने के बारे में नहीं थी। इसका उद्देश्य किसी व्यक्ति के चरित्र, बुद्धि, शारीरिक फिटनेस और आध्यात्मिक आत्म का संपूर्ण विकास करना था। उनके लिए शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य "नैतिक और आध्यात्मिक क्षमताओं को विकसित करना" और छात्र को "सेवा और चरित्र निर्माण के जीवन" के लिए तैयार करना था। गांधी जी की शिक्षा की परिभाषा के कुछ प्रमुख तत्व शामिल हैं–

- शिक्षा को शिक्षार्थी के मन शरीर और चरित्र का समग्र रूप से विकास करना चाहिए।
- किताबों से मिली सीख को प्रकृति पर्यावरण और अनुभवों से सीख के साथ पूरक किया जाना चाहिए।
- शिक्षा को छात्रों को उनकी संस्कृति और सामाजिक वास्तविकता से दूर नहीं करना चाहिए बल्कि बंधन को मजबूत करना चाहिए।
- इसे नागरिक जिम्मेदारियाँ प्रदान करनी चाहिएए सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देना चाहिए और व्यक्तियों को सामाजिक मुद्दों को अहिंसक तरीके से हल करने के लिए सशक्त बनाना चाहिए।

**शिक्षा पर महात्मा गांधी के उद्धरण :–**

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रतिष्ठित नेता, महात्मा गांधी न केवल राजनीतिक परिवर्तन के समर्थक थे, बल्कि परिवर्तनकारी शिक्षा के भी समर्थक थे। शिक्षा पर उनके विचार एक अधिक न्यायपूर्ण और प्रबुद्ध समाज के लिए उनके दृष्टिकोण का प्रमाण हैं। गांधी का मानना था कि शिक्षा का विस्तार पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं के दायरे से परे होना चाहिए, जिसका लक्ष्य व्यक्तियों के समग्र विकास को बढ़ावा देना, नैतिक और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देना है। शिक्षा पर उनकी गहन अंतर्दृष्टि शिक्षकों और शिक्षार्थियों को प्रेरित करती रहती है, जो व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देती है। शिक्षा पर गांधी जी के कुछ उद्धरण निम्नलिखित हैं जो मानव विकास के इस मूलभूत पहलू के संबंध में उनके कालातीत ज्ञान और दर्शन को दर्शाते हैं।

"ऐसे जियो जैसे कि तुम्हें कल मरना है। ऐसे सीखो जैसे तुम्हें हमेशा के लिए जीना है।"

"शिक्षा से मेरा तात्पर्य बच्चे और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा से सर्वांगीण सर्वश्रेष्ठ को बाहर निकालना है।"

"असली शिक्षा अपने अंदर से सर्वश्रेष्ठ प्राप्त करने में निहित है। मानवता की किताब से बेहतर कौन सी किताब हो सकती है।"

"प्रश्न करने की शक्ति ही समस्त मानव प्रगति का आधार है।"

"सच्ची शिक्षा को आसपास की परिस्थितियों के अनुरूप होना चाहिए अन्यथा स्वस्थ विकास नहीं होगा।"

"विश्वविद्यालय शिक्षा का उद्देश्य लोगों के सच्चे सेवकों को तैयार करना होना चाहिए, जो देश की आजादी के लिए जिएंगे और मरेंगे।"

"साक्षरता अपने आप में कोई शिक्षा नहीं है। साक्षरता शिक्षा का अंत या आरंभ भी नहीं है। शिक्षा से मेरा तात्पर्य बच्चे और मनुष्य शरीर, मन और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ का सर्वांगीण विकास है।"

"मैं नहीं चाहता कि मेरा घर चारों तरफ से दीवारों से घिरा हो और मेरी खिड़कियाँ बंद हों। मैं चाहता हूँ कि सभी देशों की संस्कृतियाँ मेरे घर में यथासंभव स्वतंत्र रूप से प्रसारित हों। लेकिन मैं अपने पैरों से उड़ाए जाने से इनकार करता हूँ कोई भी।"

"वह शिक्षा जो हमें अच्छे और बुरे के बीच अंतर करनाए आत्मसात करना और दूसरे के लिए त्याग नहीं सिखातीए वह एक मिथ्या नाम है।"

आपके पास भौतिक चीज़ों को रखने या उपयोग करने का अवसर हो सकता है, लेकिन जीवन का रहस्य उन्हें कभी न खोने में निहित है।

**गांधी की शिक्षा की अवधारणा :–**

गांधी जी ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और सशक्तिकरण के एक उपकरण के रूप में देखा। शिक्षा की उनकी अवधारणा के कुछ प्रमुख पहलुओं में शामिल हैं–

1. गांधी जी ने रटने की बजाय अनुभवों से सीखने पर जोर दिया। उनका मानना था कि छात्रों को व्यावहारिक कौशल सीखना चाहिए और शिक्षा को उनके दैनिक जीवन और समाज के लिए प्रासंगिक ज्ञान प्रदान करना चाहिए।

2. इसके लिए गांधी जी ने एक शिक्षा मॉडल प्रस्तावित किया जिसे नई तालीम या बुनियादी शिक्षा के नाम से जाना जाता है। इस मॉडल के अनुसारए छात्र अपना आधा समय भाषा और गणित जैसे शैक्षणिक विषयों को सीखने में बिताएंगे और बाकी आधा समय व्यावहारिक या व्यावसायिक कार्य करने में व्यतीत करेंगे। इसमें खेती, शिल्प, सिलाई आदि जैसी गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं।

3. इसका उद्देश्य शिक्षा को समग्र और सशक्त बनाने के लिए मानसिक, शारीरिक और नैतिक कार्यों को एकीकृत करना था।

4. गांधी जी ने शिक्षा के विकेन्द्रीकरण की भी वकालत की। उनका मानना था कि गांवों में स्थानीय आवश्यकताओं, संस्कृति और आजीविका के अवसरों के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने वाले अपने स्वयं के स्कूल होने चाहिए।

5. आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए मानकीकृत पाठ्यक्रम की तुलना में पाठ्यक्रम भी अलग–अलग होगा। समझ और सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करने के लिए शिक्षा का माध्यम स्थानीय भाषा में होना चाहिए।

अनुभवात्मक और व्यावसायिक शिक्षा, शिक्षा प्रणालियों को स्थानीय बनाने और पाठ्यक्रम को आवश्यकताओं के आधार पर बनाने की इन अवधारणाओं के माध्यम से, गांधी ने भारत की विशाल ग्रामीण आबादी के लिए शिक्षा को अधिक उत्पादक सशक्त और परिवर्तनकारी अनुभव बनाने का प्रयास किया।

**महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य :–**

एक दूरदर्शी नेता और दार्शनिक, महात्मा गांधी का शिक्षा के उद्देश्यों पर गहरा और विशिष्ट दृष्टिकोण था। उनका मानना था कि शिक्षा को न केवल शैक्षणिक रूप से बल्कि नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से भी व्यक्तियों को सशक्त बनाने के साधन के रूप में काम करना चाहिए। महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

1. **समग्र विकास :–** गांधी जी की शिक्षा का सबसे प्रमुख उद्देश्य शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक आयामों को शामिल करते हुए समग्र विकास को बढ़ावा देना था। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा को एक सर्वांगीण व्यक्ति का विकास करना चाहिए जो लचीलेपन और बुद्धिमत्ता के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो।

2. **चरित्र निर्माण :–** गांधी का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा को चरित्र निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उन्होंने समाज में सकारात्मक योगदान देने वाले नैतिक रूप से ईमानदार नागरिकों को विकसित करने के लिए सत्य, अहिंसा, विनम्रता और सहानुभूति जैसे मूल्यों को प्रदान करने के महत्व पर जोर दिया।

3. **आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना :–** गांधी के शैक्षिक दर्शन का एक अन्य केंद्रीय उद्देश्य व्यक्तियों में आत्मनिर्भरता पैदा करना था। उनका मानना था कि शिक्षा को छात्रों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और दूसरों पर कम निर्भर बनाने के लिए व्यावहारिक कौशल और ज्ञान से लैस करना चाहिए।

4. **समाज की सेवा :–** गांधी ने शिक्षा को सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देने के साधन के रूप में देखा। उन्होंने छात्रों को सामुदायिक सेवा में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित किया, यह समझते हुए कि सच्ची शिक्षा दूसरों के जीवन को बेहतर बनाने में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से होती है।

5. **सत्य और अहिंसा को बढ़ावा देना :–** गांधी जी के शैक्षिक उद्देश्य उनके सत्य, सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों में गहराई से निहित थे। उनका मानना था कि शिक्षा को व्यक्तियों को सत्य की खोज करना, सत्य बोलना और जीवन के सभी पहलुओं में अहिंसा का अभ्यास करना सिखाना चाहिए।

6. **समानता और समावेशिता को बढ़ावा :–** गांधी ने ऐसी शिक्षा की वकालत की जो जाति, पंथ और आर्थिक असमानताओं से परे हो। उनका लक्ष्य एक अधिक समावेशी समाज का निर्माण करना था जहां सभी को शैक्षिक अवसरों तक समान पहुंच प्राप्त हो।

उपर्युक्त उदेश्यों के आधार पर गांधी जी का देश के युवाओं को शिक्षा प्रदान करने का मजबूत एवं सकारात्मक उदेश्य था।

– छात्रों को जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए उनमें आत्मनिर्भरता, चरित्र और मूल्यों का विकास करना।
– राष्ट्र के पुनर्निर्माण में उनकी भूमिका के लिए उन्हें तैयार करने के लिए जीवन और सामाजिक कौशल प्रदान करना।
– मातृभाषा में शिक्षा के माध्यम से सांस्कृतिक जड़ों और सदभाव को बढ़ावा देना।

– नागरिक अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में साक्षरता और जागरूकता फैलाना।
– व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से श्रम की गरिमा को बढ़ावा देना।
– व्यक्तिगत और सामुदायिक दोनों स्तरों पर सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सशक्तिकरण हासिल करना।

महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन दुनियाभर के शिक्षकों, छात्रों को प्रेरित करता है, जो न केवल जानकार व्यक्तियों, बल्कि जिम्मेदार नैतिक और दयालु नागरिकों को भी आकार देने में शिक्षा के महत्व पर जोर देता है।

कहा भी गया है कि यदि धन खो गया तो कुछ नहीं खोया, अगर स्वास्थ्य खो गया तो कुछ खोया, लेकिन यदि चरित्र खो गया तो सब कुछ खो गया। इसलिए चरित्रवान बने तथा चरित्रवान बनकर देश के आदर्श एवं जिम्मेदार नागरिक बनें। चारित्रिक बल ही एकाग्रता का आधार है। अच्छा चरित्र हर किसी व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है। उस व्यक्ति में विश्वास, मूल्य, सोच–विचार और व्यक्तित्व का मेल से होता है, हमारे कार्य एवं व्यवहार से इसका पता चलता है। जीवन में सच्ची सफलता पाने के लिए व्यक्ति का चरित्रवान होना अति आवश्यक है। इसलिए चरित्र की रक्षा करने के लिए व्यक्ति को आजीवन प्रयास करना चाहिए। चरित्र एक शक्तिशाली उपकरण है जो शांति, धैर्य, स्नेह, प्रेम, सरलता, नम्रता आदि दैवीय गुणों को निखरता है। विश्व कवि टैगोर जी के शब्दों में, "प्रतिभा से भी उच्च है चरित्र का स्थान। स्माइल्स ने भी कहा है कि चरित्र एक सम्पति है, अन्य सम्पतियों से भी महान। लोकमान्य तिलक ने कहा– संसार में सच्चरित्र व्यक्ति ही उन्नति प्राप्त करते हैं। चरित्र व्यक्ति की सबसे बड़ी शक्ति तथा सम्पति है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि समस्त मानव जीवन का कुछ सार है, तो वह है मनुष्य का चरित्र।

**संदर्भ सूची :-**


1. गांधी जी की संक्षिप्त आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, आगरा–14
2. सत्य का पुजारी, प्रकाश पंडित, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली।
3. महात्मा गाँधी, एक जीवनी–लेखक–रतन लाल बंसल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. पाण्डेय, आर. एस. (2002) : 'विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. कृपलानी, कृष्ण; 2005 : ''गाँधी : एक जीवनी'' नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
   गांधी की शिक्षा की अवधारणा।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 219-222

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिंदी साहित्य में गांधी विचारधारा का प्रभाव

**डॉ सीताराम आठिया**

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, देवरी, जिला सागर, म.प्र., पिन कोड–470226

**सारांश :–**

महात्मा गांधी ने जिन नियमो अथवा सिद्धांतो का जीवन भर समर्थन एवम प्रयोग किया उन्हे ही हम गांधी वादी विचारधारा कहते हैं। महात्मा गांधी आधुनिक भारत के सक्षम प्रहरी थे। उनकी महान विचारधारा का हिन्दी साहित्य एवम हिन्दी कविता पर विशिष्ट प्रभाव पड़ा है, जिसका उचित मूल्यांकन अभी तक नहीं हुआ है। गांधी विचारधारा की जिन विशेषताओं ने हिन्दी साहित्य को प्रभावित एवं प्रेरित किया उनका स्वरूप विश्लेषण करना मेरे इस शोधालेख का प्रमुख उद्देश्य है।

गांधी जी ने अपने व्यक्तित्व, विचार, भाषा, कार्यक्रम, भाषण तथा लेखन के सशक्त माध्यम से लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों सहित समस्त देशवासियों के मानस में सत्य–अहिंसा, प्रेम–एकता, शांति–सद्भावना जागृत की। गांधी जी का सर्वप्रमुख राजनैतिक सिद्धांत सर्वोदय की स्थापना था। उनके अनुसार सर्वोदय वह व्यवस्था है, जिसमे समाज के अंतिम व्यक्ति तक का उदय अर्थात उत्थान हो, सबके हित में व्यक्ति अपना हित माने। सर्वोदय की स्थापना के लिए गांधी जी सांप्रदायिक एकता, अस्पृश्यता, मद्य–निषेध, ग्रामोद्योगों का विकास, गांवों की सफाई में सुधार, बुनियादी शिक्षा, आर्थिक समानता, सार्वजनिक स्वास्थ्य, नारी का सम्मान आदि को आवश्यक मानते हैं।

गांधी जी स्वतंत्र भारत में एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जिसका दृष्टिकोण नैतिक व चारित्रिक हो जिसका उल्लेख उन्होंने अपनी पुस्तक हिंद स्वराज्य में भी किया।

महात्मा गांधी जी, महान साहित्यकार नहीं थे, लेकिन भारत के लगभग सभी साहित्यकार उनसे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से उनसे प्रभावित हुए। गोरखपुर में 1923 में गांधी जी का भाषण सुनकर मुंशी प्रेमचन्द जी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी 23 वर्ष की शासकीय नौकरी छोड़ दी। फलतः हिंदी साहित्य जगत में वह उपन्यास सम्राट बने।

**गांधी जी के आदर्श और हिंदी साहित्य :–**

1. **सत्य :–** गांधी जी के अनुसार सत्य ही ईश्वर का दूसरा नाम है। पूर्ण सत्य में सभी प्रकार का ज्ञान समाहित है और वह ज्ञान शाश्वत आनंद का स्रोत है। गांधी जी के इन विचारों का प्रभाव जैनेंद्र की 'वे तीन' फांसी, वातायन, एक रात कहानी संग्रह एवम् सुनीता उपन्यास तथा विष्णु प्रभाकर की मेरी प्रिय कहानियां, वापसी आदि कहानी संग्रह में देखा जा सकता है।

2, **अहिंसा** :– महात्मा गांधी ने सत्य को सर्वश्रेष्ठ धर्म तथा अहिंसा को परम कर्तव्य बताया है। उनके अनुसार पृथ्वी के किसी भी जीवधारी को विचार, शब्द एवं कार्य से दुख नहीं पहुंचाना ही अहिंसा है। गांधी जी के अहिंसा संबंधी विचारों का प्रभाव विनोद शंकर व्यास के 'स्वराज कब मिलेगा', आनंद प्रकाश जैन की 'देवताओं की चिंता' तथा चौतन्य भट्ट की 'रंग में भंग' कहानी संग्रह में देखने को मिलता है।

3. **धर्म** :– गांधी जी ने सभी धर्मो में सामाजस्य, सार्वजनिक हित एवं देश प्रेम को ही अपना कर्तव्य एवं धर्म माना है। उनके इन विचारों का प्रतिबिंब विष्णु प्रभाकर की उस दिन तथा राधे लाल बिजधनवे की एक सूत्र कहानी संग्रह में देखने को मिलता है।

4. **शांति** :– गांधी जी युद्ध का परित्याग कर शांति प्रसार पर अधिक बल देते थे। उनकी इस विचारधारा का प्रभाव अमृतलाल नागर की एटमबम तथा आनंद प्रकाश जैन की मूंछ का बाल कहानी संग्रह में देखने को मिलता है।

5. **समाज सुधार** :– गांधी जी के समाज सुधार की दिशा में सांप्रदायिक एकता, नारी उद्धार, हरिजनोद्धार, मद्यपान निषेध आदि विचार काफी प्रशंसनीय हैं, जिनका प्रभाव मुंशी प्रेमचंद के लेख महाजनी सभ्यता तथा गबन एवम विष्णु प्रभाकर की स्वराज एवम धरोहर कहानी संग्रह में दृष्टिगत होता है।

गांधी जी ने अस्पृश्यता निवारण का संकल्प लिया था। वह हरिजनोद्धार कर अस्पृश्यता का अंत करना चाहते थे। उनके इन विचारों का प्रभाव लक्ष्मीनारायण की 'आनेवाला कल', सोमा वीरा की 'अंगूठी' कहानी संग्रह तथा प्रेमचंद के गोदान में देखने को मिलता है।

गांधी जी दहेज प्रथा तथा नारी उद्धार के प्रबल समर्थक तथा उन्होंने वेश्यावृत्ति समस्या, विधवा विवाह, दहेज प्रथा और नारी शिक्षा के क्षेत्र में काफी कार्य किए जिनका प्रभाव विधवा विवाह के समर्थन में सोमावीरा की 'रेत के टीले' और 'बिंदिया' कहानी में स्पष्ट देखा जा सकता है।

गांधी जी दहेज प्रथा को स्त्री जाति की प्रगति और स्वतंत्रता की राह में सबसे बड़ी बाधा मानते हैं। गांधी जी के दहेज संबंधी विचारों का प्रभाव सोमावीरा के 'अधूरी गांठ' और 'राख की पुड़िया', रामेश्वरी चकोरी की 'आँखों का कौतुक' कहानी संग्रह तथा प्रेमचंद के 'निर्मला' उपन्यास में देखने को मिलता है। वेश्यावृत्ति की घृणित सामाजिक समस्या को प्रेमचंद के 'सेवासदन', इलाचंद्र जोशी, उपेंद्रनाथ अश्क, विनोद शंकर व्यास और विष्णु प्रभाकर ने भी अपनी कहानियों में उजागर किया है।

6. **स्वदेश और राष्ट्र विषयक विचार** :– गांधी जी के स्वदेश और राष्ट्र विषयक विचार महत्त्वपूर्ण हैं। वे देश को एकता के सूत्र में बाँधने वाले महान् नायक थे। गांधी जी की इस विचारधारा का प्रभाव विनोदशंकर व्यास के 'स्वराज कब मिलेगा' तथा विष्णु प्रभाकर की 'खंडित पूजा' और 'नागफांस' कहानी संग्रह में देखने को मिलता है।

7. **ग्राम स्वराज्य** :– गांधी जी ग्राम स्वराज्य के पक्षपाती थे जिनका प्रभाव हम प्रेमचंद और उनके परवर्ती साहित्यकारों पर भी देखते हैं। मुंशी प्रेमचंद जी के 'गबन', 'कर्मभूमि', 'कायाकल्प' में ग्राम्य कृषक जीवन की मार्मिक झाँकी द्वारा ग्रामीण स्वराज का उल्लेख किया गया है।

हिन्दी साहित्य के अलावा दक्षिण भारत के साहित्यकारों में भी गांधी जी के भाषणों का अद्वितीय प्रभाव रहा। गांधी जी के इस विकेंद्रीकरण के नारे 'गांवों की ओर चलो' का ही प्रभाव था कि हिन्दी में 'देहाती दुनिया',

'गोदान' और 'मैला आंचल' में ग्राम और ग्रामीण जीवन, कहानियों और उपन्यासों का विषय बना।

कथा साहित्य के इतर रामधारी सिंह 'दिनकर', सुमित्रानंदन पंत, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, सोहनलाल द्विवेदी, भवानी प्रसाद मिश्र आदि कवियों ने गांधी विचारधारा को साहित्य में अपनी कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने गांधी जी की भाषा से प्रभावित होकर, 'उपेक्षिता उर्मिला' को लेकर 'साकेत' की रचना के बारे में गांधी जी से पत्र व्यवहार किया। इस प्रकार गांधी जी की प्रेरणा से हिन्दी भारतीय साहित्य में बोलचाल की सरल–सहज भाषा, कहानी और कविता का माध्यम बनी। महात्मा गांधी जी का कथन था कि 'समाज के वंचित, दलित–शोषित, दरिद्रनारायण की सेवा करो।' फलस्वरूप कई काव्य और उपन्यास अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों पर लिखे गए। सन उन्नीस सौ बीस से लेकर चालीस के बीच पचासों उपन्यास इस दिशा में लिखे गए। मैथिलीशरण गुप्त के 'किसान' और 'अछूत' खंडकाव्य, रवीन्द्रनाथ की 'चांडालिका', शरतचंद्र चटर्जी का 'पल्ली समाज' इसी कोटि के हैं। गांधी जी ने सेवा, संयम एवं अहिंसा का जो पाठ पढाया, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का व्यंग्य नाटक 'बकरी' तथा नरेंद्र कोहली का 'शंबूक की हत्या' भी इसी तथ्य पर आधारित है। महात्मा गांधी जी के सिद्धांतों का प्रभाव केवल राष्ट्रीय आंदोलन पर ही नहीं, विश्व शांति के लिए अहिंसा का प्रेरणा देने में भी था। इस विषय को लेकर कई काव्य हिन्दी में लिखे गए। प्रायः हर हिन्दी भाषा–भाषी प्रदेशों में राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं और प्रेमियों ने आत्मकथाएं लिखी हैं। जिसमें गांधी जी की देश को एक सूत्र में बांध रखने की तडप के दर्शन मिलते हैं। राजेंद्र प्रसाद हों या जयप्रकाश नारायण, द्वारिका प्रसाद हों या सेठ गोविन्द दास, सभी में 'एक जगत' और 'मानव–मानव सब हैं समान' की भावना ही मिलती है।

गांधी जी के जिन भाषा विषयक विचारों से भारतवासी प्रभावित हुए, उनमें उन लेखों का स्थान प्रमुख था, जो 'यंग इंडिया', 'हरिजन सेवक', श्हरिजन बंधुश आदि में प्रकाशित हुए थे। इसके अतिरिक्त गांधी जी के द्वारा लिखी गई 'इंडियन होमरूल', 'हिन्दी स्वराज और होमरूल' जैसी पुस्तकों और तत्कालीन विभिन्न व्यक्तियों के नाम पर लिखे गए पत्रों आदि से भी प्रभावित हुए थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई साहित्यकारों ने कहानियों, उपन्यासों और नाटकों के माध्यम से गांधी–दर्शन से संबंधित विभिन्न विचार व्यक्त किए। साहित्यकारों ने अपनी ओर से समाज हित के लिए बहुत कुछ करने के प्रयास किए और इस दिशा में काफी हद तक वे सफल हुए। गांधी जी ने जिस मंगल भारत की कल्पना की थी, उसे स्वर्ग तुल्य बनाने में हमें गांधी जी की मूल्य–मर्यादाओं का पालन करना आवश्यक है।

**निष्कर्ष :–**

अंत में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि आधुनिक हिन्दी साहित्य पर गांधी जी का प्रभाव बहुत व्यापक रूप में पड़ा है। महात्मा गांधी ने भारत भूमि की स्वाधीनता के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वे जनमानस में सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, शांति, सद्भाव, सर्वधर्म सम्भाव, समानता एवं मानवता की भावना जागृत करने के लिए सतत् संघर्षशील रहे। उनका विचार था कि ऊँच–नीच, अमीरी–गरीबी और छुआछूत, अन्याय, उत्पीड़न तथा किसी प्रकार की हिंसा न हो और समस्त भारतवासी निर्भय होकर शांतिमय जीवन व्यतीत कर सकें। अतः हिन्दी साहित्य पर उनके विचारों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। उनके विचारों को हिन्दी साहित्य के अधिकांश साहित्यकारों ने अपनाया और उनको अपनी रचना का विषय बनाया। कथा साहित्य में जहाँ प्रेमचंद,

रेणु, जैनेंद्र, अश्क, स्वरूप कुमार बख्शी विष्णु प्रभाकर आदि की रचनाओं में गांधी विचार एवं उनके आदर्शों को देखते हैं, वही मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, भवानी प्रसाद मिश्र, बालकृष्ण शर्मा नवीम आदि कवियों में भी देखने को मिलता है।

**संदर्भ स्रोत :-**


1. आधुनिक हिंदी काव्य में गांधी की विचारधारा : योगेश जे दबे सौराष्ट्र वि.वि. राजकोट, गुजरात।
2. आलेख, डॉ. जे. के. नाथन विशाखापट्टनम।
3. आलेख, डॉ. छोटेलाल गुप्ता असिस्टेंट प्रोफेसर, जयप्रकाश वि.वि., छपरा बिहार।
4. ब्लॉग, डॉ. विशाला शर्मा।



मो, 9425691597

ईमेल आईडी– srathiya.deori@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 223-226

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# वर्तमान समय में गांधीवाद की प्रासंगिकता

**श्रीमती कांता वर्मा**

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, शासकीय महाविद्यालय, लांजी, जिला बालाघाट, म.प्र.

**सारांश :–**

आज के दौर में जब समाज में कल्याणकारी आदर्शों का स्थान असत्य, अवसरवाद, धोखा, चालाकी, लालच व स्वार्थपरता जैसे संकीर्ण विचारों द्वारा लिया जा रहा है तो समाज सहिष्णुता, प्रेम, मानवता, भाईचारे जैसे उच्च आदर्शों को विस्तृत करता जा रहा है। विश्व शक्तियाँ शस्त्र एकत्र करने की स्पर्धा में लगी हुई है लेकिन एक छोटे से वायरस को हरा पाने में असमर्थ और लाचार साबित हो रही है। ऐसे में विश्व शांति की पुनर्स्थापना के लिये, मानवीय मूलों को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिये आज गांधीवाद नए स्वरूप में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठा है।

गांधी जी के विचार शाश्वत है इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि उन्होंने जमीनी तौर पर अपने विचारों का परीक्षण किया और जीवन में सफलता अर्जित की जो न सिर्फ स्वयं के लिये अपितु पूरे विश्व के लिये थी। आज दुनिया गांधी के मार्ग को सबसे स्थायी रूप में देखती है।

आज संपूर्ण विश्व अपनी समस्याओं का हल हिंसा के माध्यम से ढूंढना चाहता है। वैश्वीकरण के इस दौर में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा ही खत्म होती जा रही है। अमेरिका, चीन, उत्तर कोरिया, ईरान जैसे देश हिंसा के माध्यम से प्रमुख शक्ति बनने की होड़ एवं दूसरों पर वर्चस्व के इरादे से हिंसा का सहारा लेते हैं। इस हेतु वैश्विक रूप से शस्त्रों की होड़ लग गई है। यह अंधी दौड़ दुनिया को अतः विनाश की ओर ले जाता है। आज अहिंसा जैसे सिद्धांतों का पालन करते हुए विश्व में शांति की स्थापना की जा सकती है जिसकी आज पूरे विश्व को आवश्यकता है।

आत्मनिर्भर व स्वायत्त ग्राम पंचायतों की स्थापना के माध्यम से ग्रामीण समाज के अंतिम छोर पर मौजूद व्यक्ति तक शासन की पहुँच सुनिश्चित करना ही गांधी जी का ग्राम स्वराज सिद्धांत था। आर्थिक मामलों में भी गांधीजी विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था के माध्यम से लघु, सूक्ष्म व कुटीर उद्योगों की स्थापना पर बल देते थे। उनका मत था कि भारी उद्योगों की स्थापना के पश्चात् इनसे निकलने वाली जहरीली गैसें व धुंआ पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं, साथ ही बहुत बड़े उद्योगों का अस्तित्व श्रमिक वर्ग के शोषण का भी मार्ग तैयार करता है। आज इस महामारी के दौर में जब पूरे विश्व को एक बार फिर आर्थिक मंदी की ओर जाने का खतरा दिखाई दे रहा है ऐसे में इन कुटीर उद्योगों की स्थापना गरीब श्रमिकों के लिये आशा की किरण साबित होगी।

आज जिस तरह अमेरिका एवं चीन जैसे देश व्यापार–युद्ध के माध्यम से अपने देश को सशक्त और दूसरे

देशों की आर्थिक व्यवस्था को कमजोर करने पर तुले हैं। ऐसी स्थिति में स्वदेशी की यह संकल्पना देश के घरेलू उद्योगों और कारीगरों हेतु एक वरदान की भांति सिद्ध होगा।

गांधी जी शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन व जीविका कमाने का कार्य एक साथ करने पर बल देते थे। आज जब बेरोजगारी देश की इतनी बड़ी समस्या है तब गांधी जी के इस विचार को ध्यान में रखकर शिक्षा नीतियाँ बनाना लाभप्रद होगा। गांधी जी का राष्ट्र का विचार भी अत्यंत प्रगतिशील था। उनका राष्ट्रवाद 'वसुधैव कुटुम्बकम' के विस्तार से प्रेरित था। वे राष्ट्रवाद की अंतिम परिणति केवल एक राष्ट्र के हितों तक सीमित न मानते हुए उसे विश्व कल्याण की दिशा में विस्तृत करने पर बल देते थे। आजकल राष्ट्रवाद का अतिवादी स्वरूप होता देखकर गांधीवादी राष्ट्रवाद सटीक लगता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि यह गांधीवाद है क्या? किसी भी शोषण का अहिंसक प्रतिरोध, सबसे पहले दूसरों की सेवा, संचय से पहले त्याग, झूठ के स्थान पर सच, अपने बजाय देश और समाज की चिंता करना आदि विचारों को समग्र रूप से गांधीवाद की संज्ञा दी जाती है। गांधीवादी विचार व्यापक रूप से प्राचीन भारतीय दर्शन से प्रेरणा पाते है और इन विचारों की प्रासंगिकता अभी भी बरकरार है। आज के दौर में जब समाज में कल्याणकारी आदर्शों का स्थान असत्य, अवसरवाद, धोखा, चालाकी, लालच व स्वार्थपरता जैसे संकीर्ण विचारों द्वारा लिया जा रहा है तो समाज सहिष्णुता, प्रेम, मानवता, भाईचारे जैसे उच्च आदर्शों को विस्तृत करता जा रहा है। विश्व शक्तियाँ शस्त्र एकत्र करने की स्पर्धा में लगी हुई है लेकिन एक छोटे से वायरस को हरा पाने में असमर्थ और लाचार साबित हो रही है। ऐसे में विश्व शांति की पुनर्स्थापना के लिये, मानवीय मूलों को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिये आज गांधीवाद नए स्वरूप में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठा है।

गांधीवादी विचारधारा महात्मा गांधी द्वारा अपनाई और विकसित की गई उन धार्मिक–सामाजिक विचारों का समूह है जो उन्होंने पहली बार वर्ष 1983 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में तथा उसके बाद फिर भारत में अपनाई गई थी।

गांधीवादी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है। यह कई पश्चिमी प्रभावों का प्रतीक है, जिनको गांधीजी ने उजागर किया था, लेकिन यह प्राचीन भारतीय संस्कृति में निहित है तथा सार्वभौमिक नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करता है। गांधी जी ने इन विचारधाराओं को विभिन्न प्रेरणादायक स्रोतों जैसे– भगवतगीता, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, बाइबिल, गोपाल कृष्ण गोखले, टॉलस्टॉय, जॉन रस्किन आदि से विकसित किया। टॉलस्टॉय की पुस्तक 'द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू' का महात्मा गांधी पर गहरा प्रभाव था। गांधीजी ने रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' से 'सर्वोदय' के सिद्धांत को ग्रहण किया और उसे जीवन में उतारा।

गांधी जी ने आजादी की लड़ाई के साथ–साथ छुआछूत उन्मूलन, हिन्दू–मुस्लिम एकता, चरखा और खादी को बढ़ावा, ग्राम स्वराज का प्रसार, प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा और परंपरागत चिकित्सीय ज्ञान के उपयोग सहित तमाम दूसरे उद्देश्यों पर कार्य करना निरंतर जारी रखा। सत्य के साथ गांधी जी के प्रयोगों ने उनके इस विश्वास को पक्का कर दिया था कि सत्य की सदा विजय होती है और सही रास्ता सत्य का रास्ता ही है। आज मानवता की मुक्ति सत्य का रास्ता अपनाने से ही है। गांधी जी सत्य को ईश्वर का पर्याय मानते थे। गांधी जी का मत था कि सत्य सदैव विजयी होता है। अगर मनुष्य का संघर्ष सत्य के लिये है तो हिंसा का लेशमात्र

उपयोग किये बिना भी वह अपनी सफलता सुनिश्चित कर सकता है।

गाँधी जी ने कहा कि अहिंसा के माध्यम से एक न्याय सम्मत अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था का निर्वाह किया जा सकता है। गाँधी जी का मत था कि अहिंसा द्वारा किसी भी अंतर्राष्ट्रीय समस्या का समाधान संभव है। यदि सभी राष्ट्र अपने मतभेदों व संघर्ष का समाधान अहिंसा द्वारा करें तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर न्याय की व्यवस्था की जा सकती है। युद्ध व आक्रमण हिंसा के सिद्धांतो का स्वाभाविक परिणाम है। विश्व में युद्धों की निरर्थकता सिद्ध हो चुकी है। युद्धों से किसी समस्या का समाधान नहीं होता, वरन् समस्याएँ बढ़ जाती है तथा ओर भी अधिक जटिल बन जाती है। युद्ध व हिंसा द्वारा बड़े राष्ट्र छोटे राष्ट्रों का शोषण करते है। यह भौतिक बल की श्रेष्ठता का ही पर्याय है। युद्ध का समर्थन पशुबल का समर्थन है। युद्ध के दौरान सज्जन व सद्‌गुणी व्यक्ति भी हिंसक व पशुवत बन जाता है। युद्ध नैतिकता की अवहेलना करता है।

**अहिंसा सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तन :-**

वैचारिक प्रासंगिकता गाँधी जी की दृष्टि में सामाजिक परिवर्तन उतना ही अपरिहार्य होता है जितना राजनैतिक परिवर्तन। सामाजिक परिवर्तन राजनीतिक तथा आर्थिक परिवर्तन का समानान्तर और कई अर्थो में समानार्थक भी हो सकता है। गाँधी जी का सामाजिक परिवर्तन का विचार एक पूर्ण विचार था, जिसके अंतर्गत वे समस्त आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक व्यवस्था का रूपान्तरण चाहते थे। गाँधी जी ने सामाजिक परिवर्तन का औचित्य उसी स्थिति में माना जब राष्ट्र को विदेशी निरंकुशतावाद एवं समाज को अंतर्विरोधों से मुक्ति प्राप्त हो।

**वैश्वीकरण की चुनौतियाँ :-**

गाँधी की प्रासंगिकता वैश्वीकरण की चर्चा का आरंभ विश्वग्राम की सुनहरी कल्पना से हुआ था। इस कल्पना के अंतर्गत संपूर्ण विश्व के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने, सबको एक पारिवारिक सूत्र में बांधने के लिए अनगिनत नई नीतियाँ और योजनाएँ सामने आई है। विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व व्यापार संगठन जैसी अनेक संस्थाएं एक साथ सक्रिय हुई। इस क्रम में धरती के प्रत्येक क्षेत्र की उर्जा और उत्पादक क्षमता का सर्वेक्षण हो चुका है। परिणाम यह है कि विश्वग्राम धीरे–धीरे हितों के भूमण्डलीकरण में बदलता गया है। भारत के संदर्भ में देखें तो 1990 के बाद तेजी से यह देश वैश्वीकरण का लक्ष्य बना है। अपने चारों ओर के परिदृश्य पर विचार करें तो कई नये–नये शब्द अपनी नई–नई प्रयुक्तियों के साथ सक्रिय मिलेंगे। जैसै– बाजारवाद, उत्तर उपनिवेषवाद, उत्तर आधुनिकवाद, विश्व बाजार, संरचनावाद, विखण्डनवाद, उपभोक्तावाद आदि।

वर्तमान विश्व में जन समूह का आखेट करने के लिए विभिन्न ताकतें और प्रविधियाँ सक्रिय है। जनसमूह के इसी आखेट के खिलाफ खड़ा है गाँधी दर्शन। इसमें सन्देह नहीं कि महात्मा गाँधी व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व थे, ऐसे व्यक्तित्व जिनकी कर्मठता ने मनुष्य के शिखरों का स्पर्श किया था। ऐसे व्यक्तित्व का मौजूद होना वर्तमान और भविष्य को एक सूत्र मे बांधने का आधार था। आज भी महात्मा गाँधी का कृतित्व और चिंतन वर्तमान और भविष्य के लिये एक मजबूत आधारशिला है। विशेषतः वैश्वीकरण के इस दौर में आम आदमी पर मंडराते खतरों से जूझने की ताकत देता है। वैश्वीकरण के कारण पूँजीवाद और बाजारवाद के बढ़ते आक्रमणों का सामना करने में गाँधी जी की कथनी और करनी सही मार्ग निर्देश करती है। वैश्वीकरण ने बड़े पैमाने पर समाज को विखंडित

किया है और शाश्वत मानवीय मूल्यों को समाप्त करने की साजिश की है। बाजार पर पैनी निगाह रखने वाले सूचना तंत्र के विस्तार ने हर आदमी को एक आर्थिक इकाई में बदल दिया है। वैश्वीकरण के इस दौर में लोग धीरे–धीरे वस्तु में बदलते जा रहे है। वैश्वीकरण की आदतें मनुष्य को मशीन की तरह निर्जीव बनाती जा रही है। ऐसे हालात में गाँधी के जीवन और सोच की दिशाएं रोशनी की लकीर की तरह रास्ता दिखाती है।

गांधी के लिए उनका देश आज के देश की तरह नहीं था। उनके लिए देश का मतलब था लोग, देश की जनता, लेकिन आज गांधी के अनुयायी ही उनकी इस अवधारणा को भूलते जा रहे है। आज के हिंसक होते हुए इस समाज में गांधीवाद की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है। हमारे सामने इसे अपनाने के सिवा कोई रास्ता नहीं है या फिर मिटने को तैयार रहना चाहिए सकारात्मक अहिंसा को अपनाकर ही दुनिया की बड़ी से बड़ी ताकतों का सामना किया जा सकता है। फिर एक दिन चारो ओर मानवता का धवलध्वज दिखाई दे सकता है। गांधी की सबसे बड़ी प्रासंगिकता इसी में है। एक शायर के शब्दों में–''हजारों साल में ऐसा मसीहा एक आया था कि जिसने आदमी को आदमी बनना सिखाया था।।''

वैश्वीकरण की वर्तमान समय में तीव्रता से बढ़ती प्रक्रिया में लोगों में गांधीवाद के प्रति रूचि एवं जिज्ञासा बढ़ी है। महात्मा गांधी का व्यवहारिक आदर्शवाद भी काफी सराहनीय रहा है। उन्होंने अपने राजनैतिक आदर्शो को हमेशा व्यवहारिक रूप दिया। गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता समाज और व्यवस्था के गहराते संकट के बीच बढ़ती जा रही है। आज इस आतंक और साम्प्रदायिकता तनाव में घिरे हुए विश्व के लिए गांधीवाद ही एक अकेला ऐसा रास्ता है जो नयी दिशा दिखाता है और यही कारण है कि विश्व के ज्यादा से ज्यादा देश इस ओर प्रभावित हुए बिना नहीं रह रहे है। आज जब विश्व एक नये ध्रूवीकरण की ओर अग्रसर है तो गांधी दर्शन आज के समय की मार्गदर्शन बना है। सच तो यह है कि एक विश्व गांधी जी के दर्शन के साथ उदय हो रहा है। जो अहिंसा शांति, आपसी सदभाव और भाईचारे से एक नई विश्व शांति का मार्ग दिखाता है।

**संदर्भ ग्रंथ :–**


1. गाँधी : कन्फेशन्स ऑफ ए लिंग्विस्ट, वर्ड प्रेस, जनवरी 21, 2010
2. कौशिक आशा, ''गाँधी नयी सदी के लिये", रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2000, पृष्ठ 239
3. अरविंद पवन कुमार, ''वर्तमान में गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता, आर्टिकल ऑन गाँधी, जनवरी 28, 2010
4. गाँधी : कन्फेशन्स ऑफ ए लिंग्विस्ट, वर्ड प्रेस, जनवरी 21, 2010
5. नारायण डॉ. इकबाल, ''आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएँ, ग्रंथ विकास प्रकाशन, जयपुर, 2005, पृष्ठ 428
6. सक्सेना वन्दना, ''गाँधी जीवन और दर्शन, बी. आर. पब्लिशर्स, जयपुर, 2006, पृष्ठ 100–101
7. बहरवाल डॉ. मनोज कुमार, ''भारतीय राजनीतिक चिंतक'', हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, 2014, पृष्ठ 39759.
8. नारायण डॉ. इकबाल, ''आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएँ'', ग्रंथ विकास प्रकाशन, जयपुर, 2005, पृष्ठ 428
9. डॉ0 माधवी त्रिपाठी, गांधी की विरासत, बाइंकिग बुक्स जयपुर 2012, पृ0 188
10. डॉ0 शेफाली वाथोनिया, महात्मा गांधी एवं विश्व, एबीडी पब्लिशर्स, जयपुर, 2008 पृ0 44

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 227-230

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# 'टेढ़े–मेढ़े रास्ते' उपन्यास में गाँधीवादी विचारधारा

**डॉ. जिनु जॉन**

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मार अत्तानेशियस कॉलज (आटोनमस), कोतमंगलम, केरल – 686666

**प्रारूप :–**

हमारे स्वतंत्रता संग्राम की रूपरेखा से सभी सुपरिचित है। हम आज स्वतंत्र भारत में रहते हैं और यह जानना ज़रूरी है कि इस स्वतंत्रता को पाने के लिए कितना खून–पसीना बहाया गया है। जिन्होंने स्वतंत्रता को प्राप्त करने में तकलीफें सहीं और बलिदान दिये, उन लोगों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना हमारा धर्म हैं।

सन् 1905 में गोपालकृष्ण गोखले कांग्रेस के अध्यक्ष बन गए। 1914 ई में प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत हुई। तिलक ने 1916 में 'होमरूल लीग' की स्थापना पुना में कर दी। 1919 के 'रोलेट एक्ट' के प्रतिक्रिया रूप में देश के सभी भागों में छह अप्रैल को हड़ताल की गई। इस हड़ताल में हिन्दुओं और मुसलमानों ने एक साथ भाग लिया। इस समय पंजाब में अनेक लोकप्रिय नेताओं को गिरफ्तार कर लिए गए। 13 अप्रैल 1919 को जलियाँवाला बाग में जनता की एक शांतिपूर्ण सभा में जनरल डायर द्वारा भयंकर एवं अत्यंत नृशंस गोली काण्ड किया गया। इस हत्याकांड में लगभग 400 लोगों की मृत्यु हुई और अनेक घायल भी हुए। 1920 सितम्बर में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन कलकत्ता में हुआ। इस अधिवेशन में अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन का रास्ता सुरक्षित जान पड़ा। "रौलट एक्ट (1912–14) और जलियाँवाला बाग (13 अप्रैल 1919) की घटनाओं के गर्भ से प्रथम असहयोग आन्दोलन की शुरुआत हुई।" (फणीश्वरनाथ रेणु की राजनीतिक चेतना– डॉ. शिवचन्द्र प्रसाद – पृष्ठ 9)। इस समय गाँधी जी का आगमन हुआ। गाँधी जी के नेतृत्व में भारत का प्रथम असहयोग अन्दोल प्रारंभ हुआ। 10 मार्च 1922 में गाँधी जी को गिरफ्तार कर लिया और छह साल की सजा दे दी। गाँधी जी के गिरफ्तारी के बाद सारे देश में सांप्रदायिक दंगे फैल गए। 12 मार्च 1930 को गाँधी जी की इतिहास प्रसिद्ध डांडी यात्रा आरम्भ हुई। 6 अप्रैल को गाँधी जी और उनके साथियों ने कानून तोडकर नमक बनाना आरंभ किया।

**बीज शब्द :–**

टेढ़े–मेढ़े रास्ते भगवतीचरण वर्मा का प्रथम ब्रूहताकार उपन्यास है। इस उपन्यास में सन 1930 के आसपास की राजनीतिक हलचलों को विस्तार से चित्रित किया है। देश की तीन प्रमुख विचारधाराओं को तीन प्रमुख पात्रों के माध्यम से किया है। दयानाथ गाँधीवाद से (कांग्रेस), उमानाथ मार्क्सवाद से (कम्युनिस्ट पार्टी), और प्रभानाथ आतंकवादी क्रान्तिकारी विचारधारा से प्रभावित है।

सामंत रामनाथ तिवारी के तीनों पुत्र दयानाथ, उमानाथ, और प्रभानाथ – सबकी विचारधारा अलग–अलग है। दयानाथ कांग्रेसी होने के कारण अपने पिता का कोपभाजन बनना पड़ता है। लेकिन रामनाथ तिवारी ने इसे इनकार किया। उन्होंने कहा– "अगर यह कांगेस का मूवमेंट केवल गवर्नमेंट के ही खिलाफ होता तो में चुप रहता, लेकिन में देखता हूँ कि हम ज़मींदारों का स्वार्थ गवर्नमेंट के साथ कुछ हम बुरी तरह बाँध गया है कि गवर्नमेंट के खिलाफ कोई भी मूवमेंट ज़मींदारों के खिलाफ पद जाता है। ऐसी हालत में जब मेरा बड़ा लड़का, रियासत का उत्तराधिकारी इस मूवमेंट में हिस्सा ले रहा है तब इनके माने ये हुए कि वह रियासत को नहीं, मुझको नष्ट करने पर तुला हुआ है। "(टेढ़े–मेढ़े रास्ते – भगवतीचरण वर्मा, पृ 0) लेकिन दयानाथ अपने पिता से कहता है – "ददुआ, बात सिद्धान्त की है, और इसलिए मेरी बात पर आप बुरा न मानिएगा। मैं कांगेस के साथ दे रहा हूँ अपनी गुलामी तोड़ने के लिए। आपका कहना यह है कि दूसरों को गुलाम बनाए रखने के लिए मैं गुलाम बना रहूँ, और मैं अपनी गुलामी तोड़ने पर यदि दुसरे मेरी गुलामी से दूर होते है तो उसमें कोई हर्ज नहीं समझता। दूसरों को नष्ट करने के लिए स्वयं नष्ट होने में आपको विश्वास है, और आप चाहते है कि मैं भी इस बात पर विश्वास करूँ।" (टेढ़े–मेढ़े रास्ते – भगवतीचरण वर्मा – पृ. 12) दयानाथ देश स्नेह के कारण कांग्रेसी आन्दोलनों में भाग लिया और उसे जेल जाना पड़ा। नमक सत्याग्रह प्रारंभ हुए। दयानाथ भी उसमें भाग लिया और गिरफ्तार भी हुए। जेल से छूटने के बाद कांग्रेस का चुनाव लड़ता और हार जाता है। जिसका कारण सिर्फ उसकी अव्यावहारिकता एवं अहम्मन्यता है।

रामनाथ तिवारी का दूसरा बेटा उमानाथ, जर्मनी से शिक्षा प्राप्त कर, समाजवादी विचारधारा का कामरेड बनकर भारत लौट आए। उसे भारत में कम्युनिस्ट पार्टी का सबसे बड़ा अधिकारी नियुक्त किए। उन्होंने वर्गहीन समाज का निर्माण करना चाहता है। "इस राष्ट्रीयता की लड़ाई में हमें, हम मजदूरों को, हम किसानों को न कोई दिलचस्पी हो सकती है और न कोई होनी चाहिए। हमें पूँजीपतियों से लड़ना है, हमें संगठित होकर श्रेणीवाद का विनाश करना है तभी हमें वास्तविक स्वतंत्रता मिलेगी।" (टेढ़े–मेढ़े रास्ते – भगवतीचरण वर्मा – पृ. 443) रामनाथ तिवारी शक्तिशाली साम्राज्य व्यवस्था का अंग है। उन्होंने अपने पुत्र को इससे दूर रखने को कहा, लेकिन उमानाथ ने इन्कार किया। विलायत जाने के लिए उमानाथ ने अपने पिता से पैसा माँगा, लेकिन नहीं मिला। उन्होंने कहा– "हम पूँजीपतियों को मिटाने के लिए तुम हमारी ही रुपया चाहते हो ? कितनी मजेदार बात है और तुम समझते हो मैं विनष्ट होने के लिए तुम्हें शक्ति प्रदान करूँगा– तुम्हें रुपया दुँगा .... उमा, जाओ यहाँ से, तुम समाज के सबसे भयानक शत्रु हो– जाओ, मेरे सामने से जाओ।" (टेढ़े–मेढ़े रास्ते – भगवतीचरण वर्मा – पृ. 495) उमानाथ अपनी पत्नी महालक्ष्मी के गहनों के सहारे विदेश भागना पड़ता है। इस प्रकार रामनाथ तिवारी अपने दूसरे बेटे को भी अपने से दूर रखा था।

रामनाथ तिवारी का सबसे छोटा या तीसरा पुत्र प्रभानाथ है। प्रभानाथ कलकत्ता जाता है, वहाँ से उनका परिचय वीणा से होता है। वीणा के द्वारा प्रभानाथ क्रान्तिकारी पार्टी का सदस्य बनता है। क्रान्तिकारी वर्ग को धन की कमी थी। डाके डालने, बैंक लुटने, हत्यायें करने से क्रान्तिकारी वर्ग धन कमाने का मार्ग स्वीकारा। लेकिन

1930 तक देश में क्रान्तिकारी आन्दोलन शिथिल होने लगा था। परिणाम स्वरूप पार्टी के सदस्यों में निराशा फैलती जा रही थी और उन्हें विश्वास होने लगा था कि शायद अब इस वर्ग से उन्हें सफलता नहीं मिलेगी। प्रभानाथ से मनमोहन (प्रभाकर) का कथन यहाँ द्रष्टव्य है– "मैं तुमसे भी कहूँगा, तुमने इस मार्ग में आकर गलती की, इस जीवन को अपनाने में तुमने जल्दबाजी की। तुममें पुरुषत्व है – मैं मानता हूँ तुम मृत्यु से खेल सकते हो .... खेल का कौतूहल भी तभी तक कायम रह सकता है, जब तक उसे तुम केवल खेल समझो। पर जब वह खेल ज़िन्दगी ही बन जाये, तब उसका सारा कौतूहल जाता रहता है। तब उसमें एक प्रकार की भयानक मनोटनी घुस जाती है। मृत्यु जीवन का अंत है यह स्पष्ट है, लेकिन उस मृत्यु से समस्त जीवन को विषाक्त बना लेना जीवन का उपहास है। ज़रा इधर विचार कर लो प्रभानाथ।" (टेढ़े–मेढ़े रास्ते – भगवतीचरण वर्मा – पृ. 294) प्रभानाथ ने मनमोहन को क्रांति के पथ से हट जाने का वचन देकर भी हट नहीं पाता। वह डकैती के केस में फँसकर गिरफ्तार हो जाता है। अंत में वीणा की सहायता से जहर खाकर वह आत्महत्या कर लेता है। प्रभानाथ के मृत्यु के साथ ही रामनाथ तिवारी के तीसरे पुत्र की समाप्ति होती है।

भगवतीचरण वर्मा ने दयानाथ, उमानाथ, और प्रभानाथ ये तीन पात्रों के माध्यम से 1930 के आसपास के संक्रान्तिकालीन राजनितिक परिस्थितियों का सहज चित्रण उपन्यास में दिया है। तीनों के रास्ते टेढ़े–मेढ़े हैं। तीनों में कार्य करने की शक्ति हैं, लेकिन तीनों पराजय अपनाते है। लेकिन बड़ा पुत्र दयानाथ एक हद तक विजयी है। क्योंकि उन्होंने अपने पिता का सलाह पाकर कांग्रेस छोड़ने का निश्चय कर लेता है। परन्तु पिता द्वारा सचेत किये जाने पर अपने मार्ग को पुनः अपना लेता है। एक हद तक गाँधीवाद का समर्थन भी भगवतीचरण वर्मा ने इस उपन्यास के माध्यम से किया है।

भगवतीचरण वर्मा अपने उपन्यासों में समय और समाज का चित्रण किया है। दोनों विश्व युद्ध की विभीषिकाओं को अनुभव करने के कारण राजनीति की झलक देखा जा सकता है। तत्कालीन समाज में प्रचलित विविध विचारधाराओं को उन्होंने आत्मसात किया है, और उसका चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। स्वयं एक राजनीतिज्ञ होने के कारण राजनीति के अच्छे और बुरे तलों को जानने वाले व्यक्ति है भगवतीचरण वर्मा। उनके राजनीतिक उपन्यासों में गाँधीवाद को प्रमुखता दी है।

भगवतीचरण वर्मा के लेखन का समय वस्तुतः प्रथम विश्व महायुद्ध से आरंभ होता है तथा द्वितीय विश्व महायुद्ध तक चलता है। उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'भूले–बिसरे चित्र' की पृष्ठभूमि 1885 से 1930 तक का समय है। 'टेढ़े–मेढ़े रस्ते' उपन्यास का समय 1930–31 है। 'सीधी–सच्ची बातें' उपन्यास 1939 से 1948 तक की कहानी है।

आज हमारी राजनैतिक व्यवस्था भ्रष्टाचार के कारण अनैतिक और खोखली बन गई है। गाँधी जी के समय लक्ष्यों की श्रेष्ठता होती है, लेकिन अब लक्ष्यों में कमियाँ है। सभी क्षेत्र में भ्रष्टाचार बढ़ा है। आज की राजनीति में दूरदर्शी और दूरगामी नीतियों का आभाव है, तत्कालीन लाभ की दृष्टि से उसमें आसानी से परिवर्तन किये जा सकते है। धर्म के प्रति लोगों की अश्रद्धा बढ़ रही है, अनैतिकता बढ़ रही है, अपराध बढ़ रहे है,

अव्यवस्था और अराजकता सारी दुनिया में फैल रही है। राजनीति बदल रही है।

**सहायक ग्रन्थ सूची :-**


1. टेढ़े–मेढ़े रास्ते– भगवतीचरण वर्मा–भारतीय भंडार, इलाहाबाद।
2. उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा – डॉ. ब्रजनारायण सिंह – राजकमल प्रकाशन।
3. भगवतीचरण वर्मा की उपन्यास चेतना – डॉ. इन्दु शुक्ला – हिन्दी बुक सेंटर– नई दिल्ली।
4. भारत का मुक्ति संग्राम – अयोध्या सिंह – ग्रन्थ शिल्पी–दिल्ली।
5. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास – रामगोपाल – सुलभ प्रकाशन – लखनऊ।
6. स्वतंत्रता संग्राम – विपिन चन्द्र – नेशनल बुक ट्रस्ट – नई दिल्ली।
7. हिन्दी के राजनैतिक उपन्यासों का अनुशीलन – ब्रजभूषण सिंह आदर्श – रचना प्रकाशन।
8. हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा – रामदरश मिश्र – राजकमल प्रकाशन – नई दिल्ली।
9. फणीश्वरनाथ रेणु की राजनीतिक चेतना– डॉ. शिवचन्द्र प्रसाद।



Mob: 9526864182

Email: jinuj@macollege.in

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 231-233

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# 'बा' उपन्यास में गांधी विचार

**श्रुतिमफत भाई पटेल**

शोधार्थी, श्री आर.पी. आट्र्स कॉलेज, खंभात सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, आंणद, गुजरात

हिंदी साहित्य में आधुनिककाल महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह काल आने से नई विचारधारा के साथ नए साहित्य को भी अपने साथ लाया है। आधुनिक काल से पूर्व गद्य विधा भी पद्य के रूप में थी। आधुनिक काल में पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव और अन्य भारतीय साहित्य के प्रभाव से हिंदी साहित्य में भी गद्य विधा के कई प्रकार है। मुख्य रूप से उपन्यास, कहानी, नाटक आदि है। हिंदी साहित्य में पद्य विधा पहले से ही था।

हिंदी और भारतीय में 19वीं 20वीं शताब्दी में कई बदलाव आए। भारतीय साहित्य पर कई विचारधाराओं का प्रभाव पड़ा, जिसमें पाश्चात्य और भारतीय दोनों विचारधारा का समाविष्ट होता है। 20वीं शताब्दी के महानायक मोहनदास करमचंद गांधी अर्थात् बापू, जिन्होंने समाज के साथ साहित्य को भी नई दिशा प्रदान की कई रूप में हमारे सामने आते है, लेकिन उनका हर एक रूप भारतीयों के बीच लोकप्रिय बना रहा है। गांधी जी को साहित्य से भी प्रेम था। वही प्रेम के कारण उनके साथ हमेशा ग्रंथ रहते थे। उन्होंने उन्हीं के माध्यम से हमें आदर्शवादी विचारधारा को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया। जैसे अहिंसा, प्रेम, सत्याग्रह से हमारे बड़ी से बड़ी समस्या भी दूर हो सकती है।

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद युग से गांधी विचार का प्रवेश हुआ है। गांधी जी के विचारों को व्यावहारिक पक्ष और रचनात्मक पक्ष दो बागों में बांटा गया है। उनके विचारधारा से साहित्य में पूरा युग प्रारंभ हुआ। जिनमें कई रचनाकारों ने प्रेमचंद, डॉ. वृंदावन लाल वर्मा, यशपाल, जैनेंद्र, भगवती चरण वाजपेयी, जयशंकर प्रसाद, गिरिराज किशोर, राजेंद्र भटनागर इत्यादि प्रमुख रहे हैं।

हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के उपन्यास, कहानी आदि में गांधीवाद का प्रभाव है गांधी युगीन विचारधारा में गिरिराज किशोर का महत्वपूर्ण योगदान है। गिरिराज किशोर का साहित्य उनके जीवन से जुड़ा हुआ है। गिरिराज किशोर हिंदी साहित्य में बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार है। गिरिराज मूल रूप से गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है। उनके उपन्यास नाटक, कहानी आदि में गांधी जी को कहीं न कहीं अंकित किया गया है। गिरिराज किशोर का महत्वपूर्ण उपन्यास 'पहला गिरमिटिया' जो गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका के जीवन पर आधारित है। 'बा' उपन्यास भले ही कस्तूरबा के जीवन पर है। लेकिन गांधीजी और कस्तूरबा के बीच कैसे सत्य को लेकर प्रयोग हुए उनको दर्शाया है। यह कस्तूरबा पर बृहद और महत्वपूर्ण उपन्यास है। वह उपन्यास का प्रकाशन स्थान 2016 में हुआ। साहित्य जगत में 'बा' ऊपर लिखा गया महत्वपूर्ण उपन्यास बन गया। गिरिराज किशोर ने इस उपन्यास को लिखने में बहुत मेहनत और गहन अध्ययन किया है। वह उपन्यास की भूमिका में

ही गिरिराज किशोर किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है और यहां उपन्यास की कथा किन–किन स्रोतों से मिलती है उनका वर्णन है। उपन्यास प्रारंभ से लेकर अंत तक मार्मिक है। उपन्यास के मुख्य पात्र कस्तुरबा, मेनिया, बडे भैया इत्यादि उपन्यास की कथा दो भागों में बांटी गई है :–

१. पूर्वार्ध और २. उत्तरार्ध

उपन्यास के पूर्वार्ध में लगभग 29 भागों में कथा का निरूपण है। कुछ भाग इस प्रकार है – बच्चों का खेल, मोनिया की दोस्ती, सागर तट, अकेलेपन की लड़ाई, घर बुला रहा था, जुलूस, विद्रोह और कस्तूरबा, बा का जीवन सत्य आदि उपन्यास के प्रारंभ कस्तूर के बचपन से है। जब वह 7, 8 साल की छोटी लड़की थी। बाद में उनकी सगाई मोनिया यानि महात्मा से हो गई। उनकी कम उम्र में शादी हो गई। आगे कथा बढ़ती गई। बाद में महात्मा दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के हक के लिए लड़ाई कर रहे थे वहां से बा और गांधी जी के जीवन में सत्य की खोज का महत्व दर्शाया है। वह उपन्यास में दक्षिण अफ्रीका की कथा से कैसे गांधी जी ने गांधीवाद की नींव रखी, भारत आने के बाद जितने भी आंदोलन हुए थे उसका वर्णन कथा को गांधी विचारधारा के साथ विस्तृत किया है। दूसरे भाग में भारते हुए आंदोलन और गांधी जी और बा के जेल गये थे, बा ने जहां अंतिम सांस ली थी उसका वर्णन किया है।

'बा' उपन्यास में व्यावहारिक पक्ष ज्यादा देखने को मिलता है। उपन्यास में कथा भले ही बा के जीवन पर चल रही थी लेकिन उसमें गांधी जी के विचार उभरकर सामने आते गए। गांधी जी ने वहां के गिरमिटिया की दशा को देखा तो वह भावुक हो गए और उन्होंने मन ही मन विचार कर लिया कि गिरमिटिया के लिए कुछ करेंगे, उनका समाधान करेंगे।

**'बा' उपन्यास में मुख्य रूप से गांधी विचार देखने को मिलता है :–**

१. सत्य २. अहिंसा
३. सत्याग्रह ४. परोपकार
५. सहिष्णुता ६. स्वच्छता
७. नारी शिक्षा ८. प्रेम
९. शांति १०. धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक आदि।

उपरोक्त के अलावा कहीं–कहीं पर स्वदेश, ह्रदय परिवर्तन को भी देखा जा सकता है। दक्षिण अफ्रीका की पूरी लड़ाई सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, सहिष्णुता, प्रेम के ऊपर टिकी हुई थी।

उपन्यास में वह भारत के अपने परिवार को भी संभाल रहे थे, दूसरी तरफ भारत की आजादी के लिए सभा, संस्था इत्यादि का नेतृत्व कर रहे थे। 25 में 1915 को अहमदाबाद में आश्रम की स्थापना की और उनके विचारों के अनुसार आश्रम के सिद्धांत तय किए– " सत्य, अहिंसा, जीव पर संयम और परिग्रह और चोरी का पूर्ण बहिष्कार। उपरोक्त के अतिरिक्त तीन और थे – विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, निर्भरता और सबसे महत्वपूर्ण अस्पृश्यता का विरोध। बापू ने सब संन्यासियों को नियमों का पालन करने की शपथ दिलाई थी।"[1]

भारत लौटते ही जगह–जगह घूम कर भारत की दशा को देखा वह सोच रहे थे। दक्षिण अफ्रीका में सभी का हक मिला लेकिन मेरे देश में ही यही दशा है। गांधी जी ने 'हिंदी स्वराज, स्वदेश प्रेम' जैसे नारे लगाए और सभी को आह्वान किया। उपन्यास में गांधी जी के हर कार्य के साथ बा जुड़े हुए थे। वह भी गांधी जी के विचारों

का मन रखकर सभी को जागृत कर रही थी।

उपन्यास में एक प्रसंग में गांधी जी के आदर्श भाव को दर्शाया है। 18 मार्च 1922 गांधी जी को पुलिस गिरफ्तार करने आई। गांधी जी के विचारों से भारतीय ही नहीं अंग्रेज भी प्रभावित थे। प्रसंग कुछ यह है कि– "पुलिस कप्तान ने उतरकर गांधी जी के पास जाकर नम्रता पूर्वक कहा 'आपको गिरफ्तार किया जाता है' बापू ने तैयार होकर आने के लिए 5 मिनट इंतजार करने के लिए कहा। वह बाहर जाकर खड़ा होकर प्रतीक्षा करने लगा। तब तक उनकी धोती, दो कंबल, साथ किताबें इकट्ठी हो गईं। 10–12 अंतरवासियों के साथ कस्तूरबा ने प्रधान की।"[2]

भले ही यह उपन्यास 'बा' के जीवन पर है। लेकिन उनके केंद्र में गांधी विचार ही है। बा की बचपन से लेकर अंतिम समय तक को दर्शाया गया है। कस्तूरबा का व्यक्तित्व को उजागर किया। नारी के लिए एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत है। एक बार कस्तूरबा से पूछा गया कि सत्य के साथ मेरे प्रयोग में आप कहां हैं?

कस्तूरबा ने हंसकर कहाँ "मैंने यही तो नहीं, पढ़ ही नहीं सकती थी। मैं यह जानती हूं कि उन्होंने अनपढ़ होने का दायित्व दोनों के बीच बनता है। मैं सजाकर रखी गई एक मूर्ति की तरह उसमें मौजूद हूँ। बापू ने उसमें मेरी सुंदरता का बयान भी किया और उपयोग का भी बापू ने जो सत्य के साथ प्रयोग किया, वह बापू के सत्य को नापने का मापन था या मध्यम?"[3]

गांधी विचार पर लिखा गया यह उत्तम उपन्यास है। जिसमें कई समस्या और गांधी दर्शन के माध्यम से उसे समस्या को दूर करने का प्रयास मिलता है। सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह गांधी जी का जीवन दर्शन विचार चिंतन आदि सभी है। यह उपन्यास में बा और बापू अपना दायित्व निभाते हैं कि आजादी के लिए उनको जितने भी कष्ट को सहन करना पड़े कई बार दोनों जेल भी गए हैं।

हिंदी साहित्य में उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है। गिरिराज किशोर को कथा साहित्य में सामाजिक, गांधीवादी दर्शन ज्यादा देखने को मिलता है। 'बा' उपन्यास में गांधी जी के आध्यात्मिक विचार को भी दर्शाया है। इस उपन्यास में बा और बापू एक दूसरे के पूरक है। बापू ने जो भी कहा है उसका अमल बने पूरी श्रद्धा के साथ किया था। बापू के विचारों में बा का महत्वपूर्ण योगदान है। सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से उन्होंने नई विचारधारा को प्रकट किया है। 'बा' उपन्यास में स्पष्ट रूप में से गांधी विचार देखने को मिलता हैं। उपन्यास में शिक्षा को ज्यादा महत्व दिया गया है गांधी जी के लिखा है कि, "साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है न प्रारंभ। यह केवल एक साधन है, जिसके द्वारा पुरुष और नारी को शिक्षित किया जाता सकता है।"[4]

**सन्दर्भ ग्रन्थ :-**


1. 'बा' गिरिराज किशोर, पृ. 191
2. 'बा'– गिरिराज किशोर, पृ. 213
3. 'बा' गिरिराज किशोर, मुख्य पृष्ठ।
4. स्वातंत्र्योत्तर प्रमुख उपन्यासों में गांधी का प्रभाव–डॉ. अस्मिता राजपूत, पृ. 17
5. हिन्दी–गुजराती उपन्यासों में गांधीवाद – डॉ. नवीन कलार्थी।



ईमेल: shrtipatel8589@gamli.com, चलभाष : 91 7990132100

पता :– मंगल पार्क सोसायटी के सामने, नाना कलोदरा–388630, खंभात आंणद, गुजरात।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 234-237

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गाँधीवाद की प्रासंगिकता

**अनीता दानू**

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा (उत्तराखंड), पिन 263601

महात्मा गांधी वास्तव में युग निर्माता महापुरुष थे इन्होंने अपने युग को एक नई चेतना प्रदान की, एक नया स्वर दिया और जीवन दर्शन को एक नई दिशा दी। संसार के सर्वाधिक शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य को भारत से हटाने के लिए उन्होंने अहिंसा और सत्याग्रह को अस्त्र के रूप में प्रयोग किया। भारत के स्वतंत्रता संघर्ष का उन्होंने दीर्घ काल तक नेतृत्व किया और अन्त में देश को स्वतंत्रता दिलाई। गांधीजी सृजनात्मक व्यक्ति थे और वह अपने समय की चुनौतियों का सामना करने के साथ ही वर्तमान और भावी पीढी के लिए उदाहरण पेश करने वाले व्यक्ति थे। महान् वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्सटीन ने ठीक ही कहा है ''कि आने वाली पीढियां शायद ही इस बात पर भरोसा करेंगी कि इस तरह का कोई इंसान कभी इस धरती पर चला था। गांधी ने इतिहास की दिशा बदल दी और नया इतिहास बनाया।'' वह सिद्धां तों और दृढ आस्थाओं वाले व्यक्ति थे तथा उन्होंने हमेशा वही उपदेश दिया जिसका वह खुद पालन करते थे। वे दुनियां पर अपनी अमिट छाप इसलिए छोड़ गए क्योंकि उन्होंने सत्य बोला और जनसमुदाय खासकर सामाजिक रूप से वंचितों और शोषितों की जुबान को समझा, इसके पश्चात भी गांधी न केवल भारत बल्कि समूची दुनिया में विद्वानों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, मिडिया, नीति निर्माताओं और स्वप्न दृष्टाओं का ध्यान लगातार आकृष्ट करते रहे। गांधी ने नैतिक मूल्यों की श्रेष्ठता संबंधी अपने विचारों को पुनर्स्थापित किया और स्वराज मे लिखा था, उनके लिए हालात अब भी अलग नहीं हैं। हिन्द स्वराज के जरिए गांधी भारत के लोगों के आत्म–सम्मान और नैतिक उद्भव को स्थापित करना चाहते थे। इस पुस्तक के जरिए गांधी एक देश के रूप में भारत तथा इसकी राज व्यवथा के साथ हरेक भारतीय को भी बदलना चाहते थे। हिन्द स्वराज भारत तथा भारतीयों के मूल्यांकन के लिए एक स्रोत ग्रंथ है।

गांधी ने 22 अक्टूबर 1925 में यंग इंडिया में अपने लेख में इन तथ्यों का उल्लेख किया है :–

1. सिद्धान्तों के बगैर राजनीति।
2. कार्य के बगैर धन।
3. अंतःकरण के बगैर आनन्द।
4. चरित्र के बगैर ज्ञान।
5. नैतिकता के बगैर व्यवसाय।
6. मानवता के बगैर विज्ञान, और
7. बलिदान के बगैर आराधना।

गांधी की स्वतंत्रता की इच्छा का आधार भी यही था। मैं भारत का उत्थान इसलिए चाहता हूं कि सारी दुनिया उससे लाभ उठा सके। मैं नही चाहता कि भारत का उत्थान दूसरे देशों की नींव पर हो। गांधी के दर्शन के आधार भी इसलिए दृढ हैं क्योंकि वहां तनिक भी संकीर्णता नहीं दिखाई देती। विश्वनाथ वर्मा के शब्दों में ''गांधी विश्वबन्धुत्व तथा अन्तर्राष्ट्रीयता के मसीहा थे। वह स्थानीय, वर्गीय, जातीय, प्रान्तीय तथा देश भक्ति से ऊपर थे। उनकी सत्य और अहिंसा की शिक्षा किसी समूह अथवा वर्ग के लिए नहीं थी।''[1] उनकी राष्ट्रीयता संबंधी विचारों में विश्व प्रेम, विश्वबंधुत्व और अन्तर्राष्ट्रीयता के तत्व समाहित हुए हैं। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीयता के विचार का पोषण तब तक निरर्थक और अपूर्ण है जब तक सच्चा प्रेम उसमे निहित नहीं है। एक मानवप्रेमी का सच्चा राष्ट्रप्रेम उसे सौहार्द प्रदान करता है, इससे अनुप्रेरित होकर वह सबकी सेवा का संकल्प लेता है। गांधी की धारणा थी मेरे देश प्रेम और मानव प्रेम में कोई भेद नहीं है, दोनों एक ही हैं। यही राष्ट्रीयता की भावना सच्ची अन्तर्राष्ट्रीय मनोवृति का विकास कर सकती है। वर्तमान में दुनिया मानवीय इतिहास के संकटपूर्ण दौर से गुजर रही है और उसे एक विकल्प की तलाश है। उदारीकरण, निजीकरण और भूमण्डलीकरण न केवल लोगों और देश की अर्थव्यवस्था का रूप बदल रही है बल्कि लोगों की जीवनशैली, दृष्टिकोण, विचारधारा, संस्कृति और संवेदना को भी बदल रही है। गांधीवादी नैतिकता इन चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है।

आज के दौर की सबसे पहली जरूरत मानवीय पीड़ा को समाप्त करना है। मानवीय व्यवहार की जटिलता की वजह से वर्तमान विश्व में गांधी का दर्शन बेहद प्रासंगिक हो जाता है। आज मूलभूत सवाल यह है कि इतने सारे कानूनों के बावजूद भारत में चुनाव प्रणाली और समूची प्रक्रिया जनमत की ईमानदार तस्वीर सही तरीके से पेश नहीं कर पा रही है अर्थात् चुनावी तंत्र नैतिकता से कोसों दूर है।

हिन्दी साहित्य भी समाज में हो रहे बदलाव और उस पर गांधी के प्रभाव से अछूता नहीं रहा। द्विवेदी युग के उतरार्ध में जब गांधी भारत की आवाज बन चुके थे। उसका स्पष्ट प्रभाव साहित्य के समस्त प्रारूपों पर दृष्टिगोचर होने लगा, जो वर्तमान तक कायम है। कवियों ने उन्हें 'दिव्यात्मा 'और युगावतार तक कहा है। उनके व्यक्तित्व पर असंख्य कविताएं तो लिखी ही गई, कई महाकाव्य तक लिखे गए। भवानी प्रसाद मिश्र ने 'गांधी पंचशती 'और सोहन लाल द्विवेदी ने 'गांधी शतदल' लिखा। इनके 'कुणाल' नामक खण्डकाव्य पर गांधीवादी अहिंसावाद का पूर्ण प्रभाव परिलक्षित है। कवि ने अहिंसात्मक युद्ध के लिए जनता को प्रेरित करके सत्याग्रह का गांधीवादी रूप सम्मुख रखा :–

''न हाथ एक शस्त्र हो, न साथ एक अस्त्र हो,
न अन्न वीर वस्त्र हो, हटो नहीं हटो हटो नहीं।''

सियाराम शरण गुप्त ने 'बापू' लिखा जिसमें उन्हें 'कालातीत' 'आत्मलोक', कालजयी आदि कहकर सम्बोधित किया। सुमित्रा नंदन ने अपने 'लोकायतन' इष्टदेव के रूप में देखा और लिखा कि 'देखा न चरित्र धरा ने तुम सा समग्र संयोजित'। पंत की 'ग्राम्या' 'खादी के फूल' आदि रचनाओं में गांधीवाद की प्रतिध्वनि गुंजायमान है। 'एक स्वर' नामक कविता में उन्होंने गांधीवाद की पूर्ण व्याख्या ही प्रस्तुत कर दी– गांधीवाद जगत में आया ले मानवता का नवमान। सत्य अहिंसा से मनुजोचित नव संस्कृति करने निर्माण।। गांधीवाद हमें जीवन भर देता अर्न्तगत विश्वास। मानव की निस्सीम शक्ति का मिलता उससे चिर आभास।।

सोहन लाल द्विवेदी ने लिखा,– 'तुम बोल उठे, युग बोल उठा। तुम मौन बने युग मौन बना।' मैथिलीशरण

गुप्त की यशोधरा और साकेत में गांधीवादी विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। सियारामशरण गुप्त माखन लाल चतुर्वेदी, राम नरेश त्रिपाठी, प्रसाद, निराला, पंत, जैनेन्द्र कुमार, प्रेमचंद का पूर्वाध। उदाहरण स्वरूप प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों में सेवासदन से लेकर गोदान और पंचपरमेश्वर व ईदगाह तक की यात्रा में गांधी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित हैं। वहीं भवानीप्रसाद मिश्र को तो गांधी का वैचारिक पुत्र माना जाता है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में हिन्दी साहित्य में दलित एवं स्त्री विमर्श कई स्तरों पर गांधी के विचारों से सहमत दिखते हैं। जनवादी कवि नागार्जुन भी गांधी की विचारधारा से प्रभावित थे। उन्होंने अपनी कविता 'पांच पूत भारत माता के' में यर्थाथ चित्रण किया है–

''पांच पूत भारत माता के, दुश्मन था खूंखार,
गोली खाकर एक मर गया, बाकी रह गए चार।
चार पूत भारतमाता के, चतुर प्रवीन,
देश निकाला मिला एक को, बाकी रह गए तीन।
तीन पुत्र भारत माता के, लड़ने लग गए वो,
अलग हो गया इधर एक, अब बाकी रह गए दो।
दो बेटे भारत माता के, छोड पुरानी टेक,
चिपक गया एक गद्दी से, बाकी रह गया एक।
एक पुत्र भारत माता का, कंधे पर है झंडा,
पुलिस पकड़कर जेल ले गई, बाकी रह गया अंडा।''[1]

समकालीन हिन्दी साहित्य में भी गांधीवाद कई रचनाओं में परिलक्षित हुआ है। बुद्धिजीवी वर्ग आज भी गांधी के विचारों के ही सबसे निकट दिखाई देते हैं। यद्यपि उनके साहित्य में अंबेडकर दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गांधी उतने ही प्रभावशाली हैं इसका ताजा उदाहरण जी–20 सम्मेलन में तब देखने को मिला जब अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्राध्यक्षों ने गांधी की मूर्ति के पास जाकर श्रद्धाजंलि अर्पित की। वास्तव में यह श्रद्धाजंलि गांधीवाद की प्रासंगिता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

महान् आलोचक हजारी प्रसाद द्विवेदी का यह कथन 'वह जिधर मुड़ा जीवन लहरा उठा, वह जिधर झुका, प्रेम बरस पड़ा। जमाना ढरक पड़ा। वह शक्ति का भंडार था, क्योंकि वह सच्चे अर्थ में भक्त था।'[2] डॉ. नगेन्द्र ने अपनी पुस्तक 'साकेत : एक अध्ययन' में ''गांधी–युग का प्रभाव उर्मिला के विरह वर्णन पर भी पड़ा है उर्मिला अन्य प्रोशित पतिकाओं से भी सहानुभूति रखती है। यह सहानुभूति अर्थात् अपने दुख के साथ–साथ दूसरों के दुखों का भी ध्यान रखना गांधीवादी विचारों का प्रभाव है। इसी प्रकार कैकेई के चरित्र का जो उज्ज्वलीकरण किया गया है, उस पर गांधी जी के 'पाप से घृणा करो किन्तु पापी से प्रेम' सिद्धान्त वाक्य का प्रभाव दिखाई पड़ता है।''[3] समकालीन आलोचक डॉ0 मैनेजर पाण्डे के अनुसार ''गांधी जी लेखकों को लोक जीवन से जुडने, समाज के दबे–कुचले लोगों के बारे में सोचने, उपनिवेशवाद की दिमागी गुलामी से मुक्त होने, अपनी परम्परा की शक्ति को पहचानने, भारतीय समाज के रूढ़िवाद को जानने और जीवन के सभी प्रसंगों में साहसी आलोचनात्मक चेतना विकसित करने का जो आह्वान किया था, उसका व्यापक प्रभाव हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य पर है।''[4]

आज भी गांधीवाद की प्रासंगिकता यथावत है हकीकत तो यह है कि राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक मुद्दों से संबंधित गांधी के विचार और नजरिया उनके जीवन काल की तुलना में अब अधिक प्रासंगिक है। नीति–निर्माताओं, राजनीतिज्ञों, बुद्धिजीवियों और वैज्ञानिकों को अपनी सोच और कार्यों में निश्चित रूप से गांधी के विचारों पर ध्यान रखना चाहिये।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि गांधी के कहे हुए शब्द, उनका लेखन और उनके कार्य सदियों तक ध्वनित होते रहेंगे। जिन्दगी के लिए जो महत्व सांस का है वही मानव सभ्यता के लिए गांधी का है। जब तक दुनिया में आपसी संघर्ष, शत्रुता, जातीय वैमनस्य, धार्मिक अशांति, आंतरिक टकरावट और सैनिक कब्जे का भय बना रहेगा, लोग महात्मा गांधी की तरफ रूख करते रहेंगे। उनकी उपयोगिता उस समय तक समाप्त नहीं होगी जब तक संघर्षबन्द नहीं हो जाते, भेदभाव समाप्त नहीं हो जाता है, महिलाएं सशक्त नहीं हो जाती है और गरीब सम्मानपूर्वक जीवन नहीं व्यतीत करने लगते है।

**सहायक संदर्भ ग्रन्थ :–**


1. डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, छठा संस्करण, पृष्ठ 143
2. डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना का आलोचनात्मक इतिहास, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 176
3. वही, पृष्ठ 188
4. वही, पृष्ठ 176



anitadanu3217@gmail.com
8006721554

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 238-242

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# महात्मा गांधी का परिचय व गांधीवादी की प्रासंगिकता

**डॉ. पूजा चौहान**

प्रवक्ता, श्री साईं बाबा इंटर कॉलेज, अमरोहा।

**महात्मा गांधी का जीवन परिचय :-**

इस महापुरुष संसार में जन्मी समस्त मानव जाति के लिए उदाहरण हैं। ऐसे ही एक महात्मा थे मोहनदास करमचंद गांधी, जो 20वीं सदी में जन्में महापुरुषों में अग्रणी स्थान रखते हैं। उन्होंने विभिन्न आंदोलनों के माध्यम से भारत को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। न ही हिंदी साहित्य गांधी जैसी विभूतियों से सार्वभौमिक रूप से प्रभावित था। प्रस्तावित शोध पत्र में गांधी जी के दृष्टिकोण का प्रभाव, उनके सिद्धांतों का हिंदी कविता पर प्रभाव और उन्हें विभिन्न रूपों में कैसे व्यक्त किया गया है, इस पर विचार करने का प्रयास किया गया है।

भारत के इतिहास में ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने अपने देश के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। उन्होंने अहिंसा का मार्ग अपनाया और ब्रिटिश शासकों के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रणी बने। महात्मा गांधी को 'राष्ट्रपिता' के रूप में भी जाना जाता है। मार्टिन लूथर किंग और नेलसन मंडेला भी उनकी सत्य और अहिंसा की विचारधारा से बहुत प्रभावित थे। महात्मा गांधी ने अफ्रीका में अन्याय और नस्लवाद के खिलाफ 21 वर्षों तक अहिंसक रूप से लड़ाई लड़ी जिससे न केवल अफ्रीका में बल्कि भारत में भी ब्रिटेन को बहुत नुकसान हुआ। महात्मा गांधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी है। उनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर, गुजरात में हुआ था। उनके पिता का नाम करमचंद्र गांधी था और वह ब्रिटिश शासन के दौरान काठियावाड़ की छोटी रियासत के दीवान थे। महात्मा गांधी ने 13 साल की उम्र में कस्तूरबा गांधी से शादी की। उनकी शादी के दो साल बाद गांधी के पिता की मृत्यु हो गई और उनके पहले बच्चे का जन्म उनके पिता की मृत्यु के एक साल बाद हुआ, लेकिन दुःख की बात है कि जन्म के कुछ समय बाद ही उस बच्चे की मृत्यु हो गई।

हालाँकि, ऐसी कठिन परिस्थितियों में भी, गांधी ने हार नहीं मानी और 1887 में अहमदाबाद के हाई स्कूल से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। 1888 में विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद, उन्होंने कानून की पढ़ाई के लिए लंदन जाने का फैसला किया। 1891 में इस कार्यक्रम में स्नातक होने के बाद, गांधी भारत लौट आए, लेकिन उन्हें दक्षिण अफ्रीका लौटना पड़ा। 23 साल की उम्र में, वह दक्षिण अफ्रीका पहुंचे, और एक हफ्ते के बाद वह डरबन में प्रिटोरिया गया, यात्रा करते समय उन्हें धक्के मारकर व पीटकर ट्रेन में फेंक दिया। उनके पास फर्स्ट क्लास का टिकट था, एक नस्लीय अंतर था। भारत में प्रथम श्रेणी में मना कर दिया गया है। किसी भी भारतीय या अश्वेत का प्रथम श्रेणी में यात्रा करना प्रतिबंधित था। जो अंग्रजो की अफ्रीका में ही नहीं भारत में

भी महंगा पड़ा। 1915 में, गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौट आए और गुरु गोपालकृष्ण गोखले के साथ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए। इस काल में भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था और उसे किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दे सके। गोपाल कृष्ण गोखले ने उन्हें देश के नब्ज को समझने का सुझाव दिया। देश की जड़ों को जानें और लोगों से संवाद करें। उन्होंने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन का भी नेतृत्व किया। राष्ट्रीय स्वतंत्रता में गांधी जी के योगदान को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। उन्होंने अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के साथ मिलकर ब्रिटिश सेना को भारत छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया।

**गांधीवाद है क्या?**

अब प्रश्न उठता है कि क्या यही गांधीवाद है? हिंसा के बिना सभी प्रकार के शोषण का विरोध करें, पहले दूसरों की सेवा करें, संचय करने से पहले त्याग करें, झूठ की जगह सच बोलें, अपनी बजाय देश और समाज की चिंता करें आदि। विचारधारा को आमतौर पर गांधीवाद कहा जाता है।

गांधी जी के विचार मुख्यतः प्राचीन भारतीय दर्शन से प्रेरित थे और ये विचार आज भी प्रासंगिक हैं। आधुनिक समाज में दया के आदर्शों का स्थान असत्य, अवसरवाद, छल, चालाकी, लालच और स्वार्थ जैसी संकीर्ण सोच ने ले ली है, जबकि सहिष्णुता, प्रेम, नैतिकता और भाईचारे जैसे उच्च आदर्शों का विस्तार किया जा रहा है। विश्व शक्तियाँ हथियार जमा करने की होड़ में हैं, लेकिन वे असहाय छोटे वायरस को नहीं हरा सकते। इन परिस्थितियों में विश्व शांति स्थापित करने और मानवता को उसकी जड़ों तक वापिस लाने के लिए गांधीवाद एक नये रूप में और अधिक प्रासंगिक हो गया।

**गांधीवादी विचारधारा क्या है?**

गांधीवादी विचारधारा महात्मा गांधी द्वारा अपनाई और विकसित की गई धार्मिक और सामाजिक विचारों का एक समूह है, जिसे पहली बार 1893 और 1914 के बीच दक्षिण अफ्रीका में और फिर भारत में अपनाया गया। गांधीवादी का दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक, सरल और जटिल भी है। हालाँकि इसमें कई पश्चिमी प्रभाव शामिल हैं जिनसे गांधी जी अवगत हुए थे, यह प्राचीन भारतीय संस्कृति में निहित है और सार्वभौमिक नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करता है।

**प्रमुख गांधीवादी विचारधारा :-**

आज के अनिश्चित समय में, कोविड–19 जैसी महामारी लोगों को निराश और दुःखी महसूस कराती है, जबकि आर्थिक गिरावट लोगों को भविष्य के बारे में चिंतित करती है। कभी हाथरस जैसी घटनाएं हमें मानवीय मूल्यों के बारे में सोचने पर मजबूर करती हैं तो कभी ड्रग्स जैसी समस्याएं समाज को झकझोर देती हैं। आज पूरा विश्व बाजार की प्रतिस्पर्धा में भाग ले रहा है। लालच के परिणाम युद्ध के स्तर तक पहुँच जाते हैं। ऐसे में गांधीवाद और भी प्रासंगिक हो जाता है। तो यदि आप गांधीवाद अपनाना चाहते हैं, तो क्या आपको टोपी या धोती पहननी चाहिए, या आपको ब्रह्मचर्य या ब्रह्मचर्य अपनाना चाहिए? नहीं, आपको ये सब करने की ज़रूरत नहीं है। इसके बजाय, हमें नफरत को मिटाने के लिए गांधीवाद को अपनाना चाहिए।

1. **सत्य :-**

गांधी जी सत्य में दृढ़ विश्वास रखने वाले व्यक्ति थे। उनका मानना था कि सत्य ही ईश्वर है। उनके

लिए सत्य ही सर्वोच्च सिद्धांत था। उन्होंने शब्दों और विचारों में सच्चाई जानने की कोशिश की। हालाँकि, आधुनिक समय में, राजनेता और उपदेशक अपने बुरे कार्यों से शर्मिंदा नहीं होते हैं, यहाँ तक कि वे भगवान को साक्षी मानकर करने के बावजूद गलत काम करने से पीछे नहीं हटते। वे अपने कर्मों का अनुसरण करते हैं और सत्य को भी नकार देते हैं। यदि गांधी जी के सिद्धांतों का सही ढंग से पालन किया जाए तो देश नव निर्माण के पथ पर आगे बढ़ेगा। सुमित्रा नंदन पंत जी कहते हैं–

"गांधीवाद जगत में आया से मानवता का नवमान, सत्य अहिंसा से मनु जो चिंतन व संस्कृति करने निर्माण गांधीवाद हम जीवन पर देता अंतर्गत विश्वास, मनद की निःसीम शक्ति का मिलता उससे घिर आमास व्यक्ति पूर्ण वन जगजीवन में भर सकता है नूतन प्राण विकसित मनुष्यत्व कर सकता न पशुता से जन कल्याण।'[1]

**2. अहिंसा :–**

गांधी जी के अनुसार अहिंसा का अर्थ मन, वचन या शरीर से किसी को हानि न पहुँचाना है। गांधी जी के विचार का मुख्य उद्देश्य सत्य और अहिंसा के माध्यम से विरोधियों का मन बदलना है। हिंसा स्वयं प्रेम और उदारता की पराकाष्ठा को दर्शाता है। गांधी जी ने व्यक्तिगत स्तर से लेकर वैश्विक स्तर तक अहिंसा के सिद्धांत के पालन पर जोर दिया। आज की कठिन दुनिया में अहिंसा जैसे आदर्श आवश्यक हैं। बुद्ध के सिद्धांतों का अनुसरण करते हुए गांधी जी ने भी इच्छाओं को कम करने पर जोर दिया। सुभद्रा कुमारी चौहान लिखती है–

''हम हिंसा का भाग त्यागकर विजयी दीर अशोक बने कम करेंगे नहीं कि जिससे त्सेक और परलोक बनें।"[2]

**3. सत्याग्रह :–**

सत्याग्रह का अर्थ है सभी प्रकार के अन्याय, उत्पीड़न और शोषण के विरुद्ध आत्मा की शुद्धतम शक्ति का उपयोग करना। यह व्यक्तिगत कष्ट सहकर और दूसरों को नुकसान न पहुंचाकर अपने अधिकारों को सुरक्षित करने का एक तरीका है। सत्याग्रह की उत्पत्ति उपनिषदों, बुद्ध महावीर, टॉलस्टॉय और रस्किन की शिक्षा और कई अन्य महान् दर्शनों में पाई जाती है। गांधी जी का मानना था कि निष्क्रिय प्रतिरोध सबसे कठोर हृदय को भी पिंघला सकता है। वे इसे किसी कमज़ोर आदमी का हथियार नहीं मानते थे। उनके अनुसार, निष्क्रिय प्रतिरोध को शारीरिक प्रतिरोध की तुलना में अधिक बहादुर होना चाहिए। आज विभिन्न स्थानों एवं परिस्थितियों में सत्याग्रह का प्रयोग सुसंगत एवं तर्कसंगत प्रतीत होता है। जब आप राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय सरकारी नीतियों या आदेशों से असहमत हों तो सत्याग्रह का उपयोग करना कहीं बेहतर है। आत्मविश्वास शारीरिक ताकत से बेहतर है। बुराई का विरोध करने के लिए आत्मविश्वास का उपयोग करने से मौजूदा समस्याओं का समाधान हो सकता है।

**4. सर्वोदय :–**

सर्वोदय शब्द का अर्थ है 'सार्वभौमिक उत्थान' या सभी लोगों का विकास। यह शब्द पहली बार गांधी जी ने जॉन रस्किन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था पुस्तक 'अंटू दि सलास्ट' में पढ़ा था। सर्वोदय का लक्ष्य जाति, वर्ण और शोषण मुक्त समाज का निर्माण करना है जहां सभी व्यक्तियों और समूहों को समग्र विकास के लिए संसाधनों और अवसरों का लाभ मिले। ऐसे समाज में किसी भी समुदाय के साथ नस्ल, धर्म, जाति, भाषा आदि के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा। सर्वोदय शब्द गांधी जी का एक विचार है जिसमें 'सर्वभूतहितंरताः' की भारतीय कल्पना, सुकरात की 'सत्य साधना' और रस्किन की 'अंत्योदय' की अवधारणाओं का संदर्भ है। गांधी

जी ने कहा था :मैं अपने पीछे कोई पंथ या संप्रदाय नहीं छोड़ना चाहता हूँ।" यही कारण है कि सर्वोदय आज एक समर्थ जीवन, समग्र जीवन और संपूर्ण जीवन का पर्याय बन चुका है। आधुनिक समय में संपूर्ण विश्व पर शोषण, वर्ग, वर्ग आदि का बोलबाला है। हम एक ऐसे समाज की तलाश में हैं जिसमें हमारी कोई जगह नहीं है। कहीं रोहिंग्या के नाम पर हिंसा है तो कहीं शिया, सुन्नी और आतंकवाद फैल रहा है। एक वर्ग दूसरे का शोषण करता है और पूरे समाज में अव्यवस्था फैलाता है। यदि गांधी जी का सर्वोदय का विचार साकार हो जाए तो पूरा विश्व एक परिवार बन जाएगा।

**5. स्वराज :–**

स्वराज शब्द का अर्थ स्वशासन है, लेकिन गांधी जी ने इसे जीवन के सभी क्षेत्रों को समाहित करने वाली अभिन्न क्रांति की संज्ञा दी। गांधी जी के लिए, स्वराज का मतलब व्यक्तिगत स्वराज (स्व–शासन) था, इसलिए स्वराज देशवासियों की स्वतंत्रता है, और उन्होंने समझाया कि स्वराज पूर्ण अर्थ में स्वतंत्रता नहीं है बल्कि स्व–शासन है। इसे नियंत्रण और संरचना के रूप में देखा जा सकता है।

**6. ट्रस्टीशिप :–**

ट्रस्टीशिप गांधी जी द्वारा पेश किया गया सामाजिक आर्थिक दर्शन है। एक ऐसा वातावरण है जिसमें अमीर लोग गरीब और शक्तिहीन लोगों की मदद कर सकते हैं। यह सिद्धांत गांधी के आध्यात्मिक विकास को दर्शाता है जो कि थियोसोफिकल लिटरेचर और भगवतगीता के अध्ययन से उनमें विकसित हुआ था। वर्तमान में, पूरी तरह से दुनियाभर में गरीबी और भूखमरी चारों तरफ अपना साया फैलाये खड़ी है। गांधी जी का यह विचार कि धन व उत्पादन के साधनों पर सामूहिक नियंत्रण की स्थापना हेतु न्यास जैसी व्यवस्था स्थापित की जाए, काफी मायने रखती है।

**7. स्वदेशी :–**

स्वदेशी शब्द संस्कृत मूल का है और दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है। 'स्व' का अर्थ है स्वयं और 'देश' का अर्थ है देश। इसलिए स्वदेश का अर्थ है अपना देश। स्वदेशी का तात्पर्य अपने देश से है, लेकिन कई संदर्भों में इसका अर्थ आत्मनिर्भरता के रूप में भी लिया जा सकता है। स्वदेशी राजनीतिक और आर्थिक रूप से समाज में केंद्रित हैं। यह समुदाय की परस्पर निर्भरता और आत्मनिर्भरता है। गांधी का मानना था कि इससे स्वतंत्रता (स्वराज) मिलेगी क्योंकि भारत पर ब्रिटिश नियंत्रण भारत के स्वदेशी उद्योगों के नियंत्रण पर आधारित था। स्वदेशी भारत की स्वतंत्रता की कुंजी थी और महात्मा गांधी के निर्माण कार्यक्रम में चरखे द्वारा इसका प्रतिनिधित्व किया गया था।

आज, संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन जैसे देश अपने स्वयं के आर्थिक तंत्र को मजबूत करने और अन्य देशों की आर्थिक प्रणालियों को कमजोर करने के लिए व्यापार युद्धों का उपयोग करते हैं। ऐसे में स्वदेशी की इस अवधारणा से घरेलू उद्योगों और कारीगरों हेतु एक वरदान की भांति सिद्ध होगा। शिक्षा के संदर्भ में गांधी जी ने शिक्षा और जीविका कमाने का कार्य एक साथ करने पर बल देते थे। ऐसी स्थिति में जब हमारे देश में बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है, गांधी जी के विचारों को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक नीतियां तैयार करना उपयोगी होगा। गांधी जी की राष्ट्रीय विचारधारा भी अत्यंत प्रगतिशील थी। उनके राष्ट्रवाद ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' विवरण को प्रेरित किया। उन्होंने राष्ट्रवाद पर विचार नहीं किया, जो एक राष्ट्र के हितों तक सीमित न मानते हुए उसे

विश्व कल्याण की दिशा में विस्तृत करने पर बल देते थे। आज, राष्ट्रवाद का अतिवादी स्वरूप होता देखकर गांधीवादी राष्ट्रवाद का एक चरम रूप है।

हम देख सकते हैं कि गांधी जी के विचार शाश्वत हैं। मुख्य कारण यह है कि गांधी जी ने जमीनी तौर पर अपने विचारों का परीक्षण किया और जीवन में सफलता अर्जित न सिर्फ स्वयं के लिये अपितु पूरे विश्व के लिये थी। दुनिया वर्तमान में गांधी का रास्ता देख रही है।

**निष्कर्ष :–**

स्पष्ट है गांधीवादी जैसे–जैसे गांधी जी का दृष्टिकोण फैला, कविता का सृजन हुआ जो शुद्ध, सात्विक, सुरक्षित और स्वस्थ दृष्टि से जुड़ा था। गांधी जी की विचारधारा को व्यवहार में उतारना तो बहुत कठिन कार्य है, लेकिन उसी विचारधारा को काव्य में अभिव्यक्त करना उससे भी अधिक कठिन है। छायावाद के बाद के काल के कई कवियों ने गांधी के सिद्धांतों का गुणगान करते हुए रचनाएँ कीं, जिनके महत्व को तभी सराहा जा सकता है जब बिना किसी पूर्वाग्रह के मूल्यांकन किया जाए। मानव जाति के हित के लिए उनके कार्यों के लिए पूरी मानवता उनकी ऋणी रहेगी। सोहनलाल द्विवेदी जी के शब्दों द्वारा हम भावांजलि समर्पित कर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता इस प्रकार ज्ञापित कर सकते हैं :–

'कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर युग कर्म जगा, युग धर्म तना।
युग परिवर्तक युग संस्थापक, युग संचालक, हे युगाधार!
युग निर्माता, युग मूर्ति, तुम्हे युग–युग तक युग का नमस्कार।'

**संदर्भ सूची :–**


1. https://www.timesnowhindi.com/education/article/gandhi-jayanti-2021-mahatma-gandhi-jeevan&parichay&in &hindi&mahatma&gandhi&birth&and&death&place&date&and&reason-in-hindi/365985
2. https://www.drishtiias.com/hindi/burning&issues&of&the&month/relevance&of&gandhism&in&present&day.
3. https://www.drishtiias.com/hindi/paper4/gandhian&ideologies
4. ISSN: 2456-5474 RNI No. UPBIL/2016/68367, Vol.-5 Issue-10' November-2020, Hindi Poetry and Gandhian Vision, क्षमा मिश्रा।



पता – W/o Atul Kumar, Kedarpururfmoudi, Dhampur, Bijnor, Dhampur Uttar Pradesh 246761

मोबाइल नंबर –7055590999

ई–मेल – pooja0889chauhan@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 243-247

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गाँधीवाद एवं हिन्दी साहित्य

**डॉ. सुशील बिलुँग**

एसोसिएट प्रोफेसर, सेंट जेवियर कॉलेज ऑफ मैंनेजमेंट एण्ड टेक्नोलॉजी, पटना–11

गांधीजी मर सकते हैं परंतु गांधीवाद नहीं, वह संसार में सदा–सर्वदा सार्थक और अमर रहेगा। उन्होंने अपने जो मौलिक विचारों को प्रस्तुत किया है उन्हीं सिद्धांतों को हम 'गांधीवाद' से अभिहित करते हैं। धर्म, शिक्षा, राजनीति, अर्थनीति, सार्वजनिक सदाचरण, आदि विषयों में अपने मौलिक विचारों के लिए प्रसिद्ध महात्मा गांधी आज और भविष्य में भी दुनिया की आकाश–गंगा में एक सितारा सदृश्य चमकते रहेंगे। अवश्य वह आधुनिक भारतीय इतिहास के संत कबीर थे। उन्होंने धर्म की अपेक्षा धार्मिक भावना को कहीं ज्यादा महत्व दिया। उनकी कार्यप्रणाली मूलतः सत्य और अहिंसा पर आधारित थी। उनकी अपराजेय चिंतनधारा अवश्य राष्ट्र का पुनरूत्थान और सांस्कृतिक उत्थान का उद्घोष कहा जा सकता है। यह हिमालय–सी उन्नत और गंगा–सी पावन विचारधारा है जो अपराजेय चिंतन धारा है।

बापू की सम्पूर्ण विचारधारा का आधार तर्क नहीं लेकिन स्वानुभूति है, इसलिए इस विचारधारा को पालन करने वाला व्यक्ति आत्म–शक्ति को लेकर चलता है। वह किसी के सामने हिलेगा नहीं और डरेगा भी नहीं। उनकी बुनियादी विचारधारा, आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और राष्ट्रभाषा के संबंध में है।

संसार में जो हलचलें, क्राँतियाँ और मौलिक परिवर्तन होते हैं उनका मूल स्रोत विचारों में ही पाये जाते हैं। ठीक ऐसा ही परिवर्तन पराधीन भारत में 1919 से गाँधी जी के व्यक्तित्व एवं उनकी विचारधारा से आरंभ हुआ था। उनकी महत्ता का निरूपण करते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा – ''एक बड़ी भारी मूर्ति की तरह बापू हिन्दुस्तान की आधी शती के इतिहास में पांव फैलाकर खड़े हैं। वह बड़ी भारी मूर्ति शरीर की नहीं बल्कि मन और आत्मा की है।''[1] स्पष्ट है कि बापू के प्रभाव का परिणाम बीसवीं शती के पूर्वार्ध में घटित होने वाले परिवर्तनों के रूप में देखे जा सकते हैं।

**गाँधीवादी दर्शन का सार :–**

गाँधी जी की आध्यात्मिक विचारधारा का मूल मंत्र सत्य है। उन्होंने सत्य को ही अपना जीवनाधार बनाया और सत्य को ही अपने मौलिक विचारों का मूल मंत्र भी। उन्होंने कहा, ''निर्मल अंतःकरण को जिस समय जो प्रतीत हो, वही सत्य है। उस पर दृढ़ रहने से शुद्ध सत्य की प्राप्ति हो जाती है।''[2]

वह सत्य को ही परमेश्वर मानते थे (सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर ही सत्य है)। अतएव सत्य के अभाव में परमेश्वर का कोई अस्तित्व नहीं। उनके अनुसार, परमात्मा की खोज ही सत्य की खोज करनी है। अर्थात्

उनके लिए 'ब्रह्म सत्य और जगत् मिथ्या' है। दूसरे शब्दों में, सत्य अखण्ड, सर्वव्यापक, अवर्णनीय एवं अनंत है। उसके निकट असत् टिकता नहीं है। उन्होंने सत्य को एक विशाल वृक्ष से तुलना करते हुए कहा है, ''सत्य एक विशाल वृक्ष है, ज्यों–ज्यों उसकी सेवा की जाती है त्यों–त्यों उसमें अनेक फल उगते हुए दिखाई देते हैं। उनका अन्त ही नहीं होता।''[3]

सत्य के साधक को चाहिए कि वह प्रेममय जीवन व्यतीत करे। उसके हृदय में प्रेम का अथाह समुद्र हो जिसे वह अपने विचारों, आचरणों, शब्दों एवं कर्मों से प्रदर्शित करे। निर्दोष एवं मासूम व्यक्ति के लिए यह जितना सहज प्रतीत होगा उतना ही एक क्रूर व निर्दयी व्यक्ति के लिए कठिन महसूस होगा। गाँधी जी कहते हैं कि जिस व्यक्ति का अहं या अहंकार क्षय हो चुका हो वह प्रत्यक्ष रूप से सत्य की मूर्ति हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि जो व्यक्ति एकान्त में सच्चे मन से सत्य समझता है, उस पर दृढ़ रहता, उसे ही प्रकट करता एवं तदनुसार जीवन में आचरण करता है तो धीरे–धीरे व्यापक सत्य की प्रतिष्ठा स्वतः उसे प्राप्त हो जाती है। पहले उसमें दया, क्षमा, करूणा आती है फिर प्रेम और अहिंसा की मात्रा में वृद्धि के साथ–साथ सत्य का प्रकाश उसमें विकीर्ण होता है। अंततः अहंकार क्षय हो जाता है और साधक सत्य का साक्षात्कार कर लेता है। इस सत्य के साक्षात्कार में ही आत्मसाक्षात्कार अथवा मोक्ष की प्राप्ति मानते हैं।

सत्य और अहिंसा गाँधी–सूत्र के आधार स्तंभ हैं। उन्होंने कहा है 'सत्यमय होने के लिए अहिंसा ही एक मात्र मार्ग है। अथवा सत्य रूपी सूर्य का सम्पूर्ण दर्शन सम्पूर्ण अहिंसा के बिना अधूरा है। अहिंसा अधिकतम प्रेम का दूसरा नाम है। यह एक प्रवृत्ति है जो उदारता, प्रेम तथा सर्वोदय की भावना से पोषित होती है। उन्होंने कहा, ''मेरे लिए सत्य से परे कोई धर्म नहीं और अहिंसा से बढ़कर कोई परम कर्तव्य नहीं है। ''यह सभी प्राणियों के प्रति अधिकतम प्रेम की भावना का जीवन दर्शन है। अहिंसा किसी के जीवन को नष्ट न करने को ही नहीं कहते लेकिन दूसरे के भावों को ठेस न पहुँचाने या किसी प्रकार के शारीरिक या मानसिक कष्ट न पहुँचाने को भी कहते हैं।"[4]

'यंग इंडिया' 4 जून 1925 में गाँधी जी ने एक बार लिखा था, ''जब मैं अहिंसा की खोज करता हूँ तो सत्य कहता है कि तुम मेरे जरिये ढूँढ़ो, और जब सत्य को ढूँढ़ता हूँ तो अहिंसा करती है कि तुम मेरे द्वारा उसे ढूँढ़ो।''[5] अवश्य सत्य एवं अहिंसा में अटूट संबंध है, अर्थात् न अहिंसा सत्य के बिना और न सत्य अहिंसा के बिना रह सकता है। अहिंसा सत्य की ज्योति व प्राण है और है एक आचरण का उत्तम व सुंदर मार्ग। अहिंसा ही सत्येश्वर के दर्शन करने की विद्या और मार्ग है। इसलिए सत्य और अहिंसा कोई कल्पित पुष्प नहीं, उसे तो मानव को अपने शब्दों, व्यापार एवं कर्मों में पुष्पित करना है। यह कार्य व्यक्ति विशेष तक ही सीमित नहीं लेकिन समूह, जातियों एवं राष्ट्रों को भी अमल करना चाहिए। और यदि ऐसा हुआ तो गाँधी जी की सामाजिक विचारधारा 'सवोदय' की आत्मा, (सत्य व अहिंसा) चारों तरफ छायी हुई प्रतीत होगी। वास्तव में गाँधी जी के समस्त जीवन व विचार–दर्शन का मेरूदण्ड उनकी अहिंसा व सत्य है।

अतएव यह विचारधारा अपनी व्यवहार–प्रणाली या जीवन–शैली में एक युद्ध है, साधना है। नैतिक बल की उपलब्धियों के लिए व्रत, प्रतिज्ञा आदि अनिवार्य है। नैतिक आचरण करने वाला 'सत्याग्रही' होता है और उसकी साधना सर्वोदयी होती है।

गाँधी जी की सामाजिक विचारधाराओं में साम्प्रदायिक एकता, अस्पृश्यता निवारण, नारी–उत्थान, आदि

प्रमुख हैं। दूसरे धर्म के प्रति उतना ही आदर रखें जितना अपने ही धर्म के प्रति। वह जानते थे कि साम्प्रदायिक एकता में ही देश का कल्याण है। अस्पृश्यता या छुआछूत को गाँधी जी हिन्दू धर्म की सड़ाँध समझते थे और कहते थे कि प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य है कि इसका निवारण करे और हरिजनों को अपनाये ताकि वे गरिमापूर्ण जीवन यापन कर सकें।

राष्ट्रीय क्रांति–शास्त्र शब्द 'सत्याग्रह' का अर्थ है 'सत्य को मानकर किसी वस्तु के लिए आग्रह करना तथा सत्य एवं अहिंसा से अपनी बात पर बल डालना।' गाँधी जी के अनुसार, सत्यग्रह 'आत्म–शक्ति' अथवा प्रेम भक्ति का पर्यायवाची है। सत्याग्रह का उद्देश्य प्रेम और धैर्य पूर्वक कष्ट सहन कर विरोधी का हृदय परिवर्तन करना और उसकी भूल सुधारना। वही पहले महात्मा हैं जिन्होंने धर्ममय राजनीति की नींव डाली।

**गाँधीवाद का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव :–**

जब जनता में चेतना एवं उनके मनःस्थिति में परिवर्तन आते हैं तो वह साहित्य में प्रतिबिंबित होते हैं क्योंकि साहित्य जनता की चित्तवृतियों का प्रतिबिंब है। कहना न होगा कि साहित्यकारों पर ऐसी विचारधाराओं या परिवर्तनों का प्रभाव न हुआ हो। गाँधी जी की कार्य–पद्धति सत्य और अहिंसा पर अवलम्बित थी। कवि मैथिलीशरण गुप्त ने इस कार्य–पद्धति का काव्यमय रूप इस प्रकार दिया है–

'आग्रह करके सदा सत्य का जहाँ–कहीं हो शोध करो,
उसे कभी न प्रकट करने में अनुभव जो भी बोध करो।
उत्पीड़न अन्याय कहीं हो दृढ़ता सहित विरोध करो,
किंतु विरोधी पर भी अपने करूणा करो, न क्रोध करो।'

गाँधी जी के व्यक्तित्व एवं उनकी विचारधारा का प्रभाव हिन्दी साहित्य में 1919 से प्रारंभ हुआ। इस काल खंड को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है –

क. गाँधी युग 1919–1948
ख. गाँधी उत्तर युग 1949 से अब तक।

दोनों ही युगों में गाँधी जी के व्यक्तित्व एवं विचारधारा का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभाव हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं पर पड़ा।

**काव्य पर प्रभाव :–**

साहित्य की विभिन्न विधाओं में गाँधी विचारधारा का सर्वाधिक प्रभाव काव्य पर दृष्टिगोचर होता है। वास्तव में गाँधी जी का आगमन हिन्दी साहित्य के इतिहास के छायावाद युग से हुआ। अधिकांश प्रमुख छायावादी कवि गाँधी जी के व्यक्तित्व और उनकी विचारधारा से प्रभावित थे। प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कवियों में मैथिलीशरण गुप्त सियाराम शरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, सुमित्रानंदन पंत, बालकृष्ण शर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, शिवमंगल सिंह 'सुमन', हरिवंशराय बच्चन, नरेन्द्र शर्मा, भवानी प्रसाद मिश्र आदि उल्लेखनीय हैं, जबकि जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एवं महादेवी वर्मा जैसे कवियों पर प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं दिखता। साकेत, प्रियप्रवास, कुरूक्षेत्र, जयभारत आदि महाकाव्य भी प्रत्यक्ष व परोक्ष तौर से गाँधी विचारधारा से प्रभावित हैं। कामायनी में भी कहीं–कहीं यह प्रभाव दिखाई देता है।

गाँधी विचारधारा सत्य, अहिंसा आदि मूल तत्वों का निरूपण प्रमुख कवियों के काव्यों से –

**क.** **सत्य** – वही सत्य कर सकता मानव जीवन का परिचालन।
भूतवाद हो जिसका रजतन प्राणिवाद जिसका मन।। – सुमित्रानंदन पंत।

**ख.** **अहिंसा**– एकता सब धर्मों का मर्म, अहिंसा ही जीवन का मर्म
सत्य की सेवा हो सत्कर्म, विश्व में हो मंगल कन्याण।। – सोहनलाल द्विवेदी।
क्राँतियाँ जग में हुई अब तक कई
पर अहिंसा–क्राँति की संज्ञा नई, शैली नई।। – नरेद्र शर्मा।

**ग.** **स्वदेश प्रेम** – चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाउँ
.....
मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक। – माखनलाल चतुर्वेदी।

**कथा साहित्य पर प्रभाव :–**

हिन्दी उपन्यासों एवं कहानियों में भी गाँधी–विचारधारा का सुन्दर निरूपण हुआ है। कविता में जिन सत्यों को सूत्ररूप में प्रस्तुत किया गया है, उपन्यास कहानी में उन्हीं को जीवन की विभिन्न परिस्थितियों एवं मानव के क्रियाकलापों के संदर्भ में निरूपित किया गया है। गाँधी विचारधारा से प्रभावित कथा–साहित्य हिन्दी साहित्य की परम उपलब्धि है। साहित्यकारों ने पहली बार अनुभव किया कि साहित्य मनोरंजन के लिए या 'कला कला के लिए' ही नहीं है वरन् 'जीवन के लिए' भी है और उसे वर्ग तक सीमित न रखकर जन–जन तक पहुँचाना है। अतः समाजोपयोगी साहित्य की अनेकों रचनाएँ रची गईं इनमें से प्रेमचन्द की सर्वोपरि हैं।

प्रेमचंद ने अपने एक दर्जन उपन्यासों एवं कई कहानियों में गाँधीजी के जीवन–दर्शन और गाँधी–युग की सभी समस्याओं का अत्यंत प्रभावपूर्ण ढंग से आकलन किया है। यह अत्युक्ति भी न होगी कि प्रेमचंद का साहित्य गाँधीयुग का दर्पण है। 'प्रतिज्ञा' से लेकर 'गोदान' तक उन्होंने किसान, मजदूर, वेश्या, नारी समस्या, दहेज–प्रथा, विधवा–विवाह, अंतर्जातीय विवाह, ग्रामोद्धार, सत्याग्रह, साम्प्रदायिक वैमनस्य, सत्य एवं अहिंसा, आदि को अपने उपन्यासों में सुंदर ढंग से समेटा है। उनकी कहानियाँ में देश सेवा, परोपकार, त्याग, बलिदान, निर्भीकता, स्वदेशी आदि भावनाएँ समाहित हैं।

प्रेमचंद के अलावा प्रमुख रूप से सियाराम शरण गुप्त, सुदर्शन, प्रताप नारायण मिश्र, जैनेन्द्र, भगवती प्रसाद वाजपेयी, विश्वम्भर शर्मा 'कौशिक', वृन्दावन लाल वर्मा, चतुरसेन शास्त्री, इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, रांघेय राघव, आदि उपन्यासकार एवं कहानीकार भी गाँधी जी से प्रभावित थे।

**गाँधी–विचारधारा को व्यक्त करने वाले उपन्यास एवं कहानियाँ :–**

1. प्रेमचंद के 'सेवासदन, रंगभूमि, गोदान, आदि।
2. जैनेंद्र कृत 'सुनीता' एवं 'सुखदा'।
3. सियाराम शरण गुप्त कृत 'गोद', 'नारी' एवं 'अंतिम आकांक्षा'।
4. इलाचन्द्र जोशी के 'मुक्तिपथ' एवं 'जिप्सी' आदि।

**नाटक, एकांकी एवं अन्य साहित्यिक विधाओं पर प्रभाव :–**

गाँधीयुग (1919–1948) में गाँधी विचारधारा से प्रभावित नाटक एवं एकांकी शायद ही रचे गये क्योंकि यह

युग संघर्ष का काल था, और चूँकि नाट्यविधा शांति और ऐश्वर्य में फलने–फूलने वाली साहित्यिक–विधा है इस वजह से इसका निर्माण एवं विकास संभव नहीं हो सका। परंतु गाँधी–उत्तर युग, जो उनकी मृत्यु पश्चात् आरंभ हुआ, में गाँधी विचारधारा से प्रभावित नाट्य–विधा का विकास हुआ। इस विचारधारा से प्रभावित नाटककारों जैसे–उदयशंकर भट्ट, गोविंदवल्लभ पंत, हरिकृष्ण प्रेमी, लक्ष्मी नारायण मिश्र, सेठ गोविंददास, उपेन्द्र अश्क आदि ने अपने नाट्य विधाओं द्वारा गाँधी विचारधारा को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से निरूपित किया है।

एकांकी नाटक इस युग की विशिष्ट देन है। विष्णु प्रभाकर, जगदीशचन्द्र माथुर, रामकुमार शर्मा आदि एकांकीकारों ने अपनी एकांकियों में गाँधीयुगीन समस्याओं को उठाया है। गाँधी–उत्तर युगीन निबंध, जीवनी, पत्रकारिता, समालोचना, आदि विधाओं में भी गाँधी विचार–धारा का प्रभाव लक्षित होता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गाँधी विचारधारा ने आधुनिक हिन्दी साहित्य पर प्रत्यक्ष या परोक्ष तौर से पर्याप्त प्रभाव डाला है। इस व्यापक प्रभाव ने हिन्दी साहित्य को मानवतावादी दिशा तथा साहित्यकारों को 'कला जीवन के लिए' की नई दृष्टि दी है। सच गाँधी विचारधारा से प्रभावित हिन्दी साहित्य परिमाण की दृष्टि से इतना विपुल और गुणवत्ता की दृष्टि से इतना विशिष्ट है कि उस पर अवश्य गर्व किया जा सकता है।

**संदर्भ ग्रंथ :-**


1. डॉ. राम गोपाल सिंह जादौन, हिन्दी साहित्य में व्यक्त गांधी, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद, उ. प्र. 2021.
2. राकेश पांडेय (संपा.), गांधी और हिंदी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, 2019.
3. आर. के. प्रभु तथा यू. आर. राव, महात्मा गाँधी के विचार, नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत, 1994.
4. काशीनाथ चरित्र (अनु.), मोहनदास करमचंद कैथोलिक, सत्य के प्रयोग या आत्मकथा (ई. बुक), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 380014.



मो. 9430955418

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 248-250

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गांधी से प्रभावित आधुनिक हिंदी साहित्य

**काकर मुत्यालराव**

शोधार्थी, हिंदी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम–530003

**सारांश :–**

महात्मा गांधी जी हमारे देश के लोक नायक व युग–निर्माता ही नहीं थे, बल्कि संसार के युग महापुरुषों में से एक थे। उन्होंने न केवल भारत देश को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद कराया बल्कि समस्त संसार में सत्य, अहिंसा, शांति और सद्भाव के आदर्श एवं नैतिक मूल्यों से अवगत कराकर समस्त मानवता के कल्याण और सर्वोदय की स्थापना की। पूरे विश्व में लोगों ने उन्हें देखा, सुना, पढ़ा, सहमत, असहमत हुए, उनका तीव्र समर्थन किया, उनका घोर विरोध किया किन्तु प्रेम और श्रद्धा उन्हें जितनी मिली, उतनी विश्व में किसी एक व्यक्ति को नहीं मिली, क्योंकि उनके विरोधी भी उन्हें एक व्यक्ति के रूप में प्रेम करते रहे हैं। उनका व्यक्तित्व विविधता और विचित्रता के साथ एकरूपता एवं अनुशासन को इस प्रकार संजोए हुए था कि उनके व्यक्तित्व और विचारों के विरोधाभास का चमत्कारी सह–अस्तित्व सर्वथा सहज प्रतीत होता है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य पर गांधी का प्रभाव पूरी परिशुद्धता के साथ व्याप्त है। महात्मा गांधी ने भारतभूमि की स्वाधीनता के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वे जनता के हृदय में सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, शांति, सद्भाव, सर्व धर्म सम्भाव, समानता एवं मानवता की भावना जागृत करने के लिए सतत् संघर्षशील रहे। गांधी जी के आदर्शों का प्रभाव जहाँ हिन्दी के कथा साहित्य पर संपूर्णता में व्याप्त हुआ है, वहीं कविता साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा। हम हिन्दी साहित्य पर महात्मा गांधी के प्रभाव को स्पष्ट एवं व्यापक रूप में देख सकते हैं। उनके चिंतन–दर्शन, राष्ट्र नव निर्माण एवं स्वराज्य की कल्पना को हिन्दी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं का विषय बनाया। साहित्य समाज का दर्पण होता है और समाज में हो रही घटनाओं का समकालीन एवं उसके बाद के साहित्य पर प्रभाव पड़ना अनिवार्य हो जाता है।

**गांधी से प्रभावित आधुनिक हिंदी साहित्य :–**

प्रेमचंद जी गोरखपुर में 1923 में गांधी जी का भाषण सुनकर इस तरह प्रभावित हुए कि उन्होंने 23 वर्ष की अपनी सरकारी नौकरी छोड़ दी। फलतः हिंदी साहित्य जगत में उपन्यास सम्राट बने। प्रेमचंद ने स्वराज्य, समतावाद और धर्म को संयुक्त करके अपने साहित्य में समाजवाद का रूप सत्यं, शिवं, सुंदर में निहित किया है। गांधी जी के स्वराज्य का स्पष्ट प्रभाव प्रेमचंद में दिखाई देता है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी, गांधी जी भाषा से प्रभावित होकर, 'उपेक्षिता उर्मिला' को लेकर 'साकेत' की रचना के बारे में गांधी जी से पत्र व्यवहार किए। इस प्रकार गांधी जी की प्रेरणा से हिन्दी भारतीय साहित्य में बोलचाल की सरल–सहज भाषा, कहानी और कविता

का माध्यम बनी। पहले जो संस्कृत और बोझिल पंडिताऊ भाषा लिखी जाती थी, वह एक तरह से काल बाह्य हो गई। महात्मा गांधी जी का कथन था कि 'समाज के वंचित–मुंचित, दलित–शोषित, दरिद्र नारायण की सेवा करो।' फलस्वरूप कई काव्य और उपन्यास अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों पर लिखे गए। सन् उन्नीस सौ बीस से लेकर उन्नीस सौ चालीस के बीच पचासों उपन्यास इस दिशा में अग्रसर हुए। मैथिलीशरण गुप्त के 'किसान' और 'अछूत' खंड काव्य, रवीन्द्र नाथ की 'चांडालिका', शरतचंद्र चटर्जी का 'पल्ली समाज' इसी कोटी के हैं। गांधी जी ने सेवा, संयम एवं अहिंसा का जो पाठ पढ़ाया था, उसी तथ्य पर आधारित व्यंग्य नाटक 'बकरी' सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का है। नरेंद्र कोहली का 'शंबूक की हत्या' भी इसी कोटि की है। हिन्दी साहित्यकारों के साथ–साथ, दक्षिण भारत के साहित्यकारों में भी गांधी जी के भाषण का अद्वितीय प्रभाव रहा।

गांधी जी का कहना था, 'गांवों की ओर चलो।' विकेंद्रीकरण के इस नारे का ही प्रभाव था कि हिन्दी में 'देहाती दुनिया', 'गोदान' और 'मैला आंचल' तक, ग्राम और ग्रामीण जीवन, कहानियों और उपन्यासों का विषय बना। महात्मा गांधी जी के सिद्धांतों का प्रभाव केवल राष्ट्रीय आंदोलन पर ही नहीं, विश्व शांति के लिए अहिंसा का प्रेरणा देने में भी था। इस विषय को लेकर कई काव्य हिन्दी में लिखे गए। प्रायः हर हिन्दी भाषा–भाषी प्रदेशों में राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं और प्रेमियों ने आत्मकथाएं लिखी हैं। जिसमें गांधी जी की देश को एक सूत्र में बांध रखने की तड़प के दर्शन मिलते हैं। राजेंद्र प्रसाद हों या जयप्रकाश नारायण, द्वारिका प्रसाद हों या सेठ गोविन्द दास, सभी में 'एक जगत' और 'मानव–मानव सब हैं समान' की भावना ही मिलती है। गांधी जी के जिन भाषा विषयक विचारों से भारतवासी प्रभावित हुए, उनमें उन लेखों का स्थान प्रमुख था, जो 'यंग इंडिया', 'हरिजन सेवक', 'हरिजन बंधु' आदि में प्रकाशित हुए थे। इसके अतिरिक्त गांधी जी के द्वारा लिखी गई 'इंडियन होमरूल', 'हिन्दी स्वराज और होमरूल' जैसी पुस्तकों और तत्कालीन विभिन्न व्यक्तियों के नाम पर लिखे गए पत्रों आदि से भी प्रभावित हुए थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई साहित्यकारों ने कहानियों, उपन्यासों और नाटकों के माध्यम से गांधी–दर्शन से संबंधित विभिन्न विचार व्यक्त किए।

महात्मा गांधी के इन विचारों का प्रभाव हम जैनेंद्र की 'वे तीन' शीर्षक कहानी में पाते हैं। गांधी जी के विचारों के प्रभाव को उनकी कहानियाँ 'फांसी', 'वातायन', 'एक रात', 'पाजेब' आदि में देखा जा सकता है और साथ ही उपन्यास 'सुनीता' में भी देखा जा सकता है।

वासुदेव आठले की कहानी 'मानवता की भेंट' में गांधीवादी दार्शनिक चरित्र देखने को मिलता है। स्वरूप कुमार बख्शी की 'कौड़ियों का नाच' शीर्षक कहानी में महात्मा गांधी के सत्य तत्व की प्रतिष्ठा का प्रयास किया गया है। कहानी का पात्र नंद कुमार संपन्न परिवार का लड़का है। 1947 के सांप्रदायिक दंगे में उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है और वह संपन्न बनने के लिए असत्य मार्ग को अपनाता है, तभी उसकी माँ उसे असत्य मार्ग छोड़ने एवं सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है और वह सत्य के मार्ग पर चलने का प्रण लेता है। महात्मा गांधी ने सत्य को सर्वश्रेष्ठ धर्म बताया और अहिंसा को परम कर्तव्य। उनका कहना था कि सत्य की तरह अहिंसा भी सर्वशक्तिमान और असीम है, ईश्वर के समानार्थक है। अहिंसा के बारे में उनका विचार है– अहिंसा का अर्थ है पृथ्वी के किसी जीवधारी को विचार शब्द और किसी कार्य में दुःख देने से बचाना। गांधी के इन विचारों का सम्यक निर्वाह विनोद शंकर व्यास की 'स्वराज कब मिलेगा?' शीर्षक कहानी में असहयोग आंदोलन वर्णन के प्रसंग में होता है। अहिंसा की अनिवार्यता आनंद प्रकाश जैन की 'देवताओं की चिंता' कहानी

में दृष्टिगोचर होती है। चैतन्य भट्ट की कहानी रंग में भंग में अहिंसा का सुन्दर उल्लेख मिलता है जिसे हम गांधी की अहिंसा का प्रभाव ही मान सकते हैं साधारण नियम तो यह होना चाहिए कि पशु हिंसा त्याज्य है ही, यज्ञानुष्ठान में तो यह कदापि नहीं होना चाहिए। गांधी जी ने धर्म के क्षेत्र में संसार के प्रत्येक कार्य, व्यक्ति के प्रत्येक पक्ष और समाज के प्रत्येक कार्य, व्यक्ति के प्रत्येक पक्ष और समाज के प्रत्येक अंग को समेटा वे मूर्तियों को देवता मानना अनुचित समझते थे, किन्तु ईश्वर के प्रतीक या माध्यम के रूप में मूर्ति पूजा से उनका कोई विरोध नहीं था। गौ–पूजा में उन्हें जीव मात्र के प्रति दया या अहिंसा का भाव निहित प्रतीत होता था।' उनके अनुसार धर्म मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य है, आत्मदर्शन भी है व सभी धर्मों का सामंजस्य भी है। उनके इन आदर्शों का प्रभाव विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित कहानी उस दिन की नायिका मंजू के व्यवहार में मिलता है। वह हिंसाक आक्रोश से भरपूर माहौल में एक मुसलमान बच्चे को स्वयं के घर में रखकर मानवीय उदारता का परिचय देकर धर्म का पालन करती है। इसी प्रकार का उदाहरण राधेलाल विजधाव ने 'अमृत' की कहानी में दृष्टिगोचर होता है। उनकी एक सूत्र कहानी की फरीदा की शादी साम्प्रदायिक हिंसा के कारण नहीं हो पाती, तब उसका मामा कहता है कि क्या कोई भी धर्म सम्प्रदाय इंसानियत का गला घोटने की अनुमति देता है? गांधी जी ने जीव को ईश्वर का ही अंश माना है। स्वरूप कुमार बख्शी के "निर्झर कन्या" कहानी संग्रह की दो कहानियाँ 'बुलबुल' और जीवन की सात समस्याएँ भी गांधी जी की इसी धारणा से प्रभावित होकर चरितार्थ दिखाई देती है। गांधी जी के अनुसार धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं है। इसका अर्थ है सृष्टि के व्यवस्थित नैतिक शासन के प्रति आस्था है।

**निष्कर्ष :–**

महात्मा गांधी ने दक्षिण भारत में हिंदी भाषा एवं साहित्य को आत्मसात कराने के लिए सत्रह जून उन्नीस सौ अठारह को दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का गठन चेन्नई में किया। आधुनिक हिन्दी साहित्य पर गांधी जी का प्रभाव पूरे वर्ग व परिशुद्धता के साथ पड़ा है। गांधी जी ने राष्ट्रीय चेतना का बिगुल हिन्दी के माध्यम से बजाया और हिन्दी को समस्त भारत देश की वाणी भी बनाया। जिस कारण से हिन्दी के साहित्यकारों पर गांधी जी का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। गांधी जी सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, शांति, समानताऔर मानवता की भावना को जागृत करने के लिए प्रयासरत रहे। वे समाज में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं देखना चाहते थे। सभी भारतवासी प्रेम से एकता के साथ जीवनयापन करें, ऐसा समाज वे स्थापित करना चाहते थे। इसलिए उनके आदर्शों, विचारों, मूल्यों को अधिकांश साहित्यकारों ने आत्मसात करके अपने साहित्य में व्यक्त किया। फलतः उनके विचारों से अभिभूत होकर अनेक कथाकर प्रेमचन्द, रेणु, जैनेन्द्र, विष्णु प्रभाकर आदि ने अपनी रचनाओं में उनके सिद्धान्तों से अनुप्राणित होकर साहित्य का सृजन किया। आधुनिक कवियों ने भी जैसे मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, भवानी प्रसाद मिश्र, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा नवीन आदि ने भी गांधी जी के आदर्शों से प्रभावित होकर अपने साहित्य का सृजन किया।

**संदर्भ सूची :–**


1. डॉ. प्रभात कुमार भट्टाचार्य : गांधी दर्शन, पृ. 01
2. प्रताप सिंह, गांधी जी का दर्शन, पृ. 03.
3. रजनी शर्मा, गांधी का जीवन, गांधी का संदेश (योजना : अक्तूबर 1981, पृ. 25)
4. महादेव प्रसाद, महात्मा गांधी का समाज दर्शन, पृ. 3
5. प्रताप सिंह, गांधी जी का दर्शन, पृ. 34



फोन नंबर : 7981950775,
ई–मेल : kmrteachingseries@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 251-255

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता : एक समाजशास्त्रीनय विश्लेलषण

**शैलजा**, शोधार्थी

**प्रो0 (डॉ.) रेनू प्रकाश,** असि0 प्रो0 (ए.सी.)

समाज शास्त्र, उत्तराखंड मुक्त वि. वि. हल्द्वानी, उत्तराखंड।

**सार संक्षेप :-**

सम्पूर्ण समाज तथा उसमे निवासरत् प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण की बात न की जाये तब तक समाज का विकास हो ही नही सकता। गांधी जी ने भी सर्वकल्याण की बात को महत्व दिया था किन्तु अगर हम वर्तमान की बात करें तो सर्वकल्याण के स्थान पर स्व कल्याण की भावना सर्वोपरि होने लगी है। परिणामस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने बारे में सोच रहा है। अतः आज समाज को व्यवस्थित एवं संगठित रखने तथा सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण स्थान लेने लगी है। क्योंकि विकास एवं प्रगति ने जहां समाज को विकसित करने में अपनी अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया है वहीं दूसरी ओर स्वार्थ भ्रष्टाचार एवं अपराधिक दृष्टिकोण ने कई नवीन तरह की समस्याओं को भी जन्म दिया है। अतः हमें इन प्रमुख समस्याओं एवं गांधी जी के मानव कल्याण से युक्त विचारों को समझना एवं आत्मसात करना अनिवार्य सा प्रतीत होता है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र उक्त सन्दर्भ में मुख्य शोध बिन्दु के रूप में रेखांकित करने का प्रयास किया है।

**बीज शब्द :-** सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वदेशी आंदोलन, सामाजिक न्याय।

**विषय प्रवेश :-**

महात्मा गांधी जी एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न सामाजिक चिन्तक के रूप में बींसवी शताब्दी के उन प्रमुख विचारकों में एक माने जा सकते है जिन्होने समाज को संगठित रखने में अपना एक विशेष योगदान दिया है। जैसे कि यह सर्वविदित है कि समाज परिवर्तनशील होता है। अर्थात सामाजिक परिवर्तन प्रकृति का नियम है तथा प्रत्येक समाज क्रमिक परिवर्तन की दिशा की ओर सदैव अग्रसर होता है इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता कि जब भी सामाजिक परिर्वतन होगा तब समाज पर सदैव इसके सकारात्मतक एवं नकारात्माक प्रभाव परिलक्षित भी होंगे। यही सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव समाज को विकास और प्रगति की ओर तो उन्मुख करते ही है साथ ही कई नवीन तरह की समस्याओं अथवा दुष्प्रभावों को भी परिलक्षित करते है। वर्तमान में परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में यदि आज हम गांधी जी के विचारों का मूल्यांकन करें तो आज भी उनके द्वारा प्रदत्त विचार एक

मार्गदर्शक के रूप में हमारा मागदर्शन करेंगें। एक समाजशास्त्र के विद्यार्थी होने के नाते यदि हम समाज का विश्लेषण करें तो समाज का निर्माण पूर्ण रूप से मानव समूह द्वारा निर्मित है। यह वास्तविकता है कि मानव एवं समाज को पृथक नहीं समझा जा सकता दोनो ही एक दूसरे के पूरक है तथा एक दूसरे के बिना दोनों के अस्तित्व की कल्पना तक नहीं की जा सकती। अगर सरल शब्दों में समाज व व्यंक्ति के सम्बन्ध की परिचर्चा की जाये तो दोनों ही मिलकर एक सभ्य समाज का निर्माण करते है तथा स्वयं मनुष्य भी अपना इस समाज में जीवन व्यतीत कर सर्वांगीण विकास करता है। इस सम्बन्ध में यदि हम गांधी जी के विचारो की बात करे तो स्वयं गांधी जी भी व्यक्ति और समाज को पृथक–पृथक नहीं मानते थे। उनका कहना था कि व्यक्तिगत और सामाजिक क्षेत्र अलग–अलग नही बल्कि एक ही क्षेत्र के दो हिस्से है। दो पहलू है, चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे अपने विकास के लिए समाज पर निर्भर रहना पड़ता है, किन्तु इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि समाज व्यक्ति पर निर्भर नहीं है। जब तक समाज के व्यक्तियों की प्रगति नहीं होती है। सामाजिक प्रगति और विकास सम्भव नहीं है, गांधी जी ने आदर्श समाज की स्थापना का स्वप्न देखा था। इस आदर्श समाज का निर्माण उन व्यक्तियों से होता है जो प्रेम और बंधुत्व की भावना से ओत–प्रोत होते है। जो अपने लिए जिन्दा ना रहकर दूसरो के लिए जिन्दा रहते है। गांधी जी बेथम के ''अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख'' में विश्वास नहीं करते थे, अपितु उनका तो कहना था कि सभी व्यक्तियों के लिए अधिकतम सुख की प्राप्ति ही आदर्श राज्य का उद्देश्य होना चाहिए।''

गांधी जी अपने पत्र ''हरिजन'' में लिखते हैं कि मैं व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व देता हूँ, लेकिन तुम्हे यह भूलना नहीं चाहिये कि मनुष्य आवश्यकता से एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्रगति की जरूरतों के साथ अपने व्यक्तिवाद के अनुकूलन के ज्ञान के द्वारा वह वर्तमान स्थिति तक पहुंचा है। अप्रतिबन्धित व्यक्तिवाद जंगली नियम है। सम्पूर्ण समाज के कल्याााण के लिए सामाजिक नियत्रण की स्वैच्छिक अधीनता व्यक्ति एवं समाज दोनों को समद्ध करती है।

महात्मा गांधी जी ने व्यक्ति को समाज की आत्मा माना था। गांधी जी का मानना था कि ''जिस प्रकार व्यक्ति की प्रगति ओर विकास के लिए आत्मा को विकसित करना आवश्यक है। ठीक उसी प्रकार समाज की प्रगति और कल्याण के लिए व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास अनिवार्य है। समाज का विकास और प्रगति व्यक्तियों के कार्यो पर आधारित है। इसके साथ ही समाज को ऐसे अवसर प्रदान करना चाहिए जिससे व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का समुचित विकास कर सके।''

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि समाज और व्यक्ति विशेष एक दूसरे के ऊपर पूर्ण रूप से आश्रित होते है। समाज तभी विकास और प्रगति की ओर उन्मुख हो सकता है। आज जब उसमे निवासरत् व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो, साथ ही इस वास्तविकता से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है कि जब तक सम्पूर्ण समाज तथा उसमे निवासरत् प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण की बात न की जाये तब तक समाज विकास की दिशा की ओर अग्रसर हो ही नहीं सकता। गांधी जी ने भी सर्वकल्याण की बात को महत्व दिया था किन्तु अगर हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करे तो आज जब सर्वकल्याण के स्थाान पर स्वकल्याण की भावना सर्वोपरि होने लगी है। परिणाम स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने बारे में सोच रहा है। अतः आज समाज को व्यवस्थित एवं संगठित रखने तथा सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए गांधी जी के विचारों की प्रासंगिता वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में

महत्वपूर्ण स्थान लेने लगी है। क्योंकि विकास एवं प्रगति ने जहाँ समाज को विकसित करने में अपनी अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया है वहीं दूसरी ओर स्वार्थ भ्रष्टाचार एवं अपराधिक दृष्टिकोण ने कई नवीन तरह की समस्याओं को भी जन्म दिया है। अतः हमें इन प्रमुख समस्याओं एवं गांधी जी के मानव कल्याण से युक्त विचारों को समझना एवं आत्मसात करना अनिवार्य सा प्रतीत होता है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र उक्त सन्दर्भ में मुख्य शोध बिन्दु के रूप में रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

**अध्ययन का उद्देश्य :-**

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य गांधी जी के विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता को समझना।

**शोध अभिकल्प एवं पद्धति शास्त्र :-**

प्रस्तुत शोध पत्र पूर्ण रूप से द्वैतियक आकड़ों पर आधारित है। जिसमें मुख्य रूप से शोध–पत्रों संदर्भित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं एवं शोध ग्रन्थों का उपयोग किया गया है।

**उपलब्धियां**

**सत्य् अहिंसा :-**

यह वास्तविकता है कि गांधीवादी मूल्यों का सही तरीके से पालन करने से समाज नवनिर्माण की ओर बढ़ेगा। सार्वजनिक सेवा, सत्य और अहिंसा के माध्यम से समाज का सुधार किया जा सकता है। गांधी जी ने अहिंसा को अपने सत्याग्रह के मूल सिद्धांत के रूप में प्रमाणित किया था। वर्तमान में, अहिंसा का महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि गत वर्षों में अनंतनाग आतंकी हमला, पुलवामा हमला, मणिपुर हिंसा, रूस–यूक्रेन युद्ध और हमास–इजरायल युद्धआदि घातक घटनाओं ने दिखाया कि आज आंतकवाद, अपराध और समाज में आपसी मतभेद बढ़ रहे हैं। अतः गांधीवादी विचारधारा, संघर्षों और विवादों को शांतिपूर्वक हल करने के लिए एक मार्ग प्रशस्त कर सकता है। गांधी जी के विचार (सत्य और अहिंसा) आपसी सहमति और सामाजिक समरसता की दिशा में मदद कर सकते हैं। गांधी जी के सिद्धांतों का अनुसरण भी कई लोगों ने किया है, जैसे नेल्सन मंडेला।

**सत्याग्रह (सविनय अवज्ञा) का महत्व :-**

सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा गांधी जी के सिद्धांतों का महत्वपूर्ण हिस्सा थे। आज के समय में गांधी जी के यह सिद्धांत, लोगों को अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने और अन्याय के खिलाफ लड़ने का साहस देते हैं। गांधी जी ने बताया कि सत्याग्रह के साथ–साथ सविनय अवज्ञा कैसे एक राजनीतिक और सामाजिक सुधार के लिए एक उपयुक्त और प्रभावी उपाय हो सकते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसान आंदोलन 2020–21 व जन लोकपाल विधेयक के लिए अन्ना हजारे जी (किसन बाबूराव हजारे) के आंदोलन सत्याग्रह के प्रमुख उदाहरण है।

**स्वदेशी आंदोलन का मूल्यांकन :-**

स्वदेशी आंदोलन के मूल उद्देश्य थे भारतीय जनता की स्वाधीनता और स्वायत्तता को बढ़ावा देना। आज के समय में, वैश्विकीकरण और आर्थिक परस्पर संबंधों के दौर में स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने से देश अपनी आर्थिक सुरक्षा में सुधार कर सकता है। साथ ही स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने से देश की आर्थिक वृद्धि में सहयोग दिया जा सकता है। साथ ही अनगिनत बेरोजगार लोगों को रोजगार के अवसर प्रद्धत होगे। अर्थात् सरल शब्दों में यदि कहें तो स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने से एक देश आर्थिक रूप से स्वावलंबी और

आत्मनिर्भरता बन सकता है। गांधी जी के स्वदेशी आंदोलन के उद्देश्य की वर्तमान में आवश्यकता को जानकर भारत सरकार ने मेक इन इण्डिया अर्थात 'भारत में बनाओ' प्रोग्राम की शुरूआत की।

**सामाजिक न्याय की आवश्यकता :-**

गांधी जी के सामाजिक न्याय और सामाजिक समानता का अर्थ है कि हर व्यक्ति को उसके जन्म, जाति, धर्म, लिंग, रंग, वंश, या गरीबी के आधार पर नहीं देखा जाना चाहिए। एक धर्मनिरपेक्ष समाज का निर्माण करना है, जिसमें सभी को समान अवसर और सुख–सुविधाएँ उपलब्ध हों। इसका उद्देश्य भेदभाव को दूर करना और समाज में व्यक्तित्व के विकास को प्रोत्साहित करना है। किन्तु गत वर्षो में, ''कई विकसित देशों में बहुतायत नस्लीय भेदभाव की घटनाएं देखी जा रही हैं जैसे– अमेरिका में जॉर्ज फ्लायड, ब्रियोना टेलर, एलिजा मैक्लेन, जियोना जॉनसन जैसे अश्वेत लोगों को अमेरिकी पुलिस की बर्बरता की वजह से अपना जीवन गंवाना पड़ा। वर्तमान ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक का खुले मंच से यह स्वीकारना कि उन्होंने भी नस्लवाद का दंश झेला है। जबकि पिछले ऑस्ट्रेलियाई दौरे पर भारतीय तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज को दर्शकों द्वारा काला बंदर कहकर संबोधित किया जाना, इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेट कप्तान माइकल वान द्वारा एशियाई खिलाड़ियों के प्रति नस्लीय ट्वीट करना आदि घटनाएं प्रमुख है।'' भारत में भी आज कई जाति, लिंग और आर्थिक भेदभाव के मामले दृष्टिगत होते हैं। आज महिलाओं के प्रति अपराधों में वृद्धि हुई है। ''समाज में व्याप्त छुआछूत की प्रथा से गाँधी जी को स्वाभाविक घृणा थी। वे इसे सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता के मार्ग में दुःसाध्य अवरोध मानते थे। इसलिए इस बुराई को समूल नष्ट करना चाहते थे।'' आज गांधी जी के सिद्धांतों के द्वारा समाज में सामाजिक न्याय और समाजिक समरसता को प्रोत्साहित करना होगा। ''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी गाँधी जी के सर्वोदय विचारों का व्यवहारिक प्रयोग कर सामाजिक न्याय की स्थापना की जा सकती हैं। गाँधी जी सामाजिक न्याय के प्रखर प्रवक्ता थे। पिछड़े, कमजोरों, अछूतों और दलितों का उत्थान उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता थी।'' सम्पूर्ण विश्व में 21 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय नस्लीय भेदभाव उन्मूलन दिवस का आयोजन किया जाता है।

**निष्कर्ष :-**

सम्पूर्ण शोध पत्र के विवेचन के आधार पर स्पष्ट है कि आज भी महात्मा गांधी के विचार और सिद्धांत हमारे समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं और हमें उनके सिद्धांतों का आत्मसात करने के लिए उनका सही तरीके से अनुसरण करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में गांधी जी के विचार हमें एक सशक्त और समृद्ध समाज की दिशा में मदद कर सकते हैं। इस शोध पत्र में गांधीवादी मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है, जिनका मुख्य उद्देश्य यह है कि समाज में सुधार गांधीवादी मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा, सविनय अवज्ञा, स्वदेशी, और सामाजिक न्याय के माध्यम से भी संभव है। सत्य, अहिंसा, और सविनय अवज्ञा राजनीतिक और सामाजिक सुधार के लिए महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से वर्तमान में जब हम आपसी मतभेद, आतंकवाद, और अपराध की घटनाओं का सामना कर रहे हैं। गांधीवादी सिद्धांतों के पालन से हम संघर्षों और विवादों को शांति से भी हल कर सकते हैं। गांधी जी के स्वदेशी अवधारणा को अपनाने व स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने से एक देश आर्थिक रूप से स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बन सकता है। यह भी दृष्टिगत है कि गांधीवादी सिद्धांतों के पालन से हम आज के आर्थिक परिप्रेक्ष्य में भी उनके विचारों को अपना सकते हैं। सामाजिक न्याय की आवश्यकता के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि गांधीवादी मूल्यों के पालन से समाज में सामाजिक न्याय और समरसता को

प्रोत्साहित किया जा सकता है, जिसमें सभी को समान अवसर और सुख–सुविधाएँ मिलती हैं, और भेदभाव को दूर किया जा सकता है। इस तरह, गांधीवादी मूल्यों का पालन सामाजिक और आर्थिक सुधार के साथ ही पर्यावरण के लिए भी महत्वपूर्ण है, और यह आज के समय में भी महत्वपूर्ण संदेश देता है कि हमें सत्य, अहिंसा, सविनय अवज्ञा, स्वदेशी, और सामाजिक न्याय के मूल सिद्धांतों का पालन करना चाहिए ताकि हम समाज में सुधार कर सकें।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–**


1. बघेल डी. एस. ''महान समाजशास्त्री विचारक 2002 ममता प्रिंटर्स भोपाल, पृ. नं. 132''
2. Harijan, May 27, 1934, Page No. 144 (उद्धृत उपरोक्त Page No 133)
3. उपरोक्त, पेज नं. 133
4. https://www.drishtiias.com/hindi/blog/current%20status&and&solutions&to&racial&discrimination&globally#:~:text(%E0%A4%A8%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B2%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6%3A]%E0%A4%94%E0%A4%B0%20%E0%A4%AA%E0%A5%82%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B9%20%E0%A4%A6%E0%A5%8B%E0%A4%A8%E0%A5%8B%E0%A4%82%20%E0%A4%B9% E0%A5%8B%E0%A4%A4%E0%A5%87%20%E0%A4%B9%E0%A5%88%E0%A4%82%E0%A5%A4
5. कुमार रणजीत, ''सर्वोदय एवं सामाजिक न्याय का गाँधीवादी परिप्रेक्ष्य'' 2018 Indian J. Soc. & Pol. 05(01) : 129–132
6. उपरोक्त, पेज नं. 131
7. https://www.rachanakar.org/2015/06/blog&post_754.html

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 256-260

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिन्दी साहित्य और गाँधी दर्शन

**डॉ. संतोष कुमार लिल्हारे**

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, शासकीय जटाशंकर त्रिवेदी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बालाघाट (म.प्र.)

पिन कोड–481001

**शोध–सारांश :–**

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी भारत के युग–निर्माता व लोक नायक ही नहीं थे, बल्कि सम्पूर्ण संसार के महापुरूषों में से एक थे। गाँधी जी का व्यक्तित्व इतना विशिष्ट था कि, उनके सम्बन्ध में यह कहना अतिश्योंक्ति पूर्ण नही होगा कि गौतम बुद्ध के बाद भारत में गाँधीजी ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिनका व्यापक प्रभाव भारतीय जीवन–दृष्टि विचारधारा, संवेदना, जीवन रीतियाँ, समाज, व्यक्ति मानस पर पड़ा। उन्होंनें न केवल भारतीयों को अंग्रेजों की पराधीनता से स्वाधीन करवाया बल्कि समस्त संसार को सत्य, अहिंसा, शांति, और सद्भाव के आदर्श एवं नैतिक मूल्यों से अवगत करवाकर समस्त मानवीय समाज के लिए मानवता के कल्याण और सर्वोदय की स्थापना की। गाँधी जी का हिन्दी साहित्य पर गहरा प्रभाव है और स्वयं गाँधी ने भी हिन्दी साहित्य से प्रभाव ग्रहण किया था। गाँधी जी ने अपनी वैचारिक शक्ति के आधार पर पूरे वैश्विक समुदाय को प्रभावित किया। पूरे विश्व में लोगों से उन्हें जितना प्रेम और श्रद्धा मिली उतनी विश्व में किसी एक व्यक्ति को नहीं मिली। गाँधी जी ने अपने दर्शन से हिन्दी साहित्य की लगभग हर विधा को प्रभावित किया है चाहे वह कहानी, उपन्यास, कविता, निबंध, सभी गाँधी रंग में रंगे दिखाई पड़ते हैं।

**मुख्य शब्द :–** युग–निर्माता, सत्य, अहिंसा, स्वाधीन, जीवन–दृष्टि, प्रेम और श्रद्धा।

**प्रस्तावना :–**

सन् 1915 में गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस लौटे और उन्होंने अपनी विचारधारा से राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर प्रभाव डालना शुरू किया था। भारतीय साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा। हिन्दी कहानी, उपन्यास और कविता पर गाँधी जी का प्रभाव पड़ा। वर्तमान समय में गाँधी जी के आदर्श एवं जीवन मूल्य भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रासंगिक है। आज वैश्विक हथियारों की होड़ लगी हुई हैं, हिंसक गतिविधियों में दिन–प्रतिदिन बढ़ौत्तरी हो रही है। गाँधी जी मानते थे कि हिंसा न केवल सामाजिक व्यवस्था को तहस–नहस कर देती है बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति को सर्वनाश की ओर ले जाती है। आज भी बहुत से लोग उनके आदर्शों एवं सिद्धान्तों पर आस्था रखते हुए साहसपूर्वक जीवन जीने का प्रयत्न करते हैं। ग्रामीणजनों के प्रति गाँधी जी का हृदय सदैव प्रेम से भरा रहता था। भारत वर्ष की गरीबी दूर करने एवं गाँव की दशा सुधारने के लिए उन्होंने कृषकों के लिए उत्तम खेती एवं गृह उद्योगों को अति आवश्यक माना। गाँधी

जी समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए आजीवन समर्पित रहे। उन्होंने सत्य और अहिंसा पर आधारित आदर्श 'रामराज्य' की स्थापना की परिकल्पना की थी। उन्होंने कहा था कि–''सच्ची अहिंसा मृत्यु शैय्या पर भी मुस्कराती रहेगी। अहिंसा ही वह एकमात्र शक्ति है जिससे हम शत्रु को अपना मित्र बना सकते हैं और उसके प्रेम पात्र बन सकते हैं।''[1]

गाँधी जी के आदर्शों का प्रभाव हिन्दी साहित्य की समस्त विधाओं पर देखा जा सकता है। भारतीय संस्कृति युगों–युगों से सत्य, अहिंसा, शांति, सद्भाव, समानता की समर्थक रही है। जिस प्रकार रामायण एवं रामचरितमानस में श्री राम के चरित्र को आदर्श मानकर 'रामराज्य' की परिकल्पना की गई, ठीक उसी प्रकार गाँधी जी ने भी राम से प्रभावित होकर रामराज्य की परिकल्पना की थी। यही कारण है कि आजादी के आन्दोलन में उन्होंने अहिंसा का मार्ग अपनाया। तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलनों में गाँधी जी ने सत्य अहिंसा का मार्ग अपनाकर उन्हें सफल बनाया एवं अंग्रेजों को भारतीय जन–मानस की शक्ति से अवगत कराया।

**विषय विस्तार :–**

गाँधी जी ने अपने दर्शन से हिन्दी साहित्य की लगभग हर विधा को प्रभावित किया। चाहे वह छायावादी काव्य हो या प्रेमचन्द युगीन कहानियाँ और नाटक या फिर प्रमुख ऐतिहासिक और सामाजिक कालजयी उपन्यास, कविता आदि सभी गाँधी दर्शन से प्रभावित हैं। इस सम्बन्ध में डॉ0 नगेन्द्र का कहना है–''गाँधी दर्शन हमारा युग–दर्शन है और इसके सर्वव्यापी प्रभाव से आधुनिक कवि अछूते नहीं रहे हैं।''[2] वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व आणविक शक्ति की संहारक छाया में कांपता हुआ जी रहा है। उपभोक्तावाद की कु–संस्कृति सम्पूर्ण विश्व को अपने मायाजाल में फँसाकर निगलने को तैयार है। राजनीति सत्ता केन्द्रित होकर भ्रष्टाचार और अपराधीकरण से ग्रस्त है। मानवीय कल्याण से इन्हें कोई मतलब नहीं। बड़े–बड़े उद्योग और मशीनीकरण की प्रवृत्ति प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ कर पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा कर रही है। मनुष्य की आत्मा और उसके व्यवहार के बीच दरार बढ़ती जा रही है। मनुष्य स्वार्थ की सघन छाया में छल–छद्म का सहारा लेता जा रहा है। ऐसे परिवेश में गाँधी मार्ग ही एक विकल्प है। गाँधी जी के विराट व्यक्तित्व के प्रभाव के सम्बन्ध में फूलचन्द पाण्डेय ने लिखा है– "सचमुच गाँधी वह पारस पत्थर है, जिसे छूकर न जाने कितने ही हाड़–माँस के पुतले स्वर्ण शक्ति पा सकेंगे। उसने नव समाज के लिए आदर्श जीवन बताया। साहित्य में एक जागरण की शक्ति दी, राजनीति में विश्वनीति का रूप स्थिर किया, समाज को उदार बनाया, व्यक्ति को सचेत किया तथा समष्टि को उन्मुख तथा प्रगति पथ की ओर बढ़ाया।''[3] अतः गाँधी जी के व्यक्तित्व, कृतित्व, जीवन–दृष्टि और दर्शन पर विचार करना आज की आवश्यकता बन गयी है।

गाँधीवाद के आधारभूत तत्वों में सत्य ही सर्वोपरि है। सत्य के लिए ही वे विविध कार्यों में अपनी शक्ति का प्रयोग करते हैं। सत्य ही किसी भी राजनैतिक सामाजिक संस्थान की धुरी होना चाहिए। उनका आग्रह है कि ''प्रत्येक व्यक्ति को सत्याग्रही होना चाहिए।''[4] सत्य, अहिंसा, मानवीय स्वतंत्रता, समानता एवं न्याय पर उनकी निष्ठा को उनकी निजी जिंदगी के उदाहरणों से समझा जा सकता है। ''गाँधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन का देश के जीवन पर अभूतपूर्व प्रभाव पड़ा। अनेक लेखक और कवि इस तूफान में बह गये, इसमें अग्रगण्य प्रेमचन्द थे।''[5] गाँधी जी के सत्य के प्रभाव को हम जैनेन्द्र कुमार की 'वे तीन, एक रात, फाँसी, पाजेब, वातायन कहानी में ही नहीं अपितु 'सुनीता' नामक उपन्यास में भी देख सकते हैं। गाँधीवादी दर्शन की झलक हमें विष्णु प्रभाकर

की 'वापसी' कहानी में भी दिखाई देती हैं। 'वापसी' कहानी में पात्र राम सिंह ईर्ष्या, द्वेष के कारण चाहता है कि मैं उसके परिवार को दर–दर की भीख मंगवाऊँगा, भिखारी बनवाऊँगा। परन्तु जब उसको सच्चाई का पता लगता है तब वह अपनी जान पर खेलकर घर में लगी आग में से अपने सौतेले भाईयों को बचाने में सफल हो जाता है। उसका इस तरह हृदय परिवर्तन गाँधी जी के सत्यवादी दृष्टिकोण का ही परिणाम है। कुमार बख्शी की 'कौड़ियों का नाच' में भी गाँधी जी का सत्यवादी दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। इस भारत विभाजन की त्रासदी के चलते वह अपना सर्वस्व लुटा हुआ पाकर असत्य के मार्ग पर अग्रसर हो जाता है। लेकिन उसकी माँ उसे गाँधी जी के सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। गाँधी जी अहिंसा को हिंसा से अधिक शक्तिशाली मानते हैं–"अहिंसा एक दूसरे के प्रति प्रेम और आदर को जन्म देती है तथा सभी मनुष्यों को समान समझने की प्रेरणा देती है।"[6] मन की निर्मलता और ईश्वर निष्ठा से आत्मा को शुद्ध करना गाँधीवाद की प्रथम आवश्यकता है। ऐसा करने से निःस्वार्थ बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य सच्चे अर्थों में जनसेवा के लिए समर्पित होता है। गाँधी जी का कथन था–''इस रावण राज में श्रृंगार छोड़ दो, जब तक देश परतन्त्र है तब तक आराम को शोकाग्नि में भस्म कर दो।''[7]

गाँधी जी ने अपने जीवन में परिग्रह का पालन किया जिसका प्रभाव हमें हिन्दी साहित्य में भी देखने को मिलता है। दूसरों की वस्तु को बिना आज्ञा के लेना भी एक प्रकार की चोरी है। गाँधी जी के परिग्रह का प्रभाव आधुनिक कहानीकार दामोदार सदन की कहानी 'मेजर श्री नाथ की वसीयत', नवनीत मिश्रा द्वारा रचित 'छाया मत छूना' में प्रतिबिम्बित होता है। महात्मा गाँधी जी बहुजन हिताय एवं ग्राम स्वराज के पक्षधर थे, जिसका प्रभाव हमें हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द और उनके बाद के रचनाकारों पर दिखाई देता है। गाँधी जी के समान ही मुंशी प्रेमचन्द का व्यक्तित्व सादगीपूर्ण था। प्रेमचन्द ने 'गोदान', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'कायाकल्प' जैसे उपन्यासों में कृषक जीवन का चित्रण किया है। प्रेमचन्द के उपन्यास रंगभूमि का 'सूरदास' गाँधी जी का ही प्रतीक है जो कि मशीनीकरण एवं शहरों की अपसंस्कृति का पुरजोर विरोध करते हुए अपना बलिदान कर देता है। प्रेमचन्द के बाद के रचनाकारों पर भी गाँधी दर्शन का प्रभाव दिखाई पड़ता है, जिनमें जैनेन्द्र और फणीश्वर नाथ रेणु जी प्रमुख हैं। जैनेन्द्र के उपन्यास 'सुखदा' 'त्यागपत्र' में गाँधी जी की विचारधारा झलकती है। त्यागपत्र उपन्यास में 'मृणाल' अपने आप को इतना कष्ट क्यों देती है? वह एक कोयला बेचने वाले के साथ जीवन जीने को मजबूर है। वह पढी–लिखी महिला है फिर भी वह इस तरह का जीवन जीती है, क्योंकि वह गाँधी जी के अहिंसा एवं संघर्ष से प्रभावित है। फणीश्वर नाथ रेणु जी के 'मैला आँचल' में भी ग्राम स्वराज की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है। स्त्री जीवन की समस्या एवं उनके उत्थान के लिए गाँधी जी ने अनेक प्रयास किए। कथााकार सोमा वीरा ने अपनी प्रसिद्ध कहानियाँ 'अधूरी गाँठ व 'राख की पुड़िया' में समाज में व्याप्त दहेज रूपी बुराई की निंदा की है। 'निर्मला' उपन्यास में प्रेमचन्द ने दहेज के कारण अनमेल विवाह की समस्या का उल्लेख किया है। 'सेवा सदन' में वेश्यावृत्ति की समस्या को उजागर किया है। गाँधी जी ने सामाजिक उत्थान हेतु हरिजनोद्धार, साम्प्रदायिक एकता व मद्यपान का निषेध किया।

गाँधी जी जीवन के अंतिम क्षणों तक भारत की स्वतंत्रता, राष्ट्रभाषा, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय शिक्षा के लिए प्रयासरत रहे। उनके शब्दों में –''मैं अपने देश की स्वतंत्रता इस कारण चाहता हूँ कि अन्य राष्ट्र मेरे राष्ट्र से कुछ सीख सके।''[8] तत्कालीन कवि एवं नाटककार भी गाँधी दर्शन से प्रभावित हुए। जयशंकर प्रसाद के नाटकों

में 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से स्वतंत्रता पुकारती में स्वतंत्रता के प्रति उद्घोष का स्वर कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक सुनाई देता था। प्रसाद के नाटकों में स्वतंत्रता के प्रति जो उद्घोष है वह गाँधीवाद का ही प्रभाव है। गाँधी जी ने 1909 में हिंद स्वराज में जिस प्रकार मशीनीकरण का विरोध किया है वही विरोध 'कामायनी' महाकाव्य' में सारस्वत प्रदेश की जनता करते दिखाई देती है। गाँधी जी कर्मवादी थे जिसकी झलक हमें सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के 'बकरी' नाटक में देखने को मिलती है।

कथा साहित्य के साथ–साथ कविता में भी गाँधी के नैतिक मूल्यों एवं आदर्शो का प्रभाव देखा जा सकता है। गुप्त जी जब 'यशोधरा' लिख रहे थे तब गाँधी जी ने पत्र व्यवहार के माध्यम से कहा था कि वे नारी को केन्द्र बिन्दु बनाकर काव्य लिखे, तब गुप्त जी ने साकेत महाकाव्य की रचना कर नारी की कारूणिक स्थिति का वर्णन किया। मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत–भारती में गाँधी के आदर्शो की बात की है–''श्री गोखले' गाँधी सदृश नेता महामतिमान है।'' सुभद्रा कुमारी चौहान बालिका का परिचय नामक कविता में लिखती है– ''मेरा मंदिर, मेरी मस्जिद, काबा–काशी यह मेरी, पूजा–पाठ, ध्यान जप–तप है घट–घट वासी यह मेरी।'' महोदवी वर्मा गाँधी जी को धरापूत्र कह कर संबोधित करती हैं–'हे धरा के अमर सपूतों, तुमको अशेष प्रणाम!

भवानीप्रसाद मिश्र ने गाँधी जी से प्रभावित होकर गाँधी पंचशती की रचना की। बालकृष्ण शर्मा नवीन ने अपनी कविता 'तुम युग परिवर्तन कालेश्वर' में लिखा है–

''रंग प्रभावित किया नहीं जन के मन को
सात्विकता ने तुम और ईसा,
सुकरात सभी, कर गए प्राण उत्सर्ग,
यहाँ पर जन बौना ही रहा और
उतरा न भूमि पर स्वर्ग।"

गाँधी जी अपने जीवन में रामचरित मानस से बहुत प्रभावित थे। अपने हिंद स्वराज की प्रेरणा तुलसीदास के 'रामराज्य से ली है। रामचरित मानस के रामराज्य को अपने हिंद स्वराज के लिए प्रेरणा के रूप में लिया, जैसे–

'परहित' सरिस धर्म नहीं भाई।
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।''

इस चौपाई से गाँधी जी अत्यन्त प्रभावित थे। उन्होंने इस चौपाई को अपने जीवन में सत्य, अहिंसा और दया के लिए हथियार के रूप में प्रयोग किया।

**निष्कर्ष :-**

निष्कर्षतः कहा जा सकता है हिन्दी साहित्य पर गाँधी दर्शन का प्रभाव पड़ा। गाँधी जी ने स्वतंत्रता का बिगुल हिन्दी भाषा के माध्यम से बजाते हुए समस्त देशवासियों की वाणी का माध्यम बनाया जिससे हिन्दी भाषा के अनेक साहित्यकारों पर गाँधी दर्शन का प्रभाव पड़ना निश्चित था। गाँधी जी सत्य, अहिंसा, एकता, सद्भाव, मानवता, भाईचारा, का भाव बनाए रखने हेतु सदैव तत्पर रहे। वे एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जहाँ किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो। गाँधी जी के प्रभाव से प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, रेणु, जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, भवानी प्रसाद मिश्र, सुभद्राकुमारी चौहान आदि ने गाँधी जी के आदर्शो से

प्रभावित होकर साहित्य का सृजन किया।

**सन्दर्भ ग्रन्थ :-**


1. रजनी शर्मा –गाँधी का जीवन, गाँधी का संदेश, योजना अक्टूबर 1981, पृ.–26
2. सिद्धेश्वर प्रकाश– छायावादोत्तर काव्य– पृ.–68
3. आधुनिक कवि पन्त, प्रथम संस्करण, पृ.–144
4. महादेव प्रसाद– महात्मा गाँधी का समाज दर्शन, पृ.–30
5. प्रकाशचन्द्र गुप्त – नया हिन्दी साहित्य एक भूमिका, संस्करण चतुर्थ, पृ.–15
6. प्रताप सिंह – गाँधी जी का दर्शन, पृ.–34
7. महात्मा गाँधी –कर्मवीर –04 दिसम्बर 1920
8. रामनाथ सुमन – गाँधीवाद की रूपरेखा, पृ. 45–46



मो0नं0– 9623971619, 9511798938

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 261-264

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# रमेशचन्द्र शाह का रचनाकर्म : एक सूक्ष्म अवलोकन

**डॉ० कुसुम लता**

हिन्दी विभाग, गोपाल बाबू गोस्वामी राजकीय महाविद्यालय चौखुटिया (अल्मोड़ा) पिन कोड –263656

रमेश चन्द्र शाह हिन्दी के उन गिन–चुने लेखकों में से एक हैं जिन्होंने साहित्य की प्रत्येक विधा में अपनी लेखनी चलाई है। एक सर्जनात्मक रचनाकार के साथ ही एक विचारक, चिन्तक और बुद्धिजीवी के रूप में उनकी अपनी विशिष्ट पहचान है। इनका जन्म वैशाख शुक्ल पक्ष त्रयोदशी सन् 1937 को जौहरी बाजार, अल्मोड़ा में हुआ था। ये स्व. ईश्वरी लाल शाह और स्व हरिप्रिया देवी के पुत्र थे।'[1] परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी, अतएव उन्हें अपने जीवन में काफी संघर्षों का सामना करना पड़ा, किन्तु प्रतिभा सम्पन्न व कुशाग्रबुद्धि होने के कारण वे निरन्तर जीवन–पथ पर अग्रसर होते रहे। इनकी माता धार्मिक विचारों की महिला थीं, जिनका प्रभाव शाह जी के जीवन पर पड़ना स्वाभाविक ही था। उनके बालमन पर कहानी की जो छाप सबसे पहले और शायद सबसे गहरी पड़ी वह रामायण, महाभारत, पुराणों और हितोपदेश की थी।''[2] इनके जीवन में धार्मिक ग्रन्थों का गहरा प्रभाव पड़ा, जिसकी झलक उनके उपन्यासों में यत्र–तत्र परिलक्षित होती है।

सन् 1964 में 27 वर्ष की आयु में इनका विवाह गुजराती तथा हिन्दी की श्रेष्ठ कवियित्री ज्योत्स्ना मिलन के साथ हुआ। इनकी दो पुत्रियों शम्पाशाह और राजुला शाह–वर्तमान में भोपाल में हैं। इनकी पत्नी का निधन हो चुका है।

''शाह जी की प्रारम्भिक शिक्षा नृसिंहबाड़ी की आर्य कन्या पाठशाला अल्मोड़ा में हुई, तत्पश्चात् उन्हें कक्षा तीन में दाखिला जी.आई.सी. इण्टर कॉलेज अल्मोड़ा में मिला. जहाँ से उन्होंने सन् 1952 में हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की तत्पश्चात उन्होंने सन् 1954 इण्टर विज्ञान वर्ग की परीक्षा उत्तीर्ण की जिसमे जिला स्तर पर उन्हें प्रथम स्थान प्राप्त हुआ तथा उन्हें स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने बी. एससी. की परीक्षा उत्तीर्ण की।''[3] वे आगे की पढ़ाई भी विज्ञान वर्ग से करना चाहते थे, किन्तु आँखों की रोशनी कम होने के कारण वे सफल न हो सके। दूसरा कारण आर्थिक अभाव था। फिर उन्होंने मुक्तेश्वर के स्कूल में शिक्षण कार्य करते हुए आगरा विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में एम. ए. में प्रथम स्थान प्राप्त किया तत्पश्चात् भोपाल विश्वविद्यालय से पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

''शाह जी ने सर्वप्रथम क्रमशः अल्मोडा के निकट बाडेछीना तथा मुक्तेश्वर में अध्यापन कार्य किया। एम. ए करने के बाद उनको प्रथम नियुक्ति डिग्री कॉलेज गंजडुडवारा (एटा) में मिली। इसके एक वर्ष बाद अर्थात् सन् 1961 में मध्य प्रदेश उच्च शिक्षा विभाग के अन्तर्गत भोपाल शासकीय हमीदिया कॉलेज में नियुक्त हुए।''[4] वहाँ से पदोन्नत होकर सन् 1964 से 1971 तक सरकारी महाविद्यालय सींधी में रहे। सन् 1971 से 1973 तक

शासकीय हमीदिया विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.) में अध्यापन कार्य किया। सन् 1997 में भोपाल के हमीदिया महाविद्यालय से अंग्रेजी के विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद निराला सृजन पीठ के निदेशक (दिसम्बर 2000 तक) रहे।

रमेशचन्द्र शाह समकालीन हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकार हैं। वे उस पीढ़ी के साहित्यकार हैं, जिसने साहित्य को अत्यधिक संजीदगी से जिया, बाद के पचड़े में न पड़ते हुए साहित्य को विनय भाव से जीने वाली इस पीढ़ी की झलके इनके लेखन में स्पष्ट हैं। शाह जी मेरी प्रिय कहानियों की भूमिका में लिखते हैं, 'पद्य रचने की आनन्दमयी उत्तेजना मुझपर बहुत जल्दी हावी हो गयी थी अंग्रेज कवि पोप की गर्योक्ति याद आती है कि मैंने तो तुतलाना भी पद्य में ही सीखा वह स्वभावोक्ति है मेरे लिए गर्वोक्ति नहीं।'[5] तीसरी कक्षा में पढ़ता था शायद जब पहली कविता लिखी। मगर अपनी पहली कहानी 'तबलची; मैंने दसवीं में पढ़ता था तब लिखी। उनका प्रथम कहानी संग्रह 'जंगल में आग' सन् 1961 में प्रकाशित हुआ। इसके बाद मुहल्ले का रावण (1980), 'मानपत्र' (1906), 'प्रतिनिधि कहानियाँ (1992) तथा चर्चित कहानियाँ (1995) में प्रकाशित हुईं। इसी बीच इण्डिया टुडे साक्षात्कार, आजकल आदि पत्रिकाओं में उनकी नवीनतम् कहानियाँ भी प्रकाशित होती रहीं। इनका प्रथम उपन्यास 'गोबर गणेश' 1977 में प्रकाशित हुआ।

एक रचनाकार के रूप में शाह जी कवि, समालोचक, निबन्धकार कहानीकार, उपन्यासकार और नाटककार के प्रतिदर्श है, एक अनुवादक के रूप में भी उनका महत्वपूर्ण अवदान है। उन्होंने यात्रा वृत्तान्त, डायरी और पत्र लेखन भी किया है। एक रचनाकार के रूप में ये सारी भूमिकायें उनके व्यक्तित्व को विभाजित नहीं करतीं, बल्कि उसे एकीकृत करती हैं। साहित्य जगत में उनकी छवि एक ऐसे बुद्धिजीवी की है जो विविध विधाओं की व्यापक भूमिका के सन्दर्भ में साहित्य के प्रश्नों और अपनी सृजनात्मकता को समझने–रचने का प्रयत्न करता है।

शाह जी की रचनात्मकता पहले–पहल कविताओं के माध्यम से प्रकट हुई। उनका मानना है कि वे अपनी जीवनाभूतियों को समझने के लिए वाह्य एवं आंतरिक अराजकता से जूझते हुए तथा उसके बीचो–बीच एक संतुलन प्राप्त करने के लिए ही कविता लिखते हैं। कविता की प्रक्रिया तथा जीवन की प्रक्रिया के बीच कहीं कोई गहरा सम्बन्ध अवश्य है। वे कहते हैं कि कविता लिखते हुए हम भाषा और शब्द की ऐसी छुपी हुई ताकत का पता पाते हैं जो अन्यत्र नहीं पा सकते। प्रभात त्रिपाठी ने उनके कवि कर्म पर विचार करते हुए लिखा है, ... ''अपनी समूची सर्जनात्मक परम्परा को आत्मसात् करने की एक निरन्तर जारी प्रक्रिया से गुजरते हुए ही उन्होंने अपनी आधुनिकता हासिल की है। उनकी कविता की आस्वाद प्रक्रिया में आरम्भिक और लगभग प्रत्यक्ष पाठकीय अनुभव यही होता है कि इसकी आधुनिकता एक गहरे अर्थ में, बल्कि संरचनात्मक स्तर पर सक्रिय देशज आधुनिकता है, जो अभिजन और जन की अंतः क्रियाओं के आंतरिकरण की जटिल प्रक्रिया से गुजरने पर ही हासिल हो सकती है। सामयिक साप्रतिक अर्थ में वर्तमान को एक व्यक्ति की हैसियत से झेलते हुए यथोचित प्रश्नाकूलता, जिज्ञासा और व्यक्तिगत हिस्सेदारी के साथ वे कविता के रूपाकार के प्रश्नको उतना ही महत्व देते हुए उसे रचते हैं जितना अनुभव और ज्ञान से प्राप्त अन्तर्दृष्टि को प्रकृति परंपरा परिवेश और पुराण को अपने में समाने की कोशिश करती उनकी कविता अपनी पद्यात्मक सुघड़ता और रंजकता के बावजूद जीवन की जटिलताओं से बच निकलने और आत्म को महफूज बनाये रखने की कविता नहीं है। इतिहास पुराण बाँचते हुए

संप्रति की आँच में दहते हुए शाह साधारण जन की दुनियाँ के व्यक्ति हैं।'[6]

उनकी कविताओं में समाज वर्गों में बँटा नहीं नजर आता, बल्कि एक अविभक्त सगुण ईकाई के रूप में द्रष्टव्य है। इनकी कविताओं का संग्रह कछुये की पीठ पर 1974 में प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात् हरिश्चन्द्र आओ (1980), नदी भागती आयी (1988), 'उकाव हुलार कुमाऊँनी कविता संग्रह (1993), प्यारे मुचकुन्द को (1994), चाक पर (1998), देखते हैं शब्द भी अपना समयश (2000), अनागरिक (2004), आधुनिक कवि माला (2010) में प्रकाशित हुई।

शाह जी कथा साहित्य के क्षेत्र में भी सक्रिय रहे हैं और कहानीकार तथा उपन्यासकार के रूप में उनकी चर्चा रही है। उनके उपन्यास गोबर गणेश (1977) में, किस्सा गुलाम (1986), पूर्वापर (1990), आखिरी दिन (1992) पुनर्वास (1995), आप कहीं नहीं रहते विभूति बाबू (2001), सफेद परदे पर (2006), कमवख्त इस मोड़ पर (2007), विनायक (2010) आसवाब–ए–वीरानी (2011) कथा सनातन (2012) में प्रकाशित हुए तथा कहानी संग्रह– जंगल में आग (1978), मुहल्ले का रावण (1982), मानपत्र (1992), मेरी प्रतिनिधि कहानियाँ (1994), थियेटर (1998), चर्चित कहानियाँ (1998), गेटकीपर (2007). मेरी प्रिय कहानियाँ (2014) में प्रकाशित हुई।

एक निबन्धकार के रूप में भी शाह की ख्याति है। ''उन्होंने आत्मव्यंजक और विचारक दोनों ही प्रकार के निबन्ध लिखे हैं। जहाँ आत्मव्यंजक निबन्धों में उन्होंने संवेदना के नये आयाम प्रस्तुत किए हैं, वहीं विचारात्मक निबन्धों में उनके मौलिक विचारों और गहन चिन्तन को देखा जा सकता है।''[7] उनके चिन्तन में दर्शन के तत्वों का परिपाक बराबर मिलता है जिसके माध्यम से वे आधुनिकता और परम्परा की टकराहट से उपजी समस्याओं का समाधान देने का प्रयास करते हैं। उनका प्रथम निबन्ध–संग्रह रचना के बदले 1969 में प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात् शैतान के बहाने (1980), आडू का पेड़ (1984), पढ़ते–पढ़ते (1987), स्वधर्म और कालगति (1996), स्वाधीन इस देश में (1996), नेपथ्य से (2002), हिन्दी की दुनियों में (2007), देहरी की बात (2009), अगुन–सगुन बिच (2011), नैमित्तिक (2015) में प्रकाशित हुए।

शाह जी समालोचक की दुनियों में भी सक्रिय रहे हैं। इस सन्दर्भ में उनका कहना है, 'मैं आलोचना में इसलिए प्रवृत्त हुआ ताकि साहित्य में सच की बात को जोर देकर कह सकूँ और कृतियों को सीधे मर्मस्वादन तथा विश्लेषण के द्वारा उस बात को स्थापित कर सकूँ जो आलोचना साहित्य की इतनी बड़ी संभावना और शक्ति को न पहचानकर उसे किसी दूसरे अनुशासन का पिछलग्गू बनाने में जुटी दिखती हैं, उनका भी डटकर व्याख्यान कर सकूँ।'[8] उनकी प्रथम समालोचना समानान्तर (1973), छायावाद की प्रासंगिकता (1974), जयशंकर प्रसाद (1979), वागर्य (1981), सबद निरन्तर (1987), अज्ञेय (1990), भूलने के विरूद्ध (1990), आज्ञेय वार्गय का वैभव' (1995). आलोचना का पत्र (1998), समय संवादी (2005) में प्रकाशित हुई। साथ ही, इन्होंने अन्य क्षेत्रों में भी लेखन कार्य किया है। इनकी सम्पादित कृतियों जड़ की बातश (1988). प्रसाद रचना संचयन (1991) अज्ञेय काव्य स्तवक' (1995), निराला संचयिता (2001) में प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त सर्वविधा, संकलन के अन्तर्गत बहुवचन (1998), मेरे साक्षात्कार (2004) में, नाटक के क्षेत्र में मारा जाई खुशरा (1982) अनुवाद के क्षेत्र में मटियावुर्ज (1990), छंद और पक्षी (2005), दूर देखती आँखे (2005), डायरी के अन्तर्गत – अकेला मेला (2009), इस खिड़की से (2010), आज और अभी (2012), जंगल जूही (2014), आग्लभाषा के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद (1978), येट्स एण्ड इलियट : पर्सपेक्टिव्ज ऑन इंडिया (1983), येनसेस्ट्रल वायसेस (2001), द स्पोक भर्तृहरि

(2009), व्यूर्वापर (2012), बाल साहित्य के रूप में गोलू के मामा (1984), जादू सपना (1991), हाथी की करतूत (2004), नाना के गीत (2010), दो बाल नाटक फाटक तथा टिम्बकटू (2012) इनकी अनमोल कृतियाँ है।

शाह जी द्वारा साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के आलोक में इन्हें सन् 1974 में कहानी पत्रिका का सर्वश्रेष्ठ कहानी पुरस्कार, 1978 में आलोचक पुस्तक 'छायावाद की प्रासंगिकता पर मध्य प्रदेश साहित्य परिषद के नन्ददुलारे वाजपेयी पुरस्कार से, 1979 में कविता संग्रह 'नदी भागती आई' के लिए मध्य प्रदेश का भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार, 1994 में पूर्वापर उपन्यास के लिए भारतीय भाषा परिषद कोलकाता का पुरस्कार, 2001 में के. के. फाउन्डेशन द्वारा व्यास सम्मान, 2001 में विमलादेवी न्यास, अयोध्या का द्विजदेव सम्मान, 2004 में भारत सरकार द्वारा पश्री अलकरण, 2005 में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से 'यात्रा एवं लम्बी छाँह' के लिए महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार, 2007 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा साहित्य वाचस्पति की उपाधि, 2009 में मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग का मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, 2015 में विनायक उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी सम्मान, 2015 में राष्ट्रमण्डल, रायपुर द्वारा राष्ट्रीय मुक्तिबोध सम्मान द्वारा अलंकृत किया गया।

रमेश चन्द्र शाह की ख्याति एक कवि, कथाकार, निबन्धकार, चिन्तक एवं आलोचक के साथ–साथ नाटककार, यात्रा वृत्तान्त लेखक, अनुवादक और सम्पादक के रूप में भी है। उनका रचना संसार अत्यन्त व्यापक है और साहित्य की विभिन्न विधाओं में वे अपनी रचनाओं के माध्यम से हर बार कुछ नया और अर्थपूर्ण करना चाहते हैं। सृजन के व्यापक फलक पर जीवन की गहन–गूढ़ चिन्तनयुक्त सहज प्रवाहमयी अभिव्यंजना शाह को प्रसाद और अज्ञेय की परम्परा में ला खड़ा करती है।

**संदर्भ :–**


1. जोशी, माया– रमेश चन्द्र शाह और उनका रचना संसार 2012, आधारशिला प्रकाशन हल्द्वानी नैनीताल संस्करण 2012
2. शाह, रमेश चन्द्र मेरी प्रिय कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली संस्करण, 2012
3. जोशी, माया– रमेश चन्द्र शाह और उनका रचना संसार 2012, आधारशिला प्रकाशन हल्द्वानी नैनीताल संस्करण 2012
4. अक्षरा साहित्य की द्विमासिक पत्रिका, मार्च–अप्रैल, 2011
5. शाह, रमेश चन्द्र मेरी प्रिय कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली संस्करण 2012
6. पोखरिया, देव सिंह– हिन्दी साहित्य को कूर्मांचल की देन, अंकित प्रकाशन हल्द्वानी नैनीताल संस्करण 2015
7. शर्मा, क्षितिज, प्रासंगिक (अ) प्रासंगिक, मिश्रा पब्लिशर एंड डिस्ट्रीब्यूटर दिल्ली 2010
8. शाह, रमेश चन्द्र– जंगल जूही (डायरी) किताब घर प्रकाशन दिल्ली संस्करण 2014



मोबाईल नंबर– 9690716968

Email – kusumlatastg@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 265-269

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# हिंदी उपन्यासों में चित्रित गाँधी आंदोलन

**निशा साहू**

असिस्टेंट प्रोफेसर – हिंदी, गिंदो देवी महिला महाविध्यालय, बदायूं, उत्तर प्रदेश।

उपन्यास वह गद्य रूप है जिसे आधुनिक युग का महाकाव्य कहा जा सकता है। महाकाव्य में उस प्रबंध की ध्वनि है जो जीवन के बहुविध विस्तार को समेटने में सक्षम है। हमारे यहाँ 19वीं सदी के उत्तरार्ध से ऐसी कृतियां मिलने लगती है जिन्हें उपन्यास की संज्ञा दी जा सकती है। उसमें गल्प का तत्व भी है और रोमांस का तत्व भी। पर सच्चाई यह है कि उपन्यास का स्वरूप बहुत कुछ बदलता रहता है। वस्तुतः 'उपन्यास' शब्द में ही अर्थ की विविधता है। जीवन के सभी रूपों के बीच कोई ऐसा संबंध होता है जिसे उपन्यास उघ्द्घाटित करता है।

उपन्यास एक आधुनिक गद्य रूप है जो जीवन को समग्रता में या कभी टुकड़ों में देख पाता है। प्रेमचंद के अनुसार 'मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है। पर हम उपन्यास के अब तक के विकास के बाद कह सकते है कि वह चित्र मात्र नहीं है। वह झलक भर नही है। वह हमारी आँखें खोल देता है और यथार्थ को हम कुछ और ही तरह से देखने लग जाते हैं।'

उपन्यास इस युग का बहुत ही लोकप्रिय साहित्य है। शायद ही कोई पढ़ा लिखा व्यक्ति इस जमाने में ऐसा मिले जिसने दो–चार उपन्यास न पढ़े हो। यह बहुत मनोरंजक साहित्यांग माना जाने लगा है। आजकल जब किसी पुस्तक को बहुत मनोरंजक पाया जाता है तो प्रायः कह दिया जाता है कि इस पुस्तक में उपन्यास का–सा आनंद मिल रहा है। किसी किसी यूरोपियन समालोचक ने उपन्यास के एकमात्र गुण उसकी मनोरंजकता को ही माना है। इस साहित्यांग (उपन्यास) ने मनोरंजन के लिए लिखी जाने वाली कविताओं का ही नहीं, नाटकों का भी रंग फीका कर दिया है क्योंकि पांच मील दौड़कर रंगशाला में जाने की अपेक्षा 500 मील दूर से ऐसी किताब मांगा लेना कहीं अधिक आसान हो गया है जो अपना रंगमंच अपने पन्नों में लिए हुए हो।

'राष्ट्रपिता' के रूप में जाने जाने वाले महात्मा गाँधी ने भारतीय स्वतंत्रता की लड़ाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके ब्रिटिश सरकार विरोधी स्वतंत्रता अभियान भारत की स्वतंत्रता हासिल करने में प्रभावी रहे। सभी स्वतंत्रता आंदोलनों में उनका नेतृत्व अहिंसक सिद्धान्त पर आधारित थे। मुक्ति संग्राम के दौरान उन्होंने हमें जो सबसे महत्वपूर्ण सबक सिखाया वह था, कभी हार ना मानना और अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए अहिंसा का प्रयोग करना।

भारतीय राजनीति में गाँधी जी का 1916 से 1948 तक प्रभाव परिलक्षित है। गाँधी और उनके सैद्धांतिक

विचारों का प्रभाव हिंदी साहित्य पर भी पड़ा। अतः इस युग को अगर हम गांधीवादी युग की संज्ञा दे तो अनुचित ना होगा। हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में गाँधी के सिद्धांतों और उनके आंदोलनों को साहित्य लेखन का विषय बनाया गया। हम इसी गांधीवादी युग के उपन्यासों की चर्चा करेंगे जो गाँधी के आंदोलन को अपने उपन्यास लेखन का विषय बनाया है।

गाँधी जी के निम्न प्रमुख आंदोलन है जिस पर उस युग में उपन्यास लिखे गए :–

**1. स्वदेशी आंदोलन :–**

वैसे तो स्वदेशी आन्दोलन के रूप में बंगभंग (1905) के बाद ही इस आंदोलन की शुरुआत हो जाती है। कलकत्ता में सर्वप्रथम विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई लेकिन महात्मा गाँधी ने इस आंदोलन को देशव्यापी बनाया। इसका स्पष्ट चित्रण प्रेमचंद ने अपने 'गबन' उपन्यास में देवीदीन खटिक के माध्यम से किया। उनके दो नौजवान बेटे विदेशी वस्त्रों की दुकान पर धरना देते हुए अपने प्राणों की बलि देते है। 'कर्मभूमि' का अमरकांत चरखे का महत्त्व विस्तार से बताता है। 'रंगभूमि' में प्रेमचंद विदेशी कल–कारखानों का विरोध करते हुए घरेलू उद्योग–धंधों के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की है। स्वदेशी आंदोलन केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तक ही सीमित नहीं रहा अंग्रेजी भाषा के विरूद्ध स्वभाषा और स्वसंस्कृति के क्षेत्र तक व्याप्त था। प्रेमचंद ने अपने 'सेवासदन' में विठ्ठलदास के माध्यम से स्वभाषा के महत्त्व को रेखांकित किया है कि 'यह मानसिक गुलामी उस भौतिक गुलामी से गई गुजरी है। आप उपनिषदों को अंग्रेजी में पढ़ते है। गीता को जर्मन में। अर्जुन कृष्ण को कृष्ना कहकर अपने स्वभाषा ज्ञान परिचय देते हैं।

वस्तुतः गाँधी जी का स्वदेशी आंदोलन चरखा तथा खादी के प्रचार से जुड़ा था। गाँधी जी के इस आंदोलन का प्रतिनिधित्व करते हुए श्रीनाथ सिंह ने अपने उपन्यास श्जागरणश में कृपाशंकर के माध्यम से कहा, 'आप हाथ से काते और बुने वस्त्र का व्यवसाय करें तो देश का जो धन विदेश को जा रहा है, वह तो बचे ही, साथ ही देश के किसानों की बेकारी और गरीबी भी दूर हो जाए।' उषा देवी मित्रा के उपन्यास 'वचन का मोल' में चरखा और खादी के महत्व को रेखांकित करते हुए इसे नए जागरण चिन्ह सिद्ध किया है। राधिकारमण प्रसाद सिंह ने अपने 'गाँधी टोपी' शीर्षक उपन्यास में देश की बोली और 'खादी की झोली' के नारे द्वारा खादी को सदाकत (सत्य) की पताका सिद्ध किया है। यज्ञदत्त शर्मा ने अपने 'दो पहलू' उपन्यास में 'चरखे और खद्दर' में स्वराज और भारत की स्वतंत्रता को मूर्तिमान माना है। प्रताप नारायण श्रीवास्तव के उपन्यास 'बयालिस' में गांव के बदले हुए रंग का चित्रण है जिसमें चर्चे की मनमनाहट और खद्दरधारी स्त्री पुरुषों की बहुसंख्या दिखाई देती है। इससे स्पष्ट है कि चरखा और खादी के रूप में गाँधी जी का स्वदेशी आन्दोलन 'स्वराज' के एक प्रतीक के रूप में गांवों में प्रविष्ट हुआ। इसने राष्ट्रीय आंदोलन को एक व्यापक जनाधार प्रदान किया। हिंदी उपन्यासों ने भी इस चेतना के प्रचार प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

**अजेय के उपन्यास शेखर :–** एक जीवनी ने शेखर ने स्वदेशी आंदोलन से प्रभावित होनार अपने विदेशी कपड़े उतार दिए और थोड़े से देशी कपड़ों का प्रयोग करने लगा। राहुल जी के 'भागो नहीं, (दुनिया को) बदलों' के मैया विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार पर नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं, 'पुराने गाँधी की परछाई से जौंके (शोषक) घबराती थीं लेकिन गाँधी जी के 'विदेशी माल न छुओ कहले से हिन्दुस्तानी मिलों का भाल खूध चिकने लगा, खूच नफा होने लगा तो सेठ लोग भी गाँधी जी की आरती उतारने लगे।[3]

**2. असहयोग आन्दोलन :–**

गाँधी के असहयोग आंदोलन की अभिव्यक्ति भी उपन्यासों में हुई। गाँधी जी के ओजस्वी भाषण से इतने प्रभावित हुए कि प्रेमचंद ने शिक्षा विभाग की नौकरी से स्वयं त्यागपत्र दे दिया। रंगभूमि उपन्यास में राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित कुमार साहब श्रीमती जानसेवक की पार्टी में जाने से इन्कार कर देते हैं। इंदू अपने पति राजा साहब को सूरदास के प्रति अन्यारा के कारण पद त्याग के लिए प्रेरित करती हैं। 'रंगभूमि' का पांडेपुर आंदोलन असहयोग का प्रतीक है। खाली कराए गए मकानों को गिराने के लिए कोई मजदूर तैयार नहीं होता। वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास 'प्रत्यागत' का पार गंगलदास असहयोग की व्याख्या करते हुए कहता है, 'दफ्तर और खजाने हाथ में लेना इस आंदोलन का अभिप्राय नहीं है। हम लोग तो इस आंदोलन द्वारा सरकार की सारी कलाबाजी को ऐसा बेकार कर देना चाहते हैं कि संपूर्ण देश इसे धता बता दे और शासन की बागडोर अपने हाथ में कर ले।'[(4)] इलाचंद जोशी ने अपने 'संन्यास' उपन्यास में इस बात की पुष्टि की है कि हमारे देश की वर्तमान शिक्षा प्रणाली दास मनोवृत्ति की पोषक है और उन्होंने विद्यार्थियों को स्कूल तथा कॉलेजों को छोड़ देने की सलाह दी थी। धनीराम 'प्रेम' ने अपने उपन्यास 'मेरा देश' में विमल दवारा अपनी माँ से असहयोग के बारे में सुनते ही गाँधी जी की जय बोलते हुए स्कूल पेट देने का निर्णय लेता है। उदय शंकर भट्ट के उपन्यास 'डॉ. शेफाली' में प्राणनाथ ने असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर पांचर्वी से ही पढ़ना छोड़ दिया। दुर्गाशंकर मेहता के 'अनबुझी प्यास' उपन्यास में असहयोग के प्रभाववश लोगों द्वारा त्यागपत्र देने का उल्लेख है। निराला जी के 'कुल्लीभाट' का कुल्ली गांधीजी से प्रभावित होकर अदालत में स्टांप बेचने का काम छोड़ कर गाँधी जी की बाते करने लगता है।

**3. किसान आंदोलन :–**

चौरी चौरा हत्याकांड के बाद गाँधी जी को असहयोग आंदोलन वापस लेना पड़ा। उसके बाट उन्होंने किसान आंदोलन का सूत्रपात किया। 'सेवासदन' में कुतर अनिरुद्ध द्वारा कृषक सहायक सभा की स्थापना किसान आंदोलन का संकेतक है। सरकारी दमन और क्रूरता के बावजूद गाँधी जी का 'खेड़ा सत्याग्रह' जिस प्रकार सफल हो उसी प्रकार 'प्रेमाश्रम' में प्रेमशंकर के नेतृत्व में चलने वाला लखनपुर गांव का किसान सत्याग्रह सफल होता हैं। श्रीनाथजी के 'जागरण' उपन्यास में कृपाशंकर कृषक आंदोलन का सूत्रपात करता है। निराला के 'अलका' उपन्यास में भी किसान आंदोलन का उभार दिखाया गया है। राहुल सांकृत्यायन ने अपने 'भागो नहीं (दुनिया को) बदलों' में भैया नामक पात्र से चंपारण सत्याग्रह का गुणगान करते हुए कहलवाया है, 'गाँधी जी के उपकार को बहुत मानता हूँ। उन्होंने ही चंपारण के निलहे (नील की खेती कराने वाले) साहबों के मद को चूर किया और सैकड़ों वर्षों से भेंड़ बने सियारों को शेर बनाया।' नागार्जुन के 'बलचनमा' और 'बाबा बटेसरनाथ के साथ रेणु के 'मैला आंचल' में किसान आंदोलन विशेष रूप से चंपारण सत्याग्रह का सुंदर चित्रण हुआ है लेकिन यह स्वातंत्र्योत्तरकाल के उपन्यास है।

**4. अछूतोद्धार आंदोलन :–**

राष्ट्रीयता के उन्नायक गाँधी जी ने भी अछूतोंधार का आंदोलन चलाया था लेकिन उन्होंने परंपरागत भारतीय वर्णव्यवस्था को स्वीकार करते हुए उसके जातिगत आधार को भी एक प्रकार से अपनी स्वीकृति दी थी। उन्होंने जाति के आधार पर छुआछूत और ऊंच–नीच की भावना को अपना उद्देश्य बनाया है।

गांधीवादी प्रभाव से प्रभावित होकर ही प्रेमचंद 'कर्मभूमि' में अछूतों के प्रसंग में नैना के द्वारा महात्मा ब्रह्मचारी के काले कारनामों का भंडाफोड़ इस प्रकार करते हैं, 'तुम बड़े धर्मात्मा बने हो। आधी रात तक इसी मंदिर में जुआ खेलते हो, पैसे–पैसे पर ईमान बेचते हो, झूठी गवाहियां देते हो, फिर भी तुम धर्म के ठेकेदार हो। 'गोदान' के चमार पंडित मातादीन और सिलिया प्रेमकांड में पंडित दातादीन की मिट्टी पलीत करते हैं। 'कर्मभूमि' में अमर के माध्यम से प्रेमचंद ने झूठे धार्मिक तथा सामाजिक पाखंडी को उजागर किया है। 'प्रतिज्ञा' में जब अमृतराय किसी विधवा से शादी करने की प्रतिज्ञा करता है तो रूढ़िवादी कमलाकांत कहता है, 'रहेगी बिरादरी की विधवा न कि बिरादरी की भी कैद नही रही। प्रेमचंद के उपन्यासों में दलित समुदाय के लिए गए पात्रों की एक लंबी कतार है जो अपने चरित्र से अपने प्रति सहानुभूति अर्जित करते हैं।

**5. सविनय अवज्ञा आंदोलन :–**

असहयोग आंदोलन की अगली कड़ी सविनय अवज्ञा आंदोलन है। इसके अंतर्गत मुख्यतः 'नमक सत्याग्रह' और 'लगानबंदी' आंदोलन आते हैं। नमक सत्याग्रह एक प्रतीकात्मक आंदोलन था जो महात्मा गाँधी की 'दांडी यात्रा' के नाम से प्रसिद्ध है। इस यात्रा का अत्यंत भावात्मक चित्र राजाराधिका रमण सिंह ने अपने उपन्यास 'पुरुष और नारी' में किया। 'दो पहलू' में यज्ञदत्त शर्मा ने गांव गांव में इस सत्याग्रह के प्रसार का चित्रण किया है। मन्मथनाथ गुप्त के 'बलि का बकरा' में 'घरसना नामक नमक गोदाम सत्याग्रह' का चित्रण किया गया है। यहाँ गाँधी के नेतृत्व में नमक के कारखाने पर धावा बोलकर नमक को अपने कब्जे में लिया गया है। भगवतीचरण वर्मा ने अपने उपन्यास 'भूले बिसरे चित्र' में भी नमक सत्याग्रह के देशव्यापी प्रचार को चित्रित किया है।

नमक सत्याग्रह की तरह लगानबंदी का आंदोलन प्रतीकात्मक नहीं था। निराला ने अपने 'अलका' उपन्यास में लगानबंदी के कई प्रसंग दिए हैं जिसमें किसानों का शोषण, दमन गाली–गलौज और मारपीट की घटनाएं भी चित्रित है। गाँधी इर्विन पैक्ट के बाद लगानबंदी के आंदोलन में बंद राजनीतिक कैदियों को छोड़ दिया गया इससे लोगों में जो विश्वास और प्रसन्नता का माहौल बना उसका चित्र मन्मथनाथ गुप्त ने अपने उपन्यास 'अपराजित' में इस प्रकार प्रस्तुत किया है, 'लोगों में जोश था, सबके चेहरे खिले हुए थे, जैसे स्वराज अभी नहीं आया था पर उसके भिनसार की पहली किरणें दिखाई पड़ रही थी।'

**6. भारत छोड़ो आंदोलन :–**

राष्ट्रीय आंदोलनों में 'भारत छोड़ो आंदोलन' विशेष महत्व रखता है। इस समय तक गाँधी जी का धैर्य पूरी तरह जवाब दे चुका था। उन्होंने भारत की स्वाधीनता के लिए 'करो या मरो' तक की छूट भारतवासियों को दे रखी थी। अंचल ने अपने उपन्यास 'नई इमारत' में भारत छोड़ो आंदोलन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से विचार किया है। आंदोलन की मूल चेतना को आरती के शब्दों में इस प्रकार प्रस्तुत किया है, 'हम मिट भी गए तो क्या होगा, लोग आते है, चले जाते हैं, पैदा होते हैं...जीते हैं –मरते हैं। पर आजादी की लड़ाई तब तक जारी रहती है, जब तक मुल्क से जुल्मी सरकार खत्म नहीं हो जाती। प्रतापनारायण श्रीवास्तव ने अपने 'बयालीस' उपन्यास में करो या मरो की भावना को नरेंद्र के शब्दों में प्रस्तुत किया। आचार्य चतुरसेन शास्त्री का 'धर्मपुत्र', मैरो प्रसाद गुप्त का 'मशाल', ब्रजेन्द्र गौड का 'पैरोल' आदि उपन्यास भारत छोड़ो आंदोलन के तूफान को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि प्रेमचंद से लेकर हिंदी के अधिकांश उपन्यासकारों ने गाँधी आंदोलन को अपने उपन्यासों का विषय बनाया। 1915 से लेकर 1947 तक का उपन्यास साहित्य हमारे राष्ट्रीय जागरण और मुक्ति संघर्ष का जीवन्त साहित्य है और इस साहित्य में गाँधी आंदोलन की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई।

**संदर्भ ग्रंथ :-**


1. प्रेमचन्द, साहित्य का उद्देश्य (निबंध संग्रह), साहित्य सरोवर प्रकाशन।
2. प्रेमचन्द, सेवासदन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
3. राहुल सांकृत्यायन, भागो नहीं (दुनिया को) बदलो, किताब महल प्रकाशन, 2014
4. वृंदावनलाल वर्मा, प्रत्यागत, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
5. राहुल सांकृत्यायन, भागो नहीं (दुनिया को) बदलो, किताब महल प्रकाशन, 2014
6. प्रेमचन्द, कर्मभूमि, फिंगरप्रिंट पब्लिशिंग हाउस, 2015
7. प्रेमचन्द, प्रतिज्ञा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 270-274

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# GANDHI'S VISION OF NATIONAL LANGUAGE

**Dr. Anshu Puri**

Professor, Public Administration,

Principal, Govt. Girls College, Behror, Rajasthan

"A language is an exact reflection of the character and growth of its speakers".

-(Mahatma Gandhi)

**ABSTRACT :-**

Father of nation is the title given in India to Mohandas Karamchand Gandhi,who is most commonly known as Mahatma Gandhi all over the world. Mahatma Gandhi was a lawyer,politician, social activist and a great writer. He took an active part in the Indian Independence movement against the British rule, and is mainly famous in the world for his non- violent ways of resistance and movements. The selection of one common National language for India occupied an important place among Gandhiji's ideals. He was of the opinion that there should be a common National language acceptable to most Indians rich and poor. He strongly believed that the National language chosen should be the language with which the masses can identify themselves.This national language will play an important role to bridge the gap between the different communities,cultures and regions and will further help in bringing people together. He wanted the national language of India to be a language which can be easily learnt and spoken by the masses and most Hindus and Muslims of the country. He termed this language of the masses as "Hindustani" which consisted amalgamation of both Hindi and Urdu words. This Hindustani language is however quite different from the present day official language Hindi mainly based on Devnagariscript.Hindi was adopted by the constitution of India as the official language of India in 1949.This is different from 'Hindustani" language what Gandhiji advocated which was an admixture of Devnagari and Persian scripts.

**Keywords :-** Mahatma Gandhi, Non violence, Hindi, National language, Hindustani

**INTRODUCTION :-**

With emergence of the independent India during the British rule, the topic of one common language became a strong matter of controversy and conflict among the leaders of the nation and East

India company officials. When National language debate was gaining momentum the literacy rate in India was very low around 5.35 in 1901 and 9.5% in 1931 (Census 1931). . Gandhiji advocated Hindustani a mix of Devnagri and Persian script as the language for the whole nation which according to him could serve as a bridge between the two main communities at the time of independence, namely Hindu's and Muslims. In the contest for status of national language ,Hindustani and Urdu languages were counter parts of Hindi. The strong supporters of Hindi opposed the idea of Hindustani ,as supported by the progressive writers of that time and Gandhiji ,and advocated the use of Sanskritised Hindi.(Teli 2009). They advocated that Sanskrit is the pure and divine language of Hindus so only Hindi can bear the cultural heritage of the community and should be given the status of national language. The supporters of Hindi were preparing a language which was highly Sanskritised and did not belong to the common people specially Hindu and Muslim communites of the marginalised groups.

**GANDHIJI'S CONCEPT OF HINDUSTANI :-**

With the efforts of Gandhiji, the issue of national language and Hindi came into the mainstream debate."The most important advocate of a common Indian language designed to unify the national movement was Mahatama Gandhi".(Das Gupta,1970)

Mahatma Gandhi was of the opinion that there should be one National language that almost all common people of India could easily understand. Hindustani a blend of Hindi and Urdu was a popular language of a large section of people of India. It was a composite language and enriched by the interaction of diverse cultures. It had incorporated words and terms from many different sources over the years, and was therefore understood by people from various regions. Mahatma Gandhi thought that this multi cultural language would be an ideal language of communication between the diverse communities of India Hindus and Muslims, and simultaneously for the people of north and south. Gandhiji's explanation about what he meant by Hindi is of great relevance here and an eye-opener for all. His autobiography or 'The Study of my Experiments with Truth' clearly States his view on the national language and the place of Hindi "I call that language Hindi which Hindus and Muslims in north India speak and which is written either in Devnagri script or in Urdu script". The first mention of Hindi comes in chapter 5, "At the high school" where he says that" it is now my opinion that "In all Indian curricula of higher education, there should be a place for Hindi, Sanskrit, Persion, Arabic and English besides the vernacular.A scientific knowledge of one language makes knowledge of other languages comparatively easy".

He was also of the opinion that ,"in reality Hindi ,Gujarati and Sanskrit maybe regarded as one language and Persian and Arabic as one." Urdu according to him, was not a distinct language because it's grammar is adopted from Hindi and vocabulary from Persian and Arabic. He states"He who would

learn good Urdu must learn Persian and Arabic ,and he who would learn good Gujarati, Hindi, Marathi or Bengali must learn Sanskrit".

During the same period Rashtrabhasha Prachar Samiti was founded by Mahatma Gandhi which worked mainly in thenon Hindi speaking belt.With the aim of propagating rashtrabhasha and Hindustani language Gandhiji was in favour of Hindustani which was defined by Gandhiji in the following words"Hindustani is the language which is spoken ,understood and used by Hindus and Muslims both in cities and villages and in North India, and which is written and read both in Nagari and Persian script, and whose literacy forms are today known as Hindi and Urdu."

Gandhiji's views regarding the national language changed later in his book and he advocated Hindi or Hindustani as the National language.In chapter 36 called "The khilafat against the cow protection", he advocated that Hindi- Urdu alone could become the national language of India .He wrote "The khilafat meeting affoded me a direct proof of the fact that Hindu-Urdu alone could be the lingua franca of India".(Gandhi, 1956)

Gandhiji's advocacy of Hindustani was not consistent. In early years ,he favoured Hindi or Hindi- Hindustani and in later years he supported only Hindustani. He was a member of Hindi Sahitya Sammelan till 1945 and also presided over its sessions from time to time. He resigned from the position,when people questioned him over duality of his stand over national language. He claimed there wasn't any contradictions between his ideologies. However, Gandhiji's intervention in the matter of national language was not very effective . The use of Hindustani was not a justified solution for the linguistic diversity of India, as this was mainly concentrated in northern India and not the country as a whole, specially South India. Hindustani as a national language could only prevent dispute between Hindus and Muslims who were using language for communal purposes.

**SANSKRITISED HINDI WON THE BATTLE :-**

The process of sanskritisation of Hindi was a prevalent trend during that time in Hindi academia like Mahavir Prasad Dwivedi, Ramcharan Shukla, Chandrabali Pandey and many others who were consistently writing in favour of SanskritisedHindi . Simultaneously Gandhiji and writers of progressive writers association and other Hindustani supporters proposed and tried to implement policies vocabulary instead of sanskritised Hindi. This was criticized by pro-sanskritised Hindi lobby. Ravi Shankar Shukla commented on efforts of Gandhiji and his Wardha committee in the following words"pretty and melodious slogans such as bridging the gap between Hindi- Urdu means nothing but only removing Sanskrit words from Hindi and replacing them with Arabic Persian words"

The Hindi Sanskrit lobby had great influence in the educational institutes, politics and literary circles as most of them belong to elite class having strong relationships with influential people and

main leaders of the country. These scholars used various platforms to propagate and populariseases Hindi like journals magazines such as Saraswati,Sammelan Patrika,Nagari Pracharani Patrika to name few of them. On the other hand many renowned institutes of those times like Banaras Hindu University, Dayanand Anglo -Vaidik Institution started to use sanskritised Hindi as their medim of teaching. To aid them many textbooks, journals and newspapers started providing knowledge and information in the same Sanskritised Hindi language.(Kumar 2005). This Pro Sanskrit Hindi lobby included many famous personalities like Seth Govindas ,K.M. Munshi, Purushottam Das Tandon who were also the members of the Constituent Assembly headed by Dr B.R Ambedkar.

In India , the question of national language did not emerge as a result of the thrust for knowledge or renaissance ,but for the quest of political gain ( Teli). The status of national language or official language was going to provide not only a prestigious status but also avenues for political games to people who are advocating this sanskrutized Hindi. 10 Hindi was given the status of official language in Indian constitution and one the long fought battle. The constitution of India thus provided for the use of Hindi in Devnagari script as the official language of India in 1949. Article 343 states that "the official language of the union shall be in Hindi in the Devnagari script. (Basu).

**CONCLUSION :-**

Be it Mahatma Gandhi, Rajendra Prsad, J.L Nehru, Sardar Valab Bhai Patel and others, all devoted their whole life to popularize and strengthen the Indian language's including Hindi Mahatma Gandhi associated the official language with nationalism, as he once said that" if you want to understand the consciousness of this country, then you cannot understand it without your own languages." Gandhiji was against English, which he saw as the language of administrators, but found it absolutely necessary to have a common language for the nation as a whole. Mahatma Gandhi's books, letters, writings, statements and practices have attracted much political and scholarly analysis of his principles, beliefs and practices. Some writers present him as a paragon of ethical living and pacifism, while others portray him as a contradictory complex character influenced by circumstances and culture Kumar[9].

The above analysis of the writings and practices of Mahatma Gandhi by numerous scholars clearly indicates that Gandhiji wanted a national language to be spoken by masses or common people so that they could relate to each other as citizens of one nation. He advocated Hindi in the form of a simplified Hindi called Hindustani and not the Hindi of Devnagari script which was a prevalent form of Sanskritised Hindi during those times.As Asha Sarangi, a professor of political science emphasised in her article " it would be 'absolutely wrong' to say that Gandhi wanted Hindi as the national language. 'Gandhi, in fact, wanted to secularise the language and emphasised on Hindustani". Similarly another scholar concluded that" Indeed Gandhi was in favour of linguistic unification, he believed that one

language would keep the country together and unified ,and that language was Hindustani"(Ganpat Teli, who teaches Hindi at Jamia Millia Islamia. He has researched on Gandhi and language nationalism during India's Independence movement).

He wrote (Gandhi and his Hindustani) 'This is a general notion that Gandhiji was in favour of the colloquial form of language. In his first Indore speech in 1918 he said, 'I have often said that Hindi is that language which is spoken in the North by both Hindus and Muslims and which is written either in the Nagari or the Persian script. This Hindi is neither too Sanskritized nor too Persianized. The sweetness which I find in the village Hindi is found neither in the speech of Muslims of Lucknow nor in that of the Hindu pandits of Prayag. The language which is easily understood by the masses is the best. All can easily follow the village Hindi'," (Gandhi 1956).In the words of William L. Richter, "He sought to unite Hindus and Muslims into one nation through use of composite Hindu-Urdu vocabulary and both scripts"(Richter 1970).Gandhiji was quite confident about this solution, as he wrote in 1948, "I may be alone today in my belief, but it is obvious that ultimately it is neither Sanskritised. Hindi nor Persianised Urdu which will win. It is only Hindustani which will win ultimately, and using one common language in national practice is necessary for the progress of the country.

**REFERENCES :-**


1. Basu DD introduction to the constitution of India pp56 to 70 26 edition Lexus Nexus publication 2022.
2. Chandramauli Singh registrar general and census commissioner India chapter 6 state of literacy education for all 2011.
3. Gandhi M K thoughts on national language navjeevan publishing house Ahmedabad 1956.
4. Kumar k. political agenda of education a study of colonialist and nationalist ideals sage publications New Delhi 2005.
5. Sarangi Asha "Enumeration and the Linguistic Identity Formation in Colonial North India, studies in history PP 197 to 27 sage publications 2009. September 17 2019.
6. Shukla R.S, and Maulana Gandhi publisher durare Lal president Ganga pustak mala karyalay Lucknow 1946 page 17.
7. Shukla R.S, Hindi aur Urdu ka muqabla Saraswati January 1947.
8. Teli Ganpat,Revisiting the making of Hindi as a national language in India, www.languageinindia,pp 12,Jan 2012.Teli Ganpat, Gandhi And His Hindustani, Language In India Vol.12, 7 July 2012.
9. Umanath Hindi Divas igneets love for own language representing public consciousness September 14,2023.



E-mail- anshupuribatra@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 275-278

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# Gandhi : The Harbinger of Cleanliness

**Dr. Subhash**

Assistant Professor of English, Govt. College, Bhattu Kalan, (Fatehabad) Haryana

**Abstract :**

Clean environment moves the mood, shorten the stress, encourage the mental equilibrium and extend the ecstasy and exuberance of existence. Health, hygiene and happiness go hand in hand like hearth and home, bread and butter. Cleanliness commences from self-realization, self-responsibility and self-removing resulting in self-rewarding and self-remuneration. "Everyone must be his own scavenger". While quoting these words Mahatma Gandhi was inspired not by politics but by his deep love for the motherland. Gandhi said, "I will neither litter not let other litter. I will initiate the quest for cleanliness with myself, my family, my locality, my village and my workplace. I believe that the countries of the world that appear clean are so because their citizens don't indulge in littering nor do they allow it to happen". It is essential for all the human being to learn about cleanliness, hygiene and sanitation. Gandhi told that cleanliness is synonym to good health and happiness. He has a great desire to introduce ideal cleanliness to the people of India where the rich and the poor, the king and the cobbler, the beautiful and the ugly find equal sway for the broom and spade to make India neat and clean. He claimed that clean house and temple are the reflection of our own values and characters.

**KEYWORDS :**

Harbinger, cleanliness, speculations, untouchable, litter, swachh, sanitation, exploitation, godliness, epitome, sufferer, culminate, surrounding, compromised, defilement, hygiene, scavenger, politics, locality, village, workplace

**Introduction :**

M.K. Gandhi is one of the most remarkable figures in human history whose thought and speculations are of inestimable and incalculable value and utility to the Indian minds. Gandhi in a nutshell can be called the father of hand hygiene & cleanliness.

Gandhi, the prophet of Truth & Non-Violence, hailed cleanliness as the sole motive of his soul and spirit. He claimed that 'Cleanliness is next to godliness'. In his dictionary even a downtrodden

cobber can live as neat and clean life as a rich and wealthy merchant having super duper financial position. It is the best way to serve the society and others. He was the real harbinger of cleanliness who learnt from his tours to west that a latrine must be as clean as a drawing room and our houses must be as clean as the temples of modern India. He emphasized that cleanliness must be started from one's own house and surrounding making it the alpha and omega of one's personal and corporate life.

He explained that, "he who is truly clean within, cannot remain unclean without. How wrong it is to ask others to be clean when we ourselves remain unclean." He stated that cleanliness of our mind and body are more important than our real independence. We are not only to keep our houses and surroundings neat and clean but also to motivate the neighbours for the same. It was his invincible determination towards cleanliness that forced the Indian Prime Minister Shri Narendra Modi to declare and to celebrate 2nd, October 2014 as a plastic free India. The movement of cleanliness initiated by Gandhi resulted in various movements of cleanliness even in the present era like Swachh Bharat Mission, Swachh Bharat Abhiyan or Clean India Mission or 'Ek Kadam Swachhta Ki Ore,' Nirmal Bharat Abhiyan. He is considered the embodiment of cleanliness that is why the logo of Swachh Bharat contains the spectacles of Gandhi signifying the entire nation together to achieve the vision of our Bapu for a clean India. Sanitation is one of the highest ideals of his life. He regards cleanliness as a self realizing, self-acting, self developing and self- fertilizing process that would illuminate the whole world one day. His concept of cleanliness transcends time and place. His is of the view that clean surrounding, cleaner body and cleanest mind would lead to divinity. For him cleanliness is a state of purity, clarity and precision for which we are to change ourselves. His clarion call for cleanliness awakened the slumbering masses to take the broom.

For him cleanliness is a way of life first and a way of thought next. He is a practical idealist who preached the philosophy of cleanliness to the common-masses. His emergence on the Indian stage is a sort of epitome expressing for the people of India what they want and they need. He went so for to say "if everybody lives by the sweat of his brow, the earth will become a paradise". He said "All the graces of life are possible only when we learn the art of living nobly:.

"Today the villages are dung heaps. Tomorrow they will be like tiny gardens of Eden where dwell highly intelligent folk whom no one can deceive or exploit". His concept of cleanliness is very near to the Indian philosophy of God, Truth and Beauty, that is why he emphasized not only the cleanliness of body, hearth and house but also the purity of mind and soul. Cleanliness is the abode of God. It mesmerized the divinity to descend on the earth to scatter its divine fragrance and grace.

Cleanliness is a part of human happiness leading to tireless striving. Gandhi said, "Progress is to be measured by the amount of suffering undergone by the sufferer. The purer the suffering, the

greater is the progress." His concept of cleanliness is beyond modern materialism which exploits man, pollutes nature and annihilate relations. His cleanliness stretches its arms to lead man towards perfection. His cleanliness culminates in ideal atmosphere, ideal relations and ideal efforts. For him 'cleanliness is the foundation upon which all other virtues are built'. Cleanliness signifies hefty health, sound mind and strong body and hearty happiness. "Dirty surroundings breed disease and unhappiness; clean surroundings breed health and happiness"On2 oct. our honourable Prime Minister Shri Narendra Modi paid a great tribute to Gandhi saying, "Mahatma Gandhi never compromised on cleanliness. He gave us freedom. We should give him a clean India." The seeds of cleanliness sown by Gandhi are continuously ripening and will soon come to a crescendo leading towards his vision of an exploitation free, tension free and completely non-violent society progressing towards perfection. He practiced what he preached. He has great desire to clean India making it free from untouchability, violence and castism etc.

**Conclusion :**

Cleanliness is the summum borum of his life and his activities are designed to promote worldly brotherhood and peace. He liked both the inner and outer cleanliness which is away to celestial happiness. He strongly criticized the practice of hiring people from the lower strata of society to manually clean out the dry latrines or to collect human waste from the outskirts of the villages. During his visit to Kumbh Mela in 1915, he saw millions of devotees enjoying the holy dip of Ganga and remarked, "To my great grief, I discovered insanitation, both moral and physical….. There is defilement of the mighty stream even in the name of religion". In a 1937 edition of Harijan, he defined an ideal village: "An ideal village will be so constructed as to lent itself to perfect sanitation….. The very first problem the village worker will solve is its sanitation". In a speech in 1946, he pointed out the need for equal level of hygiene in bungalows of ministers as well as their servant quarters. "I shall be satisfied only when the lodgings of ministers' staff are as neat and tidy as their own." It was the myriad minded personality of Mahatma Gandhi that compelled Einstein to sum up his character in the words, " Generation to come, it may be, will scare believe that such a one ever in flesh and blood walked upon this earth".

**Reference :**


1 S.N. Agrawal, Principles of Gandhian Planning, Indian Press, Allahabad, 1960

2 Pyarelal, Mahatma Gandhi- The Last Phase. Vol-II, Navajivan Publishing House, Ahmadabad, 1958

3 Harijan, 22.07.1935

4 Gandhiji, His life and Work
5 Ranjee Singh & S Sundaram, Gandhi and The World Order, APH Publishing Corporation, New Delhi, 1996
6 Sabyasachi Bhattacharya (edited), The Mahatma and The Poet, Letters and Debates Between Gandhi and Tagore 1915-1941, National Book Trust, India, New Delhi, 1999
7 Young India, 14 October 1926
8 M.K. Gandhi, The Gospel of Renunciation, Ahmedabad, Navjivan Publishing House, 1961
9 M.K. Gandhi, Non-Violence in Peace and War Vol-I, Ahmedabad, Navjivan Publishing House, 1948

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 279-284

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# Human Right and Mahatma Gandhi

**Dr. Pankaj Pandey**

Associate Professor, Department of History, SDM Government PG College, Doiwala, Dehradun

**Abstract :**

A person widely regarded as one who changed the course history of civil rights movement for human rights in the world is Mahatma Gandhi. He was the supreme leader of India's independence movement and also the architect of a form of non-violent civil disobedience against British colonial rule. The main reason for Gandhi's protests and campaigns against the British, was to fight for the human rights of the Indians. His struggle for human rights & his principles influenced the world during his lifetime as well as after his demise. Gandhi became the champion of human rights right from his years spent in South Africa. During this time, he witnessed racism, as well as injustice against all Indians. In South Africa he observed the inhuman treatment of the blacks and was deeply pained by the way the Zulu warriors and prisoners were hunted and tortured.

**Key Words :** Human Right, Non – Violence, Satyagrah, Sarvodaya

**Introduction :**

According to the United Nations, "Human rights are rights inherent to all human beings, regardless of race, sex, nationality, ethnicity, language, religion, or any other status. Human rights include the right to life and liberty, freedom from slavery and torture, freedom of opinion and expression, the right to work and education, and many more." [1]

Although we live in twenty first century, quite surprisingly still twenty-seven million people live in slavery—more than twice the number during the peak of the slave trade. And more than a billion adults are unable to read. In the history of human civilization there have been many great persons of the like Eleanor Roosevelt, Nelson Mandela, Martin Luther King Jr., Desmond Tutu, Oscar Arias Sanchez & many more, who have made significant contribution in their fight for protecting human rights of the oppressed. In our present time human right activists like Kailash Satyarthi, whose efforts to end child slavery and exploitation have been widely appreciated across the globe, in this regard were awarded Nobel Peace Prize in 2014.[2] However, the person widely regarded as one who

changed the course history of civil rights movement for human rights in the world is Mahatma Gandhi. He was the supreme leader of India's independence movement and also the architect of a form of non-violent civil disobedience against British colonial rule. The main reason for Gandhi's protests and campaigns against the British, was to fight for the human rights of the Indians.

His struggle for human rights & his principles influenced the world during his lifetime as well as after his demise. Many prominent leaders of India right from the days of independence movement like Pt. Jawaharlal Nehru and Sardar Vallabh Bhai Patel, and world leaders like Nelson Mandela and Martin Luther King Jr have credited Gandhi as a source of inspiration in their struggles to achieve equal rights for their people. There is a strong confluence of views between Gandhi and King on the tendency of human nature to create outcasts.

King's views on the practice of racism should be noted carefully : "Racism is a philosophy based on contempt for life. It is the arrogant assertion that one race is thecenter of everything and object of devotion, before which other races must knee in submission. It is an absurd dogma that one race is responsible for all the progress of the future. Racism is total estrangement. It separates not only bodies, but minds and spirits. Inevitably it descends to inflicting spiritual or physical homicide upon the out groups."

Both Gandhi and King opined that Racism is contrary to the ethics of love. Rejecting members of any human group is a form of violence. Love requires that we do not practice such rejection, but rather reach out to members of other cultural, social and ethnic groups.

**Mahatma Gandhi, The Human Rights Warrior :**

Gandhiji Says, "I learned from my illiterate but wise mother that all rights to be deserved and preserved came from duty well done. Thus the very right to live accrues to us only when we do the duty of citizenship of the world. From this one fundamental statement, perhaps it is easy enough to define the duties of Man and Woman and correlate every right to some corresponding duty to be first performed. Every other right can be shown to be a usurpation hardly worth fighting for."

**Gandhi in South Africa :** Gandhi became the champion of human rights right from his years spent in South Africa. During this time, he witnessed racism, as well as injustice against all Indians. In South Africa he observed the inhuman treatment of the blacks and was deeply pained by the way the Zulu warriors and prisoners were hunted and tortured.[3] Prior to this in India, struggling to find work as a lawyer, Gandhi got one-year contract to perform legal services in South Africa. In April 1893, he sailed for Durban in the South Africa. Soon in South Africa Gandhi saw the discrimination and racial segregation faced by Indian immigrants at the hands of white British. In his first appearance in a Durban court, Gandhi was asked to remove his turban. However, he refused and left the court instead.

The Natal Advertiser mocked him in print as "an unwelcome visitor."

**Nonviolent Civil Disobedience :** On June 7, 1893, during a train trip to Pretoria, a white man objected to Gandhi's presence in the first-class railway compartment, although Gandhi had a ticket. Refusing to move out of the train, Gandhi was forcibly removed and thrown off the train at a station in Pietermaritzburg.[4] This act of civil disobedience awoke in him a desire to fight the "deep disease of color prejudice." From that night onward, this small built man would grow into a great force for civil rights. Subsequently, Gandhi formed the Natal Indian Congress in 1894 to fight discrimination. As Gandhi was preparing to return to India at the end of his one year-long contract, he came to know at his farewell party about a bill which was soon to be introduced before the Natal Legislative Assembly and that would had deprived Indians of the right to vote. Fellow immigrants requested Gandhi to stay and lead the fight against the legislation. Although Gandhi could not succeed in preventing the law's passage, he drew international attention to the injustice. After brief trip to India in late 1896 and early 1897, Gandhi returned to South Africa with his wife and children.

**Satyagraha :** In 1906, Gandhi organized his first mass civil-disobedience campaign, which he called "Satyagraha" ("truth and firmness"), in reaction to the South African Transvaal government's new restrictions on the rights of Indians, including the refusal to recognize Hindu marriages. As per Mahatma Gandhi, "My mission is to teach by example and percept under severe restraint the use of the matchless weapon of 'satyagraha', which is a direct corollary of nonviolence and truth. I am anxious, indeed I am impatient, to demonstrate that there is no remedy for the many ills of life save that of nonviolence. When I have become incapable of evil and when nothing harsh or naughty occupies, be it momentarily, my thought world, then, and not till then, my nonviolence will move all the nearest of the world. I have placed before me and the reader no impossible ideal or ordeal. It is a man's prerogative and birthright." [5]

After years of protests, the government imprisoned hundreds of Indians in 1913, including Gandhi. Under pressure, the South African government accepted a compromise negotiated by Gandhi and General Jan Christian Smuts that included recognition of Hindu marriages and the abolition of a poll tax for Indians.

**After returning to India :** When Gandhi returned back to India in 1915, he found a similar situation as he experienced in the South Africa, where the British had more power over all Indians, and in some occasions, made them do inhumane jobs. In 1915 Gandhi founded an ashram in Ahmedabad, India, that was open to all castes. Wearing a simple loincloth and shawl, Gandhi lived an austere life devoted to prayer, fasting and meditation. Mahatma Gandhi decided to fight against this injustice done by the British & under his leadership we saw for the first time in the history of human civilization

millions coming together under the leadership of Gandhi to fight in a non-violent way, for the human rights of the Indians.[6]

In 1919, when India was still under the firm control of the British, Gandhi had a political reawakening when the newly enacted Rowlett Act authorized British authorities to imprison people suspected of sedition without trial. In response, Gandhi called for a Satyagraha campaign of peaceful protests and strikes. Unfortunately violence broke out instead, which culminated on April 13, 1919, in the Massacre of Amritsar. Troops led by British Brigadier General Reginald Dyer fired machine guns into a crowd of unarmed demonstrators and killed hundreds of people. Rather than buy British-manufactured clothes, he began to use a portable spinning wheel ('Charkha') to produce his own cloth. Gandhi encouraged all congressmen & general public to start weaving their own cloth. He believed that by doing so people from various strata of society – Rich & Poor, Hindu & Muslim, people from higher Hindu cast &Dalits – will come together and in turn the divide between them will become narrower. The spinning wheel soon became a symbol of Indian independence and self-reliance. He thought so because spinning yarn could offer clothes to millions of countrymen, as well as food to the hungry. Gandhiji called it a 'Kamdhenu' because he believed that it could even help our countrymen get independence.[7]

**The Salt March :** In 1930 to protest Britain's Salt Acts, which not only prohibited Indians from collecting or selling salt, but imposed a heavy tax that hit the country's poorest particularly hard. Gandhi planned a new Satyagraha campaign, The Salt March, a 390-kilometer march to the Arabian Sea, where he would symbolically collect salt in defiance of the government monopoly. The movement ended in an anti-climax as Gandhi entered into negotiations with Lord Irwin in February 1931, and on March 5 the two announced a pact. The agreement hardly seemed favorable to the Congress. In exchange for suspending civil disobedience, about 60,000 protesters being held in jail would be released and their cases would be dropped and activists would be permitted to continue a peaceful boycott of British cloth. However, shockingly the Salt Act itself would remain law, with the concession that the poor in coastal areas would be allowed to produce salt in limited quantities for their own use.[8]

Throughout his lifetime, Gandhi stressed the importance of being willing to compromise on non essentials. For Gandhi, the viceroy's agreement to allow for exceptions to the salt law, even if they were limited, represented a critical triumph of principle. Moreover, he had forced the British to negotiate as equals—a vital precedent that would be extended into subsequent talks over independence. Louis Fischer provides a most dramatic appraisal of the Salt March's legacy: "India was now free; technically, legally, nothing had changed. India was still a British colony. And yet, after the salt

satyagraha, it was inevitable that Britain should someday refuse to rule India and that India should someday refuse to be ruled." [9]

Gandhi's actions to alleviate poverty around the country, expand women rights, and free India from the British, were what brought justice and fairness to all Indians' human rights.

**Gandhi's Legacy :**

The essence of what is to be human is expressed clearly in the life and action of Mahatma Gandhi. In his whole life he made personal sacrifices for others and he teaches us the sincerity and love of humanity. We all came across that his whole philosophy is rooted on the welfare of whole mankind. To him, in pursuit of these human rights the only hope for the human was for every one of us to become non-violent. Gandhi was always ready to challenge the condition which destroyed peace in life. He wanted the upliftment of all human being and tries to protect from the various socio-politic-economic evils. His idea of "Sarvodaya" means welfare of all, is very much connected with the modern human rights and humanity.[10]

Gandhian methods of nonviolence, decentralization & village industry are very much relevant in era of globalization in order to protect the human rights. Its only through his system of non-violence individual will be able to save their life from violence. The day has come to implement the Gandhian philosophy to bring global peace which becomes a great concern for everybody. Even after Gandhi's assassination, his commitment to nonviolence and his belief in simple living - making his own clothes, eating a vegetarian diet and using fasts for self purification as well as a means of protest -have been a beacon of hope for oppressed and marginalized people throughout the world. Satyagraha remains one of the most potent philosophies in freedom struggles throughout the world today. Gandhi's actions inspired future human rights movements around the globe, including those of civil rights leader Martin Luther King Jr. in the United States and Nelson Mandela in South Africa. Albert Einstein, one of the greatest minds of the 20th Century said about Mahatma Gandhi -"Generations to come will scarce believe that such a one as this ever in flesh and blood walked upon this earth."

**References :**


1 https://www.un.org/en/sections/issues-depth/human-rights/

2. Ghimire, Som& Neupane, Smirti. (2022). Narratives in Kailash Satyarthi's Nobel Peace Prize lecture: an analysis of rhetorical agency. Humanities and Social Sciences Communications. 9. 10.1057/s41599-022- 01376-1.

3. Bhikhu Parekh, Gandhi's Political Philosophy (London: The Macmillion Press Ltd, 1989),p.5

4. https://www.sahistory.org.za/people/mohandas-mahatma-karamchand-gandhi.

5. Sur, Snehasis : Mahatma Gandhi and Journalism, Global Media Journal – Indian Edition Sponsored by the University of Calcutta www.caluniv.ac.in ISSN 2249 – 5835 Winter Issue/ December 2018 Volume: 9/ Number: 2.
6. Vishvabharti, Quarterly, Gandhi Memorial Peace No, Shantiniketan P- 35.
7. Autobiography, Mahtma Gandhi, Sasta Sahitya Mandal, New Delhi P- 79.
8. https://www.mkgandhi.org/articles/radhakrishnan3.htm.
9. Fischer, Louis : The Life of Mahatma Gandhi.Towards an understanding of Gandhi P- 558.
10. Vinoba Bhave :Sarvoday Vichar, Sasta Sahitya Mandal, New Delhi, 1951 P- 27.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 285-290

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# महात्मा गांधी के विचारों का शांति एवं सुरक्षा पर प्रभाव

**डॉ. रामतिवारी**

असि. प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, वी0एस0एस0डी0 कालेज, कानपुर (उ0 प्र0)

मानव के अधिकार एवं कर्त्तव्य समाज में उसकी गरिमा और प्रतिष्ठा के लिए जिम्मेदार माने जाते हैं। इन्हीं अधिकारों और कर्त्तव्यों को मद्देनजर रखते हुए विभिन्न समाज सुधारकों ने तन–मन–धन मानव अधिकारों की रक्षा में न्यौछावर कर विश्व बन्धुत्व पर विशेष बल दिया है, जिनमें महात्मा गांधी का नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है।

''मानव अधिकारों के हक में लड़ी जाने वाली इस लड़ाई की शुरुआत हाड़–मांस के एक सामान्य से दिखने वाले इंसान ने दक्षिण अफ्रीका में रेलगाड़ी में सफर के दौरान की और अपनी अंतिम सांस तक इस लड़ाई को जारी रखा।''[1] आगे चलकर वही व्यक्ति जन–जन की चेतना बन महात्मा गाँधी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। समाज को बदलने के लिए गाँधी ने स्वयं को बदल दिया था। अहिंसा को उन्होंने बुनियादी जीवन का मूल्य माना। सत्य को एक अस्त्र के रूप में प्रयोग किया है, जिसका वार कभी निष्फल नहीं होता।

''धर्म, कर्म, जाति, ऊँच–नीच, सब कुछ एक में समा जाए और विश्व का अस्तित्व 'सर्वेभवन्तुसुखिनः' एवं ईशावास्यमिदम् सर्वम् –जगत्याम् जगत'' के सिद्धान्त पर कायम रहे।''[2] गाँधी जी उपनिषद के इस मन्त्र से बहुत ही प्रभावित थे और इसे वे सार्वभौम मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति का तथा ऋषियों की वाणी का अनोखा वरदान समझते थे। वे इसके घोर विरोधी थे कि बड़े घर में पैदा हुआ बच्चा, पैदा होते ही कुलीन वंश का माना जायेगा। अपने आश्रम में भी इस भेद–भाव के प्रति उनका गुस्सा हमेशा फूटता रहता था और वे कभी–कभी आश्रम के लोगों को सख्त हिदायत देते रहते थे कि हमारे आश्रम में कोई भी व्यक्ति ऊँच–नीच की मानसिकता न रखे, परस्पर सदभाव से रहे और सब में ईश्वर का वास देखें, क्योंकि उनके दर्शन में इंसानियत को खास महत्व दिया गया है। वे इंसानियत के चश्मे से सभी धर्मों के प्रमुख ग्रन्थों का पारायण करते थे। वे कहा करते थे कि सभी जाति के इंसानों के खून लाल रंग का ही होता है। यदि ईश्वर के द्वारा जाति को प्रधानता दी जाती तो वे उनके लहू के रंग को भी अलग–अलग बना देते। वे हमेशा कहा करते थे, चाहे हिन्दू का हो, चाहे मुस्लिम का, चाहे ईसाई का हो या सिख का हो, लहू का रंग एक ही होता है। इस सम्बन्ध में वे आश्रमवासियों को हमेशा उदाहरण देकर कहा करते थे कि जिस प्रकार कफन और हवन के धुन्ध के रंगों को कोई अन्तर नहीं होता है, उसी प्रकार इंसानियत के लहू के रंग में भी कोई अन्तर नहीं होता है। उनका मानना था कि अँधेरा कितना घना होता है, दीपक उतना ही प्रासंगिक होता है। उनकी साधना ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के सिद्धान्त पर आधारित थी, और उनकी सोच ''एकम सद विप्रावदन्ति'' पर आधारित थी।

वे मन, कर्म, वचन तीनों से एक थे, वे कहते थे कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। उनका कहना था कि सत्य शाश्वत है। वे सत्य के अवतार थे और अपने जीवन में वे 'सत्यमवद, धर्ममचर' का अक्षरशः पालन करते थे और आश्रमवासियों को भी इसी सूत्र में बँधने की सीख देते थे। वे गीता के कर्म एवं ज्ञान योग के सिद्धान्त के प्रबल समर्थक थे। वे विश्व के सभी धर्मग्रन्थों में मानवीय संवेदना मानवाधिकारों, मानवीय गरिमा के सूत्र को खोजते रहते थे और जो जहाँ जिस रूप में मिलता था उसे वे अपने जीवन में उतारने की कोशिश करते। इन सूत्रों पर संवाद और बहस भी खूब करते थे। ''वे उपनिषदों की विचारधारा से विरोध प्रभावित थे तथा उसे ज्ञान की गंगा मानते थे। गाँधी जी आदर्श एवं व्यवहार की शिक्षा के प्रति हमेशा सजग थे और वे कर्म की शिक्षा को सर्वोपरि महत्व देते थे। वे भारतीय चिन्तन धारा के उस मार्ग के अनुयायी थे, जिसमें ज्ञान, कर्म एवं भक्ति की त्रिवेणी बहती है।''[3] वह अनुभव जन्य ज्ञान की शलाका के ऐसे तीर्थोदक थे, जिसके स्पर्श मात्र से ही लोग प्रभावित हुए बिना नहीं रहते थे। उनकी वाणी में राष्ट्र भक्ति और जनकल्याण की अजस्र धारा निरन्तर बहती थी।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का व्यक्तित्व और कृतित्व आदर्शवादी रहा है। उनका आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओतप्रोत था। संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान् राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं। पर उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है।

अतः गांधी जी का शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष योगदान रहा है। उनका मूल मंत्र था–'शोषण–विहीन समाज की स्थापना करना। 'उसके बिना सभी को शिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असम्भव है। अतः गाँधी जी ने जो शिक्षा के उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों की व्याख्या की तथा प्रारम्भिक शिक्षा योजना उनके शिक्षा दर्शन का मूर्त रूप है। अतएव उनका शिक्षा दर्शन उनको एक शिक्षा शास्त्री के रूप में भी समाज के सामने प्रस्तुत करता है। उनका शिक्षा के प्रति जो योगदान था वह अद्वितीय था। उनका आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओतप्रोत था। संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान् राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं। पर उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है।

उनका मूल मंत्र था–'शोषण–विहीन समाज की स्थापना करना'। उसके लिए समाज का निर्माण असम्भव है। अतः गांधी जी ने जो शिक्षा के उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों की व्याख्या की तथा प्रारम्भिक शिक्षा योजना उनके शिक्षा दर्शन का मूर्त रूप है। अतएव उनका शिक्षा दर्शन उनको एक शिक्षाशास्त्री के रूप में भी समाज के सामने प्रस्तुत करता है। उनका शिक्षा के प्रति जो योगदान था वह अद्वितीय था। उनका मानना था कि मेरे प्रिय भारत में बच्चों को 3H की शिक्षा अर्थात् Head, Hand, Heart की शिक्षा दी जाए। शिक्षा उन्हें स्वावलंबी बनाये और वे देश को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का व्यक्तित्व और कृतित्व आदर्शवादी रहा है। उनका आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओतप्रोत था। संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान् राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं। पर उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है।

गांधी दर्शन के बिना शान्ति और मानव अधिकारों की संकल्पना बेमानी होगी क्योंकि गांधी जी ने जिस इंसानियत की बुनियादी अवधारणा का बीज बोया उसकी आधारशिला सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, शारीरिक श्रम, सादगी और सत्याग्रह पर आधारित थी। सत्याग्रह की व्याख्या करते हुए, वे ''सभी धर्म ग्रन्थों में मानवीय संवेदना

मानवाधिकारों, मानवीय गरिमा के सूत्र को खोजते रहते थे, और जो जहाँ जिस रूप में मिलता उसे वे अपने जीवन में उतारने की कोशिश करते। इन सूत्रों पर वे संवाद और बहस भी खूब करते थे।''[4] वे उपनिषदों की विचारधारा से प्रबलतम प्रभावित थे तथा उसे ज्ञान की गंगा मानते थे। गांधी जी आदर्श एवं व्यवहार की शिक्षा के प्रति हमेशा सजग थे और वे कर्म की शिक्षा को सर्वोपरि महत्व देते थे। वे भारतीय चिन्तनधारा के उस मार्ग के अनुयायी थे, जिसमें ज्ञान, कर्म एवं भक्ति की त्रिवेणी बहती है। वह अनुभव जन्य ज्ञान की शलाका के ऐसे तीर्थोदक थे, जिसके स्पर्श मात्र से ही लोग प्रभावित हुए बिना नहीं रहते थे। उनकी वाणी में राष्ट्र भक्ति और जनकल्याण की अजस्र धारा निरन्तर बहती थी।

5 फरवरी 1916 को काशी के नागरी प्रचारिणी सभागार में गांधी जी ने एक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए, सारगर्भित उद्‌बोधन दिया, उन्होंने कहा कि मेरे सपनों का स्वराज्य गरीबों का स्वराज्य होगा जीवन की जिन आवश्यकताओं का उपभोग राजा और अमीर लोग करते हैं, वही उन्हें भी सुलभ होना चाहिए इसमें फर्क के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता ऐसे राज्य में जाति–धर्म के भेद का कोई स्थान नहीं हो सकता। उस पर धनवानों और अशिक्षितों का एकाधिपत्य नहीं होगा। वह स्वराज्य सबके कल्याण के लिए होगा। लेकिन यह स्वराज्य प्राप्त करने का एक निश्चित पथ है। ''इसको व्याख्यायित करने के लिए वे कहते थे – ''ध्येयवादी जीवन के चार तत्व होते हैं– साधक, साधन, साधना और साध्य।'' साध्य का अर्थलक्ष्य या ध्येय से है। यदि किसी समय हमारा लक्ष्य धन कमाना है तो धन कमाने के भी कई पथ हो सकते हैं यह धन चोरी करके भी प्राप्त किया जा सकता है और पुरुषार्थ व पराक्रम से भी लेकिन पुरुषार्थ व पराक्रम पथ से प्राप्त धन 'पवित्र' एवं शुद्धता की श्रेणी में आयेगा और चोरी से प्राप्त धन अशुद्धता अपवित्रता को परिभाषित करेगा। इसलिए साध्य की पवित्रता के लिए यह परम आवश्यक है कि साधन, साधक व साधना तीनों पवित्र हों। किसी एक की स्थिति से लाभ नहीं प्राप्त होगा।

सन् 1906 में जुलु दक्षिण अफ्रीका में नये चुनाव करके इसे लागू करने के बाद दो अंग्रेज अधिकारियों को मार डाला गया। बदले में अंग्रेजों ने जुलु के विरुद्ध युद्ध प्रारम्भ कर दिया। गांधी जी ने भारतीयों को भर्ती करने के लिए ब्रिटिश अधिकारियों को सक्रिय रूप से प्रेरित किया। उनका तर्क था अपनी नागरिकता के दावों को कानूनी जामा पहनाने के लिए भारतीयों को युद्ध प्रयासों में सहयोग देना चाहिए। अंग्रेजों ने गांधी द्वारा दिये गये प्रस्ताव को मान लिया कि भारतीय घायल सैनिकों को उपचार के लिए स्टेचर पर लाने के लिए वे स्वेच्छा पूर्वक कार्य कर सकते हैं। इस कोर की बागडोर गांधी जी ने स्वयं संभाली। ऐसा था बापू का सेवा भाव व्यक्तित्व। गांधी जी की राय में सन् 1906 का मसौदा अध्यादेश भारतीयों की स्थिति में किसी निवासी के नीचे वाले स्तर के समान लाने जैसा था। इसलिए उन्होंने सत्याग्रह की तर्ज पर काफिर का उदाहरण देते हुए भारतीयों से अध्यादेश का विरोध करने का आग्रह किया। उनके शब्दोंमें ''यहाँ तक कि आधी जातियाँ और काफिर जो हमसे कम आधुनिक है ने भी सरकार का विरोध किया।'' गांधी जी की प्रथम बड़ी उपलब्धि 1918 में चम्पारन सत्याग्रह और खेड़ा सत्याग्रह में मिली। हालांकि अपने निर्वाह के लिए जरूरी खाद्य फसलों की बजाए 'नील' नकद पैसा देने वाली खाद्य फसलों की खेती वाले आन्दोलन भी महत्वपूर्ण रहे। गांधी जी ने तत्कालीन जमींदारों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन और हड़ताल का नेतृत्व किया, क्योंकि इन जमींदारों ने अंग्रेजी सरकार के मार्गदर्शन में उस क्षेत्र के गरीब किसानों को अधिक क्षतिपूर्ति मंजूर करने तथा खेती पर नियन्त्रण राजस्व में बढ़ोत्तरी को रद्द करने तथा इसे संग्रहित करने वाले एक समझौते पर हस्ताक्षर किये।

इस संघर्ष के दौरान ही गांधी जी को जनता ने 'महात्मा' (महान आत्मा) के नाम से सम्बोधित किया। 'खेड़ा में गांधी जी के दिशानिर्देश पर 'सरदार पटेल' ने अंग्रेजों के साथ विचार विमर्श के लिए किसानों का नेतृत्व किया, जिसमें अंग्रेजों ने राजस्व संग्रहण से मुक्ति देकर सभी कैदियों को रिहा कर दिया गया था। इसके परिणाम स्वरूप गाँधी जी की ख्याति देशभर में प्रसारित हो गई। गाँधी जी ने अपने अहिंसात्मक मंच को स्वदेशी नीति में शामिल करने के लिए विस्तार किया, जिसमें विदेशी वस्तुओं विशेषकर अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार करना था। गांधी जी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को सहयोग देने के लिए 'पुरुषों' और महिलाओं को प्रतिदिन खादी के लिए सूत कातने में समय बिताने के लिए कहा। यह अनुशासन और समर्पण लाने की ऐसी नीति थी। जिससे अनिच्छा और महत्वाकांक्षा को दूर किया जा सके। गाँधी जी ने भारतीयों से ब्रिटेन की शैक्षिक संस्थाओं तथा अदालतों का बहिष्कार और सरकारी नौकरियों को छोड़ने का तथा सरकार से प्राप्त तमगों और सम्मान को वापस लौटाने का भी अनुरोध किया।

गाँधी जी सक्रिय राजनीति से सदैव दूर रहे और 1920 की अधिकांश अवधि तक वे स्वराज पार्टी और इंडियन नेशनल कांग्रेस के बीच खाई को भरने में लगे रहे और इसके अतिरिक्त वे अस्पृश्यता, शराब, अज्ञानता और गरीबी के विरुद्ध आन्दोलनरत भी रहे। दिसम्बर 1928 में गांधी जी ने कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के एक अधिवेशन में एक प्रस्ताव रखा, जिसमें भारतीय साम्राज्य को सत्ता प्रदान करने के लिए कहा गया था, अथवा ऐसा न करने के बदले अपने उद्देश्य के रूप में सम्पूर्ण देश की आजादी के लिए असहयोग आन्दोलन का सामना करने के लिए तैयार रहे। गाँधी जी ने न केवल युवा वर्ग सुभाष चन्द्र बोस तथा जवाहर लाल नेहरू जैसे पुरुषों द्वारा तत्काल आजादी के माँग के विचारों को फलीभूत किया।

सन् 1932 में दलित नेता और प्रकांड विद्वान डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के चुनाव प्रचार के माध्यम से सरकार ने अछूतों को एक नये संविधान के अन्तर्गत अलग निर्वाचन मंजूर कर दिया। इसके विरोध में दलित हितों के लिए गांधी जी ने छः दिन का अनशन ले लिया। जिसने सरकार को सफलता पूर्वक दलित से राजनैतिक नेता बने पलवंकर बालू द्वारा की गई मध्यस्थतावाली एक समान व्यवस्था को अपनाने पर बल दिया। गाँधी जी ने अछूतों को जीवन सुधारने के लिए उन्हें हरिजन कहकर सम्बोधित किया। जिन्हें वे भगवान की संतान मानते थे।

गाँधी जी ने हरिजन उद्धार के आन्दोलन में मदद करने के लिए आत्म शुद्धिकरण का 21 दिन तक चलने वाला उपवास किया। गाँधी जी ने अपनी आत्मकथा द स्टोरी ऑफ माय एक्सपेरी में ट्सविथट्रुथ' में दर्शन और अपने जीवन के मार्ग का वर्णन किया है उन्होंने एक प्रसंग में कहा–जब मैं निराश होता हूँ तब मैं याद करता हूँ कि हालांकि इतिहास सत्य का मार्ग होता है, किन्तु प्रेम इसे सदैव जीत लेता है। यहाँ अत्याचारी और हत्यारे भी हुए हैं और कुछ समय के लिए वे अपराजेय लगते थे, किन्तु अन्त में उनका पतन ही होता है–इसका सदैव विचार करें।

उपरोक्त तथ्यों के आलोक में यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ''गाँधी–दर्शन के बिना शान्ति और मानव अधिकारों की संकल्पना बेमानी होगी क्योंकि गांधी जी ने जिस इंसानियत की बुनियादी अवधारणा का बीज बोया, उसकी आधारशिला सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, शारीरिक श्रम, सादगी और सत्याग्रह पर आधारित थी।''[5] सत्याग्रह की व्याख्या करते हुए, गांधी जी ने लिखा है–सत्याग्रह का अर्थ है अपने घोर विपक्षी के सत्य में भी, उसकी

संभावना में भी आस्था रखना। विश्व में यदि कहीं भी मानव अधिकारों की अवधारणा के सम्बन्ध में विमर्श व बहस होगी तो उनमें गांधी जी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से जिक्र अवश्य होगा। यह सर्वविदित है कि गांधी जी का जीवन स्वयं अपने लिए नहीं था, बल्कि दूसरों के लिए समर्पित था। जिसका जीवन हमेशा दूसरों के लिए रहा हो, उससे अधिक परमार्थ व मानव अधिकार की बात करने वाला दूसरा कोई व्यक्ति हो नहीं सकता। उनके जीवन–दर्शन की मूल संकल्पना में व्यक्ति की गरिमा, प्रतिष्ठा और उसके सम्मान की बातें कूट–कूटकर भरी थीं। गाँधी जी मनुष्य के रूप में अंग्रेजों से भी प्राणी होने के कारण प्रेम भाव रखते थे। उन्हें भारत में ही नहीं अपितु में विश्व में शान्ति का अग्रदूत, दलितों का मसीहा तथा सेवाभाव को प्रेरित करने वाले जननायक के रूप में जाना जाता है। गाँधी जी मानते थे कि शरीर सेवा के लिए प्राप्त है, और हृदय आत्मदर्शन के लिए। गाँधी जी ने अपने जीवन में केवल सत्य का प्रयोग ही नहीं किया बल्कि उसको जीया भी। उनका विचार था केवल सत्य बोलने से ही मनुष्य एवं विश्व का कल्याण नहीं होगा, बल्कि अपनी अन्तरात्मा में रखते हुए सत्य को जीने की कला लानी होगी। ज्ञान और कर्म की साधना करने वाले तथा गीता के दर्शन को अपने जीवन की बुनियाद बनाने वाले गाँधी की विचारधारा की जड़ में मानवाधिकारों की संकल्पना का बीज स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित होता है। अहिंसा और सर्व–धर्म समभाव की गाँधी जी की अवधारणा मानव अधिकारों की आधारशिला है।

गाँधी जी की सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था करूणा, प्रेम, नैतिकता, धार्मिकता व ईश्वरीय भावना पर आधारित है। उन्होंने नर सेवा को ही नारायण सेवा मानकर उसे अपने जीवन का ध्येय बनाया वे शोषणमुक्त, समतायुक्त परस्पर स्वालम्बी, परस्पर पोषक समाज के प्रबल हिमायती थे। उनका मानना था कि राजसत्ता और अर्थसत्ता के विकेन्द्रीकरण के बिना आम आदमी को सच्चे लोकतंत्र की अनुभूति नहीं हो सकती।

गाँधी जी एक सच्चे विचारक थे उनका पूरा जीवन कर्ममय था, व्यक्तिगत साधना में उनका विश्वास था। उनके जीवन का लक्ष्य केवल अंग्रेजी सत्ता से छुटकारा दिलाना नहीं था बल्कि भारत और समस्त विश्व हेतु सत्य और अहिंसा के आदर्शों पर निर्माण करना था। गाँधी जी ने प्रथम बार सत्य, अहिंसा और शत्रु के प्रति प्रेम के आध्यात्मिक और नैतिक सिद्धान्तों का राजनीति के क्षेत्र में इतने विशाल पैमाने पर प्रयोग किया और सफलता प्राप्त की। गाँधी जी ने जहाँ एक ओर भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाई वहीं दूसरी ओर संसार को अहिंसा का ऐसा मार्ग दिखाया जिस पर यकीन करना कठिन तो नहीं पर अविश्वसनीय जरूर था। महात्मा गाँधी ने राजनीति, समाज, अर्थ एवं धर्म के क्षेत्र में आदर्श स्थापित किये व उसी के अनुरूप लक्ष्य प्राप्ति के लिए स्वयं को समर्पित ही नहीं किया बल्कि देश की जनता को भी प्रेरित किये। उनकी जीवन दृष्टि भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।

महानृ वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गाँधी जी के बारे में कहा था कि ''भविष्य की पीढ़ियों को इस बात पर विश्वास करना अविश्वसनीय होगा कि हांड–मांस से बना ऐसा कोई व्यक्ति भी कभी धरती पर आया था।'' गाँधी जी के विचारों ने विश्वभर के लोगों को न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि शांति के दृष्टिकोण से भारत और विश्व को परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। गाँधी जी ने अपने समस्त जीवनकाल में सिद्धांतों और प्रयासों को विकसित करने पर जोर दिया और साथ ही विश्वभर में हाशिये के समूहों और उत्पीड़ित समुदायों की आवाज उठाने में भी अतुलनीय योगदान दिया। साथ ही महात्मा गाँधी ने विश्व के बड़े नैतिक और राजनीतिक नेताओं

जैसे–मार्टिन लूथर किंग, जूनियर नेल्सन मंडेला और दलाईलामा को प्रेरित किया तथा लैटिन अमेरिका, एशिया मध्य पूर्व तथा यूरोप में सामाजिक आंदोलनों को प्रभावित किया।

महात्मा गाँधी के सत्याग्रह को युद्ध के नैतिक विकल्प के रूप में देखा जा सकता है। उन्होंने आम–जन को यह सिखाया कि सत्याग्रह का प्रयोग समस्या तथा संघर्ष के समाधान हेतु किस प्रकार किया जाता है। गाँधी का सत्याग्रह राजनीतिक मुद्दों के निवारण हेतु एक प्रभावी साधन साबित हुआ है। युद्ध और शांति आतंकवाद, मानवाधिकार, सतत् विकास, जलवायु परिवर्तन, सामाजिक–राजनीतिक अशांति और राजनीतिक, प्रशासनिक भ्रष्टाचार से सम्बन्धित समकालीन चुनौतियों में से कई को गाँधीवादी तरीके से हल किया जा सकता है। अतः 21वीं सदी के लोगों के पास अभी भी गाँधीवाद से सीखने के लिए बहुत कुछ सीखना बाकी है। वर्तमान में यदि कोई गाँधी और उनके विचारों की प्रासंगिकता का प्रश्न करता है तो शायद गाँधी के विचारों को लेकर उस व्यक्ति के समझ में कोई अस्पष्टता है। लोकतंत्र में आलोचना करना सभी का अधिकार होता है परन्तु आलोचना करने से पूर्व यह भी आवश्यक है कि हम उस व्यक्ति के बारे में अच्छे से अध्ययन कर तर्क के आधार पर उसकी आलोचना करें।

आज गाँधी जी हमारे बीच नहीं हैं किन्तु एक प्रेरणा और प्रकाश के रूप में लगभग उन सभी मुद्दों पर उनका मार्गदर्शन निरन्तर हमारे साथ है।

विश्व के विभिन्न मनीषियों, समाज सुधारकों ने एक स्वर में इस बात को स्वीकार किया है कि गाँधी के बिना मानवाधिकार की संकल्पना अधूरी रह जाती है। मानवाधिकार की पृष्ठभूमि गांधी की दृष्टि और दर्शन का ही परिणाम है।

**सन्दर्भ :–**


1. राष्ट्रीय सुरक्षा – डॉ. लल्लनजी सिंह –पृ. 2
2. महात्मा गाँधी एक अवलोकन– डॉ. आर. एस. पाण्डेय, पृ. 8
3. राष्ट्रीय सहारा– 1 अक्टूबर 2018, पृ. 7
4. इंडिया टुडे– अक्टूबर 2017 –पृ. 20
5. सिद्धान्त राष्ट्रीय जर्नल–सितम्बर 2017 –पृ. 15



ईमेल : ram.defence@gmail.com

मो0 9839240820

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

## डॉ. अमिता प्रकाश

कृतियां - रंगों की तलाश (कहानी संग्रह)
पहाड़ के बादल (कहानी संग्रह)
पंकज बिष्ट का आधुनिक भावबोध (शोध ग्रंथ)
आवाज रोशनी है (संस्मरण)
देश विदेश की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कहानी, कविता एवं शोध आलेखों का प्रकाशन।

पुस्तक संपादन -

"Environmental Education for Social Sustainability" 2015, Ed. Dr. Prem Prakash, Dr. Amita Prakash & Narendra Kumar Singh, Adhyayan Publishers and Distributors, New Delhi, ISBN : 978-81-8435-468-3.

सामाजिक पर्यावरण चिन्तन एवं विमर्श- संपादक डॉ0 अमिता प्रकाश एवं डॉ0 रेनू प्रकाश, अध्ययन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2015, ISBN : 978-81-8435-471-3

Ecological Ignorance in Development Raising Disastrous Possibilities" 2017, Ed. Dr. Prem Prakash, Narendra Kumar Singh & Dr. Amita Prakash, Anamika Publishers & Distributors, New Delhi, ISBN : 978-81-7975-894-6.

सम्मान :-

- कथा भूषण सम्मान राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास, गाजियाबाद-2017
- कथा शिरोमणि, साहित्य शारदा मंच, खटीमा उधमसिंह नगर, उत्तराखंड-2018
- हिंदी गौरव सम्मान अंतरराष्ट्रीय, हिंदी परिषद, आधारशिला विश्व हिंदी मिशन-2019
- विद्योत्तमा साहित्य सेवी सम्मान, विद्योत्तमा फाउंडेशन, नासिक-2022
- शोधश्री सम्मान, गीना प्रकाशन, भिवानी, हरियाणा-2022
- चौधरी गिरधारीलाल घासीराम सिहाग स्मृति सम्मान, भिवानी, हरियाणा-2023

संप्रति -

असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115